जगतगुरु रविदास महाराज जी

सतिगुरु बाबा पिप्पल दास जी महाराज

धरती पर रब

सतिगुरु सरवण दास जी महाराज

सतिगुरु हरी दास जी

सतिगुरु गरीब दास जी

अमर शहीद संत रामा नंद जी

संग्रहकर्ता एवं लेखक

संत सुरिंदर दास बावा

श्री 108 संत सुरिंदर दास बावा जी

प्रकाशक : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर

धरती पर रब
सतिगुरू सरवण दास जी महाराज

संग्रहकर्ता एवं लेखक
संत सुरिंदर दास बावा

प्रकाशक : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर

धरती पर रब
सतिगुरू सरवण दास जी महाराज

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

प्रकाशक

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

धरती पर रब
सतिगुरू सरवण दास जी महाराज

प्रकाशक
रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

टीकाकार:
संत सुरिन्दर दास बावा जी
चेयरमैन : रविदासीया धर्म प्रचारक संत समाज सोसाइटी (रजि.)
चेयरमैन : अंतराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.)

हिन्दी अनुवादिका : रमा कुमारी, अंजना

हिन्दी टाईप : हीना बैंस

गलतीयों की सोध : सुमन बाला

© सभी अधिकार प्रकाशाधीन हैं।

पहली बार 2019 : 5000

मूल्य ₹ 300/-

रविदासीया धर्म के नियम

(1) हमारा रहबर : सतिगुरु रविदास महाराज जी

(2) हमारा धर्म : रविदासीया

(3) हमारी धार्मिक पुस्तक : अमृतवाणी सतिगुरु रविदास महाराज जी

(4) हमारा कौमी निशान साहिब :

(5) हमारा सम्बोधन : जै गुरुदेव

(6) हमारा महान् तीर्थस्थान : श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)

(7) हमारा उद्देश्य : सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वालमीक जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना। सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना

सतिगुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

प्रकाश दिवस :

माघ सुदी पंद्रास **1433** विक्रमी सम्वत् सन् **1377** ई०

जन्म स्थान :
ग्रामः सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)

माता-पिता जी का नाम :
पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी,
माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी

दादा-दादी जी का नाम :
दादा जी- पूजनीय कालू राम जी,
दादी जी- पूजनीय लखपती जी।

सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम :
सुपत्नी पूजनीय लोना देवी जी,
सपुत्र पूजनीय विजय दास जी।

ब्रह्मलीन :
आषाढ़ की संक्रांति **1584** विक्रमी सम्वत्
(**1528** ई०) बाराणसी में।

समर्पित

यह पुस्तक मनुष्यता के संग्रामीये, सामाजिक प्रगति के अलंबरदार, पूर्ण मानवता को भेद-भाव से मुक्त होकर विश्व भाईचारे, संतों की संगत, हरि का सिमरन और बेगमपुर वतन के वासी बनने का पावन उपदेश बखशिस करने वाले महान रहबर जगत गुरु रविदास महाराज जी और बीसवीं सदी में जगत गुरु रविदास जी महाराज जी के मिशन को विश्व विख्यात करने वाले महान रहिबर, दुखियों के और गरीबों के प्रतिपालक ब्रह्मलीन, ब्रह्मज्ञानी सतिगुरु सरवण दास जी महाराज जी को समर्पित है। पुस्तक को पढ़ना, आगे औरों को पढ़ाना और इस उपर अमल करना ही उनकी सोच उपर पहरा देना होगा।

दास : संत सुरिंदर दास बावा

विषय सूची

सं.	विषय	पन्ना नं.
1	धरती पर रब सत्गुरू सरवण दास जी महाराज	1
2	ब्रह्मज्ञानी श्री 108 संत बाबा पिपल दास जी महाराज	2
3	ब्रह्मलीन सत्गुरू सरवण दास जी महाराज	5
4	ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी महाराज	9
5	श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज	13
6	अमर शहीद श्री 108 संत रामानन्द जी	15
7	जीवन की खुशी पुर्नः प्राप्त करना	19
8	श्री वतन सिंह को औलाद की दात देना	19
9	मकान पक्के होने का वरदान	19
10	अंर्तयामी पीपल दास जी	20
11	दूध की बाढ़ आना	20
12	शादी की भविष्यवाणी	21
13	बीबी चरण कौर की इच्छा पूर्ण करना	21
14	श्री सवर्ण दास को पुत्र का दान देना	22
15	ज़मीन की बख्शिश करना	22
16	युद्ध में रक्षा करना	23
17	गर्भ की रक्षा करना	23
18	नौकरी का बख्शिश करनी	24
19	श्री मुंशी राम के पुत्र को नौकरी की बख्शिश	25
20	जानी जान सत्गुरू	25
21	दिलों की जानने वाले	25
22	श्री गुरमीत की रक्षा करना	26
23	संतों के वचन सत्य निकले	27
24	श्री ओम प्रकाश की इच्छा पूर्ण करना	27
25	स. कुनण सिंह और बीबी जीत कौर को लड़कों का बख्शिश करना	28
26	श्री आत्मा राम पर कृपा करनी	28
27	श्री चरनजीत की इच्छा पूर्ण करनी	29
28	स. काबल सिंह की इच्छा पूर्ण करनी	29
29	तुम्हारी तुम ही जानो	30
30	सेठ दौलत राम को पुत्रों की दात की बख्शिश करना	30
31	बेबी मनजीत पर कृपा करनी	31
32	महाराज जी का करिश्मा	32
33	बाबा जवाहर दास जी के ब्रह्मलीन होने के बारे में बताना	33
34	स. तरलोक सिंह के मन की बात को जानना	33
35	श्री सोहन लाल और श्री प्रीतम दास की शंका का निवारण करना	34
36	डेरे आने से पहले ही बता देना	34
37	श्री राम किशन को नौकरी की बख्शिश करना	35
38	सात साल बाद बोलना	35

39	जंगल के शेर भी झुकते थे	36
40	श्री दीवान चंद जी को ज़मीन की बख्शिश करनी	36
41	श्री सेरू राम की मुक्ति करनी	37
42	श्री जगत राम की मुक्ति करनी	37
43	श्री हरगोपाल सिंह और बीबी महिन्दर कौर को औलाद की बख्शिश ...	38
44	श्री कृपाल सिंह की रक्षा करनी	38
45	महाराज जी की भविष्यवाणी	39
46	108 संत सरवण दास महाराज जी (उदासीन) का 108 संत बाबा भगत ..	40
47	डेरे पहुँचने से पहले ही बता देना	46
48	आध्यात्मिक चढ़ाई के बारे में विचार-विमर्श करते थे	47
49	श्री 108संत सरवण दास महाराज जी की दिल्ली यात्रा और मानवता के मसीहा डॉ. अम्बेडकर जी के साथ मेल	47
50	श्री खुशी राम के पिछले जन्म की कथा बतानी	49
51	श्री किशन सिंह मसताना जी की पुत्री गेजो की रक्षा करना	49
52	श्री स्वर्ण दास को लड़कों की दात बख्शिश करना	50
53	स. चन्नण सिंह को वरदान देना	51
54	श्री इन्द्र दास और बीबी ज्ञान को लड़के की बख्शिश करनी	51
55	श्री करतार चन्द को पुत्र की दात बख्शिश करना	52
56	श्री दर्शन सिंह को पुत्रों की दात बख्शिश करना	52
57	जादूगर ने तौबा की	53
58	स. आसा सिंह सैनी को पौत्रों की दात बख्शिश करना	53
59	श्री गरीब दास को ज़मीनदार बनाना	53
60	स. अमरीक सिंह को पुत्रों की दात बखशिश करनी	54
61	स. प्यारा सिंह को ज़मीन की बख्शिश करना	54
62	पहला बोर ही चलेगा	55
63	श्री उजागर राम को ज़मीन की बख्शिश करना	55
64	श्री भगत राम को ज़मीन की बखशिश करना	56
65	श्री भाग मल्ल भण्डारी की इच्छा पूरी करनी	56
66	श्री कर्म चन्द को पुत्र की दात बखशिश करना	57
67	श्री गुरमीत सिंह को तरक्की बख्शिश करनी	57
68	श्री गुरमीत सिंह की युद्ध में रक्षा करना	57
69	स. हरी सिंह मनोकामना पूर्ण करनी	58
70	श्री आया सिंह 'पराया' को कवि बनाना	58
71	पुत्र की मौत के बारे में बताना	59
72	स. बिक्कर सिंह को संतान की बख्शिश करनी	59
73	स. कर्म सिंह और बीबी महिन्दर कौर पर संतान की बख्शिश	60
74	फौज़ी जोगिन्दर सिंह की घर वापसी	60
75	स. दर्शन सिंह को संतान की बख्शिश करना	61
76	श्री गुलवंत सिंह को तरक्की बखशिश करनी	62
77	संतों का सत्कार	62

78	श्री फुमण राम की इच्छा जानना	63
79	मिस्त्री हरी सिंह और बीबी गुरबचन कौर को संतान की बखशिश करना	64
80	बीबी गुरमीत कौर को पुत्रों की बख्शिश करना	64
81	स. गुरमीत सिंह की सुपत्नी बख्शिश कौर की बीमारी हटाना	65
82	स. गुरमीत सिंह जी को दो पुत्रों की दात देना	66
83	श्री उजागर सिंह पर कृपा करनी	66
84	स. लाल सिंह को पुत्रों की बख्शिश करनी	67
85	स. स्वर्ण सिंह विदेश मंत्री की शंका दूर करना	68
86	स. पाखर सिंह और बीबी बख्शिश कौर को पुत्र की दात देना	69
87	संगतों की इच्छा पूर्ण करना	69
88	श्री गरीब दास पर कृपा करना	70
89	श्री कृपा राम की इच्छा पूर्ण करना	70
90	श्री कृपा राम को गंगा के दर्शन करवाने	71
91	श्री कृपा राम की रक्षा करनी	72
92	बीबी रक्खी पर कृपा करनी	72
93	श्री सुन्दर राम की शंका दूर करना	74
94	श्री सिमरन दास को पुत्रों की दात बख्शिश करना	74
95	श्री गुरबचन सिंह विरदी को संतान की बख्शिश करना	75
96	श्री सोहन सिंह को संतान की बख्शिश करनी	76
97	बाबू मेहर चन्द की इच्छा पूर्ण करना	76
98	श्री कर्म चन्द पर कृपा करना	77
99	श्री साधु राम की इच्छा पूरी करनी	77
100	श्री तरसेम लाल को नौकरी बख्शिश करना	78
101	सत्गुरू अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं	78
101	श्री खुशी राम और बीबी बचनी पर बख्शिश करना	79
102	भारत की आज़ादी के बारे में बताना	79
103	बीबी हरजीत कौर की शंका दूर करना	80
104	भाई अम्मी सिंह के लड़के सरदार प्रकाश सिंह को नौकरी की बख्शिश..	81
105	श्री सुरैण दास के परिवार पर कृपा करनी	81
106	श्री हरजी मल्ल को तरक्की बख्शिश करनी	82
107	स. गुरबचन सिंह और बीबी सुरजीत कौर को पुत्रों की बख्शिश करनी	83
108	स. कर्म सिंह हवलदार की रक्षा करनी	83
109	स. कर्म सिंह की मुक्ति करनी	84
110	चारों पुत्रों का सरकारी मुलाज़िम होना	84
111	स. कर्म सिंह पर कृपा करनी	85
112	बलटोई दोबारा खीर से भरना	86
113	श्री सदा राम और बीबी हरबंस कौर की शंका दूर करनी	86
114	संत मार्ग पवित्रता का मार्ग है	87
115	संतान की बख्शिश करनी	87
116	बीबी के रोग काटने	88

117	अमरू उठ कर बैठ जा	88
118	श्री जैमल सिंह के आँखों की रोशनी ठीक करनी	91
119	स्वर्ण दास पहलवान की भविष्यवाणी करनी	92
120	सन् 1965 ई. की लड़ाई के बारे में पहले ही बताना	93
121	श्री धन्ना सिंह को ज़मीन की बख्शिश करना	93
122	श्री साधु राम और बीबी दानी देवी को संतान की बख्शिश करना	94
123	श्री साधु राम जी पर बख्शिश करनी	94
124	श्री साधु राम जी की शंका दूर करना	95
125	श्री साधु राम जी को अंतिम समय दर्शन देने और सहाई होना	96
126	स. लक्ष्मण सिंह और बीबी कर्म कौर पर कृपा करना	96
127	स. दर्शन सिंह की सन् 1971 ई. की लड़ाई समय रक्षा करनी	99
128	महाराज सरवण दास जी का संत गुरदित्त राम के साथ मिलाप	100
129	तुम्हारे सभी बच्चे विद्या पढ़ेंगे और नौकरी करेंगे	101
130	श्री नसीब राम की शंका दूर करनी	102
131	आपकी इच्छा पूरी होगी	102
132	बारिश बहुत आ रही है	103
133	लंगर बेअन्त है	103
134	स. गुरदेव सिंह को ऑपरेशन से बचाना	104
135	सत्गुरू जी द्वारा मास्टर रतन चन्द जी को नाम-दान की बख्शिश करनी	106
136	स. गुरदीप सिंह और बीबी हरबंस कौर को पुत्र की दात बख्शिश करना	107
137	स. गुरदयाल सिंह को बचाना	107
138	श्री राम लाल की शंका निवारण (दूर) करना	108
139	श्री गुरदास राम सुच्ची पिंड गाँव वालों का पहली बार कुटिया पर आना	108
140	महाराज जी का चार वर्ष की बच्ची द्वारा कुरता खींचना और चार ...	111
141	डेरे के और श्रद्धालुओं के साथ मिलाप	112
142	श्री गुरदास राम को डेरे से घर भेजना	112
143	हजूर का मेरे घर में चरण डालना	114
144	महाराज जी दिलों की जानते थे	120
145	अलोप हो जाना	121
146	पढ़ाई और सफ़ाई पर पहल	122
147	मेरा वैद्य गुरू गोबिन्दा	123
148	हजूर का अस्पताल आना	125
149	ज्योति-ज्योत समाने सम्बन्धित चमत्कार	126
150	महाराज सरवण दास जी की याद में गाँव सुच्ची पिंड में श्री गुरदास राम ..	128
151	महाराज जी ने प्रातःकाल चार बजे हाज़िर होना	131
152	हजूर महाराज स्वामी सरवण दास जी के अस्थियों के कलश ..	132
153	साधु वचन अटल	133
154	गुरू की प्रंशसा	136
155	मन्दिर बनाना	137
156	कामरेड को सत्य का ज्ञान देना	138

157	अजीब इलाज़ बीमारी को ठीक करना	140
158	संत सरवण दास जी महान थे	142
159	श्री बख्शी राम की बीमारी दूर करना	143
160	श्री गुरमेज राम पर कृपा करनी	143
161	जाओ जा कर सेवा करो तुम्हें कुछ नहीं हुआ	144
162	कल को 12 बजे बारिश होगी	146
163	बताओ तुम्हारे साथ कैसे हुई	147
164	अब पछताए क्या बने	147
165	श्री रेशम लाल पर कृपा करनी	148
166	श्री दर्शन सिंह हवलदार की 1971 ई. के भारत-पाक युद्ध समय ...	148
167	कीचड़ में फंसी हुई बस को बाहर निकालने की कथा	149
168	बीबी मेहर कौर की मनोकामना पूर्ण करनी	150
169	श्री मस्सा सिंह फौजी की शंका दूर करनी	150
170	श्री मुंशी राम लम्बड़दार की शंका दूर करनी	151
171	लम्बड़दार के मन का वहम दूर करना	152
172	श्री साधू राम पर कृपा करनी	153
173	श्री गुरदयाल सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी हरि कौर को पुत्रों की ...	153
174	श्री नाजर सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी धन्ती को पुत्रों की दात ...	154
175	स.कुलदीप सिंह को पुत्र की बख्शिश करनी	154
176	स. कपूर सिंह की बीमारी दूर करनी	155
177	स.कपूर सिंह की शंका दूर करनी	156
178	गेहूँ जल्दी काट लो	157
179	स.प्यारा सिंह को झूठे केस से बचाना	158
180	आज दूध बढ़ गया है	159
181	मुट्ठी भर कर संगत की ओर लुगाठें फेंकना	160
182	बीबी धन्ती को तुरन्त घर भेजना	161
183	बीबी अमरो के दु:ख काटने	161
184	आज बारिश होगी	162
185	श्री दौलत राम जी की इच्छा पूर्ण करनी	163
186	महाराज सरवण दास जी का श्री दौलत राम जी के घर जाना	164
187	श्री गुरमेल राम और बीबी नंती के पुत्र ठीक करने	165
188	मास्टर जग्गू राम को मुक्ति प्रदान करना'	166
189	स.प्रकाश सिंह की 1965 ई. की भारत-पाक युद्ध समय रक्षा करना	167
190	साखी रक्षा करने की	168
191	संत सरवण दास महाराज जी का श्रीमान् जगीरी राम को अंग कटी ..	168
192	चोरों को सच का उपदेश देना	169
193	दूध आ रहा	170
194	लड़का आपकी गरीबी दूर करेगा	170
195	महाराज सरवण दास जी का आलोप होना	171
196	श्री नाम देव जी को ज़मीन बख्शिश करना	171

197	नाम देव राज के परिवार को चोरों से बचाना	172
198	संत गरीब दास महाराज जी ने फौजी बलवीर सिंह की रक्षा करनी	173
199	गाँव पंडोरी पर कृपा करनी	173
200	कच्ची लस्सी	174
201	संत हरि दास जी महाराज की ओर से श्री धन्ना राम और बीबी करमी ..	175
202	तुमने बस कर नहीं था कहना	175
203	जब अलूणी सिल का भी मूल्य पड़ा	177
204	आँखों का इलाज़ करना	178
205	हमें तो तुम्हार चौबारे बने दिखाई देते है	179
206	हीरे के साथ हुई साखी	179
207	बेआसरों के आसरे	180
208	वैद्यों के वैद्य	181
209	क्यों पुत्र बच कर आ गया?	183
210	श्री चानण राम पर कृपा करनी	184
211	मुझे व्यक्ति की योनी डाल दो	184
212	रखनेहार सत्गुरू	185
213	डर दूर करना	185
214	प्रमाण तथा प्रत्यक्ष	187
215	मूंगफ्ली की रक्षा	187
216	श्री चानण राम की चिंत्ता का अंत करना	188
217	आधी रात का संदेश	189
218	माया संतों की दासी	190
219	सौ रुपए से चार सौ रुपए हो जाना	190
220	स.पाखर सिंह जी का सूबेदार बनना	191
221	दर्द का इलाज़ और अन्य बख्शिश	192
222	स.लैम्बर सिंह को चरणों से लगाना	193
223	स.लैम्बर सिंह की पत्नी और बच्चों की रक्षा करनी	194
224	हमारी ओर से चाहे खीर बना लो	196
225	लंगर का ख़त्म न होने वाला भंडार	196
226	पुत्रों की दात बख्शिश करना	197
227	घोड़े की दौड़ और पैदल दौड़	198
228	यही दिन ही शुभ है	198
229	संतों का वचन न मानना	199
230	डूबने से बचाना	200
231	इसने तो ठीक हो जाना है	201
232	इसने तो ठीक हो जाना है	202
233	बीबी तुम्हारा बच्चा खेलने गया है	203
234	लूटे हुए पैसे वापिस आने	203
235	इनको शरबत पिलाओ	204
236	जंग में रक्षा करना	205

237	हम आप के साथ हैं	206
238	यहां कोठियां बनेगी	207
239	आप का वह काम तो हो जाना चाहिए था	208
240	बाबा सावन सिंह डेरा ब्यास जी का ज्योति-जोत समाना	209
241	जाओ ब्यास चले जाओ	210
242	गाड़ी ऊपर से निकल गई	211
243	बीमारी का इलाज़	211
244	वर्ष बाद आना	212
245	इन में दो तीन रूपये और डाल कर शराब ले लेना	213
246	शंख बजना	213
247	जो महाराज जी ने दिखाया वह सब बन गया	214
248	अटल वचन	215
249	श्रीमान् बंगड़ जी पर महाराज जी की अपार कृपा	215
250	मन की जानने वाले	216
251	गुरू धारण	218
252	टांडे वालों के लड्डू आने वाले हैं	219
253	ड्व्ह्ल ऋ्ध ढ्हञ्ढऋ्ध ढ्ह ञ ॥श्व ़्य.	220
254	ज़मीन बख्शिश करनी	220
255	उन्होंने तुम्हें मार देना था	221
256	महाराज जी ने गंगा के दर्शन करवाने	223
257	चाय पी कर घर को जाओ	223
258	सत्गुरू जी की हवा में समाधि	225
259	सूली से सूल बनाना	226
260	श्री चन्नण सिंह को बचाना	226
261	लगा लो, भाई जो बांध हमसे लगवाना है	227
262	अब तुम पास कर गई	227
263	बेटी वह ठीक है	228
264	सेवकों की विदेश में रक्षा करनी	229
265	सूखी फसलें	230
266	ओए तुम डोले क्यों थे	230
267	संत हरी दास महाराज जी	231
268	संत हरी दास महाराज जी की और बीबी परमजीत की शंका दूर करनी	232
269	इन को पुत्र भी देने पड़ने हैं	232
270	बताओ तुम्हें कहां से भूलता है	233
271	आप फैक्टरी बंद न करो	234
272	जब समाधि लगा कर याद करोगे,तभी दर्शन देंगे	235
273	यह बच्चे धोखा नहीं देंगे	236
274	तुम्हारे पतासे भी खाऐंगे	237
275	रिद्धी-सिद्धी नामे की दासी	237
276	लड़का तो हमने स्वयं पीटा है	238

277	आज चोरों ने आना है	239
278	आज मिस्त्री दलीप सिंह जी ने आना है	239
279	अब आप को दूध मांगने की ज़रूरत नहीं है	240
280	वो हमारी भूल थी	241
281	आप अंर्तयामी संत हो..हम बाहरमुखी हैं	242
282	श्री शीतल दास जी बूटा मण्डी वालों द्वारा आँखों देखा कौतुक	242
283	महाराज जी का अचानक अलोप होना	242
284	आँख झपकते ही हाज़िर होना	243
285	तलवार वाला व्यक्ति	243
286	पागल का इलाज़	244
287	पागल औरत को ठीक करना	244
288	मेरे मन की बात पूरी करनी	245
289	गर्म पानी और कीड़े	245
290	तन के ही कपड़े उतारने	245
291	मिलावट की कमाई	246
292	शादी में प्रकट होना	246
293	एक और यात्री गाड़ी का आ जाना	247
294	चले सभी ने जाना है	248
295	महाराज जी द्वारा विराट रूप दिखाना	249
296	चोरी घी, शक्कर खाने का महाराज जी को पता होना	249
297	स.भगत सिंह मल्ल जी सत्गुरू जी की महिमा ऐसे ब्यान करते हैं	250
298	सिर पर कटोरियों से भरी हुई बोरी रखनी	250
299	श्रीमान महिंगा राम वृतांत बरनाला (नवां शहर)	251
300	फिर शराब नहीं पीनी	253
301	बच्चा कहे साइकिल के डंडे पर बैठना है	254
302	समुन्द्र पी कर लवा खुशक रखते है	255
303	आज रूह (आत्मा) सचखंड जाएगी	256
304	मुकद्मा तुम्हारे हक में होगा	256
305	मेरे गुरू सरवण दास महाराज जी आ गए हैं	257
306	सत्गुरू अपने सेवकों के कार्य स्वयं संवारते हैं	259
307	तुम्हारे बैल वापिस आ जाने हैं	259
308	पूरन संतों के बोल भी पूर्ण होते हैं	260
309	तुम्हारा सदा के लिए उद्धार हो गया है	261
310	प्रभु जी बसे साधू की रसना	262
311	कृपा करनी	263
312	गर्दन की खिचांव की बीमारी को ठीक करना	263
313	रेलवे के सभी अवार्ड मिलने	264
314	बच्चों की पढ़ाई पर उठे	265
315	आप नहर की ओर से मत जाना	265
316	जहां जहां खूंडी घूमायेंगे वह ज़मीन आप की होगी	266

317	राज कुमार ठीक हो जाएगा	267
318	दो नंबर की न खाना-मालिक बहुत देगा	267
319	हम सारी रात सोये नहीं	268
320	तुम्हारे तो सारे ग्रह काटे गए	269
321	हमने तो सब के पार उतारे करने हैं	269
322	बीबी सारे वचन पूरे न हुए तो कुटिया न आना	270
323	बीबी गुरदीप कौर को लड़के की दात बख्शिश करना	270
324	महाराज जी का जेब में से सेब प्रगट करना	271
325	सुमन परिवार पर संतों की रहमत होनी	272
326	तुम्हें सभी नमस्कार करेंगे	275
327	यह लड़कियां ऊँची तालीम प्राप्त करेंगी	276
328	श्री गुरनाम चंद सुमन को पुत्र की दात बख्शिश करना	276
329	मरे हुए बच्चे को जीवन दान बक्शना	278
330	हमें भी भगवान् के दर्शन करवा दो	281
331	श्री गुरनाम चंद जी	282
332	सत्गुरू सरवण दास जी की सेठ लक्ष्मण दास पर कृपा	282
333	सेठ लक्ष्मण दास को पौत्रों की दात बख्शिश करनी	285
334	श्री साधु राम हीर पर कृपा करनी	286
335	बीबी रख्खी पर कृपा करनी	286
336	बीबी गुरमीत कौर की इच्छा पूरी करनी	287
337	श्री सतनाम सिंह जी पर कृपा करनी	288
338	श्री मंगू राम जी पर कृपा करनी	288
339	लंगर का प्रबंध होना	288
340	महाराज जी के आलौकिक करिश्मे के दर्शन करना	289
341	स. हरभजन सिंह पर कृपा करनी	289
342	दोबारा यह कार्य नहीं करना	289
343	श्री चमन लाल चोपड़ा और परिवार की रक्षा करनी	290
344	श्री अमर दास भुट्टा पर कृपा करनी	290
345	फल अपने बच्चों को दे देना	291
346	श्री स्वर्ण दास बंगड़ पर कृपा करनी	291
347	श्री रौणकी राम जी के दिल की बात जाननी	292
348	बीबी करतार कौर की उम्र बढ़ाना	292
349	जानी-जान सत्गुरू	292
350	आपकी गरीबी दूर हो जाएगी	293
351	अटल वचन	293
352	इस लड़की ने आपको तारना है	293
353	अपने सेवकों के आप रखवाले	294
354	श्री गुरदास राम जी का अंतिम समय	294
355	स.पूरन सिंह के परिवार पर कृपा करनी	295
356	श्री पाल चंद जी के दु:खों को दूर करना	296

357	सुखविंदर लाल के कार्य पूर्ण करने	298
358	मन की बात जानना	298
359	स. सवरन सिंह को बचाना	299
360	संत नहीं मरते	299
361	सेवक का विश्वास	299
362	संगतों का प्रेम संतों को खींच लेता है	300
363	व्यर्थ न जाए जन की अरदास	301
364	लाल पांव में नहीं रोलते	301
365	श्री कर्म चंद और बीबी निर्मल कौर को बच्चों की दात बख्शिश करनी	302
366	संसार चंद को अफ़सर बनाना	303
367	श्री लख्मी दास जी की रक्षा करनी	303
368	बीबी विद्या जी की मनोकामना पूर्ण करनी	303
369	संत हरि दास जी की ओर से दरवाज़ा खटखटाना	304
370	व्रत नहीं रखने	304
371	बाहर जाकर हमें पत्र लिखना	304
372	श्री सतपाल जी की रक्षा करनी	305
373	यहां से ही सड़कें बनाते जाओ	305
374	आसान काम मिलेगा	305
375	अध्यात्मिक मार्ग	306
376	प्रत्यक्ष दर्शन	306
377	दो हफ़्ते रूक जाओ	306
378	महाराज जी का अलोप होना	307
379	बालकों को प्यार	307
380	छेकड़ले (आख़िरी) मेले	307
381	पैसे ख़त्म नहीं होंगे	308
382	श्री धर्मपाल जी पर कृपा करनी	308
383	श्री धर्मपाल की रक्षा करनी	308
384	ऊँचे ओहदे(पद)	309
385	फ्लाइट हमारा इन्तज़ार कर रही है	309
386	औलाद की बख्शिश	310
387	औलाद की बख्शिश करनी	310
388	घर ले जाओ ठीक हो जाएगा	310
389	दिल्ली से ही इंग्लैंड चले जाओ	311
390	गुरू रविदास जी का अस्थान यहां बनेगा	311
391	बच्चों की दात बख्शिश करना	311
392	डेरा सचखंड बल्लां में दलित चेतना कान्फ्रैंस	312
393	कॉन्फ्रैंस में आए हुए महान् प्रतिनिधियों के विचार	319
394	निरंजन पर कृपा करनी	321
395	श्री कृपा राम के मन की बात जाननी	322
396	महाराज जी कौम के बारे चिंतित थे	322

397	अपने सेवकों की रक्षा करनी'	322
398	बलदेव को जीवन दान बख्शिश	323
399	श्री दर्शन लाल को जलेबियां खिलानी	323
400	संत हरविंदर दास जी की जान बचानी	324
401	तुम्हारा कोई काम नहीं रूकेगा	324
402	तुम्हारे पांच बच्चे होंगे	324
403	औलाद की बख्शिश करनी	325
404	मारने आए-भूल बख्शा कर गए	325
405	आज रात की तो सारी बात है	325
406	सत्गुरू जी मन की जानने वाले थे	326
407	तुम्हें मिलेगी	327
408	औलाद की बख्शिश करनी	327
409	सत्गुरू अपने प्रेमियों की रक्षा स्वयं करते हैं	327
410	स.जगीर सिंह लम्बड़दार सुच्ची गांव वालों की ओर से संतों के	328
411	सच्चे मन से की प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती	329
412	चिरंजी लाल का विदेशी ज़ेल से रिहा होना	330
413	सत्गुरू की कृपा से ब्यास गांव में गुरू घर का निर्माण	330
414	सूबेदार ब्रह्म सिंह जी की सत्गुरू को श्रद्धांजली	332
415	समर्थ गुरू थे स्वामी सरवण दास जी	332
416	कृपा राम की बदली होना	333
417	जय चंद के हाथ से माया निकल जानी	334
418	मरा हुआ कबूतर जीवित होना	335
419	मूल राज की साखी अपनी ज़ुबान से	336
420	मूल राज की आपबीती	337
421	सत्गुरू सेवकों को शिष्य से अधिक प्रेम देते थे	339
422	सात जन्मों का फकीर	339
423	दो किलोमीटर में तीन रेलवे स्टेशन	340
424	सत्गुरू अपने प्रेमियों की हर जगह रक्षा करते हैं	340
425	सत्गुरू अपने सेवकों से स्वयं नाम जपाते हैं	341
426	धन्य है मेरे सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी	342
427	श्री किशन सिंह विरदी की पत्नी को जीवित करना	343
428	किशन सिंह विरदी को बचाना और बहादुरी का अवार्ड मिलना	344
429	भगवान ही करवाए तो सलामें होती है	345
430	श्री सीबू राम काहनपुर(गांव) के जख्म ठीक करना	346
431	राज मॅल को रिहा करवाना	347
432	सत्गुरू के हुक्म की पालना करना	348
433	साधुओं की अपनी मौज़ होती है	348
434	गरीब दास ब्यास गांव वाले को पुत्र की दात बख्शिश करनी	349
435	माता का दिल का ऑपरेशन ठीक होना	350
436	सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सब कुछ जानते थे	351

437	नसीब चंद जंडू सिंघा वाले पर कृपा करनी	351
438	एक ही खूंडा बहुत है	352
439	सच्चा सत्गुरू अपने सेवकों का यहां वहां सहाई होता है	353
440	श्रद्धा भावना में बरकत होता है	354
441	संतों में और भगवान में कोई अन्तर नहीं होता	354
442	संतों के इम्तिहान नहीं लेने चाहिए	355
443	राम मूर्ति को डेरे में सेवा करने का हुकम करना	355
444	सत्गुरू जी बेअन्त करनी के मालिक थे	356
445	सत्गुरू जी की कृपा से बिना तेल गाड़ी का चलना	357
446	सात बेटियों से पुत्र की दात बख्शिश करना	357
447	गिल पट्टी में बेरी का दोबारा हरी होना	358
448	सत्गुरू जी बुरे कामों से रोकते थे	358
449	महाराज जी के वाक्य सत्य हुए	359
450	पूर्ण महापुरूष स्वामी सरवण दास जी महाराज	360
451	लिदड़ां गांव में गुरू घर की नींव रखना	360
452	सत्गुरू श्रद्धा भावना वालों के होते है	361
453	तीन खूंडों की देन	362
454	महाराज जी ऊपर से ऊपर तरक्की देते रहे	363
455	मुन्ना कुटिया अकेली आ गई	363
456	महाराज जी बच्चों में आत्म-विश्वास पैदा करते थे	364
457	महाराज जी कौम में विद्या का प्रचार चाहते थे	365
458	सत्य में 11 जून हमारे लिए आज भी अंधेरा है	366
459	मालिक चाहे तो थोड़े में ही बरकत हो जाती है	366
460	इसके मनी आर्डर आने हैं	367
461	डरना नहीं! जाओ	367
462	इसको एक कम्बल और दे दो	368
463	संतों के बोल सत्य होते हैं	368
464	महाराज जी की कृपा से थोड़े में ही बरकत होती है	369
465	पूर्ण गुरू अपने सेवकों को भी साथ लेकर जाते हैं	369
466	इतनी करनी के मालिक थे मेरे सत्गुरू	370
467	खूंडे वाले की मेहर सदका	371
468	पूरा गुरू सेवकों को डोलने नहीं देता	372
469	बंगड़ रायेपुरी को पुत्र की दात	372
470	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	374

* * *

दो शब्द

प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय।
सांचे सामी मिलन कूं आनंद कह्यो न जाय।।

धन्य धन्य जगत्गुरू रविदास जी महाराज जिन्होंने इस संसार मे सभी प्राणियों को एकता, ममता, भाईचारे, मानव-प्रेम, संतो की संगति करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश प्रदान किया। जहाँ जगत्गुरु रविदास जी महाराज ने सदियों से पीड़ित समाज में आकर इसे सभी बंधनों से मुक्त किया, वहीं मानव विरोधियों को भी सत्य उपदेश प्रदान किया।

"सतसंगति मिलि रहीए माधउ जैसे मधुप मखीरा"।

इस तरह सतसंगति के उपदेश के द्वारा उन्होंने विश्व भाईचारे का पावन उपदेश दिया और पूरे विश्व को बेगमपुरा वतन बनाने का संकल्प दिया ऐसे महान क्रांतिकारी, जगत्गुरू रविदास जी महाराज का आगमन माघ सुदी पंद्रास 1377 ई° (1433 वि° संवत) में सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी में पिता श्री संतोख दास जी तथा माता श्रीमती कलसी देवी जी के घर में हुआ। समाज में समानता स्थापित करने के लिए गुरू जी ने मकर संक्रांति पर अपना कंधा चीर कर चार युगों के प्रतीक चार जनेऊ दिखाए और सूत के जनेऊ को उतार दिया। बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व के अवसर पर आप जी ने गंगा घाट पर शिला को पानी में तैराया तथा राणा संग्राम सिंह (राजा सांगा) एवं रानी झाली के दरबार मे अनेकों रूप धारण कर संगत-पंगत की प्रथा प्रारम्भ की। आप जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय देश विदेश में उदासियां करते हुए, सभी जीवों को सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देते हुए व्यतीत किया। असंख्य राजा, महाराजा और सभी वर्गों के लोग आपके पावन चरणों में आकर नतमस्तक हुए। इस प्रकार मानवता का उद्धार करते हुए आषाढ़ की संक्रांति (1528) (1584 विक्रमी) को आप सणदेही बनारस में ज्योति जोति समाए। जगत्गरू रविदास जी महाराज जी को भक्ति का सिरमौर (शिरोमणि) समझते हुए सतगुरू कबीर जी फरमाते हैं।

साधन में रविदास संत है, सुपच ऋषि सो मानिया।
हिंदू तुरक दुई दीन बने है, कछु नहीं पहिचानिया।।

अर्थात् संतजनों में महान् संत सतगुरू रविदास जी है, जिन्हे दुनिया एक महान् संत ऋषि मानती है। तात्कालिक समय के हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही उनके समक्ष नत्मस्तक हुए और उन्होंने श्री गुरू रविदास जी को प्रभु समझ कर जाना । जगत् गुरू रविदास जी के मानवता के प्रति उपकार को, अपनी वाणी द्वारा संत पीपा जी इस प्रकार उच्चारण करते हैं: ।

जे कलि रैदास कबीर ना होते, लोक वेद अरू कलिजुग
मिलि कर भगति रसातल देते।

आर्थात् यदि सत्गरु रविदास जी और सत्गुरु कबीर जी यथा समय अवतरित न होते, तो तत्कालीन उच्च वर्ग , वेद और कल्युगी विचारधारा ने, भक्ति को पाताल में दफन कर देना था।

xix

रविदास चमारू उसतति करे
हरि कीरति निमख इक गायि।।
पतित जाति उतमु भइया
चारि वरन पए पगि आयि।।

सत्गुरू राम दास जी फरमाते हैं कि सत्गुरू रविदास जी ने एक ओंकार परमात्मा की ऐसी भक्ति, आराधना एवं उपमा की, कि वह परमात्मा का ही रूप हो गए। नीच समझे जाने वाली जाति में जन्म लेने के बावजूद भी, उनकी भक्ति और आध्यात्मिकता के कारण, चारों वर्णों के लोग उनके चरणों में नत्मस्तक हुए। सत्गुरू अर्जुन देव महाराज जी, आप जी की उपमा करते हुए फुरमाते हैं:-

ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी
रविदास ठाकुर बणि आई।।

अर्थात् ऊँच से ऊँच समद्रश्ष्टि वाले सतगुरू नामदेव जी हुए हैं और सतगुरू रविदास आप इस संसार में प्रभु बनकर आए। जगत्गरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं :

मेरी जाति कुट बांडला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आस पासा।।
अब बिप्र परधानु तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणायि रविदासु दासा।।

अर्थात् मेरा जन्म उन लोगों में हुआ,जो बनारस के आस-पास, प्रतिदिन, मृत्त पशुओं को ढोते हैं। परन्तु मैंने प्रभु के नाम की शरण ली और आज बिप्रों के प्रधान लोग, मुझे दंडवत् नमस्कार करते हैं। जगत्गरू रविदास जी महाराज जी के कल्याणकारी, समाजवादी, क्रांतीकारी और अध्यात्मक उपदेशों को सुनकर राजा नागर मल्ल (हरदेव सिंह), राणा वीर बघेल सिंह, राजा सिकंदर लोधी, महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) राजा चन्द्र प्रताप, राजा अलावदी बादशाह, बिजलीखान राणा रतन सिंह, महाराणा कुंभा जी, राणा सांगा, राणी झाली, राजा बैन सिंह, राजा विजयपाल सिंह, महान् संत मीरा बाई जी, बीबी कर्मा बाई जी, राणी रूपमती, बीबी भानमती जी, संत सधना जी, संत परमानंद जी, संत गोरख नाथ जी सहित सभी अन्य राज और सभी वर्गों के लोग उनके चरणों में झुके। मानवता के मसीहा डॉ0 भीम राव अम्बेडकर साहिब जी ने भारतीय संविधान की रचना, गुरू जी के पावन शब्द 'बेग़मपुरा सहर को नाउं के आधार पर की।

रविदास सोइ साधु भलो,जऊ रहइ सदा निरवैर।
सुखदायी समता गहहि सभनह मांगहि खैर।।

ऐसे ही महान् परोपकारी तपस्वी ब्रह्मज्ञानी सत्गरु स्वामी सरवण दास जी ने गांव बल्लां की पावन धरती पर श्वास श्वास प्रभु का सिमरन किया तथा सांसारिक जीवों को प्रभु का सिमरन करवाया। आप सदैव संगत को विद्या ग्रहण करने, माता पिता की सेवा करने, बड़ों का सम्मान करने, छोटों के साथ प्रेम करने, संतों की संगत करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया करते थे। गांव बल्लां की ही पावन धरती पर उन्होंने डेरा का निर्माण करवाया तथा दिनांक 2 फरवरी 1964 को इस अस्थान का नामकरण

"डेरा रविदासियाँ दा" का नाम देकर रविदासियों की पहचान को आगे बढ़ाया। एक बार श्रद्धालुजनों ने सतगुरु सरवण दास महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की कि महाराज जी रविदासिया कौम की गुलामी की जंजीरें कब टूटेंगी? तब सतगुरु सरवण दास जी ने फरमाया कि जब जगत्गुरु रविदास महाराज जी की अमृतवाणी एकत्रित होगी। अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इन्होंने जगत्गुरु रविदास महाराज के पावन जन्म अस्थान की खोज की तथा आषाढ़ की सक्रांति 14 जून सन् 1965 ई° में संत हरी दास जी महाराज के कर कमलों से उसका शिलान्यास रखवाया। संत गरीब दास जी महाराज की निगरानी में इस स्थान पर निर्माण कार्य करवा कर समाज को एक महान् तीर्थ स्थान प्रदान किया तथा उच्चारण किया कि इस पावन तीर्थ स्थान पर समस्त विश्व से संगत आया करेगी। 7 अप्रैल 1990 को इस मंदिर पर 7 फुट स्वर्ण कलश सुशोभित किए गया, जिसका उदघाटन बसपा सुपरीमो बाबू कांशी राम साहिब जी ने किया। संत रामानंद जी ने इस स्थान पर स्वर्ण कलश सुशोभित किए तथा स्वर्ण मंडन का कार्य आरम्भ किया।

24 मई 2009 को मानव विरोधियों ने श्री गुरू रविदास टैम्पल वियाना में हमला किया । इस हमले के कारण 25 मईं को प्रभात समय रविदासिया कौम के लिए संत रामानंद जी शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए। इस के विरोध में रविदासियाँ कौम ने पूरे विश्व मे अपनी एकता एवं शक्ति को प्रदशित करते हुए रोष प्रकट किया। इसके पश्चात् जगत गुरू रविदास महाराज जी के 633 वे प्रकाश उत्सव के अवसर पर, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीरगोवर्धंनपुर, वाराणसी से जगत्गुरू रविदास महाराज जी, सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी और संत समाज की कृपा से हजारों की संख्या में विश्व भर मे संत समाज तथा लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रविदासिया धर्म ऐलान किया गया रविदासिया कौम के 20 करोड़ से भी अधिक लोग इस नईं पहचान को पाकर हर्षित हुए। उस रात सदी के सबसे बड़े चन्द्रमा में जगत् गुरू रविदास महाराज जी ने दर्शंन देकर आशीर्वाद दिया। विश्व भर मे अमृतवाणी ग्रन्थ के प्रकाश लाखो की तादाद मे हो चुका है। अमृतवाणी ग्रन्थ की व्याख्या का अनुवाद पंजाबी, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, इटालाईऩ्, डच और अनेक भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है एवं सुखसागर गुटके अनेक भाषाओं में लाखों की संख्या में विशवभर में पहुंच चुके हैं। धरती पर रब पुस्तक को तैयार करने के लिए श्री साधू राम हीर, श्रीमान श्री राम अर्श, श्री कांशी राम कलेर, डा. रमन दादरा (M.A.Ph.D.), प्रो. रीना विरदी, प्रौ. वीना विरदी, प्रो. रमा कुमारी एम.ए., मिस. अंजना, श्री राजेश कैंथ, शिलपा कैंथ एम.ए., के विशेष सहयोग के लिए आभारी हूँ। इस पुस्तक को बड़ी ही मेहनत से हिन्दी में रमा कुमारी और अंजना ने अनुवाद किया, पुस्तक को हिन्दी में टाईप हीना बैंस ने किया और गलतियों की शोध सुमन बाना ने की। जगतगुरू रविदास महाराज जी और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की कृपा से संगत की भेंट करता हुआ प्रसन्ता अनुभव कर रहा हूँ।

गुरू चरणों का दास
संत सुरिन्दर दास बावा

‘रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान’
काहनपुर का संक्षिप्त इतिहास

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर गाँव काहनपुर जिलाँ जालन्धर मे जालन्धर से पठान्कोट जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग पर स्थ्ति है। इस अस्थान की उसारी यहाँ के सरप्रस्त एवं रविदासिया धर्म के अनमोल हीरे श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने करबाई जिसका शिला नयास संत समाज और संगत की उपस्थिती में आदरनीय श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी, श्री 108 संत बीबी क्रिशना देवी जी (गद्दी नशनि) डेरा श्री 108 संत हरिदास महाराज जी बोपाराय कलां वालो ने अपने कर कमलो से 27 मार्च 2014 को रखा, जिसके लिए एक पलाट सरपंच श्री मथुरा दास पुत्र स्व. श्री मोहन लाल जी की पतनी श्रीमति बीबी शकुंतला जी काहनपुर के परिवार की ओर से दिया गया। इस ओर इलाके की संगत में भारी उत्साह पाया जा रहा था। यही कारण है कि जगत्गुरू रविदास नामलेवा संगत की कारसेवा से वर्षों में होने वाला निर्माण कार्य महीनों में कर लिया। आज इस स्थान पर दूर-दूर से संत महापुरुष, समाजिक और धार्मिक सभायें एवं गुरू रविदास महाराज नामलेवा संगत पहुँचती है। एक छोटे से गाँव में निर्मित बुलंदियो को छूता यह अस्थान पूरे विशव में अपनी किरणे बिखेर रहा है। संगत में अधिक प्रचार और प्रसार की ज़रूरतो को देखते हुए यूरोप की संगत की ओर से इस अस्थान के संस्थापक श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी को एक सफारी गाड़ी 01-01-15 को भेट की गई। दो मंज़िला बढ़े हाल में जगत्गुरू रविदास महाराज जी के नाम से एक संगीत अकैडमी खोली गईं है, जिसमें संगीत के धनी अध्यापक हरमोनियम और तबले के साथ संगीत के ज्ञान के बारे में विशेष शिक्षा दे रहे है। जिसमे करीब 50 लड़के-लड़कियां इस अकैडमी के लाभ ले रहे है जिसका सारा खर्च श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी और संगत के सहयोग सदका किया जा रहा है। प्रचार अस्थान पर दुखी और रोगी व्यक्तियो की मदद दवाईयों के साथ की जाती है। बेरोजगार बच्चों को अलग-अलग कोरस और कित्ता मुखी व्यवसायक सम्बन्धित कोरसों से जोड़ा जाता है।

गाँव काहनपुर में बाबा पिप्पल दास जी महाराज बालक संत सरवण दास जी को साथ लेकर सबसे पहले आए। जब कुटिया बनाने के लिए नीव खोदनी आरम्भ की वहा से ड़मोही निकली महाराज जी ने कहा किसी का घर उजाड़कर अपना घर कैसे बना सकते है यह बोल कर अगले गाँव चल पढ़े और वचन किए फिर आएगे और अपना अस्थान बनाएगे श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी के पिता श्री गुरदास राम जी बीबी गुरवचन कौर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के श्रधालू थे। इन के ग्रह पर सत्गुरू जी कई राते रूके। एक समय 1972 ई. में बीबी गुरवचन कौर बिमार हो गई। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। सत्गुरू जी आप संगत सहित सिवल हस्पताल जालन्धर जा के बीबी गुरवचन कौर की जान बचाई और वर दिया के इस पुत्र को नही रोना। तुम्हारे दो पुत्र और होगे। बीबी जी ने उस समय ही बढ़े पुत्र को सत्गुरू सरवण दास जी के चरणो में भेंट किया।

सेवा भावना की गुडती आप जी को अपने माता पिता जी से ही प्राप्त हुई थी। आप जी के आदरयोग्य माता पिता सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी के श्रधालु थे और सत्गुरू सरवण दास जी का पूरा आशीवाद आप जी के पिता श्री गुरदास राम जी को प्राप्त था, जिसकी मिसाल आप जहाँ दी गई है कि जिस वक्त सवामी सरवण दास जी 11 जून

1972 को ब्रहम्लीन हो गए, अंतिम संस्कार करने की त्यारी मकुम्मल थी। चिता मे देसी घी, चंदन की लक्ड़ी, धूप सम्रगरी आदि पाया जा रहा था। अग्न- भेंट करने के लिए अरदास हो चुकी थी। वहाँ पर मौजूद व्यक्तियों के मुताबिक ब्रहम्लीन स्वामी सरवण दास जी महाराज के पाँच तत्व शरीर मे से खून की धारायें निकली जो श्री गुरदास राम जी के शरीर पर गिरी। यह एक विचार योग्य बात है कि यह बूंदे श्री गुरदास राम जी के ऊपर ही कियो गिरी? और फिर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के ब्रहमलीन होने के पूरे 9 माह बाद 14 मार्च 1973 श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी का जन्म एक अध्यिात्मक सवाल खड़ा कर देता है। पाँच वर्ष की आयु में श्री 108 संत हरिदास जी महाराज बावा जी को भगवां भेष पहना कर सुच्ची गाँव से डेरा बल्लां ले आए और श्री 108 संत गरीबदास जी महाराज जी ने उच्च शिक्षा दिलवाई।

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी के द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की और संत समाज की कृपा से 30 जनवरी 2010ई. को रविदासियां कौम को रविदासियां धर्म का ऐलान कर अलग पहचान प्रदान की।

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान पर एक लाइब्रेरी 'सत्गुरू सरवण दास जी महाराज' की याद में बनायी गई है, जिस में हज़ारो की गिनती में पुस्तके है, जिस में 'दलित इतिहास' और दलित सम्बन्दी लिखार्रयों की पुस्तके रखी गई है। महान् गुरू, देशभक्तों, योद्धाओं एवं साहित्कारों से सम्बन्धित साहित्य इस लाइब्रेरी में मौजूद है यहा ही बस नही डॉ. अंबेडकर और अलग-अलग लाइब्रेरीयों दूारा लिखारीयों को मुफत किताबें बांटी जाती है और आने वाले समय में एक मैगज़ीन भी चालू की जा रही है, जो प्रक्रिया अधीन है। जगतगुरू रविदास जी महाराज और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी के मिशन का निरंतर प्रचार होता है।

बावा जी ने 2010, 2011, 2012, 2013 में कई बार यूरोप, आस्टरीया, गरीस, ईटली, फ्रांस, जर्मन, होलैंड, सपेन, नोरवे, अमेरीका, कनेड़ा, यू.ए.ई और यू.के में, 2014 में ईटली और आस्टरीया 2015 में गरीस, ईटली पुरतकाल आस्टरीया, 2016 में अमरीका, कनेड़ा, गरीस, ईटली, आस्टरीया और यू.के 2017 में आस्टरीया, यू.के, गरीस, ईटली, अमेरीका, कैनेडा और यू.ए.ई में, 2018 इंग्लैंड, यूरोप, आस्टरीया, गरीस, ईटली, फ्रांस, नोरवे, अमेरीका, कनेड़ा और यू.ए.ई, 2019 में आस्टरीया, गरीस, ईटली, फ्रांस, अमेरीका, कनेड़ा और यू.ए.ई में रविदासियां धर्म का प्रचार किया।

संत सुरिन्दर दास बावा जी को 2010 में श्री गुरू रविदास सभा बैरगामो ईटली, 2011 में श्री गुरू रविदास सभा करोपी ऐथन गरीस में, 2012 श्री गुरू रविदास सभा वियाना, आस्टरीया 2012 श्री गुरू रविदास सभा बलैन्सीया सपेन 2012 श्री गुरू रविदास सभा रोम 2014 गाँव मदारा, जिला जालन्धर (पंजाब), 11 सितंबर 2015 श्री गुरु रविदास सुखसागर दरबार मनीदी गरीस, 30 दिसंबर 2015 गाँव अलावलपुर 11 सितंबर 2016 साउथ हाल लंदन मे 21 मई 2017 श्री गुरू रविदास भवन वारी इटली मे 28 मई 2017 श्री गुरू रविदास दरबार करोपी, ऐथनस, गरीस और 20 अगस्त 2017 ई. टोरोंटों कैनेडा में, 30 दिसंबर 2017 सुच्ची गाँव में 2 सितम्बर 2018 टिंपटन, यू.के. , 2 नवंबर 2019 को शिकागो अमरीका में रविदासिया कौम की ओर से गोल्ड मैडलों से सम्मानित किया गया।

भारतीय दलित साहित्य अकैडमी दिल्ली की ओर से 2006 में संत सुरिन्दर दास बावा जी को श्री गुरू रविदास नैशनल अवार्ड के साथ सम्मानित किया गया। बढ़ती हुई संगत और प्रचार प्रसार हितो को ध्यान में रखते हुए देश-विदेश की संगत की ओर से पास में कई पलांट इस स्थान को खरीद कर दे दिये। आज यह प्रचार अस्थान एक प्रकाश की किरण बनकर संगतों में उभर रहा है। इस पावन स्थान पर श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने स्थाई तौर पर निवास स्थान बनाया हुआ है। यहाँ आप स्वयम नाम जपते, अमृत बाणी पढ़ते सुनते और संगत को अैसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस पावन स्थान पर रविदासीया धर्म के नियम मुताबिक ही अपने आपको ढालकर चलना पढ़ता है। इस प्रचार अस्थान पर 'अमृतवाणी भवन उसारा गया है, जिसमें अमृतवाणी सतूगुरू रविदास महाराज की सशोभित है जिस के सुबह शाम जाप और सत्संग होते हैं। हर रविवार और संक्रांति पर विशेष दीवान सजाए जाते हैं। यहाँ पर लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस पावन अस्थान पर लोगों की अगाध श्रद्धा है। प्रतिदिन सुबह से शाम संगत र्दशनों के लिए आती है। इस दरबार मे लोगों को नाम बाणी के साथ-साथ समाजिक कुरीतियों जैसे नशे, दहेज, समागमों में अधिक खर्च, भ्रूणहत्या, निंदिया-चुगली से मुक्त होने के लिए, बच्चों को उच्च्च शिक्षा, बजुरगों का स्तकार करने के लिए विशेष प्रचार किया जाता है। यह प्रचार अस्थान सभी के लिए खुला है। प्रतेक धनी एवं गरीब के लिए समान है और सभी के स्तकार हित बनाया गया है। जहाँ पर कोई भी ऊँच-नीच नही है। इस प्रचार अस्थान पर मानवता की भलाई, जगतूगुरू रविदास महाराज जी के बेगमपुरा का संकल्प और डा. भीम राव अंबेडकर जी के पढ़ो, जुढ़ो, संघर्ष करो के विचार का प्रचार होता है। इस अस्थान पर 24 जुलाई 2016 दिन रविवार को संत सुरिंदर दास वावा जी, संत सत्यपाल जी चंढीगड़, संत बीबी कृष्ना देवी जी बोपाराय कलां, संत हरविंदर दास आदमपुर और संत समाज की उपस्थिति में जगतृगुरू रविदास महाराज जी की प्रतिमा 'अमृतवाणी भवन' में स्थापित की गई। इस अवसर पर श्री साधुराम हीर जी (रिटायर चीफ इंजीनियर, नारथ जोन दूरदर्शन) की रविदासिया कौम की बहुमुल्य सेवाओं के लिए गोल्ड मेडल से सम्मान्ति किया गया। इस अस्थान पर रहने और लंगर आदि की सुविधा भी है। इस प्रचार स्थान पर सतूगुरू सरवण दास जी महाराज का संकल्प साकार होता नजर आ रहा है, जिसके बारे में महाराज जी सोचा करते थे कि जगतूगुरू रविदास जी महाराज का घर-घर प्रचार हो। इस महान् कार्य के लिए श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी दिन रात एक करते हुए प्रयतनशील है। सतूगुरू इन पर अपनी कृपा दृष्टी बनाई रखे जो कि कौम के कार्यो के लिए डटे रहे।

– कांशी राम कलेर
जंडू सिंघा (जालन्धर)

तिथि 10 जुलाई 2019 को सचखंड वासी मिशनरी लेखक श्री कांशी राम कलेर की अमुल्य सेवाओं के लिए उनकी पत्नी श्रीमति किरण बाला को संत सुरिन्दर दास बावा जी और संत समाज की ओर की हाजरी में गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया।

सतिगुरू सरवण दास महाराज जी के
जीवन की पवित्र यादें

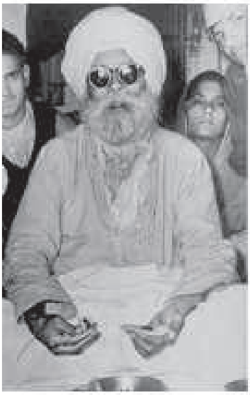

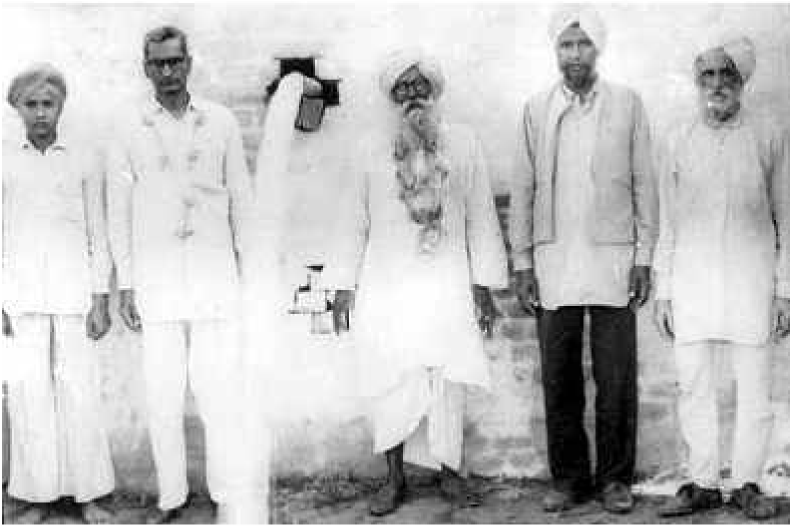

कल्युग काली बदली, बरस रही अंगियार,
संत ना होते जगत में, जल मरता संसार।।

धरती पर रब सत्गुरू सरवण दास जी महाराज

जगत्गुरू रविदास महाराज जी के पावन मिशन को बीसवीं सदी में सत्गुरू सरवण दास जी ने फिर से जागृत किया। दास को सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के आर्शीवाद से सत्गुरू हरी दास जी महाराज जी के चरणों की ओट से पाँच वर्ष की आयु से डेरा सचखंड बल्लां सत्गुरू की सेवा करने का और संगत की सेवा का सौभाग्य प्राप्त है। दास के पास सत्गुरू बाबा पिपल दास जी, सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी और सत्गुरू हरी दास जी महाराज के श्रद्धालु अक्सर आते रहते। उनकी परमार्थी साखियां सुनकर बहुत सम्मान महसूस होता और मन को तसल्ली होती कि दास को ऐसे पूर्ण सत्गुरू के चरणों में सेवा प्रदान की गई है। सत्गुरू हरी दास जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज को रब कह कर बुलाते थे। सत्गुरू हरी दास जी महाराज को जब सत्गुरू स्वामी सरवण महाराज बुलाते थे। किसी काम के लिए तो संत हरी दास महाराज जी यह कहते कि, "रब जी का हुक्म है" और जाते समय 'सत्वचन' कहते थे। सत्गुरू हरी दास महाराज जी ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में लगकर संगत करके उनके आर्शीवाद से नाम जपने, भजन सिमरन के अभ्यास से जान लिया था कि जो परम पिता परमात्मा ऊपर सचखंड में बैठे कर रहे हैं। ऐसे कार्य मेरे सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज धरती पर बैठ कर ही करते जा रहे हैं। आगे के संतों, महापुरूषों गद्दी नशीन ने उपरोक्त रब (परमात्मा) रूपी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज का परमात्मा होना, जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी का स्वरूप होना प्रमाण किया। संगत में भी उनके श्रद्धालुओं ने जो उनके साथ बीती घटनाएं हैं, वर्णन करते समय सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज को रब माना है। कुछ साखियां तो सत्गुरू जी के श्रद्धालुओं ने सुनाई दास ने कलमबद्ध करने की कोशिश की है। सत्गुरू जी का इक्ट्ठा किया हुआ इतिहास आने वाले समय के लिये मार्ग दर्शक बनेगा और संगत इससे ज़्यादा से ज़्यादा लाभ उठायेगी।

रविदासिया धर्म और अमृतवाणी सत्गुरू रविदास जी महाराज के प्रचार और प्रसार को आगे ले जाते हुए सत्गुरू रविदास जी महाराज जी की विचारधारा और स्वामी सरवण दास महाराज जी के मिशन को आगे ले जाते हुए संगत की सेवा में परमार्थी साखियों का संग्रह बहुत लाभदायक रहेगा। यह कुछ साखियों का संग्रह है, आने वाले समय में और भी साखियों का

संग्रह संगतों की सेवा में भेंट किया जायेगा क्योंकि जो भी श्रद्धालु स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों कमलों से जुड़ा है, उसकी हर मुश्किल हल की जाती है। जो श्रद्धा से जुड़ा उसकी हर मनोकामना पूरी की, जिसने परम पिता परमात्मा के दर्शन चाहे उसको दर्शन करवाये। और सचखंड में लेकर गए और आज भी उनके समय के एवं बाद के श्रद्धालु उनके बताये मार्ग पर चलकर अभ्यासी सचखंड जगत्गुरू रविदास महाराज और स्वामी सरवण दास महाराज जी के पावन चरण कमलों में जाने की तैयारी कर बैठे हैं।

दास की इस कोशिश से संगत भरपूर लाभ उठायेगी। जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी के साथ जुड़कर स्वामी सरवण दास महाराज जी के मिशन को आगे बढ़ायेगी। हम रविदासिया धर्म और अमृतवाणी रविदास जी महाराज के अनुसार एक विशाल रविदासिया धर्म को फैलाने में सफल होंगे। च्ऐसा चाहूँ राज पराधीनता पाप है ज्और बेगमपुर के संकल्प को साकार करेंगे तथा आध्यात्मिक तौर पर सभी मानवता को सच के मार्ग पर चलने के लिये सहाई होंगे और स्वामी सरवण दास महाराज जी के स्वप्न साकार करेंगे।

ब्रह्मज्ञानी श्री 108 संत बाबा पिपल दास जी महाराज

रविदास भनै जो जाणै सो जानु।
संत अनंतहिअंतरू नांही।।

जैसे कि साहिब स्वामी रविदास जी महाराज जी फरमाते हैं कि, "इस संसार में संतों एवं महापुरूषों में कोई भेद नहीं है। संत संसार में हमेशा के लिये अवतार हैं। जहां संत इस संसार में भूले-भटके जीवों को परमात्मा से जोड़ते हैं, वहां उनका सांसारिक जीवन भी सुधारते हैं।" उनमें से एक थे महान् समाज सुधारक, ब्रह्मज्ञानी बेगमपुर के धारणी श्री108संत बाबा पिपल दास जी महाराज का जन्म गांव गिल पत्ती ज़िला बठिंडा में हुआ आप जी के दादा जी कतीवाला को छोड़कर कुछ वर्ष गांव जोगानंद रहे पक्के तौर पर गांव गिल पत्ती ज़िला बठिंडा में ही रहने लगे थे। आप जी का पहला नाम हरनाम दास था। आप जी के माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। आप जी हमेशा एकांत में बैठकर प्रभु सिमरन किया करते थे। आप जी के साथ सभी नगर के लोग प्रेमी जन थे। आप जी अपने माता पिता जी की आज्ञा अनुसार खेती का काम बहुत मेहनत से किया करते थे। आप जी ने गुरमुखी की शिक्षा प्राप्त की।

आप जी पंजाबी और बहुत सारे धार्मिक ग्रंथों के विद्वान थे। आप जी हमेशा से वैराग्यमयी ग्रंथ पढ़ा करते थे। आप जी को पेड़ लगाने का बहुत शौक था। आप जी के द्वारा लगाया हुआ बेरी का पेड़ आज भी गिल पत्ती में मौजूद है। आप जी का विवाह शोभावन्ती जी के साथ हुआ जो बहुत ही अच्छे विचारों के थे। आप जी ने श्री 108 मोहन दास जी पास से नाम दान की प्राप्ति की थी। आप जी के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया।

आप जी के बड़े पुत्र का नाम श्री सेवा दास जी था और दूसरे छोटे पुत्र का नाम सरवण दास जी था। जिस समय संत सरवण दास जी की आयु केवल पाँच वर्ष की थी। उस समय माता शोभावन्ती जी परमात्मा के चरणों में जा विराजे। आप जी ने खेती का काम अपने बड़े सुपुत्र श्री सेवा दास जी को सम्भाल दिया और छोटे पुत्र को साथ लेकर आप जी बहुत सारे अस्थानों की यात्रा करते हुए, सांसारिक जीवों को परमात्मा के नाम के साथ जोड़ते हुए जालंधर आये। गांव काहनपुर, सरमस्तपुर, बल्लां, रायेपुर आदि नगरों में चरण कमल डाले। इन नगरों की संगत ने आप जी का बहुत आदर किया । काहनपुर गांव में पहली बार जाने पर आप जी ने कुटिया बनानी चाही। जब आपने जी ने नींव रखने के लिए ज़मीन की खुदाई करने लगे तो डमोही की बिल निकली। आप जी ने किसी जीव का घर ध्वस्त कर अपना घर बनाने की इच्छा त्यागते हुए बालक सरवण को लेकर आगे चल पड़े। फिर कभी आने का वचन देकर गांव बल्लां की आबाद खुली और स्वच्छ व साफ थी तथा यहां पर बहुत सारे पेड़ थे। आप जी ने इस स्थान को बहुत पसंद किया। कुछ दिन संगतों को प्रभु नाम से जोड़ने के पश्चात् आप इस नगर को छोड़कर सिंगड़ीवाला श्री लालू राम जी के पास चले गए। तो संत सरवण दास जी महाराज ने निवेदन किया कि, "पिता जी मेरा मनयहां नहीं लगता। आप मुझे पेड़ों वाले गाँव ले चलो।" बाबा पिपल दास जी संत सरवण दास महाराज जी को लेकर गाँव बल्लां आ गए, गाँव बल्लां आने पर संगतों ने आप जी का बहुत स्वागत किया और पहले से ज़्यादा आप को प्रेम करने लगे तथा आप ने उस दिन से ही निश्चय कर लिया गाँव बल्लां रहने का, गाँव की संगत ने रहने के लिये गाँव में ही पक्का मकान दे दिया। आप जी स्थान पर सुबह शाम

परमात्मा का सिमरन किया करते एवं संगतों को प्रभु भक्ति से जोड़ा करते। उस समय गाँव में पीपल का पेड़ था जो सूख चुका था। गाँव बल्लां के लोगों ने निवेदन किया कि, "महाराज जी गर्मियों के दिनों में लोग इसकी छांव में बैठते हैं। आप कृपा करो इसको हरा कर दो।" बाबा पिपल दास जी ने अपनी चिपी से उस सूखे पीपल को पानी डाला और कुछ दिनों के बाद वह पिपल का पेड़ हरा होना शुरू हो गया। इस घटना के बाद गाँव की संगत ने संत हरनाम दास जी को बाबा पिपल दास कहना शुरू दिया। Mark Juergens Meyer अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Religious Rebels in the Punjab पृष्ठ नं. 84 में लिखते हैं, "बाबा पिपल दास ने यह डेरा उस समय स्थापित किया जब वह सत्य की खोज में यात्रा पर निकले थे। जब उन्होंने इस जगह डेरा लगाया तो देखा कि पीपल का पेड़ सूखा है पर जब उन्होंने सूखे पीपल को पानी दिया तो वह फिर से हरा हो गया। इस तरह उनको यह दृढ़ हो गया कि इस जगह पर बैठ कर ही सच्चाई की खोज की जा सकती है। इस तरह गाँव वालों ने आप जी को ज़मीन दान कर दी इस जगह पर ही आप जी ने डेरा का निर्माण करना शुरू कर दिया।" वह जल्द ही अछूत कहे जाने वाले लोगों का रूहानी केन्द्र बन गया। जो कि खास करके मध्य पंजाब से सम्बन्ध रखते थे। यह जगत्गुरू रविदास महाराज जी परोपकारों का केन्द्र स्थान था। आप दिन के समय गाँव के पश्चिम की ओर साथ लेकर एकांत में भजन किया करते थे,जहां बहुत भयानक जंगल था, आज उस स्थान पर डेरा सचखंड बल्लां सुशोभित है। आप जी ने डेरे में एक पाठशाला खोली। आप जी बच्चों को पंजाबी और पावन अमृतवाणी का अध्ययन करवाया करते थे और सत्गुरू रविदास महाराज जी के जीवन और मिशन के साथ जोड़ा करते थे। संगतें हर समय आप जी के लिए प्रेम से प्रसाद लेकर आया करती थी। आप जी ने संगतों को हमेशा ही बच्चों को पढ़ाने के लिए, सामाजिक बुराईयों और कर्म कांडों से दूर रहने का, माता-पिता की सेवा करने का आपस में मिलजुल कर रहने का पावन उपदेश दिया।

जब महान् समाज सुधारक बाबू मंगू राम जी मंगोवालिया अपने संतों महर्षि भगवान् वाल्मीक जी, सत्गुरू रविदास जी, सत्गुरू नामदेव जी,

सत्गुरू कबीर जी का इतिहास इक्ट्ठा कर रहे थे, उस समय बाबू जी संत पिपल दास जी पास सत्गुरू रविदास जी की शिक्षायें एवं लिखतों के बारे में जानकारी लेने आये थे।

रविदास सोई साधू भलो निर्मल जा के बैन।

जा कर दर्श और परस सो मन ऊपजै सुख चैन।।

आप जी के मुखारविंद का हर एक वचन अटल होता था। एक बार जब आप अपने सेवक शामी राम जी हरीपुर वालों के घर में गए तो आप जी ने वहां पर सत्संग किया, संगतों को परमात्मा के नाम से जुड़ने का उपदेश दिया। श्री शामी राम के घर में एक कोठी थी, इसमें वह वर्ष के लिए गेहूँ के दाने डालते थे। बाबा पिपल दास जी ने फरमाया कि, ''यह कोठी हमेशा भरी रहेगी। जब तेरह महीनों के बाद श्री शामी राम जी ने सोचा कि अब सारे दाने खत्म हो गये होंगे तो और एक वर्ष के लिये कोठी में दाने डाल देते हैं तो जब उन्होंने कोठी का मुँह खोला तो कोठी गेहूँ से भरी हुई थी। इसी तरह एक बार गाँव अर्जुनवाल में गए। वहां पर एक माता जी ने आपके चरण कमलों पर सिर रखकर निवेदन किया कि, ''महाराज जी, मेरे कोई सन्तान नहीं है। मेरी सास कहती है कि मैं तुझे घर से बाहर निकाल दूँगी।'' बाबा पिपल दास जी महाराज ने उसके सिर पर हाथ रखकर आर्शीवाद देते हुए कहा कि, ''तुम्हारे घर पाँच पुत्र होंगे।'' उनके घर में बाबा पिपल दास जी की कृपा से ज्ञानी जोगिंदर सिंह जी के साथ पाँच लड़कों ने जन्म लिया।

आप जी संगतों को परमात्मा के नाम के साथ जोड़ते हुए पहले नवरात्रे 1928ई. वाले दिन उस परमात्मा के साथ अभेद हो गए। आपजी के पश्चात् संत सरवण दास जी डेरे के संचालक बने।

ब्रह्मलीन सत्गुरू सरवण दास जी महाराज

मानवता के हमदर्द जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी के मिशन के प्रचारक ब्रह्मज्ञानी श्री 108संत सरवण दास जी महाराज, जिनका जन्म दिनांक 15 फरवरी, 1895 ई. महान् माता शोभवन्ती जी की कोख से पिता श्री 108बाबा पिपल दास जी के घर गाँव गिल पत्ती(बठिंडा) में हुआ। आप जी के बाएँ पैर पर पद्म का चिन्ह था। जिसको देखने का बहुत सारी संगतों के

सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप जी के माता-पिता दोनों ही नाम के धनी थे।

आप जी ने अपने पिता पिपल दास जी की प्रेरणा के अनुसार श्री 108संत हरनाम दास जी पास से नामदान की प्राप्ति की महाराज हरनाम दास जी फरमाया करते थे कि, "संत सरवण दास जी बहुत महान् है जो कि भजन के प्रताप से रूहानी क्षेत्र में हमारे से बहुत आगे निकल चुके हैं एवं आने वाले समय के महान् संत होंगे।"

'जंगल में मगंल ला देते, जहां वासा हो संतों का' महाराज जी दिन के समय एकांत में इस स्थान पर भजन किया करते थे। यहां ही सत्गुरू जी ने अंग कटी योग की साधना की। जिस दृश्य को बल्लां निवासियों ने अपनी आंखों से देखा। आप रात के समय गाँव बल्लां में रहा करते थे। जहां आप हर रोज़ सुबह शाम कथा किया करते थे। सत्गुरू जी के परमार्थी वचनों को एवं रूहानी कौतुकों को देखते हुए गाँव के ज़मीदार हज़ारा सिंह ने कुटिया के लिए एक एकड़ ज़मीन दान दी। आप जी ने अपने पिता से ही बचपन की शिक्षा प्राप्त की। आप जी बचपन से ही एकांत में बैठकर भजन किया करते थे। सस्कृत की शिक्षा संत करता नंद जी के पास किशन गढ़ वालों से प्राप्त की। आप हिन्दी, पंजाबी, संस्कृत के विद्वान थे। आप महान् कवि भी थे। संगतों की जानकारी के लिए आप जी के मुखारविंद से उच्चारण की गई कविता-

आए काशी में तारा नागर मल्ल जिस,
एकदम माया वाली फांसी किन तोड़ी आ,
फिर-फिर सारे जग एकता फैलाई किस,
डूबे जाते भारत की जिंद किन मोड़ी आ।
ऊँच-नीच, राऊ रंक भाई है न भेद कोई ,
जाति पाति हिंद में से आए किन तोड़ी आ।
बताओ सत्गुरू रविदास के बिना चार युगों में से ,
फटी हुई सृष्टि मिलाई किन तोड़ी आ।

2 फरवरी,1964 को गाँव डेरे का नाम डेरा रविदासियों का लिखकर समाज की पहचान को आगे बढ़ाया और उच्चारण किया कि एक दिन रविदासिया कौम का अपना धर्म ग्रंथ बनेगा।

आप जी मे इस जंगल में पहले एक कच्ची ईंट का थड़ा बनाया। उसके बाद में छोटा मकान और उसके आगे बालकोनी बनाई जहां आप भजन किया करते थे। संत बाबा पिपल दास जी दिनांक 26अस्सू विक्रमी संवत् 1985 (1928)दिन पहले नवरात्रे को ज्योति-ज्योत समा गए। उनके बाद उनके वचनों के अनुसार आप संगतों को नाम से जोड़कर भव सागर से पार करने लगे। आप जी ने डेरे में पाठशाला खोली हुई थी, जिस में बच्चों को पावन ग्रंथ का अध्ययन और सामाजिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए अच्छी शिक्षा प्रदान करवाते। आप हर रविवार देसी घी के पूड़े और खीर का लंगर चलाते। आप जी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अच्छे अफसर बने। आप जी सभी को यह उपदेश दिया करते थे।

माता शत्रु पिता बैरी, जो न बाल पठिता ,
न सोभते सभा मध्य, हंस मध्य बको जथा।।

अर्थात् जो माता-पिता अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते, वह अपने बच्चों के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

आप अक्सर भजनीक महापुरूषों को मिलने जाया करते थे। 1940 में संत सरवण दास महाराज जी ज्ञानी बिशना राम को साथ लेकर बाबा सावन सिंह जी को डेरा ब्यास में मिलने गए। बाबा सावन सिंह जी अपने निवास स्थान की पहली मंज़िल पर संगतों में एक पलंग पर विराजमान थे। संत सरवण दास जी महाराज को अपने पास आते देख कर उन्होंने पलंग से उठकर आप जी को हाथ जोड़कर नमस्कार की। आप जी ने भी उनको नमस्कार किया और उन्होंने आप जी को अपने पलंग के तकिये की तरफ बिठाया और आपस में एक घंटा आध्यात्मिक स्तर के बारे में विचार करते रहे। आप जी का सभी संत समाज के साथ बहुत प्रेम था। आप महान् वैद्य थे।जो डेरे में संगतों के लिए मुफ्त दवाईयों से इलाज करते थे।

जब आप 1940 ई. में ज्ञानी बिशना राम, स. फकीर सिंह, स. सवरन सिंह जी, स. निरंजन सिंह होठी बल्लां, स. पूरन सिंह ब्यास गाँव, श्री भगत सिंह मल्ल, श्री नामा राम दिहाना जी के निवेदन करने पर दिल्ली में गए। आप हर रोज़ लगभग दो महीने श्रद्धालु संगतों के घर में सत्संग किया करते थे।

इसी दौरान ज्ञानी बिशना राम जी और उनके साथी आप जी को साथ लेकर मानवता के मसीहा बाबा साहिब अम्बेडकर को मिलने गए। उन्होंने भी आप जी का बहुत आदर किया और आप से बहुत प्रभावित हुए। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने अपने जीवन में जगत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन का प्रचार करते हुए, उनके नाम पर अधिक स्थानों पर नींव रखी और निर्माण करवाये। आप जी की सबसे बड़ी देन श्री गुरू रविदास जन्म स्थान सीर गोवर्धन पुर बनारस में सात मंज़िल का निर्माण संत हरी दास जी महाराज जी और संत गरीब दास महाराज जी के द्वारा करवाया। रविदासिया कौम के लिए महान् तीर्थ स्थान है। श्री गुरू रविदास हाई स्कूल जालंधर आर्ट और क्राफ्ट ट्रेनिंग कॉलेज श्री गुरू रविदास टैक्नीकल कॉलेज फगवाड़ा, प्राइमरी स्कूल रायपुर, रसूलपुर, भगवान रविदास आश्रम निर्मला छावनी हरिद्वार,हाई स्कूल गाँव बल्लां में कमरों का निर्माण करवाया। आप जी के रूहानी कौतुकों को पूरा संसार जानता है। आप जी ने असंख्य जीवों को अपने अटल वचनों द्वारा संतान जैसे मीठे वरदान किये एवं सभी की मनोकामनाएं पूर्ण की। बहुत सारे रोगियों, बीमार लोगों का इलाज जिनको डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। उनको अपने मनोहर वचनों से ठीक कर दिया। जिस समय आप नाम दान किया करते थे। पाँच शब्दों के पाँच मुकाम निशानियों और स्थितियों के बारे में जानकारी दिया करते थे। अनेक ही जीवों ने आकर निवेदन किया कि,"महाराज जी, हम भजन करते हैं तो हमें कुछ दिखाई नहीं देता।" तो आप जी उस को आर्शीवाद देकर दसवां द्वार खोल देते थे।

आप जी ने बहुत सारे लोगों को पहले ही बताये अनुसार अपने परम सेवक संत सेवक हरी दास महाराज जी के हवाले गुरू गद्दी करते हुए, उस परम परमात्मा में 11जून 1972 को अभेद हो गए। बाद में श्री 108संत हरी दास जी महाराज और उनके बाद श्री 108संत गरीब दास जी महाराज ने आप जी के बताए हुए मार्ग पर चलकर संगतों को परमात्मा के नाम से जोड़ा। आप जी की अपार कृपा से आज यह पावन स्थान विश्व भर में प्रसिद्ध हुआ है।

ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी महाराज

रविदास सोइ साधू भलो, जऊ रहइ सदा, स निरवैर।
सुखदायी समता गहहि सभनह मांगहि खैर।।

जगत्गुरू रविदास महाराज जी पावन अमृतवाणी में फरमाते हैं कि, ''इस संसार के जीवों को नाम जपाकर भवसागर से पार करते हैं।'' ऐसे ही महान् संत थे नाम के रसिये, शांति के पुंज, महान् समाज सुधारक, ब्रह्मलीन डेरा सचखंड बल्लां के तीसरे गद्दी नशीन श्री 108 संत हरी दास जी महाराज। संत हरी दास महाराज जी का जन्म 1885 ई.में आदरणीय पिता श्री हुक्म चंद जी के घर और आदरणीय माता ताबी जी की कोख से गाँव गढ़ा जालंधर की पवित्र धरती पर हुआ। आप जी का पहला नाम पुन्नू राम था। आप जी की बड़ी बहिन का पुन्ना देवी था। आप जी के माता-पिता दोनों धार्मिक विचार के थे। आप जी अभी छोटी अवस्था में ही थे, जब आप जी के माता पिता परलोक सिधार गये। इसलिए छोटी आयु में ही आप पर घर की ज़िम्मेदारी पड़ गई। आप जी सुंदर जोड़े(जूते)बनाने और सफेदी आदि का काम करते थे। आप जी बचपन से ही कीर्तन करने, सुनने और संतों की संगत करने में रूचि रखते थे। आप जी बचपन से ही कीर्तन करने सुनने और संतों की संगत करने में रुचि रखते थे। आप जी ने अपनी बड़ी बहिन बीबी पुन्नी देवी का विवाह गाँव महेड़ू में कर दिया और सांसारिक कार्यों से मुक्त हो गए। आप जी ने इस मानस जन्म को सफल करने के लिए पूरे गुरू की तलाश शुरू कर दी।

परम परस गुरू भैटिये पूरब लिखत लिलाट।

जगत्गुरू रविदास जी महाराज का फरमान है कि,''जीव को परम पारस रुप गुरू उस समय मिलता है, जब जीव के पूर्व भाग्य जागते हैं।'' जब आप जी ने अपने गाँव के, बाबा पिपल दास जी महाराज के सेवकों से, बाबा जी की महिमा सुनी मन दर्शनों के लिए उतावला हो उठा। आप बाबा जी के दर्शनों के लिए गाँव बल्लां आए। उस समय बाबा पिपल दास जी कुटिया में रहते थे। आप जब कुटिया में आए तो संत सरवण दास महाराज जी ने आप जी को लंगर खिलाया और फिर बताया,''बाबा पिपल दास जी, गाँव हरीपुर में

शामी राम जी के घर गए हैं और आप जी बाबा जी के दर्शन वहां जाकर कर सकते हो।'' उस समय आप संत सरवण दास जी महाराज जी को नमस्कार कर के गाँव हरीपुर पहुँचे। उस समय बाबा जी शामी राम जी के घर में सत्संग कर रहे थे। बाबा जी के दर्शन कर के आप जी का मन निहाल हो गया। आप जी ने इस तरह महसूस किया कि आज पूर्ण परमात्मा मिल गए हैं और मनुष्य जन्म मनोरथ पूरा हो गया है। आप जी बाबा जी को नमस्कार करके बैठे और सत्संग सुनने लगे जब सत्संग की समाप्ति हुई और आप जी ने बाबा जी को नाम दान प्राप्त करने के लिए निवेदन किया। बाबा जी ने आप जी का प्रेम देखते हुए वचन किया कि,''हम कल के बाद आपके गाँव गढ़ा में आयेंगे।''और हरी दास जी सत्य वचन कह कर गाँव वापिस आ गए। तीसरे दिन बाबा जी गाँव गढ़ा में पहुँचे। आप जी के प्रेम को देखते हुए नाम की दात प्रदान की। आप जी ने अपना तन-मन-धन बाबा जी के आगे अर्पण कर दिया। आप जी अपना अधिक समय भजन सिमरन में गुज़ारते थे। आप जी डेरे में बाबा जी के दर्शन करके कई-कई दिन डेरे में सेवा करते थे। आप जी का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था।

बाबा पिपल दास जी महाराज विक्रमी संवत् 1985 अस्सू 26 दिन गुरूवार सुबह समय पांच भौतिक शरीर त्यागकर बेगमपुर जा विराजे। इस कारण आप बहुत उदास रहने लगे। बाबा जी ने अपना पांच भौतिक शरीर त्यागने से पहले संत सरवण दास जी को वचन दिया था कि,''हमने संत हरी दास जी को नाम दान दे दिया है। आप जी ने समय विचार कर साधू भेष देकर डेरे में लाना है।'' उन्होंने यह भी कहा कि,''संत हरी दास जी महान् संत होंगे और संसार के जीवों को परमात्मा के नाम से जोड़कर सफल होने का उपदेश देंगे।'' कुछ समय बाद आप जी ने संत सरवण दास जी महाराज के हुक्म अनुसार अपने गाँव गढ़ा में संत सम्मेलन रखा। जिसमें संत सरवण दास जी महाराज, मुस्लिम फकीर सैयद गुलाम जलानी और अन्य महापुरूष पहुँचे। रब्बी अमृत वाणी के जाप होने के उपरान्त संत प्रवचन हुए। संत सरवण दास जी महाराज ने प्रवचनों द्वारा संसार के जीवों को परमात्मा का नाम जपा कर जीवन सफल करने का उपदेश दिया।

उन के बाद फकीर सैयद गुलान जलानी जी ने अपने प्रवचनों द्वारा संत हरी दास जी महाराज का धन्यवाद किया कि जिन्होंने संत सरवण दास जी महाराज जी के चेहरे पर अल्लाह का नूर नज़र आता है। आप जी ने बाबा पिपल दास जी महाराज जी के वचनों पर चलते हुए संत हरी दास जी महाराज को साधू भेष दिया। उस दिन से आप डेरे में रहने लगे। आप जी हर समय संत सरवण दास जी महाराज जी की सेवा में हाज़िर रहते थे। आप जी ने संत सरवण दास जी से गुरमुखी सीखी और धार्मिक ग्रंथों की कथा करने का बहुत शौक था। आप जी गाँव डेरे में हर रोज़ शाम को संगतों को कथा श्रवण करवाया करते थे। आप जी को पेड़-पौधे लगाने का बहुत शौक था। आप जी द्वारा लगाये गए पेड़ आज भी डेरे में मौजूद हैं। बाबा पिपल दास जी महाराज जी डेरे में बच्चों को गुरमुखी और गुरबानी का अध्ययन करवाते थे। संत सरवण दास जी ने डेरे में पाठशाला खोली थी। उसमें आप बच्चों को विद्या पढ़ाया करते थे। आप हमेशा फरमाया करते थे:-

माता शत्रु पिता बैरी, जो न बाल पठिता।

जो माता पिता अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते वह उनके दुश्मन हैं। आप हमेशा जीवों को संत की संगत, भजन सिमरन, अंधविश्वास से दूर रहने, एकता, समानता एवं भाईचारे का उपदेश दिया करते थे। आप जी ने संत सरवण दास जी के हुक्म अनुसार श्री गुरू रविदास जन्म स्थान की नींव रखी और निर्माण करवाया। जहां आज पूरी दुनिया के लिए आलीशान (सुंदर) मंदिर बना है। दिनांक 11 जून,1972 ई. दिन मंगलवार संत सरवण दास जी महाराज सचखंड जा विराजे। उनके पश्चात् आप सचखंड बल्लां के तीसरे संचालक बने। आप जी के मन में संत सरवण दास महाराज जी के प्रति इतना प्रेम था। ''अगर संत सरवण दास महाराज जी 10 वर्ष और शरीर करके रहते तो हम भी संत बन जाते।''आप जी ने संत सरवण दास जी की याद में कुटिया में पांच मंज़िला सुंदर मंदिर बनाया और कुटिया में ही सत्संग भवन का निर्माण करवाया।अ ापज ीह मेशास ंगतोंक ेस ंतोंक ीस ंगतक रने,न ामज पने, विषय-विकारों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। आप जी संगतों को अक्सर कवि गिरधर राय की कुंडलियां सुनाया करते थे।

संगत करीये साध की, बंदिउ करे खुदा।
लोहा कंचन होत है, देखो पारस ला।
देखो पारस ला सुमत कर मानो हासा।
सब बन चंदन होत जहा बणन का वासा।
कह गिरधर कविराए नदी संसे की तरीये।
बड़े भाग जब होई संतों की संगत करीये।

आप संसार को जगत् मुसाफिर खाना समझते थे। डोली चुक लऊ कहारो, मेरी रोदियां नू रोन देउ।

जिंदे मेरीये नी तेरा कोई नाही ,
ऐंवे कुड़ हवेलीयां मल्लीयां नी।
छड देना देश एह मापियां दा,
फेर आन ना देंखेगी गलीयां नी।
चरखे तंद ना पावना मिलै तैनूं ,
जदों कंत ने चिठियां घलीयां नी।
तूं रोवंदी जावेगी इस भा--- शहरों ,
जिवें अगलीयां रोदियां चलीयां नी।

आप जी ब्रह्मज्ञानी थे। आप जी के मुखारविंद से उच्चारण किये वचन हमेशा सत्य होते थे। श्री गुरनाम चंद सुमन जज जिनके घर में संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से तीन लड़कियों के बाद पुत्र ने जन्म लिया। 1973 ई. में परिवार के साथ डेरे में पहुँचे। उनकी बेटियों के साथ उनका बेटा बोबी नहर के पानी को छूते हुए डूब गया। लड़के के पानी में डूबने की खबर सुनकर उसकी माता बेहोश हो गई। संत और सभी संगत बच्चे को नहर में से ढूंढने लगे मरे हुए लड़के को मंदिर में महाराज सरवण दास जी की मूर्ति के आगे लिटाया गया। श्री गुरनाम चंद जी और बीबी गुरवचन कौर ने संत हरी दास जी महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,"बच्चे पर कृपा करो।" संत हरी दास जी ने परमात्मा के आगे अरदास की। लड़के को जीप में सिविल अस्पताल जालंधर में डॉक्टर शंगारा सिंह के पास लेकर गए। डॉक्टर ने बच्चे को देख कर कहा कि, "लड़का तो बिल्कुल ठीक है।" डॉक्टर ने सारी हकीकत

जानकर कहा कि,''यह संतों की कृपा से है कि यह लड़का एक घंटे पानी में रहकर डूबकर बच गया है।'' डॉक्टर ने बोबी से पूछा,''क्या हुआ?'' बोबी कहता,''संत खंडे से मुझे किनारे लगा रहे थे।'' संतों ने बच्चे को जीवन दान दिया। संत हरी दास जी संसार के जीवों को परमात्मा के साथ जोड़ते हुए दिनांक 6 फरवरी, 1982 ई. को सुबह 11 बजे परमात्मा में अभेद हो गए। आप जी ने अपना पांच भौतिक शरीर त्यागने से कुछ समय पहले फरमाया कि,''श्री गुरू रविदास जी महाराज, बाबा श्री चंद जी, बाबा पिपल दास जी, और संत सरवण दास जी महाराज आ गए हैं।''आप जी के पश्चात् श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज डेरा सचखंड बल्लां के संचालक बने।

श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज

डेरा 108 संत सरवण दास जी सचखंड बल्लां के चौथे संचालक श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज, जिन्होंने अपना सारा जीवन इस संसार के भूले-भटके जीवों को नाम से जोड़ने के लिये, अंधविश्वास को दूर करने के लिए और समाज को सुधारने में लगा दिया। ऐसी महान् आत्मा का जन्म सन् 1925 ई. को आदरणीय माता हरकौर जी की कोख से आदरणीय पिता श्री नानक चंद जी के घर में गाँव जलभे, ज़िला जालंधर, पंजाब की पवित्र धरती पर हुआ। आप जी के पाँच भाई थे । आप सबसे छोटे थे। आप जी के माता पिता दोनों ही धार्मिक विचारों वाले थे। जिस समय आप जी की आयु छः महीने की थी। आप जी के पिता जी परलोक सिधार गए। आप जी का पालन-पोषण आप जी के माता जी ने किया। माता जी हमेशा ही आप जी को साध संगत की सेवा करने के लिये प्रेरणा देते थे। आप बचपन से ही अपने सभी साथियों से प्रेम-प्यार से रहते थे। आप सभी के साथ मीठा बोलते थे।

जब आप जी के गाँव कोई भी श्रद्धालु डेरा बल्लां में आता तो आप भी उनके साथ डेरे आते थे। महाराज स्वामी सरवण दास जी बालक गरीब दास का प्यार देखकर आप जी को बहुत प्रेम करते थे। आप सबको बहुत प्यारे लगते थे। जब एक बार आप डेरे महाराज जी स्वामी सरवण दास जी के पास आए तो महाराज जी ने आप को अपने पास बिठाकर पूछा कि,''काका तुम्हारा क्या नाम है?'' तो आप जी ने उत्तर दिया,''मेरा नाम गरीबू है जी।''

तो महाराज स्वामी सरवण दास जी ने कहा कि,''हे बालक, तुम गरीबू नहीं, तुम तो गरीबों के मालिक हो। जिसके हृदय में बचपन से ही संतों से प्रेम है, तुम एक दिन महान् संत बनोगे और जिस तरह तुम हमारे दर्शनों को आते हो, इसी तरह संसार के कोने-कोने से दुनिया तुम्हारे दर्शन करने आयेंगी।'' आप जी के गाँव के रहने वाले जो कि आपके साथ थे, यह कौतुक देखकर बहुत खुश हुए। संत गरीब दास जी हमेशा डेरे में संत सरवण दास जी महाराज और संत हरी दास जी महाराज जी की आज्ञा में रहते थे। डेरे में संत चेतन दास जी भी रहा करते थे, डेरे में आप संगतों की सेवा के लिए देसी दवाईयां देते थे। आप संत सरवण दास जी महाराज जी की कृपा से जिस किसी बीमार व्यक्ति को भी दवाई देते वह ठीक हो जाता। आप जी का स्वभाव बहुत ही गंभीर और प्रेम से भरा था। आप श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन किया करते थे। महाराज जी के हुक्म अनुसार आप बहुत बार बनारस में श्री गुरू रविदास जी महाराज जी के मंदिर के निर्माण के लिए संगत के साथ गए। 1964 ई. में महाराज सरवण दास जी की आज्ञा अनुसार आप बनारस संगत के साथ गए और मंदिर की पहली मंज़िल पर छत डाल कर आए।

आप जी ने मोहल्ला सुंदर नगर जालंधर शहर में समाज के भले के लिए साप्ताहिक बेगमपुरा पत्रिका की नींव 1991 ई. में रखी। उस समय पंजाब के अनेक साधू संत संगत वहां पहुँची। जिस समय आप स्टेज पर बोले तो सभी संगत हैरान हो गई। आप जी ने फरमाया कि,''सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज जी ने मेरी दो ड्यूटियां लगाईं हैं। एक समाज सेवा करनी और दूसरी भजन बंदगी करनी। इन दोनों कार्यों में मुझे ज़्यादा बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती।'' आप जी ने बाहर के देशों में श्री गुरू रविदास मिशन का प्रचार करके संगतों को परमात्मा के नाम से जोड़ा। आप छः बार इंग्लैंड, दो बार अमेरिका और कैनेडा गए।

आप जी ने गाँव की मुख्य सड़क पर संत सरवण दास मैमोरियल गेट कार्ा नर्माणक रवाया।अ ापज ीन े श्र ीग ुरूर विदासज ीज न्मस् थानस ीर गोवर्धनपुर में सोने का कलश चढ़ाया और बेगमपुरा एक्सप्रेस ट्रेन हर वर्ष बनारस में रविदास जी के जन्म उत्सव पर लेकर जाते रहे। इस संबंध में

बनारस में 19 जून 1994 को बहुत बड़ा समागम रखा एवं इंग्लैंड, अमेरिका और कैनेडा की संगतों को बनारस पहुँचने का संदेश भेजा। तकरीबन 300 के करीब विदेशों से संगत आई। उन दिनों भारत में बहुत गर्मी पड़ती थी। आप संगत के साथ 15 जून 1994 को बनारस गए। 23 जून,1994 को वापिस आए। आप जी ने गुरू रविदास जी की याद में बहुत बड़ा समागम किया। आप जी ने बनारस में ही कह दिया,''हमने अब फिर बनारस नहीं आना, हमने अब गुरू सरवण दास जी के वचन को निभा दिया है।'' इस दौरान आप जी ने विदेश यात्रा भी दिनांक 9 अक्तूबर,1993 से लेकर 26 नवम्बर, 1993 दौरान संगतों को कह दिया था कि,''हम ने अब फिर इंग्लैंड नहीं आना।'' सभी संगत सोच रही थी कि,''इतनी गर्मी में महाराज जी ने प्रोग्राम क्यों रखा है?'' पर आप जानते थे कि आप जी ने अपना शरीर त्यागकर स्वामी सरवण दास जी महाराज जी के पास सचखंड में चले जाना है। आप जी के शरीर छोड़ने से तीन दिन पहले(दास)बावा और श्री मान् भाग मल्ल भंडारी जी आप जी को बाथरूम तक लेकर गए और आप जी ने फरमाया कि,''हमने अब संसार छोड़कर चले जाना है ाज्ञ्कुछ दिन पहले शाम के समय संत रामानन्द जी और बावा जी आस पास बैठे थे, तो आप जी ने फरमाया कि ,च्ञ्जो ड्यूटियां मेरी महाराज जी ने लगाई थी वह हमने पूरी कर दी है ाज्ञ् 23 जुलाई 1994 को दोपहर 2:55 मिनट पर आप सचखंड जी विराजे। आप जी के सचखंड विराजने की खबर सुनकर सभी संगतों में शोक की लहर फैल गई। आप जी केद र्शनक रनेके ि लएल ाखोंक ािस ंख्याम ेंद ेश-विदेशस ेस ंगतेंअ ौर महापुरूष आए। 25 जुलाइ,1994 को आप जी के पाँच भौतिक शरीर का डेरे में संस्कार कर दिया गया।

अमर शहीद श्री 108 संत रामानन्द जी

बसते-रसते संसार कुछ अजीज़ शख्स(व्यक्ति)पैदा होते हैं। जो अपने परोपकारी कार्यों से रहती दुनिया तक अपना नाम कमा(ऊँचा)जाते हैं, पर संत जन कुल मनुष्यता के लिए मार्ग दर्शक बन जाते हैं। बार्डरों की सीमित लकीरों, रंगों, नसलों मज़हबों की कूड़-कहानियां उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखती। संत जन बोहड़(अर्जुन के पेड़)की छांव की तरह होते हैं, जो

पापों रूपी गर्मी से तपती मनुष्यता को पश्चिम की ठंडी पवन बनकर ठंडा करते हैं।

श्री 108 संत रामानन्द जी का जन्म 2 फरवरी, 1952को पिता श्री मान् मंहिगा राम जी के घर में माता श्री मति जीत कौर की पवित्र कोख से हुआ। आप जी बचपन से ही साधू स्वभाव रखते थे। आप जी की मनमोही सूरत गली मोहल्ले को कीलकर रख देती थी। बी.ए. तक की विद्या आप जी ने दोआबा कॉलेज, जालंधर से प्राप्त की। आप जिस वक्त पढ़ाई करने जाते थे तो अक्सर गुम-सुम रहा करते थे। आप बचपन से ही साधू-संगत के मुरीद थे, सो फिर रंग तो आना ही था, जो परवान होकर हद से भी ज़्यादा आया। घर के बाकी सदस्य ने विरोध करना शुरू कर दिया कि संत रामानन्द जी को साधुओं की संगत करने से रोका जाए। घर में अक्सर साधू संगत की बातचीत होती रहती थी। संत रामानन्द जी घर के घरेलू कार्य करते हुए भी हर समय परमात्मा का सिमरन करते रहते थे। आखिर संत रामानन्द जी को श्रीमान 108 संत हरीदास जी महाराज डेरा सचखंड बल्लां वाले महापुरूषों के चरणों से लगा दिया गया। आप जी श्री हरी दास जी महाराज से नाम की दात प्रदान की गई। संत रामानन्द जी 1973 से बाबा पिपल दास जी महाराज जी की याद में गाँवम ेंब नेस ुंदरम ंदिरम ेंर हकरप्र भु सिमरनक रते।स ंतर ामानन्दज ी ब्रह्मलीन संत हरीदास जी महाराज जी के समय और संत गरीब दास जी महाराज जी के समय दिन में डेरे में रहकर संगतों की सेवा करते और रोज़ाना शब्द कीर्तन एवं सेवा करते।

यहां वर्णनीय है कि संत रामानन्द जी को ज्ञान सत्गुरू हरी दास जी महाराज जी से प्राप्त हुआ। और सत्गुरू गरीब दास जी महाराज जी ने उनको साधु वेष धारण करवाया। उनके साथ ही संत रामानन्द जी अलग-अलग देशों में जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी के मिशन के प्रचार एवं प्रसार हित जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद डेरा सचखंड बल्लां के महान् संत ब्रह्मलीन सत्गुरू गरीब दास जी महाराज की कृपा से विदेशी संगतों को जगत्गुरू रविदास जी महाराज की विचारधारा से जोड़ा। आप विदेशी संगतों की आँखों के तारे थे। आप जी के मुखारविंद से अमृतवाणी के मीठे बोल श्रवण करके संगत मंत्र-मुग्ध हो जाती थी।

आप एक कुशल प्रशासक थे, जिन्होंने डेरे के प्रबंध को बहुत ही अच्छे ढंग से चलाया। विश्व में संत-सम्मेलनों में जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी की वाणी का प्रचार एवं प्रसार करने के साथ-साथ आप डेरा सचखंड बल्लां की ओर से मानव भलाई के लिए चलाए जा रहे अलग-अलग परियोजनाओं के कार्यों को चलाने के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। बेगमपुरा शहर के सम्पादक के रूप में आप जी ने बहुत सेवायें निभाईं, जिसके लिए आप जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी की तरफ से पुरस्कृत किया गया। यह पहली बार था कि आप जी ने यू.के. की पार्लियामेंट सदन में सत्गुरू रविदास जी महाराज जी के बारे में भाषण पढ़कर एक नये इतिहास की सृजना की। आप वाणी के महान् ज्ञाता थे और बहुत सरल उदाहरणों का वर्णन करके गुरबानी के जटिल अर्थों की व्याख्या करने में माहिर थे। आप जब संगीतमयी कीर्तन करते थे। तो दरबार में बैठी संगत पूरी तरह मंत्र-मुग्ध हो जाती थी।

नयी पीढ़ी में संगीत प्रति प्रेम पैदा करने के लिए आप जी ने न अकेली श्री गुरू रविदास अकैडमी खोली, बल्कि आप जी की नज़र ने अनेक मिशनरी गायकों,ग ीतकारोंअ ैरस ाहित्यकारोंक ीप हचानक ीए वंउ नकोग ोल्ड मैडलों से सम्मानित किया गया। आप जी की रसभरी आवाज़ में जालंधर दूरदर्शन से अमृतवाणी श्री गुरू रविदास जी औरच्बेगमपुरा सहर को नाऊज् नाम के प्रोग्राम भी दिखाये जा रहे हैं।

संत रामानन्द जी एक वीर पुरूष योद्धा थे, जो मिशनरी कार्यों को पूर्ण करने के लिए दिन-रात एक करते हुए न थकते थे। आप अक्सर कहा करते थे, जो समय महाराज जी की सेवा में लग जाए वही अच्छा है, क्या पता फिर समय मिले न मिले।

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीके मिशन के प्रचार एवं प्रसार करने गए कीर्तन के धनी महान् विद्वान, नाम के रसिया, महान् वैद्य, जगत्गुरू रविदास मिशन को पूर्ण करने वाले, संत समाज के अनमोल हीरे 108 संत रामानन्द जी को मानव विरोधियों ने वियाना(आस्ट्रिया)के एक गुरू घर के बीच हमला करकके गंभीर रुप में ज़ख्मी कर दिया। गोलियां लगने के बाद भी संत रामानन्द जी धन्य-धन्य जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी का नाम

उच्चारण करते रहे, जैसे कह रहे हों कि वह अभी मिशन के प्रचार एवं प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं। पर मन्ज़ूर न हुआ। और आप जी दिनांक 25 मई के प्रात: समय रविदासिया कौम के लिए शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए।

संत रामानन्द जी महाराज अपना पूरा जीवन शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन होने तक गुरू रविदास जी महाराज जी की संगतों को जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी का पावन उपदेशच सतिसंगति मिलि रहीयै माधऊ जैसे मधुप मखीराज् देते हुए विश्व स्तर पर इक्ट्ठे होने का उपदेश दे गए। संत रामानन्द जी की शहादत से रविदासिया धर्म के नाम से विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बन चुकी है, जिसका प्रचार एवं प्रसार पूरे विश्व में हो चुका है और अमृतवाणी जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी ग्रंथ के प्रकाश हज़ारों की संख्या में पूरे विश्व में हो चुका है।

आज आप जी के स्वप्न का समाज सिरजने के लिए, रविदासिया समाज में धार्मिक भावना पैदा करने, दलित समाज में जन चेतना पैदा करके गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त भाईचारा कायम करने के लिए निरोगी मानसिकता और विद्या भरपूर समाज की सृजना करने के लिए संत सुरिंदर दास बावा जी उनके बताये हुए कदमों पर चलकर सेवायें निभा रहे हैं। काफिला मंज़िलों की ओर बढ़ रहा है, और ज़ारी रहेगा।

साखी नंबर : 1

जीवन की खुशी पुर्नः प्राप्त करना

एक बार बाबा पीपल दास जी, गाँव बल्लां में जा रहे थे तब मार्ग में मल्ल सिंह नामक श्रद्धालु ने उन्हें प्रणाम किया। बाबा जी ने पूछा कि परिवार में सब कुशल है तो मल्ल सिंह ने कहा कि महाराज जी हम बहुत परेशान हैं। मेरे भाई की पत्नी मर गई है और मेरे भाई नत्था सिंह की कमर पर चोट लग गई है। आप कृपा करें। बाबा जी ने कहा कि चिंता मत करो, तुम्हारे भाई नत्था सिंह के घर में बच्चों की रौनक लगेगी। ऐसा ही हुआ, नत्था सिंह कुछ समय बाद ठीक हो गया और उसकी शादी हो गई। स. अजीत सिंह ने बताया कि आज महाराज जी की कृपा से वे सात भाई-बहन हैं। यह सब बाबा जी की कृपा है।

(स. अजीत सिंह, गाँव बल्लां, 21, अक्तूबर 2001)

साखी नंबर:2

श्री वतन सिंह को औलाद की दात देना

श्री वतन सिंह और बीबी केसरी देवी, गाँव मुरादपुर में रहते थे, बाद में अलावलपुर में रहने लगे। उनके घर कोई संतान नहीं थी। वह बाबा पीपल दास जी के अन्य भक्त थे। जब बाबा पीपल दास जी उनके घर जाते तो उन्हें नमकीन रोटी बनाने के लिए कहते और नमकीन रोटी ही खाते। एक बार बाबा पीपल दास जी दोबारा गाँव मुरादपुर उनके घर गए, तो बाबा जी के समक्ष बीबी केसरी और वतन सिंह ने प्रार्थना की, ''महाराज जी हमारे घर में कोई संतान नहीं है, आप कृपा करें।'' महाराज जी ने बीबी केसरी से कहा कि पाँच पताशे पानी में मिलाकर आटा गूँथकर रोटी बनाओ। बीबी ने अति प्रेम से रोटी बनाई और बाबा जी को छकाई। रोटी छकने के बाद बाबा जी ने कहा कि वतन सिंह चिंता मत करो, परमात्मा कृपा करेगा। उसके बाद उनके घर श्री सरवण दास सहित चार पुत्र पैदा हुए।

(श्री सरवण दास सुपुत्र श्री वतन सिंह)

साखी नंबर:3

मकान पक्के होने का वरदान

एक बार बाबा पीपल दास जी गाँव ब्यास पिंड में गए। उन दिनों लगभग सभी मकान कच्चे हुआ करते थे। बाबा जी ने वचन किया कि कालू लालो लाल हो जाए अर्थात् सब मकान पक्के हो जाऐं। ऐसा ही हुआ, बाबा जी

के वचन अटल थे। देखते ही देखते सब मकान पक्के बन गए।

(श्री राजमल पुत्र श्री आत्मा राम, ब्यास पिंड)

साखी नंबर:4

अंर्तयामी पीपल दास जी

एक समय बाबा पीपल दास जी महाराज गांव रहीमपुर बाबा बद्रीनाथ को मिलने जा रहे थे। जब गाँव दुग्गरी पहुंचे तो बाबा पीपल दास जी ने कहा, ''हरी राम वह जो सामने से बीबी आ रही है वह सिर से नंगी है। श्री हरी राम जी ने जवाब दिया, ''महाराज जी बीबी ने तो सिर पर दुपट्टा पहना हुआ है। बाबा ने जी कहा, ''अरे ! तुम्हें समझ नहीं लगी, सिर से नंगी भाव उसका पति मर चुका है। बाबा जी अंर्तयामी थे। वास्तव में वह स्त्री सिर से नंगी भाव विधवा थी।

(श्री तरसेम लाल सुपुत्र श्री हरि राम बल्ल, मकसूदां, जालन्धर)

साखी नंबर:5

दूध की बाढ़ आना

बाबा पीपल दास जी गांव में लंगर की गजा करके छकते थे। एक बार बाबा पीपल दास जी के साथ बालक संत सरवण दास जी जो मात्र आठ वर्ष के थे, महाराज के साथ गजा कर रहे थे। जब गांव संघवाल में लंबरदार बिशन सिंह के घर गए तो उन्होंने महाराज जी को प्रशादे दिये और साथ में लस्सी भी दी और बीबी जी ने महाराज जी के समक्ष प्रार्थना की कि हमारे घर में कोई लवेरा भाव दुधारू पशु नहीं है, इस कारण लस्सी कम है। बाबा जी ने कहा, ''कोई बात नहीं, चिंता मत करो।'' उपरांत बाबा जी बालक सरवण के साथ वापिस चल पड़े। गांव से बाहर एक कुएं पर रूककर बालक सरवण से प्रशादे ग्रहण करने को कहा। बाबा जी ने लस्सी वाला कमण्डल कुएं से निकलने वाली पानी की टिंडों के नीचे रख दिया। कुछ देर बाद जब महाराज जी कमण्डल के पास गए तो वह पूरी तरह से भर गया था और लस्सी कमण्डल से बहती हुई खाल में बह रही थी। उसी समय गांव के अन्य व्यक्ति भी वहां आ गए और उन्होंने कुएं को चलने से बंद किया। बाबा पीपल दास जी ने बालक सरवण से कहा कि, '' लस्सी का लस्स बन गया है। जिनके घर से हम लस्सी लेकर आये हैं, उनके घर बहुत लवेरा होगा।'' उपरांत बाबा जी ने स्वयं लंगर छका और बालक सरवण के साथ वहां उपस्थित सभी लोगों को भी लंगर

छकाया। बाबा जी के वचन अटल हुए, बिशन दास के घर लवेरे की कोई कमी नहीं रही भाव दूध की बाढ़ आ गई।

(श्री राम किशन सुपुत्र श्री केरू राम, गांव संघवाल, जालन्धर)

साखी नंबर : 6

शादी की भविष्यवाणी

गांव ब्यास पिंड के श्री राज मल के पिता आत्मा राम जी का बाबा पीपल दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक बार बाबा पीपल दास जी आत्मा राम जी के घर गए, सभी संगत ने महाराज जी को माथा टेका। जब आत्मा राम जी के पड़ोसी छज्जू नामक लडके जिसकी आयु मात्र 12-13 वर्ष थी, ने महाराज जी को माथा टेका तो आत्मा राम जी ने कहा कि, ''महाराज जी इसकी मंगनी होनी है और कुछ समय बाद इसकी शादी है, आप जी कृपा करो।'' बाबा पीपल दास जी ने फरमाया कि, ''जिस लड़की के साथ इसकी मंगनी होनी है, उसने शादी से पहले ही मर जाना है और इसकी शादी किसी और लड़की के साथ होगी।'' बाद में ऐसा ही हुआ, वह लड़की मर गई और बाद में छज्जू की शादी किसी और लड़की के साथ हुई।

(श्री राज मल जी ,गांव ब्यास पिंड, जांलधर)

साखी नंबर: 7

बीबी चरण कौर की इच्छा पूर्ण करना

स. शिंगारा सिंह और बीबी चरण कौर गांव रायपुर-रसूलपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ अति प्रेम था। संत सरवण दास महाराज जी ने बीबी चरण कौर के साथ वचन किया था कि, ''जब हम पांच भूतक शरीर का त्याग कर सच्चखंड बेगमपुरा में प्रस्थान करेंगे, तो पहले हम आप से जरूर मिलकर जाऐंगे, यह बेटी चरण कौर आपसे हमारा वायदा रहा।'' इसलिए जब 11 जून,1972 को जब कौम के महान् रहिबर ने बेगमपुरा वतन जाने की तैयारी की, उसी रात महाराज जी अमेरिकन (सी.एम.सी)अस्पताल में दाखिल हुए परन्तु वास्तव में वह अपनी सिमरन कमाई में अंर्तध्यान होकर अपने जीवन में अपने सेवकों को दिये वचन, वर एवं आशीर्वाद की ओर देख रहे थे क्योंकि उन्होंने बीबी चरण कौर के साथ शरीर त्याग करने से पूर्व मिलने का वायदा किया था। इसलिए सच्चखंड जाने से 20 मिनट पहले महाराज जी उन्हें रायपुर-रसूलपुर रात के समय दर्शन देने के लिए आए और कहा, ''कुड़े

चरण कौर! हमने अब यह शरीर त्याग कर चले जाना है। हम तुझे मिलने के लिए आए हैं। हमारे पास समय बहुत कम है।'' यह वचन कहकर महाराज जी पांच भूतक शरीर को त्याग कर ब्रह्मलीन हो गए।

(बीबी नसीब कौर सुपुत्री स. शिंगारा सिंह, बीबी चरण कौर, 2002)

साखी नंबर: 8

श्री सवर्ण दास को पुत्र का दान देना

श्री सवर्ण दास गांव लल्लीयां खुर्द जो आजकल यू.के. में रहते हैं, उनके घर 6 लड़कियां थी, कोई पुत्र नहीं था। उन्होंने श्री गुरबचन दास जी से संतों की महिमा सुनी थी और पुत्र की इच्छा मन में लेकर डेरे में संत सरवण दास जी के पास आये। जब श्री सवर्ण दास जी और उनकी पत्नी ने महाराज जी को प्रणाम किया तो अंर्तयामी महाराज जी ने फरमाया कि आपका मनोरथ अवश्य पूरा होगा। आपके घर एक वर्ष बाद पुत्र होगा, उसका नाम सालिग राम रखना।'' एक वर्ष बाद ऐसा ही हुआ और उनके घर लडके ने जन्म लिया, जिसका नाम सालिग राम ही रखा गया।

(श्री गुरबचन दास, गांव लल्लीयां खुर्द, 2, फरवरी 2001)

साखी नंबर: 9

ज़मीन की बख्शिश करना

स. सुंदर सिंह जी, गांव चमियारा, कपूरथला वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक बार महाराज जी उनके घर दर्शन देने गए, वहां से होकर महाराज जी ने गांव खोजेवाली जाना था। जब महाराज जी गांव चमियारा पहुंचे तो स. सुंदर सिंह ने निवेदन किया कि, ''महाराज जी आप जी की कृपा से गांव सफीपुर में 15 ऐकड़ ज़मीन ठेके पर ली है। आप कृपा करें और उस ज़मीन पर मुबारक चरण डालें।'' महाराज जी ने उनका निवेदन स्वीकार कर संगतों समेत उनकी ज़मीन पर गए। महाराज जी ने सवर्ण सिंह जी से पूछा कि यह ज़मीन किसकी है?'' स. सुंदर सिंह जी ने कहा कि यह ज़मीन स. दर्शन सिंह की है, तो महाराज जी ने 3 बार वचन किये कि, ''यह ज़मीन तुम्हारी है, यह ज़मीन तुम्हारी है, यह ज़मीन तुम्हारी है।'' स. सुंदर सिंह ने सत्य वचन कहा। अंत में वह 15 ऐकड़ ज़मीन सुंदर सिंह ने सन् 1959 में दर्शन सिंह से खरीदी। इस प्रकार स. सुंदर सिंह पर महाराज जी ने असीम कृपा की। *(स. सोहन सिंह, सुंदर सिंह का भतीजा)*

साखी नंबरः 10

युद्ध में रक्षा करना

स. सुंदर सिंह और उनके भतीजे सोहन सिंह का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। जब सन् 1962 में भारत और चीन की जंग हुई, तो फौजी सोहन सिंह जी महाराज जी से आशीर्वाद लेकर जंग में गए। पहली तार उनके घर आई, जिसमें लिखा था कि सोहन सिंह जंग में घायल हो गये हैं । फिर कुछ दिन बाद दूसरी तार आई कि सोहन सिंह शहीद हो गए हैं। स. सोहन सिंह के परिवार के सदस्य ताया सुंदर सिंह, माता ज्वाली जी और पत्नी चन्नण कौर दोनों तार साथ लेकर रोते हुए महाराज जी के पास आये। तार दिखाते हुए कहा कि,''महाराज जी स. सोहन सिंह जंग में शहीद हो गया है।'' महाराज जी ने कहा कि, ''सारे चुप हो जाओ। महाराज सरवण दास जी ने दोनों तार पकड़ते हुए कहा कि,''सोहन सिंह बिल्कुल ठीक है। एक सप्ताह में ठीक-ठाक घर पहुंच जाऐगा।''

ऐसा ही हुआ, जंग रूकने के बाद स. सोहन सिंह जी चीन सरहद से जहाज़ द्वारा दिल्ली आये और वहां से रेलगाड़ी से जालंधर पहुंचे। घर पहुंचने पर परिवार समेत महाराज जी को नमस्कार करने डेरे पहुंचे और महाराज जी का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और कहा कि, ''महाराज जी आप की कृपा से ही हुआ है कि आज सोहन सिंह परिवार में शामिल है। हमारा सारा परिवार रहती दुनिया तक आपका आभारी रहेगा।'' महाराज जी ने कहा कि,''यह सब कृपा मेरे मालिक साहिब श्री गुरू रविदास महाराज जी की है और यदि आपने धन्यवाद करना है तो साहिब श्री गुरू रविदास महाराज जी का करें। आओ हम सब उनकी जय-जयकार करें।

(स्वयं स. सोहन सिंह जी, जुलाई 2002)

साखी नंबरः 11

गर्भ की रक्षा करना

श्री प्रीतम दास पटवारी और उनकी पत्नी बीबी बलवंत कौर, गाँव चमियारा नज़दीक भोगपुर के संत सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय बीबी बलवंत कौर को सात महीने का गर्भ था। सर्दी के दिन थे। बीबी बलवंत कौर छत पर जाते समय फिसल कर गिर गई। डाक्टर को बुलाया गया तो उसने कहा,''बचाव हो गया, केवल कलाई पर चोट लगी।'' बीबी बलवंत

कौर ने अपने पति श्री प्रीतम दास को कहा कि,''डेरे जाकर महाराज जी को नमस्कार कर के आओ।''श्री प्रीतम दास जी जब सुबह डेरे पहुँचे तो उसी समय संत सरवण दास जी महाराज और संत चेतन दास जी सैर कर रहे थे। प्रीतम दास जी महाराज जी को मिलने के लिए पीछे चले गए। जब महाराज जी को नमस्कार किया, महाराज जी ने कहा कि

''डेरे चलो हम थोड़ी देर में आते हैं।'' महाराज जी ने कहा

''चेतन दास, प्रीतम दास उदास लग रहा है,'' तो संत चेतन दास जी ने कहा कि महाराज जी आप के पास आने से उदासी हट जाएगी। डेरे पहुँच कर महाराज जी ने वचन किया कि,''प्रीतम दास बच्चे का बचाव हो गया है, कोई चिंता मत करना लड़का होगा।'' तो प्रीतम दास ने हाथ जोड. कर कहा,

''आप जानी-जान हो,'' उसके बाद महाराज जी बीबी बलवंत कौर के लिए प्रसाद भेजा। जब पटवारी जी घर पहुँचे तो पहले बीबी बलवंत कौर ने कहा घण्टा पहले महाराज जी आए थे और उन्होंने कहा ,''बेटी कोई चिंता मत करना, तुम्हारी कोख से लड़का पैदा होगा।'' हमने प्रीतम दास के पास प्रसाद भेजा है। यह कह कर महाराज जी चले गए।

श्री प्रीतम दास जी ने कहा कि

''एक घण्टा पहले तो महाराज जी मेरे पास डेरे में बैठे थे। इस प्रकार महाराज जी हर समय अपने सेवकों की रक्षा करते है। दो महीने बाद महाराज जी के वचनों के अनुसार लड़का पैदा हुआ।

(स्वयं प्रीतम दास, पटवारी, 2002)

साखी नंबर: 12

नौकरी का बख्शिश करनी

श्री चमन लाल, चण्ड़ीगढ़ वालों का संत सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। जब उनका साक्षात्कार था, तो उन्होंने एक दिन पहले संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि ''महाराज जी मेरी कल नौकरी के लिए साक्षात्कार है। आप कृपा करो'' तो संत सरवण दास जी ने कहा कि ''तुम्हें उन्होंने चुन लेना है अर्थात् तुम्हें नौकरी मिल जानी है।'' दूसरे दिन साक्षात्कार हुआ जब परिणाम आया, उस में चमन लाल को नौकरी मिल गई, आज वह अवकाश प्राप्त हो गए है।

(स्वयं श्री चमन लाल, चण्ड़ीगढ़)

साखी नंबर:13

श्री मुंशी राम के पुत्र को नौकरी की बख्शिश

श्री मुंशी राम, गाँव बल्लां से महाराज जी के श्रध्दालु थे। एक समय उनका बड़ा लड़का श्री दर्शन अपने छोटे भाई श्री मलकीत को डेरे में संत सरवण दास महाराज जी के पास लेकर आया और दर्शन ने निवेदन किया कि ,''यह मेरा छोटा भाई मलकीत एम.ए में पढ़ता है, आप कृपा करो।'' तो संत सरवण दास महाराज जी ने कहा,''कि इस ने जल्दी बड़ा अफ़सर बनना है।'' ऐसा ही हुआ श्री मलकीत ने एम.ए करने के बाद आई.पी.एस टैस्ट पास किया। आज महाराज जी की कृपा से वह यू.पी. में ए.डी.जी.पी. विधीको डायरेक्टर जनरल पुलिस'' के पद से अवकाश प्राप्त हो गए हैं।

साखी नंबर:14

जानी जान सत्गुरू

श्री चैन राम सुमन जी, गाँव गोलेवाल तहसील गढ़शंकर, होशियारपुर और स. स्वर्ण सिंह जी, गाँव बल्लां दोनों ही महाराज जी के श्रद्धालु थे। दोनों ही रक्षा खाते विभाग में सुरानुस्सी, जालन्धर में लेखा परीक्षक थे। सन् 1970 ई. में मई महीने की बात है, जब स. स्वर्ण सिंह जी शाम को छुट्टी कर गाँव बल्लां वापिस आ रहे थे तो श्री चैन राम सुमन जी ने स. स्वर्ण सिंह को कहा कि''आज मुझे भी डेरे जाना है।'' दोनों इकट्ठे एक साइकिल पर सत्संग के बारे में चर्चा और संतों की महिमा करते डेरे पहुँचे। जब दोनों ने संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज सरवण दास जी ने कहा, ''आज तो आप दोनों ज्ञान वाणी की बाते करते आ रहे थे।'' उन्होंने इस अंदाज में कहा जैसे वह दोनों सेवकों के अंग-संग होते हुए उनकी बाते सुन रहे हों।

(श्री चैन राम सुमन, दिन शुक्रवार, 13,जून 2003)

साखी नंबर:15

दिलों की जानने वाले

सन् 1969 ई. की बात है कि एक समय श्री चैन राम सुमन जी,गाँव गोलेवालत हसीलग ढ़शंकर,ह ोशियारपुरर क्षाख ातें विभागस ुरानुस्सीम ें नौकरी करते थे और गुरू रविदास नगर नज़दीक मकसूदां, जालन्धर में रहते थे। एक दिन उनके मन में संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार

करने की श्रद्धा और इच्छा हुई। वह 100 ग्राम पतासे प्रसाद के तौर पर लेकर डेरे की तरफ चल पड़े। रास्ते में उन्होंने मन ही मन सोचा जो प्रसाद महाराज जी के लिए पतासों का लेकर जा रहा है वह महाराज जी की पावन रसना के लायक नहीं हैं। उनकी रसना के लायक तो कोई उत्तम फल, दूध या खोऐ की अच्छी मिठाई ही हो सकती है। मेरे लेकर आए पतासे वह कैसे खा सकते हैं? यह विचार करते और गुरू चरणों में ध्यान करते हुए वह डेरे पहुँचे। इतिफ़ाक से यहाँ इस समय दवा खाना है, उस कमरे के बाहर सामने ही महाराज जी कुर्सी पर बैठे थे, उनके आगे छोटा मेज़ पड़ा था। उस समय उनके पास कोई श्रद्धालु नहीं बैठा था। श्री सुमन ने श्रद्धा सहित डेरे पहुँच कर प्रसाद मेज़ पर रखकर नमस्कार की और गुरू जी की चरणों की धूल माथे पर लगाकर चुपचाप महाराज जी के सामने दरी पर बैठ गए। कुछ ही समय बाद महाराज जी प्रसाद वाला थैला उठाया और उस में से पतासों को देखा। सुमन जी के देखते ही देखते महाराज जी ने थैले में से एक बड़ा पतासा उठाया और उसको खा लिया। यह कौतुक देखकर श्री सुमन जी ने जाना कि महाराज जी दिलों की जानते है।

(स्वयं श्री चैन राम सुमन जी, 14,जून 2002)

साखी नंबर:16

श्री गुरमीत की रक्षा करना

श्री गुरमीत सिंह सुपुत्र श्री खुशी राम, गाँव रसूलपुर वाले डेरे में संत सरवण दास महाराज जी के पास रहकर पढ़ाई करते थे। उन्हीं दिनों गुरमीत सिंह दोआबा कॉलेज, जालन्धर में पढ़ते थे। यह बात सन् 1971 की है, जब वह कॉलेज से छुट्टी कर डेरे पहुँचे, तो महाराज जी ने कहा, ''आ गया? जाओ कल मकसूदां में श्री साधारण पाठ का भोग है, जो पाठ काफ़ी लेट है तुम पाठ करके वापिस डेरे आना।'' गुरमीत सिंह 3:30 बजे शाम को मकसूदा पहुँचे और श्री सहज पाठ कर 9:30 बजे डेरे वापिस आ रहे थे। घर वालों ने कहा कि ''अंधेरा काफ़ी हो गया है, सुबह डेरे चले जाना।'' तो गुरमीत सिंह ने कहा, ''महाराज जी का हुक्म है, इस लिए मैं डेरे जा रहा हूँ।'' जब वह डेरे वापिस आ रहे थे, तो नहर पर उन्हें तीन लुटेरों ने घेर लिया। एक ने कहा कि, ''घड़ी और जो कुछ भी है, वह भी रख दो, नहीं तो तुम्हें मार देंगे।'' उस समय गुरमीत सिंह ने महाराज जी को याद किया, तो गाड़ी में एक आदमी वहाँ पहुँचा। उस को देखकर वह लुटेरे भाग गए। गुरमीत सिंह जब गाँव डेरे में संत

सरवण दास महाराज जी के पास पहुँचा। उस समय महिंगा राम महाराज जी के पास बैठा था। उस समय महाराज जी ने सारी घटना आप ही बताते हुए कहा कि, ''कष्ट टल गया है।''

(स्वयं श्री गुरमीत जी, 2001)

साखी नंबर:17

संतों के वचन सत्य निकले

श्री खुशी राम और सारा परिवार, गाँव रसूलपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनका लड़का डेरे में रहकर पढ़ाई करता था। सन् 1972 ई. की बात है। गुरमीत सिंह का सुबह राजनीति शास्त्र का इम्तिहान था। उन्हीं दिनों श्री मीत राम रायपुर वालों के घर श्री साधारण पाठ रखे थे। महाराज जी ने गुरमीत सिंह को कहा, कि ''जाकर रायपुर चार घण्टे पाठ करके आओ।'' जब गुरमीत सिंह जी डेरे वापिस आए तो महाराज जी ने कहा कि ''दो घण्टे पढ़ लो, और जो कुछ भी पढ़ेगा सुबह वहीं इम्तिहान में आएगा।'' गुरमीत सिंह ने जब दूसरे दिन इम्तिहान देखा, तो वहीं सब रात का पढ़ा देखकर हैरान रह गया। श्री गुरमीत सिंह जी के 66प्रतिशत नंबर आए।

(स्वयं श्री गुरमीत सिंह जी, 2001)

साखी नंबर:18

श्री ओम प्रकाश की इच्छा पूर्ण करना

श्री ओम प्रकाश जी सुपुत्र श्री गुरिया राम जी, गाँव लांबड़ा नज़दीक बुलोवाल महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। सन् 1968-69 ई. की बात है। वह फौज़ में नौकरी करते थे। उन दिनों उनकी ड्यूटी पानीतोल नज़दीक तिनसुकिया असम में थी। उन्होंने कैन्टीन में से मन में धारण कर एक दोशाला खरीदा कि महाराज जी इस को अपने नीचे आसन के लिए बिछाए। वह दोशाला लेकर जब डेरे में संत सरवण दास महाराज जी के पास पहुँचे, तो दोशाला का वर्णन करने से पहले ही जानी-जान महाराज जी आसन से उठकर खड़े हो गए, और कहा कि ,''यह दोशाला जो आप श्रद्धा प्रेम से लेकर आए हो, अभी हमारे आसन पर बिछाओ।'' श्री ओम प्रकाश जी ने दोशाला आसन पर बिछा दिया और महाराज जी उसके ऊपर बैठ गए। यह कौतुक देखकर श्री ओम प्रकाश ने जाना कि मेरे सत्गुरू पूर्ण है, जिन्होंने मेरे मन की बात जान ली। *(स्वयं श्री ओम प्रकाश जी, 13, सितम्बर 2001)*

साखी नंबर:19

स. कुनण सिंह और बीबी जीत कौर को लड़कों का बख्शिश करना

स. शिव सिंह जी सुपुत्र श्री प्रेम सिंह, गाँव बल्लां के रहने वाले थे। कुनण सिंह और उनकी सुपत्नी जीत कौर, गाँव बरनां, फगवाड़ा के रहने वाले थे। उनके घर छः लड़कियाँ हुई। उनको साथ लेकर स. शिव सिंह जी संत सरवण दास महाराज जी के पास आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी छः लड़कियां है। कृपा करो लड़कों की दात बख्शिश करो।'' तो महाराज जी ने एक केले का प्रसाद बीबी जीत कौर को दिया। एक वर्ष बाद उनके घर एक लड़के का जन्म हुआ। जब वह लड़के का माथा टिकाने डेरे आए, तो महाराज जी ने हुक्म किया जोड़ी बनेगी। लगभग एक वर्ष बाद उनके घर एक और लड़के ने जन्म लिया। दोनों लड़कों का नाम मनजीत और बिन्दर सिंह है।

(स.शिव सिंह सुपुत्र प्रेम सिंह, बल्लां ,19 सितम्बर 2001)

साखी नंबर:20

श्री आत्मा राम पर कृपा करनी

श्री आत्मा राम जी सुपुत्र श्री नत्थू राम जी, ब्यास गाँव वाले संत सरवण दास महाराज जी के सेवक थे। जब उनका अन्तिम समय आया तो वह बीमार हो गए। सन् 1960 ई.में माघ के महीने और दिन रविवार को संत सरवण दास महाराज जी श्री आत्मा राम जी को देखने के लिए उसके घर गए। श्री आत्मा राम जी ने लेटे हुए ही महाराज जी के आगे नमस्कार करते हुए कहा कि,''महाराज जी मुझे आप जी ने अब संसार से कब लेकर जाना है?'' तो महाराज सरवण दास जी ने कहा कि ,''परसों मंगलवार 10 बजे तुम्हें लेने आएगे कोई चिंता नहीं करनी।'' उस समय श्री आत्मा राम जी की सुपत्नी बीबी नामी और सुपुत्र श्री राज मल जी वहाँ थे। महाराज सरवण दास जी कुछ समय उनके घर रूक कर वापिस डेरे आ गए। जब परसों का दिन मंगलवार आया तो बीबी नामी और उनके सुपुत्र श्री राज मल ने जब दस बजने में लगभग पाँच मिनट का समय था, श्री आत्मा राम जी से पूछा कि,''संत सरवण दास महाराज जी कहाँ है?'' तो बुर्जुग आत्मा राम जी ने कहा, कि,''मेरे गुरू संत सरवण दास जी मुझे लेने आ गए है और मेरे पास खड़े है। मैं अब उनके पास जा रहा हूँ।'' इतने वचन कहकर श्री आत्मा राम जी दो-तीन मिनटों में ही अपना शरीर त्याग कर महाराज जी के चरणों में जा विराजे। उस समय

शारीरिक तौर पर महाराज जी डेरे में थे।

(श्री राज मल जी सुपुत्र श्री आत्मा राम जी, 8नवम्बर,2001)

साखी नंबर:21

श्री चरनजीत की इच्छा पूर्ण करनी

श्री चरनजीत सिंह सुपुत्र श्री संत राम जी का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। उन्होंने महाराज संत सरवण दास जी से नाम-दान प्राप्त किया था। सन् 1971 ई. की बात है कि वह गाँव खानके, जालन्धर में मिस्त्री के तौर पर किसी का मकान बना रहा था। मकर सक्रांति का दिन था। उन्होंने सुबह जा कर मकान मालिकों से कहा कि,''आज मकर सक्रांति का दिन है, मुझे छुट्टी चाहिए। मैंने डेरा बल्लां में संतों के दर्शन के लिए जाना है। मकान के मालिक और बाकी सब मजदूरों ने कहा कि,''नहीं आज काम करना है। चरनजीत ने बहुत बार अनुरोध किया कि,''मुझे छुट्टी दे दो, मैं कल आ जाऊँगा।'' पर किसी ने भी उनकी बात नहीं मानी। उनमें से एक ने कहा कि,''चरनजीत, अगर कोई समझदार व्यक्ति कहे तो कुंए में कूद लेना चाहिए। अर्थात् उसका कहना मान लेना चाहिए।'' श्री चरनजीत जी उदास हो गए क्योंकि उनके मन में महाराज जी के प्रति प्रेम था। मिस्त्री मकान निर्माण करने लग गए पर कुछ ही मिनटों में पेड़ टूट गया। सब नीचे गिर गए पर किसी को भी चोट नहीं लगी। चरनजीत ने कहा कि,''भले ही आप मुझे काम से जवाब दे दो, मैंने आज काम नहीं करना। मैंने डेरे में महाराज जी के दर्शन करने जाना है और ज़रूर जाऊँगा।'' जब उन्होंने डेरे में पहुँचकर नमस्कार करते समय सिर चरणों में रखा तो महाराज जी ने वचन किया कि,''बड़े बुर्जुगों के कहने पर कुएँ में कूदना नहीं चाहिए।'' महाराज जी ने मुस्कुराते हुए सारी घटना बता दी और वचन किया कि,''चरनजीत, जितना भी काम हो, हर मकर सक्रांति पर डेरे ज़रूर आना है।

(स्वयं श्री चरनजीत सिंह सुपुत्र श्री संत राम जी, गाँव कालूवाल, जनवरी 2001)

साखी नंबर: 22

स. काबल सिंह की इच्छा पूर्ण करनी

स. काबल सिंह, फगवाड़ा के रहने वाले थे। उनके मन में नाम-दान लेने की बहुत तमन्ना थी। वह किसी संत महापुरूष के पास गए और नाम-दान

के लिए प्रार्थना की। तो संत महापुरूष बोले,''फिर कभी आना।'' स. काबल सिंह जी ने पहले कभी किसी से सुना था कि संत सरवण दास जी महाराज, डेरा बल्लां में पूर्ण महात्मा हैं तो वह पूछते-पूछते डेरा बल्लां में पहुँच गए और संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार किया। महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''तुम उन संत महापुरूष से नाम-दान लेने गए थे।'' तो स. काबल सिंह ने जान लिया कि यह पूर्ण महात्मा हैं, जिन्होंने मेरे दिल की बात जान ली। उन्होंने महाराज जी के चरण पकड़ लिये और महाराज सरवण दास जी से नाम-दान के लिए निवेदन किया। महाराज जी ने कहा कि पहले आप सवा लाख बार मूल मंत्र का पाठ करो। उन्होंने उसी तरह किया। फिर उसके बाद महाराज जी ने उनको नाम-दान दिया।

(स्वयं स. काबल सिंह, फगवाड़ा, 22,अप्रैल 2002)

साखी नंबरः 23

तुम्हारी तुम ही जानो

एक समय स. काबल सिंह जी महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने के लिए आए। स. काबल सिंह जी उस रात कुटिया में ही रूक गए, तो महाराज सरवण दास जी सुबह लगभग तीन बजे गाँव में स्थित डेरे से कुटिया में आकर कुर्सी पर बैठकर भजन कर रहे थे। जब स. काबल सिंह जी ने महाराज जी को नमस्कार की तो उस समय महाराज सरवण दास जी ने कहा,''देखो काबल सिंह, कैसे अठारह सिद्धियाँ,नौ निधियाँ हमारी सेवा में खड़ी है और हमें कह रही है कि हमें कोई सेवा बताइए।'' महाराज जी ने कहा,''हमने इन्हें बहुत बार कहा है कि हमें आपकी कोई ज़रूरत नहीं है।'' तो स. काबल सिंह जी ने कहा कि''महाराज जी आप की आप ही जानो। हमें आप की रमज़ें (लीलाएँ) समझ नहीं आती।''

(स्वयं स. काबल सिंह जी, फगवाड़ा, 22,अप्रैल 2002)

साखी नंबरः 24

सेठ दौलत राम को पुत्रों की दात की बख्शिश करना

सेठ दौलत राम जी, गाँव नंगल करार खाँ, जालन्धर में रहते थे। उनका और उनकी सुपत्नी बीबी राऊ जी का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। उनकी बूटा मण्डी में चमड़े की दुकान थी। उन्होंने राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पंजाब में काफ़ी जायदाद(ज़मीन)के मालिक थे। एक बार सन्

1955 ई. में सेठ जी और उनकी पत्नी डेरे में महाराज सरवण दास जी के पास आए। बीबी राऊ जी ने महाराज सरवण दास जी के आगे प्रार्थना की कि ,"आपकी कृपा से ज़मीन जायदाद तो बहुत है, पर हमारे दो पुत्रियाँ ही है। कृपा करो और पुत्र की दात बख्शिश करो।" महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,"तुम्हारे भाग्य (कर्मों) में कोई पुत्र नहीं है। सेठ दौलत राम को दूसरी शादी करनी पड़ेगी। उसके गर्भ से चार पुत्र पैदा होंगे।" साथ ही महाराज जी ने कहा कि,"दौलत राम तुम्हारी दोनों पत्नियों का आपस में बहुत प्रेम होगा, पुत्रों का प्रेम भी बीबी राऊ जी के साथ अधिक होगा, पर तुम्हारी ज़मीन जायदाद तुम्हारे पास नहीं रहेगी।"

सेठ दौलत राम जी ने महाराज जी के हुक्म अनुसार दूसरी शादी बीबी राम प्यारी जी से की जिसके गर्भ से क्रमवार चार पुत्र सुरिंदर कुमार, सुग्रीव कुमार, परस राम और अश्विनी कुमार पैदा हुए।

जब मैं(सुरिंदर दास बावा)बीबी राऊ जी के शांति पाठ औरअंतिम अरदास में शामिल होने हेतु नंगल करार खाँ गया तो सुग्रीव कुमार ने बताया कि ,"भले ही हमें जन्म बीबी प्यारी ने दिया था पर बचपन से ही हमारा अधिक प्रेम बीबी राऊ के साथ था। भले ही आज हमारी जो ज़मीन जायदाद उत्तर प्रदेश, राजस्थान में थी, बिक चुकी है पर हमारे पर जो कृपा है। यह सब संत सरवण दास महाराज जी की है।"

(सुग्रीव कुमार पुत्र श्री सेठ दौलत राम, गाँव नंगल करार खाँ,जालन्धर)

साखी नंबर: 25

बेबी मनजीत पर कृपा करनी

श्री अमर चंद हकीम जी बीबी राम प्यारी,गाँव रायपुर रसूलपुर के रहने वाले थे। उनका संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनकी पुत्री मनजीत(सीसो) की आयु पाँच वर्ष की थी। उसकी टाँगे नहीं चलती थी। वह चल-फिर नहीं सकती थी, केवल बैठ ही सकती थी। सन् 1963 ई. में बेबी मनजीत के माता-पिता उसको लेकर महाराज संत सरवण दास जी के पास आए। उन्होंने महाराज सरवण दास जी को नमस्कार कर निवेदन किया कि,"महाराज जी, इस बच्ची पर कृपा करो। यह चलने-फिरने लग जाए। हो सकता है कि हमारे बाद इसको कोई पूछे या ना पूछे।" यह शब्द कहते हुए उनकी आवाज़ में एक निवेदन-सा था। दया के भंडार स्वामी संत सरवण दास

जी महाराज ने पूछा, लड़की का क्या नाम हैं?'' तो श्री अमर चंद जी ने कहा कि,''इसका नाम मनजीत कौर है और इसको सीसो कह कर भी बुलाया जाता है। महाराज सरवण दास जी ने वचन किया,''कि इसका नाम सीसो की जगह मेहर कौर रख लो। समझो, आज से इस लड़की पर अकाल पुरूष की मेहर हो गई । यह लड़की धीरे-धीरे चलने फिरने लग जाएगी।''

उस दिन के बाद महाराज जी की कृपा से उस लड़की की टाँगें ठीक होनी शुरू हो गई और वह लड़की कुछ ही महीनों में ठीक तरह से चलने-फिरने लगी।

आज बीबी मेहर कौर जी ने महाराज जी की महिमा सुनाते हुए आँखों में आँसू भर लिये और बताया कि,''मुझ पर महाराज जी ने अपार कृपा की है। मेरे माता-पिता ने मुझे बताया कि महाराज जी ने वचन किए थे कि यह लड़की बहुत विद्या प्राप्त करेगी और बच्चों को शिक्षा देगी। आज मैं बच्चों को पढ़ाती हूँ। यह सारी कृपा सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की है नहीं तो शायद मैं इस लायक न होती और गुमनाम ज़िन्दगी व्यतीत कर रही होती।''

(बीबी मनजीत कौर(मेहर कौर) पुत्री श्री अमर चंद हकीम और बीबी राम प्यारी, रायपुर-रसूलपुर, 24 जनवरी 2002)

साखी नंबर: 26

महाराज जी का करिश्मा

लगभग पचास वर्ष पहले की बात है। गर्मियों के दिन थे। शाम का समय था। पति-पत्नी ने अलावलपुर में आकर, संत सरवण दास महाराज जी की कुटिया के बारे में पूछा तो अलावलपुर वासियों ने कहा कि,'' अब रात हो गई है। आप रात यहाँ पर ही रूक जाओ और सुबह चले जाना।'' पर हम उनके कहने पर भी नहीं रूके।

जिस वक्त वह रेलवे फाटक से थोड़ा आगे गए तो उन्होंने शेर देखा औरव हव ापिसच लेग ए।अ लावलपुरम ेंज ाकरर ातर हकरस ुबहड ेरे पहुँचकर संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने कहा कि,'' अलावलपुर वासियों ने रोका था तो रूक जाना था, आपको शेर से डरना न पड़ता।'' इस घटना से स्पष्ट हो गया कि यह करिश्मा महाराज जी का था।

(श्री जीत राम सुपुत्र श्री संत राम जी, अलावलपुर,19 मई 2003)

साखी नंबर: 27

बाबा जवाहर दास जी के ब्रह्मलीन होने के बारे में बताना

श्री संत राम जी के घर महाराज सरवण दास जी जाया करते थे और कई बार रात रहकर सत्संग किया करते थे। एक बार रात के समय महाराज जी उनके घर छत पर बैठकर सत्संग कर रहे थे तो अचानक आसमान में किसी गर्जन की आवाज़ आई। इस आवाज़ को सुनते ही महाराज जी शांत हो गए और कुछ गंभीर दिखाई देने लगे। कुछ समय बाद महाराज सरवण दास जी ने कहा, ''गुरू प्यारी साध-संगत जी, आज पूर्ण महात्मा संत बाबा जवाहर दास जी सूसां वाले अपना पंच तत्व भौतिक शरीर त्याग कर परमात्मा में लीन हो गए।''

उस समय वहाँ श्री महंगा राम, श्री भल्ला राम,भजन चंद, श्री हज़ारा राम, श्री अमर नाथ, श्री दास राम, ज्ञानी जीत राम और खुद श्री जीत राम(जिनकी आयु लगभग 15 वर्ष थी) और अधिक संगत मौजूद थी।

(स्वयं श्री जीत राम सुपुत्र श्री संत राम, अलावलपुर, 19 मई 2003)

साखी नंबर: 28

स. तरलोक सिंह के मन की बात को जानना

स. तरलोक सिंह गिल सुपुत्र स. लाल सिंह मेजर, गाँव जफ़ल झिंगड़ के रहने वाले थे। सन् 1971ई. में जुलाई महीने की बात है, वह इंग्लैंड से भारत आए। अपने जीजा स. हरबंस सिंह को साथ लेकर सुबह से भूखे पेट कई स्थानों पर घूमते रहे। आखिर उनके मन में विचार आया कि क्यों न संत सरवण दास महाराज जी, डेरा बल्लां वालों को मिला जाए। दर्शन करने के लिए जब वह डेरे में पहुँचे तो महाराज सरवण दास जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे हुए थे। जब उन दोनों ने महाराज सरवण दास जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने कहा कि ''जाओ लंगर में जाकर दो-दो माहल पूड़े छको और चाय पीयो। सुबह के भूखे घूम रहें हो।'' महाराज जी के यह वचन सुन कर स. तरलोक सिंह और उनके जीजा जी मन ही मन बड़े हैरान और प्रसन्न हुए कि महाराज जी पूरे ब्रह्मज्ञानी हैं।

(स्वयं स. तरलोक सिंह सुपुत्र स. मेजर लाल सिंह, गाँव जॅफल झिंगड़, जालन्धर, 16,जून 2003)

साखी नंबरः 29

श्री सोहन लाल और श्री प्रीतम दास की शंका का निवारण करना

श्री सोहन लाल(गाँव खिच्चीपुर)और श्री प्रीतमदास पटवारी(गाँव चमियारा)दोनों महाराज सरवण दास जी के सेवक थे और सरकारी नौकरी करते थे। यह बात सन् 1963 ई.की है। हम दोनों ही नौकरी से सीधे महाराज जी के दर्शन करने डेरे आ रहे थे। दोनों ने सलाह की थी कि 'महाराज जी को दो-दो रूपए का माथा टेकना है' पर जब उन्होंने डेरे जाकर पाँच-पाँच रूपए महाराज जी के आगे रख कर नमस्कार किया, तो महाराज जी ने दोनों को तीन-तीन रूपए वापिस देते हुए कहा, तुम दोनों ने सलाह की थी कि ''दो-दो रूपए का माथा टेकना है। इस लिए तीन-तीन रूपए वापिस ले लो।'' उन दोनों ने महाराज जी से कहा कि,''महाराज जी! गलती हो गई, माफ़ कर दीजिए।'' महाराज जी ने संत गरीब दास जी से कहा कि,''इन छः रूपए का कुछ सामान मंगवा लीजिए।''

(श्री सोहन लाल सैक्रेटरी सुपुत्र बसंत राम, खिच्चीपुर ,जालन्धर, 6 जून 2003)

साखी नंबरः 30

डेरे आने से पहले ही बता देना

श्री राम किशन राजू जी सुपुत्र श्री भगत राम राजू, गाँव चक्कोवाल शेखां, होशियारपुर (आज कल बड़ौदा) का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। जनवरी सन् 1960 ई. की बात है, कि श्री राम किशन जी महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने के लिए डेरे जा रहे थे। इधर संत सरवण दास महाराज जी लगभग 6:45 बजे कुटिया से गाँव स्थित डेरे में विश्राम करने के लिए जा रहे थे, कुटिया के दरवाजे पर खड़े हो गए। महाराज जी के साथ श्री संत राम, किशनगढ़ वाले और श्री जगत राम रसोईया(गाँव बल्लां)थे। श्री संत राम जी ने पूछा, ''महाराज जी! आप दरवाजे पर खड़े होकर किसका इंतजार कर रहे हो?'' तो महाराज जी ने कहा,''राम किशन चक्कोवाल शेखां वाला आ रहा है, हम उसी का इंतजार कर रहे हैं।''

तकरीबन पन्द्रह मिण्ट बाद सात बजे श्री राम किशन जी ने डेरे के दरवाजे पर पहुँचकर महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने कहा, ''हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे। साइकिल खड़ा करके जल्दी लंगर छक

कर आओ। गाँव के डेरे में चले।'' गाँव पहुँचकर श्री संत राम ने श्री राम किशन जी को उपरोक्त सारी बात बताई।

(स्वयं श्री राम किशन राजू रिटायर्ड ओ.एन.जी.सी. सुपुत्र श्री भगत राम राजू, बड़ौदा, चक्कोवाल शेखां, होशियारपुर(आज कल बड़ौदा) 18,जून 2003)

साखी नंबर: 31

श्री राम किशन को नौकरी की बख्शिश करना

श्री राम किशन सुपुत्र श्री भगत राम राजू जी, चक्कोवाल शेखां ने सन् 1958 ई. में महाराज जी से नाम-दान की प्राप्ति की थी। सन् 1960 ई.में दिसंबर के आखिर से लेकर मकर सक्रांति(माघी) सन् 1961 ई.तक महाराज जी के पास रहे। एक दिन उन्होंने नल चलाकर महाराज जी को स्नान करवाते हुए निवेदन किया, ''महाराज जी, एक आदमी कहता है कि मैं तुम्हें रिश्वत देकर पक्की नौकरी लगवा देता हूँ। महाराज जी ! मैं सैशन जज होशियारपुर बतौर टाईपिस्ट कर्लक की नौकरी करता हूँ।'' महाराज जी ने कहा कि,''ऐसा गलत काम नहीं करना। परमात्मा की कृपा से आपको पक्की नौकरी मिल जाएगी।'' ऐसे महाराज जी ने सात बार कहा। श्री राम किशन जी मैट्रिक पास थे। तेल और प्राकृति आयोग में साक्षात्कार हुआ और उनकी सिलैक्शन हो गई। 27 जुलाई जूनियर अकांऊट अस्सिटेंट भर्ती हुए और सन् 1998ई. को रिटायर हुए। उन्होंने नौकरी मिलने के बाद बी.ए. की थी।

(श्री राम किशन सुपुत्र श्री भगत राम राजू ,गाँव चक्कोवाल शेखां, होशियारपुर (आज कल बड़ौदा) 18 जुलाई 2003)

साखी नंबर: 32

सात साल बाद बोलना

श्री सरवण सिंह सुपुत्र श्री मेहरू राम, मिठापुर, जालन्धर, का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। एक समय श्री सरवण सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी छिन्नो जी, अपने पुत्र पप्पू को लेकर आए और महाराज जी से निवेदन किया कि,''महाराज जी ! कुछ दिन बाद पप्पू का सातवां जन्मदिन है। यह लड़का बोलता नहीं है। आप कृपा करो कि यह बोलने लगे।'' महाराज जी ने कहा कि,''जिस दिन इसका जन्मदिन है, उस दिन अपने घर सत्संग करवायो और सत्संग वाले दिन हम आपके घर आएगें।'' महाराज जी उस दिन उनके घर गए और सत्संग होने के बाद महाराज जी ने कहा कि, ''बच्चे

को हमारे पास ले कर आओ। महाराज सरवण दास जी ने श्री सरवण सिंह को कहा, आज के बाद यह लड़का धीरे-धीरे बोलना शुरू हो जाएगा।'' महाराज जी की कृपा से वह लड़का धीरे-धीरे बोलता हुआ पूरी तरह बोलने लगा और आज मिठापुर में दुकान चलाता है।

(स्वयं श्री सरवण सिंह जी सुपुत्र श्री मेहरू राम, मिठापुर, जालन्धर, 18, जून 2003)

साखी नंबरः 33

जंगल के शेर भी झुकते थे

संत सरवण दास महाराज जी का संत रत्न दास जी, जेजों वालों से बहुत प्रेम था। महाराज जी कई-कई दिन उनके पास जेजों, होशियारपुर में रहा करते थे। संत रत्न दास महाराज जी ने यह कथा संत जगत राम जी को गाँव शेरपुर के पास सुनाई थी कि संत सरवण दास महाराज जी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी महात्मा थे और हमारे पास कई-कई दिन रूका करते थे। जब वह जंगल में जाकर तप किया करते थे तो उनके पास जंगली जानवर बैठ जाया करते थे। इस जंगल में एक शेर रहता था और वह शेर अक्सर उनके पास आकर बैठ जाता था।

एक समय संत सरवण दास महाराज जी भजन कर रहे थे तो उधर से कुछ श्रद्धालु आ रहे थे। उन्होंने हमें आकर बताया कि, '' महाराज जी ! जंगल वाले रास्ते पर एक पर एक संत भजन कर रहे थे, उनके पास एक शेर बैठा था। हम तो देखकर घबरा गए।'' तो महाराज रत्न दास जी ने कहा कि, ''उनको कुछ नहीं कहेगा। वह स्वयं बब्बर शेर महापुरूष है। कई जंगली जीवों के पुराने हिसाब-किताब खत्म करने के लिए वह अक्सर आते रहते हैं, इस लिए डरने की ज़रूरत नहीं, ऐसे महापुरूषों का आर्शीवाद लेने का यत्न करना चाहिए। वह संत सरवण दास महाराज जी बल्लां वाले है।''

(बीबी भजनो जी, 19, जून 2003)

साखी नंबरः 34

श्री दीवान चंद जी को ज़मीन की बख्शिश करनी

संत सरवण दास महाराज जी के साथ श्री करतार चंद कंगनीवाल वालों का बहुत प्रेम था। सन् 1959 ई. में श्री करतार चंद जी के पिता श्री दीवान चंद जी ने गाँव में पक्के मकान बनाए। उन्होंने अपने घर में संत सरवण दास महाराज जी के आदेशानुसार सत्संग करवाया। सत्संग वाले दिन महाराज

जी उनके घर गए। महाराज जी ने कहा ,''दीवान चंद मकान तो पक्के बना लिये पर ज़मीन भी कहीं खरीदी है?'' तो दीवान चंद ने विनम्रता से कहा कि ''महाराज जी आप कृपा कर देगें तो ज़मीन भी खरीद लेंगे पर इस समय हमारे पास कोई ज़मीन नहीं है।'' महाराज जी ने कहा,''चिंता मत करो, जल्द ही हम ज़मीन वाले भी हो जाऐंगे।''

महाराज जी के वचन पूरे हुए। कुछ वर्षों बाद श्री दीवान चंद जी ने संतोखपुरा में बारह खेत खरीदे। इस ज़मीन पर सन् 1964-1965 ई. में महाराज जी ने नए टयबूवैल का शुभ मुर्हुत किया था।

(स्वयं श्री करतार चंद पुत्र श्री दीवान चंद, कंगनीवाल (आजकल संतोखपुरा, जालन्धर), 19 जून 2003)

साखी नंबर: 35

श्री सेरू राम की मुक्ति करनी

श्री सेरू राम जी सुपुत्र श्री चूड़ा राम, ब्यास गाँव वालों संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। आषाढ़ का महीना सन् 1970 ई.की बात है। शाम का समय था। महाराज जी ने हलवे का प्रसाद बनवाया और पाँच शब्द मर्गके कहलवा कर श्री सेरू राम जी की आत्मा की शांति के लिए अरदास की। उस समय श्री पाला राम ने कहा कि ''महाराज जी, सेरू राम तो बिल्कुल ठीक है।'' महाराज जी ने कहा कि,''कल सुबह हमने सेरू राम लंबरदार को विदा करने जाना है।'' दूसरे दिन महाराज जी श्री सेरू राम के घर आए। श्री सेरू राम को रात से ही साँस लेने में मुश्किल हो रही थी। जिस समय महाराज जी श्री सेरू राम के घर गए तो महाराज जी के दर्शन करते हुए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। उस समय उनके सुपुत्र प्रकाश राम पटवारी पास थे।

(स्वयं श्री प्रकाश चंद पटवारी सुपुत्र श्री सेरू राम ब्यास गाँव, 20,जून 2003)

साखी नंबर: 36

श्री जगत राम की मुक्ति करनी

श्री जगत राम जी रसोईया, गाँव बल्लां का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। वह महाराज जी के पास रहा करते थे। लंगर में सेवा किया करते थे। लगभग सन् 1966-1967 ई. की बात है, जब उनका अंतिम समय आया तो महाराज जी ने उनको सुबह जल्दी उठा कर, स्नान करके नए वस्त्र

पहनने को कहा। जब उन्होंने ऐसा किया तो महाराज जी ने कहा कि,''जगत राम तेरा समय पूरा हो गया है,'' तो फिर महाराज जी कहा कि, ''चौकड़ी लगा कर भजन करो।'' उन्होंने ऐसा ही किया और उसी तरह बैठे हुए उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

साखी नंबरः 37

श्री हरगोपाल सिंह और बीबी महिन्दर कौर को औलाद की बख्शिश करनी

सन् 1968ई. गर्मियों के दिन थे। श्री हरगोपाल पुत्र श्री जय सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी महिन्दर कौर, गाँव सियाजपुर, टांडा(आजकल होशियारपुर) से संत सरवण दास महाराज जी की महिमा सुनकर डेरे बल्लां में पहुँचे। महाराज जी उस मुकेरियां गए हुए थे। जब महाराज जी शाम को डेरे पहुँचे तो आप अपने स्थान पर बैठ गए। श्री हरगोपाल सिंह और बीबी महिन्दर कौर दर पर ही नमस्कार कर बैठ गए। दोनों पति-पत्नी ने निवेदन किया कि ,''महाराज जी हमारे कोई संतान नहीं है। मकान भी कच्चे हैं। गरीबी बहुत है और नौकरी भी नहीं मिली।'' महाराज जी दोनों को अलग अपने पास ले गए और कहा,''कोई चिंता नहीं करनी। आप के कर्मों में पाँच फल है। एक बच्चा तीसरे महीने गर्भ में ही गिर जाएगा। दूसरा बच्चा मरा हुआ पैदा होगा और तीन ठीक रहेंगे। मकान भी बहुत सुंदर बनेगा और नौकरी भी मिल जाएगी।''

बीबी महिन्दर कौर जी ने बताया कि,''महाराज जी के सभी वचन सत्य सिद्ध हुए। मेरे तीन बच्चे हैं। बेटा बिक्रम सिंह और दो बेटियाँ नीतू और मनजीत है। मेरे पति को भी नौकरी मिल गई और हमारे मकान भी बहुत सुंदर बन गए। संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से हमें किसी वस्तु की कमी नहीं है।''

(स्वयं बीबी महिंदर कौर पत्नी श्री हरगोपाल सिंह पुत्र श्री जय सिंह, गाँव सियाजपुर, टांडा, (आजकल गली नं. 4 मोहल्ला रूप नगर, होशियारपुर) 20,जून 2003)

साखी नंबरः 38

श्री कृपाल सिंह की रक्षा करनी

बीबी महिन्दर कौर ने बताया कि मेरे देवर सरपंच कृपाल सिंह को बहुत दौरे पड़ते थे। उसकी मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं रहती थी। हम

उसको संत सरवण दास महाराज जी के पास ले कर आए। महाराज जी ने देसी दवाई दी और कहा कि, ''यह समय के साथ ही ठीक होगा।''

सन् 1974 ई.की बात है कि शाम छः बजे वह कुँए में गिर गया। रात्रि बारह बजे जब घरवालों ने उसे कुँए से बाहर निकाला तो उसने घास को पकड़ा हुआ था। उसका आधा शरीर पानी से बाहर था तो उसने बताया कि, ''जब मैं कुँए में गिर पड़ा था तो उस समय संत सरवण दास महाराज जी ने मुझे प्रकट होकर कहा था कि चिंता नहीं करनी। इस घास को पकड़ लो।'' इस प्रकार महाराज जी ने मेरी रक्षा की उसके बाद कृपाल सिंह की तबीयत भी ठीक हो गई। आज महाराज जी की कृपा से वह अपने गाँव का सरपंच है।

(सियाजपुर टांडा के सरपंच, बीबी महिन्दर कौर श्री हरगोपाल सिंह , होशियारपुर)

साखी नंबर: 39

महाराज जी की भविष्यवाणी

मिस्त्री दलीप सिंह, अबादपुरा का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। उनके हाथों ही श्री गुरू रविदास महाराज जी के जन्म स्थान मन्दिर, वाराणसी और डेरा सचखंड बल्लां में स्थित मन्दिर और गाँव में स्थित मन्दिर की निर्माण हुआ था। सन् 1971 ई. की बात है, मई-जून का महीना था। मिस्त्री दलीप सिंह, उनका भाई अर्जुन सिंह और सुपुत्र करनैल सिंह उनके साथ थे। महाराज जी उनको डेरा दिखाते हुए,(जहां आज संत सरवण दास महाराज जी का अंगीठा साहिब बना हुआ है) वाले स्थान पर लाकर कहा कि मिस्त्री दलीप सिंह, यहाँ एक साल बाद तुम्हें कुछ बनाना पड़ेगा।'' पर उस समय वह समझे नहीं। जब एक साल बाद 11 जून 1972 ई. को महाराज जी ज्योति ज्योत समा गए तो उस जगह पर(महाराज जी की ओर से निर्देशित) महाराज जी का विधिपूर्वक संस्कार किया गया और कुछ समय बाद संत हरी दास जी की तरफ से आज्ञा हुई कि संस्कार वाले स्थान पर महाराज सरवण दास जी की एक यादगार तैयार की जाए। उसके बाद संत हरी दास जी और संत गरीब दास जी की आज्ञानुसार महाराज जी का मौजूदा अंगीठा साहिब तैयार करने की योजना बनाई गई। जब मिस्त्रियों को अंगीठा साहिब बनाने का हुकम हुआ तो उनको महाराज जी के वह शब्द याद आ गए कि दलीप सिंह यहाँ एक साल बाद कुछ बनेगा।

(मिस्त्री करनैल सिंह पुत्र श्री दलीप सिंह, अबादपुरा, जालंधर, 20,जून 2003)

साखी नंबर: 40

108 संत सरवण दास महाराज जी (उदासीन) का 108 संत बाबा भगत राम गिर जी से मिलाप

एक बार संत बाबा सरवण दास महाराज जी 108संत बाबा भगत राम गिर जी(संन्यास)महाराज के नंगल स्थित डेरे में आए। इससे पहले भी कई बार आए थे पर इस बार संत अकेले ही आए थे। संतों का इधर आना उस समय होता था। जब आम गिरने लग जाते थे। दोनों संत उस वक्त शक्ति और भक्ति से भरपूर थे और दोनों के चेहरे नूरानी नूर से चमक रहे थे और भक्ति का नूर झलक रहा था। दोनों हस्तियाँ शांत चित्त थी। जब संत सरवण दास महाराज जी डेरे पहुँचे तो दोनों महापुरूषों ने आपस में नमस्कार की और फिर संत सरवण दास महाराज जी ने बाबा जी के कहने पर आसन ग्रहण किया। फिर मैंने(बतना राम गिर)जल-पान का पूछा और संतों के कहने पर संतों को ठण्डा पानी पिलाया। फिर मैंने खाने का पूछा तो संत जी ने कहा कि,'' बेटा अभी नहीं छकना।'' फिर बाबा जी ने मुझे बुलाकर कहा कि,''बेटा, संतों का बिस्तर बंगले के पीछे तख्तपोश (चारपाई)पर लगा दो ताकि संत आराम कर लें।'' मैंने, राम शरन और कुछ सेवकों के साथ मिलकर तख्तपोश बाहर रखकर ऊपर स्वच्छ बिस्तर कर दिया।उस पर संत विराजमान हो गए।

इस के बाद मैं बाबा जी के पास चला गया और पूछा, गुरू जी आपने तो कभी किसी संत को बिस्तर या आसन के लिए नहीं कहा और आज आपने संतों के लिए तख्तपोश पर बिस्तर लगवाया।इसका क्या कारण है? बेटा आप को अभी संतों की पहचान नहीं आई।यह संत तख्तपोशों पर ही बैठने वाले है। अब जा कर पूछो महाराज जी दूध पिओगे या ठंडाई।'' मैंने इसी तरह पूछा तो महाराज जी ने कहा कि ,''बेटा जो कुछ भी है वह ही ले आओ।''

उस समय डेरे में कई गाय और भैंसे थी और पाँच पशु दूध देते थे। दूध की कोई कमी नहीं थी।मैंने दो किलो दूध गर्म किया और चीनी डालकर संतों के आगे रख दिया। संतों ने बड़े प्रेम से दूध पिया। फिर दोपहर को शरदाई पिलाई। संत सरवण दास महाराज जी बहुत खुश हुए। फिर मैंने पूछा,''महाराज जी आम खाओगे?'' तो उन्होंने कहा कि,''बेटा अगर आम

डेरे में है तो खा लेंगे। पर हमारे लिए खरीद कर नहीं लाने। अगर हैं तो थोड़ी देर रूक कर खाऐंगे।'' यह कह कर महाराज जी तख्तपोश पर लेट गए और मैंने जा कर बाबा जी से कहा कि,''संतों ने कहा कि अगर डेरे में आम है तो खा लेंगे पर खरीद कर नहीं लाने।'' उस समय आमों का मौसम था और सस्ते भी थे ,पर डेरे में आम नहीं थे।

मेरी और बाबा जी की आम के बारे में बात हो रही थी कि एक आदमी टोकरी उठाए हुए डेरे की तरफ आता हुआ दिखाई दिया। हमारे बात करते-करते ही टोकरी वाले ने भरी हुई टोकरी बाबा जी के आगे रख कर नमस्कार किया और बैठ गया। मैंने उसको जल-पान कराया। जल-पान करके फिर बाबा जी के पास बैठ गया।

बाबा जी ने कहा बतना राम,''जी गुरू जी'', लो अब आम आ गए हैं और संतों को ठण्डे पानी से धोकर देने हैं।'' महाराज जी के जाग जाने पर मैंने पूछा,''महाराज जी आप के लिए आम ले आँऊ?'' तो उन्होंने हाँ बोला। हमने ठंडा पानी निकाला और बाल्टी में आम डाल कर महाराज जी के आगे रख दिए। बाल्टी में आमों को देखकर महाराज जी ने पूछा,''बेटा आम खरीद कर तो नहीं लाए?''''नहीं जी! खरीद कर नहीं लाए। अभी एक सेवक आमों की टोकरी लेकर आया है।'' टोकरी की बात सुनकर महाराज जी हँस पड़े। मैंने पूछा,''यह बताइए कि आप हँसे क्यों?'' महाराज जी ने कहा,''बेटा, तुमने पूछा कर क्या करना है?'' मैंने भी पूछने का हठ किया तो महाराज जी ने कहा कि, ''बेटा बाबा जी की अपार लीला है। बहुत ही शक्तियों के मालिक हैं। उनकी वही जानते हैं। यह कहकर महाराज जी आम चूसने लगे और मैं फिर बाबा जी के पास आकर बैठ गया।

वहाँ पर और भी सेवक बाबा जी के पास आकर बैठे हुए थे तो एक सेवक ने निवेदन किया कि बाबा जी कोई शिक्षादायक बातें बताने की कृपा करो। जिनको अपनाकर हमारा जीवन संवर सके।

बाबा जी: ''बेटा बातें तो बहुत हैं, हम कोई पढ़े लिखे नहीं और न ही कोई ग्रंथ इतिहास पढ़ा है। पर फिर भी आपको कुछ बताते हैं।''

बेटा गृहस्थ आदमी को दस नाखूनों से कमाई करनी चाहिए और उसमें से ही दान करना चाहिए। सत्य बोलना चाहिए, निंदा, चुगली और बुरे पुरूष या स्त्री की संगति से बचना चाहिए।

हमारे शरीर में पाँच विकार है जो जीव को बंदर की तरह नचा रहें है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि का समयानुसार प्रयोग करना चाहिए। इस तरह हमारा संसारिक जीवन सुखदायक व्यतीत होगा।

बतना राम: गुरू जी जन्म, मृत्यु का क्या चक्र है?

गुरू जी : यह परमात्मा के हुक्म अनुसार होता है।

"आशा तृष्णा के अधीन है,
पाप पुण्य के अधीन है।"

अन्तिम समय में जिस वस्तु में आशा या तृष्णा होगी, उसी योनी में उसका जन्म होगा। इसीलिए साधु, संत, महात्मा ढोल पीट-पीट कर कहते हैं कि अन्तिम समय में हरि का सिमरन करो। पर सुनता कौन है? बेटा हमने वाणी पढ़ी तो नहीं पर सुनी ज़रूर है। 'सत्गुरू नामदेव जी' और 'सत्गुरू त्रिलोचन जी' महाराज अपनी वाणी में बताते हैं:-

"जो अन्तिम समय में माया मन लगाता है, वह सर्प योनी में बार-बार आता है।"

"जो अन्तिम समय में स्त्री में मन लगाता है, वह वैश्य योनी में बार-बार आता है।"

"जो अन्तिम समय में पुत्रों में मन लगाता है, वह सुअर योनी में बार-बार आता है।"

"जो अन्तिम समय में मन्दिरों(मकानों) में मन लगाता है, वह प्रेत योनी में बार-बार आता है।"

सत्गुरू त्रिलोचन जी फैसला करते हैं कि जो जीव अंत काल में हरि चरणों में मन लगाता है वह जन्म, मृत्यु से रहित हो जाता है। मुक्ति प्राप्त कर लेता है। तो जन्म, मृत्यु का कारण तृष्णा और इच्छाएँ है। हम बाबा जी के मनोहर वचन शांत चित होकर सुनरहे थे। फिर बाबा जी ने कहा,"अंत काल तो कोई ही हरि सिमरन करता है।"

बतना राम: गुरू जी निंदा किसको कहते हैं?

गुरू जी : जो बात किसी ने कही न हो, या किसी के साथ घटी न हो और दूसरा आदमी उसके बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बात करे उसको निंदा कहते है। सब धर्मों के ग्रंथों ने इससे बचने के लिए बार-बार कहा है। पर मूर्ख पुरूष वाणी को भी मानते हैं और चुगली निंदा करना ही अपना धर्म समझते हैं।

किसी की निंदा करना अच्छी बात नहीं है। संतों की निंदा तो बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।

बेटा जीव को शुभ कर्म करते रहना चाहिए। फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। फल स्वयं ही प्रभु देगा। बेटा संत मार्ग बहुत कठिन है। इस मार्ग का मुसाफिर कोई-कोई होता है। इस मार्ग के मुसाफिर को बहुत ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जो कठिनाइयों को सहन कर अपनी मंजिल पर पहुँच जाता है उसको अमृत(फल)की प्राप्ति होती है। बाबा जी उपदेश बहुत कम करते थे। पर जब खुशी में होते थे तो बातों-बातों में कई बातें कह जाते थे जिनको समझना कठिन होता था। समझ ही नहीं आता था कि क्या कह गए।

इतने समय में गाँव की संगत काफी एकत्रित हो गई थी। सूर्य पूर्व को सलामी देकर पश्चिम में छिपने की तैयारी कर रहा था। संगत को देखकर संत सरवण दास महाराज जी भी बाबा जी के पास आकर बैठ गए।

संत सरवण दास महाराज जी:''स्वामी जी,आप का तप बहुत है। अगर पाँव के दम पर बैठते हो तो चौबीस घण्टे इसी प्रकार बैठे रहते हो इसी तरह समाधि भी।''

संत भगत राम जी:''संत जी यह अभ्यास की बात है जितना मर्ज़ी बढ़ा सकते है पर मन की मैल किस तरह साफ की जाती है। ''

बाबा जी:''संत जी तन और वस्त्रों की मैल तो साबुन आदि से दूर हो जाती है ,पर मन की मैल जिसने मन के दर्पण को गंदा कर रखा है, वहाँ साबुन आदि की पहुँच नहीं है और न ही साबुन लग सकता है क्योंकि मन पर मैल सूक्ष्म है। हम नहीं देख सकते। इस लिए अदृश्य वस्तु अदृश्य साबुन से ही धो सकते हैं। वह है नाम रूपी साबुन और श्रद्धा के पानी से धोया जा सकता है और आत्मा को पवित्र कर खुद को पहचान सकते हैं।''

संत जी: ''स्वामी जी यह बताने की कृपा करें कि क्या तप साधक के लिए ज़रूरी है? इस के बिना साधु नहीं बना जा सकता?''

बाबा जी:''संत जी,जिस तरह शरीर को चलाने के लिए अन्न(भोजन), पानी, वस्त्र आदि की ज़रूरत पड़ती है इसी तरह मन को रोकने के लिए तप साधन ज़रूरी है।''

संत जी: ''तप साधन से मन दृढ़ होता है। मन विकारों के वेग रूक जाते है। आशा और तृष्णा का दमन होता है साधु प्रभु परायण हो जाता है। ''

मान-अपमान को सहने की सर्मथा प्राप्त हो जाती है। विषयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। शरीर पर कहे और न कहे कष्टों को सहने की सर्मथा हो जाती है। तीन गुणों को पार कर चौथे गुण में अभेद हो जाता हैं। सहज अवस्था को प्राप्त कर लेता है। जन्म, मृत्यु से रहित हो जाता है।

बतना राम: ''गुरू जी यह बताने की कृपा करें कि, संतों के क्या लक्षण होते हैं और पहचान क्या है? मेरा प्रश्न सुन कर बाबा जी ने कहा,''बेटा, इस बात का जवाब संत सरवण दास जी देंगे। यह विद्वान है और कई ग्रंथ इन्होंने पढ़े हुए हैं।''

यह सुन कर संत जी ने बताना शुरू किया,''बेटा संतों के लक्षण इस प्रकार है '':

* नाम जपना और सभी में उस परिपूर्ण(प्रभु)को देखना।
* दु:ख-सुख में एक रस रहना और सबसे निरवैर रहना।
* संत पाँच दु:खों(शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध)से रहित होते हैं और सब को इनसे बचने का उपदेश देते हैं। सब जीवों पर दया करना।
* प्रभु चिंतन ही संतों का भोजन है। इस लिए माया से भिन्न रहते हैं। जिस तरह पानी से भिन्न कमल रहता है।
* मित्र और दुश्मन को एक समान उपदेश देते रहते है और हृदय में प्रभु भक्ति एवं श्रद्धा होती है।
* कानों से पराई निन्दा नहीं सुनते,अपने गुणों का अहंकार नहीं करते और अपने आप को सब के चरणों की धूल समझते हैं। गुरू नानक देव जी इस प्रकार बताते हैं। यह छ: लक्षण वाले पूर्ण संत होते हैं और उनका नाम साधु सज्जन है।

बतना राम: ''महाराज जी, आपने भी तप किया है? वह कितना समय किया है? ''

संत जी: ''बेटा हमने इतना कठिन तप नहीं किया जितना स्वामी जी ने किया है। यह चौबीस घण्टे, बारह महीने के तपी हैं और अब भी तप कर रहे हैं जबकि इनको सब कुछ प्राप्त हो गया। स्वामी जी शक्ति और भक्ति के भण्डार हैं। हम इनकी बराबरी नहीं कर सकते। इन में और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। एक ही रूप हैं। दो से एक हो गए हैं। ''

इस तरह ज्ञान चर्चा सुनते-सुनते पता ही नहीं चला कि सूर्य कितने

समय से अस्त हो चुका था। यहाँ पर ही सत्संग की समाप्ति की गई, क्योंकि आरती का समय हो गया था। सब ने मिल कर आरती की और प्रसाद बाँटा गया।

आरती के बाद सारी संगत ने प्रसाद ग्रहण किया और फिर संगत आस-पास बैठ गई। हरि यश संतों से सरवण करने लगी। संत सरवण दास महाराज जी ने बात आरम्भ की और कहा कि,"सतसंगियों आगे आने वाले समय में विद्या की बहुत ज़रूरत है। जितना हो सके को शिक्षित बनाओ। शिक्षा प्राप्त कर के ही हम अपने हकों की प्राप्ति कर सकते हैं। शिक्षा के बिना हमने बहुत धक्के खा लिए है। अब आप शिक्षा प्राप्त करो। जो अपने बच्चों को अशिक्षित रखता है वह बच्चों का दुश्मन है।"

"माता पिता सुत शत्रु है, पुत्र पढ़ावत नाहि।
सोभ न पावत सभा महि, ज्यों बग हंसन माहि।।"

विद्या परदेश में मित्र होती है और विद्या के बिना जीव पशु के समान है।

"विद्या बंध प्रदेश में, विद्या देव विसेख।
पूज निरोपकर अपहती, विद्या बिन पसु देख।।"

जितने समय शरीर में प्राण है शिक्षा प्राप्त करो। जहाँ धनी पुरूष नहीं पहुँच सकता वहाँ विद्यावान पहुँच जाता है।

"तब लग विद्या पढ़ीयै, जब लग घटि में प्राण।
धनी पुरूष पहुँचे नहीं, जहाँ पहुँचे विद्यवान।।"

"उत्तम कुल किस काम है, विद्यागुण के हीन।।
नीच जात विद्यावान को, पूजन देव प्रवीण।।"

संगत जी, मैं (बतना राम गिर) संत सरवण दास महाराज जी के वचन मानकर उडरे संत मेला राम जी से वाणी का पाठ छः साल सीखा। जिस का मुझे अपने जीवन में बहुत लाभ हुआ है और बाहर रहकर कई महापुरूषों से भी विद्या प्राप्त की। यह सब गुरू जी की कृपा के साथ ही हुआ।

बतना राम: मैंने गुरू जी के आगे निवेदन किया।"गुरू जी यह बताने की कृपा कीजिए कि उदासीनता किसको कहते हैं और उदासीनता के क्या लक्ष्ण हैं?"

गुरू जी:"बेटा इसका उत्तर संत सरवण दास महाराज जी देंगे।"

संत जी:''बेटा, जो गवाही देते समय, न्याय और पंचायत करते समय कुटुम्बी, मित्र, बंधु आदि की दृष्टि से खुशी, लोभ, मोह और डर के बस होकर किसी का पक्षपात न करें और पक्षपात से रहित रहता है, उस को उदासीनता कहते हैं।''

फिर मैंने काफ़ी देर बाद संतों से कहा,''महाराज जी रूढ़ सन्यासी किस को कहते हैं।''

संत जी:''बेटा इस का उत्तर स्वामी जी देंगे।''

बाबा जी: हम इस का उत्तर थोड़े में ही देते हैं। जिसने पाँच विषय, पाँच ज्ञान इन्द्रियां, पाँच कर्म इन्द्रियां मन और बुद्धि पर काबू पा लें, उस को रूढ़ सन्यासी कहते हैं और आम लोग ब्रह्मज्ञानी कहते हैं।

इस तरह दोनों महात्माओं की आपस में कई और रहस्यभरी बातें हुई, जिस की किसी को समझ नहीं लगी। इस तरह बातों-बातों में काफ़ी रात बीत गई थी। फिर बाबा जी ने कहा,''जाओ अब आराम करो। रात काफ़ी बीत गई है।'' इस तरह हमने संतों से कई महत्वपूर्ण बातें सुनी और फिर अपने-अपने बिस्तर पर जाकर लेट गए।

दूसरे दिन संत सरवण दास महाराज जी ने चाय पानी छक कर बाबा जी से आज्ञा लेकर गढ़ की ओर चले गए। वहाँ राजपुर से हरियाणा की ओर होते हुए अपने डेरे बल्लां पहुँच गए।

साखी नंबर: 41

डेरे पहुँचने से पहले ही बता देना

सन् 1968ई. की बात है कि जानी जान महाराज सरवण दास जी ने संगतों से कहा कि तीन आदमी, दो साइकिलों पर आ रहे है। एक छोटे से आदमी ने बड़ी बन्दूक पकड़ी है। तो मिस्त्री करनैल सिंह ने बताया कि, मैं अपने साइकिल पर अपने पिता जी को बैठा कर डेरे आ रहा था। मेरे साइकिल के पीछे मेरे पिता जी बैठे थे। जिनके पास लंबी बन्दूक थी और वह कद के छोटे थे। दूसरे साइकिल पर मेरे चाचा जी मिस्त्री अर्जुन सिंह थे। जब हमने डेरे पहुँचकर महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने कहा कि,''ये देख लो, छोटे कद का आदमी, बड़ी बन्दूक वाला आ गया।'' बैठी हुई संगत ने बताया कि आपके पहुँचने से पहले जानी जान महाराज सरवण दास जी ने आप तीनों के आने के बारे में बता दिया था।

(स्वयं मिस्त्री करनैल सिंह पुत्र श्री दलीप सिंह, अबादपुर, जालन्धर, 20,जून 2003)

साखी नंबरः 42

आध्यात्मिक चढ़ाई के बारे में विचार-विमर्श करते थे

आप अक्सर भजन-बन्दगी करने वाले महापुरूषों को मिलने जाया करते थे। सन् 1940 ई.में संत सरवण दास महाराज जी ज्ञानी बिशना राम को साथ लेकर बाबा सावन सिंह जी को डेरे ब्यास में मिलने गए। बाबा सावन सिंह जी अपने निवास स्थान की पहली मंजिल पर संगतों के बीच एक पलंग(चारपाई)पर विराजमान थे। संत सरवण दास महाराज जी को अपने पास आते देखकर, उन्होंने पलंग से उठकर महाराज जी को हाथ जोड़कर नमस्कार की। महाराज जी ने भी उनको नमस्कार की और बाबा जी ने महाराज जी को पलंग पर तकिये की तरफ बिठाया और आपस में एक घण्टा आध्यात्मिक चढ़ाई के बारे में विचार-विमर्श करते रहे। महाराज जी का संत समाज से बहुत प्रेम था।

साखी नंबरः 43

'श्री 108संत सरवण दास महाराज जी की दिल्ली यात्रा और मानवता के मसीहा डॉ. अम्बेडकर जी के साथ मेल

ज्ञानी बिशना राम जी बिरदी, स. फकीर सिंह बल्लां, श्री पूरन चंद, ब्यास गाँव, श्री भगत मल, श्री नामा राम जी दिहाना, श्री निरन्जन सिंह होठी, बल्लां, यह सभी दिल्ली में सरकारी नौकरी करते थे। हर हफ़्ते डॉ. अम्बेडकर जी से मुलाकात करते थे। यह सभी अक्सर उनके संर्पक में रहते थे। ज्ञानी बिशना राम जी गाँव बल्लां जो कि बाबा साहिब जी के संर्पक में सन् 1942 ई. से सन् 1956ई.तक रहे। ज्ञानी बिशना राम जी, बाबा साहिब को संत सरवण दास महाराज जी के बारे में बताया करते थे कि,''संत सरवण दास महाराज जी बहुत परोपकारी महात्मा थे। अपनी कौम के लोगों और दलितों के विकास के बारे में सोचते रहते थे। यहाँ वह परमात्मा का नाम जपते थे, वहाँ वह सत्संग और श्री गुरू रविदास मिशन का प्रचार करते थे। वह हमेशा बच्चों को पढ़ने के लिए और आपसी प्यार का उपदेश देते थे। उन्होंने सारी जनता पर परोपकार किए थे। आप के अटल वचनों और रूहानी ताकत ने लोगों के जीवन को बहुत प्रभावित किया है।''

श्री 108संत सरवण दास महाराज जी ने गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए डेरे में पाठशाला खोली थी। वह बच्चों को हर रोज़ वाणी और पंजाबी पढ़ाते थे। हर रविवार डेरे में संत सरवण दास महाराज जी देसी घी के मालपूए, खीर आदि लंगर तैयार करवा कर बच्चों और संगतों को छकाते थे।

ज्ञानी बिशना राम जी, स. फकीर सिंह जी, स. स्वर्ण सिंह जी सब ने बाबा साहिब को बताया कि,''हम गरीब थे और हमारे माता-पिता गरीब होने के कारण हमें पढ़ा नहीं सकते थे। संत सरवण दास महाराज जी ने हमें अपने खर्चे पर पढ़ाया है और उनकी कृपा से हमने दिल्ली में नौकरियां प्राप्त की थी। वह हमेशा हमें कहा करते थे कि ईमानदारी से रहना।'' डॉ. अम्बेडकर जी संत सरवण दास महाराज जी के बारे में जानकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि,''हमें भी संतों के दर्शन करवाओ।'' ज्ञानी बिशना राम जी और दिल्ली की श्रद्धालु संगतों के निवेदन पर संत सरवण दास महाराज जी सन् 1949 ई. को अप्रैल-मई के महीने में पचास दिनों की दिल्ली यात्रा पर गए। इस समय दौरान संत सरवण दास महाराज जी संगतों के गृह में जाते रहे। ज्ञानी बिशना राम जी और श्री निरन्जन सिंह जी होठी के गृह में सत्संग करते थे। इस से पहले जब भी ज्ञानी बिशना राम जी, स. फकीर सिंह बल्लां डेरे महाराज जी के पास आते, बाबा साहिब जी से अपनी मुलाकात के बारे में बताते थे। संत सरवण दास महाराज जी ने बाबा साहिब जी को मिलने की इच्छा प्रगट की थी।

एक दिन ज्ञानी बिशना राम जी बिरदी और साथी संत सरवण दास महाराज जी को साथ लेकर डॉ. अम्बेडकर जी के घर जनपथ रोड, ईस्टन कोर्ट में मिलने गए। आगे बाबा साहिब जी कुछ लोगों के साथ कुर्सियों पर बैठकर सलाह मशविरा कर रहे थे। बाबा साहिब जी कुर्सी से उठे और खड़े होकर संत सरवण दास महाराज जी का हाथ जोड़कर सत्कार किया और बैठने का निवेदन किया। लगभग एक घण्टे की आपसी बातचीत के बाद संत सरवण दास महाराज जी ने बाबा साहिब को पंजाब का दौरा करने के लिए कहा था। संत सरवण दास महाराज जी कौम(जाति)की दर्दनाक स्थिति के बारे में हमेशा चिंतित रहते थे। बाबा साहिब जी सन् 1951 ई. में पंजाब, बूटा मंडी, जालन्धर में आए और संत सरवण दास महाराज जी बहुत भीड़ होने के कारण बाबा साहिब पास न पहुँच सके। इसी कारण महाराज जी ने एक पत्र डॉ. अम्बेडकर जी को भेजा जो वहाँ सुनाया गया। जिस में उन्होंने लिखा,''मेरे

शेर पुत्र! कौम की भलाई के लिए इसी तरह डटे रहो, कामयाबी तुम्हारे पैर चूमेंगी और लोग तुम्हारे पर मान(गर्व) महसूस करेंगे।''

साखी नंबर: 44

श्री खुशी राम के पिछले जन्म की कथा बतानी

श्री खुशी राम पुत्र श्री इशर दास और श्री बिमला देवी जी, गाँव ढडे, जालन्धर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय इन दोनों ने महाराज सरवण दास जी के समक्ष प्रार्थना की कि,'' महाराज जी, हमारे घर कोई संतान नहीं है।'' तो कुछ देर बाद महाराज जी ने कहा,''खुशी रामा, तुमने पिछले जन्म में हिरणी के बच्चे मारे थे। इस लिए तेरे कर्मों में कोई संतान नहीं है। पर तुम चिंता मत करो, तुम्हारी बहन के बच्चे तुम्हारी इतनी सेवा करेंगे कि तुम्हें कभी अपने बच्चों की कमी महसूस नहीं होगी।'' खुशी राम की बहन बीबी ज्वाली और उसके पति धन्ना राम(हीरापुर, होशियारपुर)के पुत्र-पौत्रों का हमारे साथ इतना प्रेम है कि हमें कभी अपने बच्चों की कमी महसूस ही नहीं हुई। महाराज जी के वचन अटल हुए। (खुशी राम पिछले जन्म में राजा था, हिरनी के बच्चे शिकार खेलते मारे थे)

(स्वयं बीबी बिमला देवी पत्नी स्वर्गीय खुशी राम, गाँव ढडे, जालन्धर 22,जून 2003)

साखी नंबर: 45

श्री किशन सिंह मसताना जी की पुत्री गेजो की रक्षा करना

श्री किशन सिंह मसताना पुत्र श्री चंदू राम और बीबी बचनी गाँव नाहलां, नज़दीक बस्ती दानिशमंदा, जालन्धर वालों संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनकी लड़की गेजो की शादी श्री महिन्दर पाल कोटली थान सिंह, जालन्धर के साथ हुई थी। बीबी गेजो जिनका एक छोटा बेटा था, उसका नाम अमरीक था। गेहूँ काटने के समय बीबी गेजो अपने गाँव नाहलां में आए। यह लगभग सन् 1963-1964 ई.की बात है।

शाम चार बजे बीबी गेजो को श्वास आना पूरी तरह बन्द हो गया। सब को लगा कि यह लड़की मर गई है, और सभी रिश्तेदारों को सन्देश भेजने शुरू कर दिए। चादर बिछा दी गई और गाँव के लोग अफसोस करने आने लगे। करीब तीन घण्टे बाद सात बजे उसको फिर श्वास आना शुरू हो गया और बीबी गेजो उठ कर बैठ गई। इस कौतुक को देख कर सभी लोग हैरान हो गए।

लड़की को पूछा ,''तुम्हें क्या हुआ था?'' उसने कहा जब मर कर मेरी आत्मा ऊपर गई तो आगे संत सरवण दास महाराज जी खड़े थे। महाराज जी ने कहा,''कुड़े(बेटा)तू वापिस जा! तुमने बहुत रंग देखने हैं।'' बीबी गेजो ने कहा कि ,''मुझे जल्दी से संत सरवण दास महाराज जी के पास ले चलो।''

श्री किशन सिंह मसताना और उनके दामाद महिन्दर पाल ने कहा कि ,''हम सभी सुबह महाराज जी के पास चले गए। दूसरे दिन बीबी गेजो, उसका पति महिन्दर पाल और पिता किशन सिंह मसताना जी डेरे महाराज जी के पास पहुँचे। उस समय महाराज जी पत्थर के आसन पर विराजमान थे। सभी ने महाराज जी को नमस्कार करने के बाद एक दिन पहले वाली सारी घटना बताई।'' संत सरवण दास महाराज जी ने श्री महिन्दर पाल जी को कहा ,''किह मारेक मरेम ेंप ड़ेप ीपेम ेंस ेद वाईक ागज़प रड ालक रल ेकर आओ।'' महिन्दर पाल ने अन्दर से आकर बताया,''महाराज जी! अन्दर पीपे को ताला लगा हुआ है।'' तो महाराज जी ने कहा कि,''जाओ, पीपे में से दवाई लेकर आओ।''

जब महिन्दर पाल ने अन्दर जा कर पीपे की ओर देखा तो पीपे के साथ कोई ताला नहीं था। यह कौतुक देखकर महिन्दर पाल जी बहुत हैरान हुए और पीपे में से दवाई महाराज जी ने बीबी गेजो को खाने के लिए समझाई।

श्री हरभजन सिंह लाली पुत्र श्री किशन सिंह मसताना ने बताया कि ,''महाराज जी ने इस प्रकार मेरी बहन गेजो पर कृपा की और उसके आज तीन लड़के और एक लड़की है और इन तीनों की शादी हुई है।'' उन्होंने बताया कि,''मेरी बहन अब भी डेरे बल्लां में आती है पर उनके पति कुछ वर्ष पहले र्स्वगवास हो गए।''

(श्री हरभन सिंह लाली पुत्र श्री किशन सिंह मसताना, गाँव नाहलां,नज़दीक बस्ती दानिशमंदा, जालन्धर,मई 2003)

साखी नंबर:46

श्री स्वर्ण दास को लड़कों की दात बख्शिश करना

श्री स्वर्ण दास (पुत्र श्री माढ़ा राम)और बीबी प्रीतम कौर गाँव कबूलपुर जालन्धर के रहने वाले थे। उनके घर लड़कियां ही थी। उनके तीन पुत्र आठ-आठ वर्ष के होकर मर गए थे। उनको किसी ने संत सरवण दास महाराज जी की महिमा बताते हुए उनके चरणों में जाने के लिए कहा।

श्री स्वर्ण दास और बीबी प्रीतम कौर महाराज जी के दर्शन करने के लिए 2फाल्गुन, 1958को डेरे में पहुँचे। उस समय संत सरवण दास महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। उनके पास संत हरीदास महाराज जी और संत चेतन दास महाराज जी बैठे थे। पति-पत्नी को दूर से आते देख कर संत सरवण दास महाराज जी कहा, ''चेतन दास! वो जो आदमी और औरत आ रहे हैं, उनके तीन लड़के आठ-आठ वर्ष की आयु के होकर मर चुके हैं। यह बहुत दुःखी हैं। इनको कहीं से भी पुत्र की दात प्राप्त नहीं हुई।'' यह सारे वचन सुनकर श्री स्वर्ण दास और उनकी पत्नी दोनों ने महाराज जी के चरणों में नमस्कार किया और निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप जानी-जान हो, हमारे ऊपर कृपा कीजिए। महाराज जी ने वचन किया, ''आप कोई चिंता मत करो, आपके घर पूरे एक वर्ष बाद एक लड़का पैदा होगा और उसके बाद एक और लड़का पैदा होगा।''

महाराज जी के वचन अटल हुए। ठीक एक वर्ष बाद 2 फाल्गुन, 1959 को उनके घर एक लड़के का जन्म हुआ। जिस का नाम निरंजन दास रखा गया। उस से कुछ वर्ष बाद उनके घर एक और पुत्र का जन्म हुआ।

(स्वयं श्री निरंजन दास पुत्र श्री स्वर्ण दास, कबूलपुर, जालन्धर)

साखी नंबर: 47

स. चन्नण सिंह को वरदान देना

ठेकेदार स. चन्नण सिंह, गाँव खड़ियाला नज़दीक बुलोवाल, होशियारपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। सन् 1964 ई. में महाराज जी स. चन्नण सिंह के घर सत्संग पर गए। उन दिनों गाँव के सारे घर कच्चे थे। महाराज जी ने कहा,''फिक्र(चिंता)न करो चौबारे(छत पर कमरे) बनेंगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए, आज उस परिवार के सारे घर पक्के हैं और उनके ऊपर चौबारे भी बन गए हैं।

(स्वयं श्री गुरमुख सिंह पुत्र ठेकेदार चन्नण सिंह, गाँव खड़ियाला नज़दीक बुलोवाल, होशियारपुर 23 जून, 2003)

साखी नंबर: 48

श्री इन्द्र दास और बीबी ज्ञान को लड़के की बख्शिश करनी

श्री गरीब दास, गाँव खड़ियाला, होशियारपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय महाराज जी श्री गरीब दास

जी के घर खड़ियाला में प्रोग्राम पर गए। श्री गरीब दास जी ने महाराज जी के आगे प्रार्थना की कि,''महाराज जी, हमारे रिश्तेदार श्री इन्द्र दास और बीबी ज्ञान,गाँव फतोवाल रहते हैं। आप कृपा करो, इनके कोई लड़का नहीं है, केवल लड़कियां ही है। महाराज जी ने कहा, ''सभी उठ कर खड़े हो जाओ। चिंता मत करो, आप के घर दो लड़के जन्म लेंगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए, उनके घर दो पुत्रों ने जन्म लिया।

साखी नंबरः 49

श्री करतार चन्द को पुत्र की दात बख्शिश करना

श्री सोहन सिंह पुत्र श्री गरीब दास, गाँव खड़ियाला, होशियारपुर वालों का महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। श्री गरीब दास जी के पत्नी के भाई श्री करतार चन्द, गाँव मसीती वालों के घर केवल लड़कियां ही थी और कोई भी पुत्र नहीं था। एक समय श्री गरीब दास जी अपने साले और उसकी पत्नी को डेरे महाराज जी के पास लेकर आए। उस समय महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। सभी ने नमस्कार की और श्री गरीब दास जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप इन(श्री करतार चन्द)पर कृपा करो, जी। इनके केवल लड़कियां ही है, पुत्र नहीं है।''

महाराज जी ने कहा कि,''चिंता मत करो, एक लड़का होगा।'' महाराज जी के वचन अनुसार उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया, जिस का नाम निरंजन रखा गया।

(श्री सोहन सिंह पुत्र श्री गरीब दास, गाँव खड़ियाला, होशियारपुर)

साखी नंबरः 50

श्री दर्शन सिंह को पुत्रों की दात बख्शिश करना

एक समय संत सरवण दास जी गाँव खम्बला में श्री दर्शन सिंह पुत्र ठेकेदार श्री दयाल सिंह के घर गए। श्री गरीब दास खड़ियाला वालों ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, कृपा करो, दर्शन सिंह के घर सात लड़कियां हैं और लड़का कोई नहीं है।'' महाराज जी ने कहा, ''चिंता नहीं करना। गुरु जी की कृपा से आपके घर दो पुत्र जन्म लेंगे।'' महाराज जी के वचनों के अनुसार उनके घर दो लड़कों ने जन्म लिया।

(श्री सोहन सिंह पुत्र श्री गरीब दास,गाँव खड़ियाला, होशियापुर, 23,जून 2003)

साखी नंबरः 51

जादूगर ने तौबा की

सन् 1967-1968ई. की बात है,कि एक जादूगर डेरे में आकर एक घण्टे से अपने करतब ताश दिखा रहा था। उस समय संत सरवण दास महाराज जी और कुछ संगतों में श्री सोहन सिंह मौजूद थे। महाराज जी ने कहा, ''जादूगर नज़र बांध लेते हैं।'' उसके बाद वह जादूगर अपना कोई करतब नहीं दिखा पाया। उसने महाराज जी के चरणों में नमस्कार की और दिल ही दिल में महाराज जी से भूल बख्शाई। फिर उस का करतब चलने लग गया था।

(श्री सोहन सिंह पुत्र श्री गरीब दास, खड़ियाला, होशियारपूर, 23 जून, 2003)

साखी नंबरः 52

स. आसा सिंह सैनी को पौत्रों की दात बख्शिश करना

एक समय संत सरवण दास महाराज जी श्री गरीब दास गाँव खड़ियाला में गए। उस गाँव में स. आसा सिंह सैनी के दो पुत्र स. रंजील सिंह और स. जसवंत सिंह थे। दोनों के कोई औलाद नहीं थी। उन्होंने श्री गरीब दास जी को महाराज के आगे निवेदन करने के लिए कहा। श्री गरीब दास जी ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, स. रंजील सिंह और स. जसवंत सिंह दोनों भाई हैं। इनके कोई औलाद नहीं है, आप कृपा करो।'' महाराज जी ने कहा, ''कि आप कोई चिंता न करो। दोनों के घर एक-एक पुत्र का जन्म होगा।'' महाराज के वचन अटल हुए। कुछ वर्ष बाद दोनों भाइयों के घर एक-एक पुत्र ने जन्म लिया। स. रंजील सिंह के पुत्र का नाम स. मंगल सिंह और स. जसवंत सिंह के पुत्र का नाम स. दया सिंह रखा गया था। दोनों भाई अपने दोनों पुत्रों को और गरीब दास को साथ लेकर महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने आए थे।

(श्री गरीब दास पुत्र श्री चंदू राम, खड़ियाला, होशियारपुर, 26जून, 2003)

साखी नंबरः 53

श्री गरीब दास को ज़मीनदार बनाना

एक समय श्री गरीब दास पुत्र श्री चन्दू राम, गाँव खड़ियाला वाले डेरे में महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने आए। जब उसने महाराज जी को

नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''ज़मीनदार आ गया।'' उसने निवेदन किया,''महाराज जी, मैं कौन सा ज़मीनदार? मैं तो ज़मीन लेकर ठेके पर खेती करता हूँ। महाराज जी ने वचन किया कि, ''चिंता मत करो, आपकी अपनी ज़मीन होगी।'' श्री गरीब दास ने बताया कि कुछ वर्षों बाद महाराज जी की कृपा से ग्यारह खेत ज़मीन के खरीदे। अब पाँच खेत और खरीदे हैं। अब मेरे पास सोलह खेत ज़मीन है। इस तरह महाराज जी के वचन अटल हुए। उनकी कृपा ने मुझे ज़मीनदार बना दिया।

(स्वयं श्री गरीब दास पुत्र श्री चन्दू राम, गाँव खड़ियाला, होशियारपुर, 26 जून, 2003)

साखी नंबर: 54

स. अमरीक सिंह को पुत्रों की दात बखशिश करनी

स. अमरीक सिंह पुत्र स. हरबंस सिंह, गाँव बल्लां वालों ने बताया कि,''मेरा विवाह सन् 1972 ई. में हुआ। जब हम पति-पत्नी महाराज जी के दरबार में नमस्कार करने के लिए आए तो संत सरवण दास महाराज जी ने मेरी पत्नी को दो सेब देकर कहा, ''बेटी यह दोनों सेब तुम स्वयं खाना।'' महाराज जी की कृपा से हमारे दो पुत्र हुए, धरमिन्दर और जतिन्दर।

(स्वयं स. अमरीक सिंह पुत्र स. हरबंस सिंह, गाँव बल्लां, जालन्धर, 26जून 2003)

साखी नंबर: 55

स. प्यारा सिंह को ज़मीन की बख्शिश करना

स. प्यारा सिंह और बीबी बेअंत कौर, गाँव लांबड़ा, होशियारपुर वालों का महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय संत सरवण दास महाराज जी गाँव लांबड़ा में गए। महाराज जी उनकी ज़मीन पर गए थे। स. प्यारा सिंह ने कहा कि,''महाराज जी हमारे दो खेत हैं।'' महाराज जी ने कहा, ''कितनी ज़मीन चाहिए।'' बीबी बेअंत कौर ने कहा, ''महाराज जी आप समर्थ हो।'' महाराज जी दोनों को साथ लेकर कुछ खेतों के चारों तरफ घूमते हुए कहा, ''कि यह सारी ज़मीन तुम्हारी होगी।'' स. अमरीक सिंह ने बताया कि आज महाराज जी के अटल वचनों के अनुसार सारी ज़मीन हमारी है।

(स. अमरीक सिंह पुत्र स्वर्गीय प्यारा सिंह, लांबड़ा, होशियारपुर, 26 जून, 2003)

साखी नंबरः 56

पहला बोर ही चलेगा

स. प्यारा सिंह और बीबी बेअंत कौर, गाँव लांबड़ा, होशियारपुर वालों ने अपनी ज़मीन पर नया ट्यूबैल लगवाने के लिए बोर करवाया। अचानक वह बोर खराब हो गया। उन्होंने दूसरी जगह पर बोर करवाया पर वहाँ भी पानी नहीं आया।

स. प्यारा सिंह ने निवेदन किया कि महाराज जी बोर नई जगह पर करवाया, पर वहाँ भी ठीक नहीं रहा। आप कृपा करो। महाराज जी ने कहा, ''कि पहला ही बोर ठीक है और वही बोर चलेगा।'' हमने फिर वहीं बोर करवाया। वह ठीक चल पड़ा। आज उस बोर को लगभग चालीस वर्ष हो गए है। हमारे गाँव के आस-पास की बहुत ही मोटरें पानी छोड़ गई परन्तु वह बोर निरन्तर चल रहा है।

(स्वयं स. अमरीक सिंह पुत्र स. प्यारा सिंह, गाँव लांबड़ा, होशियारपुर)

साखी नंबरः 57

श्री उजागर राम को ज़मीन की बख्शिश करना

श्री उजागर राम पुत्र स्वर्गीय श्री मईया राम, उनका पहला गाँव मुफोढ़े था। वह गुरू रविदासपुर, फिल्लौर में रह रहे थे और वहाँ उनका चमड़े का काम था।

सन् 1970 ई. की बात है, कि संत सरवण दास महाराज जी डेरा 108संत मेला राम जी नगर में गए। वापिस आते हुए, महाराज जी श्री उजागर राम के घर गए। उन दिनों एक कनाल ज़मीन में उनका घर था। सड़क के पार ज़मीन थी, जिस में उनका चमड़े का कारोबार था।

महाराज जी उनके घर चरण पाने के बाद कुनां वाली ज़मीन में जिस समय गए, महाराज जी ने पूछा, ''उजागर सिंह, ज़मीन किसकी है?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''महाराज जी, यह ज़मीन किराए पर है।'' महाराज जी ने कहा, ''यह ज़मीन आपकी है।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। लगभग एक महीने में ही वह ज़मीन हमने खरीद ली थी।

(श्री उजागर राम पुत्र स्वर्गीय श्री मईया रा4द्दम, गुरू रविदासपुर, फिलौर,ह्व 26जून, 2003)

साखी नंबर: 58

श्री भगत राम को ज़मीन की बखशिश करना

श्री भगत राम स्वर्गीय पुत्र श्री लभू राम, गाँव दोलीके(आज कल 731, जे.पी. नगर) जालन्धर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। भारत-पाकिस्तान बंटवारे से पहले, वह लाहौर में काम करने के लिए जाया करते थे। सन् 1947 ई. में भारत-पाकिस्तान के बाद उन्होंने जालन्धर में पाँच खेतों पर कब्ज़ा किया था। उनकी ज़मीन पर दूसरी पार्टी वालों ने दावा कर दिया। केस अदालत में चलने लगा।

सन् 1962 ई. में उन पर बहुत गरीबी आ गई। उन्होंने महाराज जी के आगे निवेदन किया, महाराज जी ने वचन किया, ''भगत राम! जीत तुम्हारी होगी।'' श्री भगत राम जी ने अपने मन में धारण किया कि अगर मैं केस जीत गया तो डेरे में कमरा बनवाऊंगा। केस प्रारम्भिक कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक चला। सन् 1986ई. में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला श्री भगत राम के हक में कर दिया। इस प्रकार महाराज जी के वचन अटल हुए। उन्होंने वह पाँच खेत ज़मीन बेच कर अलावलपुर में ज़मीन खरीदी थी। सन् 1991 ई. में श्री भगत राम जी ने डेरे में एक कमरा बनवाया था।

(श्री देसराज पुत्र स्वर्गीय श्री भगत राम, दोलीके, 26जून, 2003)

साखी नंबर: 59

श्री भाग मल्ल भण्डारी की इच्छा पूरी करनी

श्री भाग मल्ल भण्डारी, गाँव शेरपुर, जालन्धर जो कि महाराज जी के दरबार में भण्डारी थे। उन्होंने यह बात बताते हुए कहा कि यह बात सन् 1971 ई. की है, जब वह भाग मॅल, गाँव शेरपुर शेखे से महाराज जी के दर्शन करने के लिए डेरे आ रहे थे। उन्होंने मन में संकल्प किया कि,''आज महाराज जी के दर्शन कुटिया के गेट पर हो जाएं।

जब वह डेरे पहुँचे, तो संत सरवण दास महाराज जी बाहर गेट पर खड़े थे। श्री भाग मल्ल जी ने नमस्कार की। उनके मन को यह पूर्ण यकीन हो गया कि महाराज जी जानी-जान है, जिन्होंने मेरे मन का संकल्प पूरा किया।

(स्वयं श्री भाग मल्ल भण्डारी, डेरा सचखण्ड बल्लां, 27 जून, 2003)

साखी नंबरः 60

श्री कर्म चन्द को पुत्र की दात बखशिश करना

स्वर्गीय श्री कर्म चन्द और बीबी तेज कौर, गाँव ठकरोवाल, होशियारपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। सन् 1968ई. की बात है, उन्होंने अपने घर पर सत्संग करवाया। संत सरवण दास महाराज जी उनके घर गए। महाराज जी, रात को उनके घर ऊपर छत पर कमरे में रहे। दूसरे दिन श्री कर्म चन्द और बीबी तेज कौर ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप कृपा करो, हमारे घर पाँच लड़कियां है और कोई पुत्र नहीं है। महाराज जी आप कृपा करो, कि हमारे घर पुत्र हो।'' महाराज जी ने कहा कि,''आपके घर एक पुत्र जन्म लेगा, चिंता मत करो, भजन सिमरन किया करो।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया, जिस का नाम महाराज जी ने राम किशन रखा और जो आज पुलिस में नौकरी करते हैं।

(स्वयं बीबी तेज कौर पत्नी स्वर्गीय श्री कर्म चन्द, गाँव ठकरोवाल, होशियारपुर, 26जून, 2003)

साखी नंबरः 61

श्री गुरमीत सिंह को तरक्की बख्शिश करनी

श्री गुरमीत सिंह पुत्र श्री दौलत राम, गाँव लितरां, डा. सैंचां, होशियारपुर आज कल नज़दीक बिजली घर टांडा के रहने वाले थे। उनका संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। जब महाराज जी उनके सांढू श्री कर्म चन्द, गाँव ठक्कर में गए थे। उस समय श्री गुरजीत सिंह जी वहाँ गए थे। जब महाराज जी को नमस्कार कर निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैं मिल्टरी में हवलदार हूँ। आप कृपा करो।'' महाराज जी ने कहा,''जल्द तरक्की होगी।'' महाराज जी के वचनों के अनुसार मेरी जल्द ही तरक्की हो गई। सन् 1993 ई. अप्रैल में मैं कैप्टन रिटायर हुआ।

(स्वयं श्री गुरमीत सिंह पुत्र स्र्वगीय श्री दौलत राम, टांडा, 27 जून, 2003)

साखी नंबरः 62

श्री गुरमीत सिंह की युद्ध में रक्षा करना

श्री गुरमीत सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री दौलत राम, गाँव लितरां, नज़दीक सैंचा, के रहने वाले थे। संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे और

मिल्टरी में नौकरी करते थे। सन् 1971 ई. में भारत–पाकिस्तान युद्ध के समय वह अपने साथियों समेत सियालकोट सरहद पर नौकरी कर रहे थे। उनके चारों तरफ़ बम्ब गिर रहे थे, उस समय उन्होंने महाराज जी को याद किया, और फ़रिआद की, कि महाराज जी ने इस मुश्किल समयमें दास पर कृपा करना। महाराज जी की कृपा से उन सबका बचाव हो गया।युद्ध समाप्त होने के पश्चात् उन्होंने डेरे आकर महाराज जी के चरणों में नमस्कार किया।

(स्वयं श्री गुरमीत सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री दौलत राम, टांडा, 27 जून, 2003)

साखी नंबर: 63

स. हरी सिंह मनोकामना पूर्ण करनी

स. हरी सिंह हवलदार पुत्र स्वर्गीय श्री गज्जू, गाँव कन्दोला, जालन्धर के रहने वाले हैं। उनके मन में यह संकल्प था कि, ''मैं उन संतों को गुरू धारण करूँगा, जो मेरे मन की बात जानकर मुझे स्वयं नाम–दान देंगे।''

सन् 1965 ई. की बात है कि उन्होंने किसी व्यक्ति से संत सरवण दास महाराज जी के बारे में सुना और डेरे में महाराज जी के दर्शन के लिए आने लगे। उन को डेरे आते छः महीने हो गए थे।

एक दिन उन्होंने मन में यह बात धारण कर ली कि अगर संत सरवण दास महाराज जी ब्रह्मज्ञानी हैं तो आज मेरी मनोकामना पूर्ण करेंगे। स. हरी सिंह जी डेरे में आए। उस समय महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। कुछ संगते बैठी हुई थी। हरी सिंह महाराज जी को नमस्कार कर संगत के पीछे बैठ गए, अभी उनको बैठे कुछ समय ही हुआ था, कि महाराज जी ने उनको अपने पास बुलाया और कमरे में गए, नाम–दान की बखशिश की। उन्होंने बताया कि इस प्रकार महाराज जी ने मेरे मन का संकल्प पूरा किया।

(स्वयं स. हरी सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री गज्जू, कंदोला, जालन्धर, 26 जून, 2003)

साखी नंबर: 64

श्री आया सिंह 'पराया' को कवि बनाना

कवि आया सिंह 'पराया' पुत्र स्वर्गीय श्री भान सिंह, गाँव गढ़ी (नज़दीक नंगल फरीद) होशियारपुर वालों के मकान में संत गिर जी रहते थे और संत गिर जी संत सरवण दास महाराज जी के पास आया करते थे और उनके साथ अक्सर कवि आया सिंह 'पराया' भी आते थे। एक बार उन्होंने

कविता लिखी और ज़िंदगी में पहली वह कविता, महाराज जी को सुनाई। महाराज जी ने कहा,''एक बार फिर सुनाओ।'' उन्होंने कविता फिर सुनाई। दूसरी बार कविता सुनने के बाद महाराज जी ने उसे आर्शीवाद दिया और कहा कि,'' आज के बाद आप एक महान् कवि बनोगे।'' उसके बाद उन्होंने कविता लिखनी शुरू कर दी। महाराज जी की कृपा से वह महान कवि बने। उन्होंने आज 28जून, 2003 दिन शनिवार को, ब्रह्मलीन संत नारायण दास जी की बरसी समय गाँव जट्टां का कंधाला, होशियारपुर में, मंच पर एक कथा सुनाई और कहा कि,''संत सरवण दास महाराज जी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी संत थे और जिस व्यक्ति पर उनकी कृपा हुई, वह भव सागर पार हो मुझे जो कुछ भी मिला, यह सब संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से प्राप्त हुआ। मैं उनकी महिमा ब्यान नहीं कर सकता।''

(स्वयं कवि आया सिंह 'पराया' पुत्र स्वर्गीय श्री भान सिंह, गाँव गढ़ी, होशियारपुर)

साखी नंबर: 65

पुत्र की मौत के बारे में बताना

श्री प्यारे लाल पुत्र श्री संत राम और बीबी स्वर्णी, गाँव बढ़ियाणा, जालन्धर में रहते हैं और संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। सन् 1960-1961 ई. की बात है कि श्री प्यारे लाल और बीबी स्वर्णी जी के ग्रह में एक लड़के का जन्म हुआ। उसी दिन श्री प्यारे लाल जी संत सरवण दास महाराज जी के पास लड्डू का प्रसाद लेकर गए और महाराज जी से निवेदन किया कि,''सच्चे पातशाह जी, काके का नाम आप अपने मुखारविंद से बखशिश करो जी।'' महाराज जी ने कहा,''लड़के ने चौथे दिन एक बजे चढ़ाई(मृत्यु)कर जानी है और परिवार के सभी जीव पूरी आयु भोगेंगे।'' ऐसा ही हुआ, चौथे दिन एक बजे वह लड़का मर गया। महाराज जी के वचन अनुसार आज श्री प्यारा लाल और बीबी स्वर्णी के घर दो लड़के और दो लड़कियां हैं।

(स्वयं श्री प्यारे लाल पुत्र स्वर्गीय श्री संत राम, गाँव बढ़ियाणा, जालन्धर)

साखी नंबर: 66

स. बिक्कर सिंह को संतान की बख्शिश करनी

स. बिक्कर सिंह(पुत्र स. बिशन सिंह)और बीबी प्रकाश कौर, गाँव

रायपुर रसूलपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनकी शादी बीबी प्रकाश कौर से हुई थी। उनके घर एक लड़की के बाद दो पुत्रों ने जन्म लिया और उन दोनों की मृत्यु हो गई। उन्होंने अपनी पत्नी सहित महाराज जी के समक्ष फरियाद की कि,"महाराज जी, हमारे घर दो पुत्र पैदा हुए और दोनों जन्म लेकर मर गए थे। आप कृपा करो जी।" महाराज जी ने कहा,"दोबारा इस तरह बच्चे नहीं मरेंगे, भजन सिमरन किया करो।" महाराज जी के वचन अटल हुए। स. बिक्कर सिंह के घर छः पुत्रों ने जन्म लिया। उन्होंने बताया कि संत सरवण दास महाराज जी स्वयं परमात्मा थे। उन्होंने ऐसी बख्शिश अनगिनत जीवों पर की है।

(स्वयं स. बिक्कर सिंह पुत्र स्वर्गीय बिशन सिंह, गाँव रायपुर रसूलपुर, 30 जून, 2003)

साखी नंबरः 67

स. कर्म सिंह और बीबी महिन्दर कौर पर संतान की बख्शिश

स. बिक्कर सिंह ने बताया कि उनकी पत्नी की बहन श्रीमती महिन्दर कौर और उनके पति स. कर्म सिंह, गाँव लखनके, कपूरथला के रहने वाले थे। उनके विवाह को काफी वर्ष हो गए। उनके घर कोई संतान नहीं थी। स. बिक्करर्ि संहज ीउ नद ोनोंप ति-पत्नीक ेस ाथल ेकरस ंतस रवणद ास महाराज जी के पास आए और निवेदन किया कि ,"महाराज जी, इन के ऊपर कृपा करो, इन की कोई संतान नहीं है। महाराज जी ने वचन किया, "चिंता मत करो, आपके घर बच्चे जन्म लेंगे।" महाराज जी के वचन अटल हुए और घर बच्चों ने जन्म लिया।

(स्वयं स. बिक्कर सिंह पुत्र स्वर्गीय स. बिशन सिंह, गाँव रायपुर रसूलपुर, 30 जून, 2003)

साखी नंबरः 68

फौज़ी जोगिन्दर सिंह की घर वापसी

स. बिक्कर सिंह जी के पिता के बड़े भाई की लड़की बीबी चरन कौर और उसका पति गुरबचन सिंह, गाँव गोंदपुर नज़दीक निजरां, जालन्धर के रहने वाले थे और उनका लड़का जोगिन्दर सिंह फौज में नौकरी करता था और टैंक चलाता था। सन् 1965 ई. में भारत-पाकिस्तान युद्ध खत्म होने के बाद एक महीना उसका कोई पता नहीं चला तो उनके माता-पिता चिंतित हुए।

उन्होंने सोचा शायद वह लड़ाई में शहीद हो गया। वह स. बिक्कर सिंह को साथ लेकर डेरे में संत सरवण दास महाराज जी के पास आए और रोते हुए लड़के और लड़ाई में लापता होने के बारे में बताया। महाराज जी ने कहा, ''चिंता मत करो, लड़का कुछ दिनों में घर वापिस आ जाएगा और उसके घर आने के बाद आप अपने घर सत्संग ज़रूर करवाना।'' महाराज जी के वचनों के अनुसार उनके लड़के के सुरक्षित होने का कुछ दिनों में पता चल गया। जब लड़का घर आया तो स. गुरबचन सिंह जी स. बिक्कर सिंह को साथ लेकर डेरे पहुँचे। महाराज जी के हुकम के अनुसार उन्होंने अपने घर में सत्संग करवाया। सत्संग वाले दिन महाराज जी स. बिक्कर सिंह को साथ लेकर गाँव गोंदपुर में गए।

(स. बिक्कर सिंह, 30,जून 2003)

साखी नंबर: 69

स. दर्शन सिंह को संतान की बख्शिश करना

स. दर्शन सिंह पुत्र स. मेला सिंह बीबी प्रीतम कौर, गाँव संघवाल, जालन्धर के रहने वाले थे। उनके चार बच्चे सात दिन या सात महीनों के होकर मर चुके थे। एक दिन स. दर्शन सिंह जी अपनी पत्नी सहित, स. सोहन सिंह, जिनका महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था, को साथ लेकर डेरे में संत सरवण दास महाराज जी के पास आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर चार बच्चे हुए वह या तो सात दिन या सात महीनों के होकर मर गए। आप कृपा करो जी।'' महाराज जी ने कहा, ''लड़का होगा और बिल्कुल ठीक रहेगा।''

महाराज जी के अटल वचनों से स. दर्शन सिंह जी के घर पुत्र ने जन्म लिया। स. दर्शन सिंह महाराज जी के पास लड़के का नाम रखने के लिए आए, पर महाराज जी ने लड़के का नाम नहीं रखा। इस बात की चिंता करते हुए स. दर्शन सिंह ने स. सोहन सिंह से कहा, ''पता नहीं क्या बात है?'' महाराज जी ने लड़के का नाम नहीं रखा, कहीं पहले जैसा ही न हो।'' स. सोहन सिंह ने कहा,''चिंता मत करो महाराज जी समर्थ है।''

उस दिन रात को स. सोहन सिंह और स. दर्शन सिंह को सपना आया, जिस में उन्होंने देखा कि स. दर्शन सिंह के घर नीम के पेड़ के पास एक यमदूत खड़ा है, उसके आगे संत सरवण दास महाराज जी खूंडा(डंडा)लेकर खड़े हैं।

महाराज जी उसको कह रहे ह,''हमने तुम्हें लड़के को लेकर नहीं जाने देना और फिर हमने लड़के के चालीस दिन की आयु होने के बाद लड़के नाम रखना है।'' दूसरी सुबह स. दर्शन सिंह ने रात के स्वप्न की सारी बात स. सोहन सिंह को बताई। स. सोहन सिंह ने कहा कि,''मेरे सपने में भी ऐसा ही हुआ।'' लड़के की चालीस दिनों की आयु होने के बाद महाराज जी ने दर्शन सिंह को सन्देश भेजकर सत्संग करवाने के लिए कहा। सत्संग वाले दिन संत सरवण दास महाराज जी उनके घर गए और लड़के का नामकरण किया।

(स. सोहन सिंह, गाँव संघवाल, जालन्धर, 1 जुलाई, 2003)

साखी नंबरः 70

श्री गुलवंत सिंह को तरक्की बखशिश करनी

श्री गुलवंत सिंह पुत्र चौधरी उत्तम राम, 351 शिव नगर, जालन्धर, वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उन्होंने सन् 1960 ई. में डेरे आना शुरू किया। सन् 1972 ई. जून के पहले हफ़्ते की बात है कि उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैं सन् 1954 ई. में पी. डबल्यू.डी के विभाग ईरीगेशन में जे.डी.एम भर्ती हुआ था, मेरी आज तक तरक्की नहीं हुई आप कृपा करो।''

महाराज जी ने कहा, ''भजन सिमरन करते रहा करो, तरक्की बहुत जल्दी होगी।''9 जून, 1972 ई. में उनकी ड्राफ्टमैन के पद पर तरक्की हो गई। 11 जून, 1972 ई. को वह अमृतसर में हैड आफिस से तरक्की के कागज़ लेकर आए थे। इस प्रकार उनके ऊपर महाराज जी की कृपा हुई। आज जो डेरे में विशाल मन्दिर संत सरवण दास महाराज जी की याद में बना है, उसका नक्शा श्री गुलवंत सिंह जी ने तैयार किया था।

(स्वयं श्री गुलवंत सिंह पुत्र श्री उत्तम राम, 351 शिव नगर, जालन्धर,1 जुलाई, 2003)

साखी नंबरः 71

संतों का सत्कार

संत सरवण दास महाराज जी और संत प्रेम दास जी(डेरा 108संत सीतल दास, बोहण)के साथ बहुत प्रेम था। श्री मल्लू राम, गाँव ब्यास वाले संत प्रेम दास जी के सेवक थे। हर कार्य उनकी आज्ञा के अनुसार करते थे। जब उन्होंने कोई कार्य करना तो संत प्रेम दास जी से आज्ञा लेकर करते थे। कई

बारस ंतप>मद ासज ाक हतेथ ेि क,''आपकेन ज़दीकस ंतस रवणद ास महाराज जी हैं, उनसे आज्ञा ले लिया करो। जो उनका हुकम लगे हमें बता देना।''

(स्वर्गीय श्री मल्लू राम का भतीजा श्री स्वर्ण चन्द पुत्र स्वर्गीय श्री फुमण राम, गाँव ब्यास)

साखी नंबर: 72

श्री फुमण राम की इच्छा जानना

संत सरवण दास महाराज जी, 108संत प्रेम दास जी(डेरा 108संत सीतल दास जी)का आपस में बहुत प्रेम था। स्वर्गीय श्री फुमण राम पुत्र स्वर्गीय सुलतानी राम, गाँव ब्यास वालों का दोनों महापुरूषों से बहुत प्रेम था। फुमण दास जी ने संत बाबा प्रेम दास जी से नाम-दान प्राप्त किया था। आज़ादी से पहले श्री फुमण राम जी का लायलपुर गोजरा(आजकल पाकिस्तान)में चमड़े का कारखाना था और कारोबार बहुत अच्छा था। सन् 1947 ई. की भारत-पाकिस्तान बंटवारे से कुछ महीने पहले दोनों संत महापुरूषों ने श्री फुमण राम जी को पत्र लिखे और दोनों पत्र उनको एक साथ मिले। जब उन्होंने दोनों पत्र खोले, तो उनकी हैरानी की कोई हद नहीं रही, क्योंकि दोनों पत्रों में एक ही बात और एक ही कविता जो निम्न लिखी है, लिखी हुई थी और यह भी लिखा था कि कुछ महीनों बाद समय भयानक आ रहा है, आप अपना कारोबार छोड़कर जालन्धर आ जाओ।

सेब साबती का सौदा रख अंदर,
पूरा बोलना पूरा तोलना,
देही जान तू सच की हटड़ी ऐ,
संत आखदे वेद को ख़बर नाहीं,
यहाँ मंज़िल फकीर की उपड़दी ऐ,
प्रेम प्यार की लहर अंदर,
साध संत सारे भूल जांवदे ने।

इस प्रकार दोनों संतों ने श्री फुमण राम जी को आने वाले भयानक समय के बारे में बताया। दोनों महापुरूषों के वचन अटल हुए। कुछ महीनों बाद भारत-पाकिस्तान बंटवारा होने से दंगे भड़क गए थे।

(श्री स्वर्ण चंद पुत्र स्वर्गीय फुमण राम, गाँव ब्यास, 2 जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 73

मिस्त्री हरी सिंह और बीबी गुरबचन कौर को संतान की बख्शिश करना

मिस्तरी हरी सिंह जी(पुत्र स्वर्गीय श्री झंडा राम जस्सल)बीबी गुरबचन कौर, गाँव निज़ामदीनपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय उन्होंने अपने मकान का मुहूर्त किया। इस शुभ अवसर पर संत सरवण दास महाराज जी आए। उस समय महाराज जी ने बीबी गुरबचन कौर को चार अखरोट खाने के लिए दिए और वचन किया,'' आपके घर चार पुत्र और चार लड़कियां जन्म लेंगी।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर चार पुत्रों और चार लड़कियों ने जन्म लिया।

(बीबी गुरबचन कौर सुपत्नी मिस्त्री हरी सिंह, गाँव निज़ामदीनपुर, जालन्धर, 2 जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 74

बीबी गुरमीत कौर को पुत्रों की बख्शिश करना

श्री नसीब चन्द पुत्र स्वर्गीय श्री बरियाणा राम, गाँव रमदासपुर, जालन्धर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनकी शादी बीबी गुरमीत कौर, गाँव काला बाहियां से हुई। बीबी गुरमीत कौर, गाँव नंगल नज़दीक सपरोड़(नज़दीक चहेड़ू)के रहने वाली थी, जो कि बचपन से अपने मामा गंगू और मामी नन्दी के साथ, गाँव काला बाहियां, जालन्धर में रहती थी। जब उनका विवाह काले बाहियां में हुआ, वापिस रमदासपुर जाते हुए डेरे में नमस्कार करने आए। जब श्री नसीब चन्द और बीबी गुरमीत कौर ने महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने बीबी गुरमीत कौर को सात बादाम दिए और कहा,''बेटी, यह सात बादाम तुमने अकेले ही खाने हैं।'' बारात के साथ ही सभी गाँव रमदासपुर को चले गए। दूसरे दिन जब बीबी गुरमीत कौर सात बादाम अपने बैग में से निकालकर खाने लगी तो उस में से दो बादाम निकालकर बीबी गुरमीत कौर की ननद ने खा लिए जिसकी शादी करतारपुर में हुई थी।

कुर्छ दनोंब ादज बश्र ीन सीबच न्दअ ौरब ीबीग ुरमीतक ौरड ेरे महाराज जी के पास आए और महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,'' महाराज जी, जो सात बादाम गुरमीत कौर को दिए थे, उस में से दो बादाम मेरी बहन बिंसी ने खा लिये है।''

महाराज जी ने कहा,''बेटी तुम्हारी कोख से सात पुत्र जन्म लेंगे, दो पुत्र मर जाऐंगे और पाँच पुत्र ठीक रहेंगे। दो पुत्र तुम्हारी नन्द के घर पैदा होंगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। बीबी गुरमीत कौर की कोख से सात पुत्रों ने जन्म लिया, जिनमें से दो पुत्र मर गए, पाँच पुत्र जीवित है, दो पुत्र उस की नन्द बिंसी(करतारपुर)के है। इस प्रकार महाराज जी के वचन अटल हुए।

(बीबी गुरमीत कौर सुपत्नी श्री नसीब चन्द, गाँव रमदासपुर, जालन्धर, 3जुलाई, 2003)

साखी नंबरः 75

स. गुरमीत सिंह की सुपत्नी बख्शिश कौर की बीमारी हटाना

स. गुरमीत सिंह पुत्र स्वर्गीय अर्जुन सिंह, गाँव संघवाल,जालन्धर के रहने वाले थे। उनकी पत्नी बख्शिश कौर बहुत बीमार रहती थी। उन्होंने उसका बड़े-बड़े डॉक्टरों से इलाज करवाया, पर उसको आराम नहीं आया। यहां किसी ने बताया, वह बीबी बख्शिश कौर को वहां ही लेकर गए। आखिर में उन्होंने सारी दुःख भरी कहानी स. सोहन सिंह, संघवाल को बताई, जो कि संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। श्री सोहन सिंह ने स. गुरमीत सिंह से कहा कि,''हम सुबह बख्शिश कौर को महाराज जी के पास लेकर जाऐंगे।

दूसरे दिन सुबह श्री सोहन सिंह स. गुरमीत सिंह और बीबी बख्शिश कौर को साथ लेकर डेरे पहुँचे। उस समय संत सरवण दास महाराज जी थड़े पर बैठे थे, जब स. सोहन सिंह के बाद दोनों पति-पत्नी महाराज जी को नमस्कार करने लगे, तो महाराज जी ने कहा,''अगर कोई डॉक्टर रहता है, तो वहां भी जा आओ।'' दोनों पति-पत्नी महाराज जी को नमस्कार करके बैठ गए। स. गुरमीत सिंह ने मन में विचार किया, महाराज जी पूर्ण परमात्मा है, इनके साथ किसी किस्म का तर्क-वितर्क नहीं होना चाहिए। स. सोहन सिंह ने बताया कि,''महाराज जी, बीबी बख्शिश कौर जी कई वर्षों से बीमार है, आराम नहीं आ रहा, आप की शरण में आए हैं, आप कृपा करो।''

महाराज जी ने कहा,''चिंता मत करो, सब कुछ ठीक हो जाऐगा।'' यह काढ़ा दवाई का बनाकर इस को घर ले जाकर पिला देना। स. गुरमीत सिंह जी ने घर जाकर बीबी बख्शिश कौर को काढ़ा बनाकर पिलाया और आप पशुओं को चारा डालने चले गए। जब वापिस आए तो उनकी हैरानी की कोई हद नहीं रही, उनकी पत्नी बिल्कुल ठीक हो गई और रोटी बना रही थी। बख्शिश कौर

ने कहा,''मैं महाराज जी की कृपा से बिल्कुल ठीक हूँ। इस प्रकार महाराज जी ने उन पर कृपा की।''

साखी नंबर:76

स. गुरमीत सिंह जी को दो पुत्रों की दात देना

इस के बाद स. गुरमीत सिंह जी के घर रविवार स. सोहन सिंह के साथ डेरे आकर लंगर में सेवा करने लगे और रात समय महाराज जी के साथ गाँव वाले मन्दिर में जाकर कथा सुनते थे। एक दिन शाम की बात है, जब श्री बेला सिंह और स. जागर सिंह बल्लां वालों ने महाराज जी आगे निवेदन किया कि ''महाराज जी कथा शुरू करें।'' महाराज जी ने कहा कि ''गुरमीत सिंह आ रहा है। उसको पहुँच लेने दो।'' कुछ समय पश्चात् स. गुरमीत सिंह गाँव वाले मदिंर पहुँचे और कथा शुरू की गई। दूसरे दिन प्रातः काल 3 बजे गुरमीत सिंह महाराज जी को स्नान करा रहे थे। कि महाराज जी ने अचानक कहा ''गुरमीत! तुम्हारे चार लड़कियां ही है, अच्छा कोई चिंता मत करना। एक वर्ष के अंदर-अंदर आप के घर लड़का जन्म लेगा।'' महाराज जी के अटल वचनों के अनुसार ग्यारह महीने ग्यारह दिन पश्चात् एक वर्ष के बीच ही स. गुरमीत सिंह के घर एक लड़के ने जन्म लिया, जिस का नाम रविन्द्र सिंह रखा।

कुछ वर्षों पश्चात् प्रातः काल गाँव वाले डेरे में संत सरवण दास महाराज जी को स. गुरमीत सिंह स्नान करा रहे थे और महाराज जी ने दोबारा वचन किये ''गुरमीत! पुत्रों का जोड़ा बन जाएगा।'' स. गुरमीत सिंह ने कहा ''सत वचन महाराज जी।'' फिर उनके घर एक और लड़के ने जन्म लिया, जिस का नाम जर्मन सिंह रखा गया। इस प्रकार महाराज जी के अटल वचनों अनुसार स. गुरमीत सिंह के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया।

साखी नंबर:77

श्री उजागर सिंह पर कृपा करनी

श्री उजागर सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री सुन्दर दास जी का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। वह परिवार समेत बस्ती नौं (निज़ामत नगर) में रहते थे। सन् 1970 ई. में उनके गाँव सरनाणा नज़दीक कोटली थानसिंह जालन्धर में 15 किले ज़मीन का 70,000 रूपए बयाना दे दिया। उनकी 22 किले ज़मीन निज़ामत नगर में थी। उनका विचार था कि 22 कनाल ज़मीन बिकने से वह बाकी रूपए 15 खेतों की रजिस्ट्री करवा लेंगे। परन्तु उनकी

निज़ामत नगर वाली ज़मीन न बिकने के कारण बयाने की तारीख समाप्त हो गई। ज़मीन के मालिक ने उनके आगे यह शर्त रखी, जब तक बाकी पैसे नहीं देते, तब तक हर वर्ष मुझे 700 रूपए देना। सन् 1971 ई. में भारत-पाकिस्तान की लड़ाई लग गई। लड़ाई बंद होने पर श्री उजागर सिंह ने एक दिन महाराज जी आगे निवेदन किया कि "महाराज जी, मैं गरीबी के कारण बहुत परेशान हूँ। सन् 1970 ई.में ज़मीन(15 खेत का बयाना किया था)बारे सोचा था कि हमारी 22 कनाल ज़मीन बेच कर बाकी के पैसों की रजिस्ट्री करवा लेंगे। पर महाराज जी हमारी ज़मीन नहीं बिक रही। इस कारण दो वर्षों से हर वर्ष ज़मीन के मालिक को 700 रूपए दे रहा हूँ। जितना समय आप हम पर कृपा नहीं करते, मैंने उतना समय डेरे से नहीं जाना।" वह दो दिन लगातार डेरे में रहे। जब तीसरे दिन की सुबह हुई तो संत सरवण दास महाराज जी ने श्री उजागर सिंह को कहा "जाओ उजागर सिंह आपका काम बन गया है।" उस समय महाराज जी से आर्शीवाद लेकर उजागर सिंह घर आए और उनके सुपुत्रों ने बताया कि "अपनी ज़मीन में चार प्लाट बिके हैं। इन रूपयों के साथ हम अपनीज ़मीन(15ख ेतों)कीर जिस्ट्रीक रवाल ेंगे।म हाराजज ीके व चन अटल हुए। उजागर सिंह ने बाकी रूपए देकर रजिस्ट्री करवा ली। इसके पश्चात् उनके और भी प्लाट बिकने के साथ, साथ लगती और ज़मीन खरीद ली गई।

(श्री राम सरन पुत्र श्री उजागर सिंह, बस्ती नौं, निज़ामत नगर, जालन्धर, 5,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 78

स. लाल सिंह को पुत्रों की बख्शिश करनी

श्री लाल सिंह पुत्र स. लक्ष्मण सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी निरंजन कौर जी का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय दोनों ने महाराज जी के आगे निवेदन किया, "हमारे केवल लड़की ही है, आप कृपा कर पुत्र की दात बख्शिश करो।" महाराज जी ने वचन किया कि, "आपके घर पुत्र जन्म लेगा।" महाराज जी की कृपा से उनके घर पुत्र ने जन्म लिया।जि जसक ान ामज सवीर्र सिंहर खाग या।1 1जून,1972इ ्.कोस ंत सरवण दास महाराज जी ज्योति-ज्योत समा गए, उनके बाद संत हरी दास महाराज जी डेरे के संचालक बने। एक समय लाल सिंह ने संत हरी दास

महाराज जी के चरण पकड़ लिये और निवेदन किया कि, ''महाराज जी मेरे लड़के जसवीर सिंह की बख्शिश संत सरवण दास महाराज जी की थी। आप भी कृपा करो, एक और पुत्र की बख्शिश करो।'' ऐसे निवेदन जब लाल सिंह ने तीसरी बार किया तो कुछ समय अंर्तध्यान होने के बाद संत हरी दास महाराज जी ने कहा, ''भाई, जिस तरह तुम कहते हो, महाराज सरवण दास जी की कृपा से वैसे की होगा।'' संत हरी दास महाराज जी के वचन अटल हुए। स. लाल सिंह के घर एक और पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम बलवीर सिंह रखा गया। स. लाल सिंह ने बताया कि,''आज महाराज जी की कृपा से मुझे किसी बात की कमी नहीं हैं, उन्होंने मेरी हर मनोकामना पूरी की है।''

(स्वयं स. लाल सिंह सुपुत्र स. लक्ष्मण सिंह, गाँव नौगजा, जालन्धर, 5,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 79

स. स्वर्ण सिंह विदेश मंत्री की शंका दूर करना

स्वर्गीय मास्टर गुरबंता सिंह जी खेतीबाड़ी मंत्री, पंजाब, गाँव धालीवालका संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। अक्सर आप महाराज जी के पास आया करते थे। एक बार आप भारत के विदेश मंत्री स. स्वर्ण सिंह को साथ लेकर डेरे में आए। उस समय संत सरवण दास महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। स. स्वर्ण सिंह और स. गुरबंता सिंह अपने साथियों समेत महाराज जी को नमस्कार करके महाराज जी के पास बैठ गए। उस समय ज्ञानी बिशना राम जी, गाँव बल्लां, भी महाराज जी के पास बैठे थे। स. स्वर्ण सिंह कहने लगे,''मैं विदेशों में जाकर आया हूँ। आप भी विदेश की सैर कर आना।'' महाराज जी ने प्रश्न किया,''आप किस-किस देश में गए हो?'' स. स्वर्ण सिंह जिस भी देश का नाम लें, संत सरवण दास महाराज जी उस देश के लोगों का स्वभाव और पहरावे के बारे में स. स्वर्ण सिंह को साथ में ही बता रहे थे और एक जगह रूक कर महाराज जी ने स. स्वर्ण सिंह को प्रश्न किया कि,''तुमने उस देश में वह ऐतिहासिक जगह देखी है?'' संतों के मुँह से ऐसा प्रश्न सुन कर विदेश मंत्री एक दम चुप हो गया और कहने लगा कि,''महाराज जी, आपने इन देशों में भ्रमण किया है?'' आगे महाराज जी ने कहा,''मंत्री जी, जाकर देखने की ज़रूरत आप जैसे इन्सानों को है और परमात्मा का भजन करने वाले को अन्दरूनी अनुभव द्वारा ही सब कुछ

पता चल जाता है।'' स. स्वर्ण सिंह जी महाराज जी के संसारिक और परमार्थी वचनों से बहुत प्रभावित हुए। वह महाराज जी के दर्शन करने के लिए स. गुरबंता सिंह के साथ आया करते थे।

(ज्ञानी बिशना राम जी, गाँव बल्लां, जालन्धर, 5,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 80

स. पाखर सिंह और बीबी बख्शिश कौर को पुत्र की दात देना

स. पाखर सिंह(पुत्र स्वर्गीय ज्वाला सिंह) बीबी बख्शिश कौर, गाँव नौगजे के रहने वाले थे। उनके घर दो लड़कियां थीं और दो जन्म लेकर मर गई थीं। दोनों पति-पत्नी का महाराज जी से बहुत प्रेम था। एक दिन दोनों ने महाराज सरवण दास जी के आगे निवेदन किया कि,'' महाराज जी, हमारे घर दो लड़कियां मर गई हैं, हमारे घर कोई पुत्र नहीं है, आप कृपा करो।''

महाराज जी ने कहा कि,'' चिंता मत करो, भजन सिमरन किया करो, पुत्र जन्म लेगा।'' ठीक एक वर्ष पश्चात् बीबी बख्शीश कौर के घर पुत्र ने जन्म लिया। जिस का नाम महाराज जी ने सुखदेव सिंह रखा। महाराज जी के वचन अटल हुए।

(स्वयं बीबी बख्शीश कौर पत्नी स. पाखर सिंह जी, नौगजा,जालन्धर, 6जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 81

संगतों की इच्छा पूर्ण करना

एक समय संत सरवण दास जी महाराज पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। उनके आगे चादर पर कुछ संगत बैठी थी। महाराज जी ने कहा,'' मंहगिया संगत को लड्डू के साथ चाय पिलानी है।''(श्री महिंगा सिंह तेली, गाँव बल्लां)श्री महिंगा राम ने निवेदन किया कि,'' महाराज जी, लड्डू का प्रसाद नहीं है।'' तो महाराज जी ने कहा,'' महंगिया साइकिल पर बैठ कर ले आओ।''श्री महिंगा राम सत वचन कहकर साइकिल लेकर किशनगढ़ को चल पड़े। जब वह किशनगढ़ पहुँचे तो वहां बीबी किशनो बस से टांडे से पहुँची थी। उसके पास लडडू के डिब्बे थे। जो वह महाराज जी के लिए लेकर आ रही थी। श्री महिंगा राम जी ने सारी वार्ता बताई कि,'' महाराज जी ने मुझे आपको लाने के लिए भेजा है। जब महिंगा राम जी बीबी किशन कौर जी को साइकिल पर बिठा कर डेरे लाए तो दोनों महाराज को नमस्कार कर बैठ गए।

महाराज जी ने कहा कि ,''महंगिया तुम कह रहे थे, लडडू का प्रसाद नहीं है।'' तो महिंगे ने निवेदन किया,''महाराज जी आपकी आप ही जानों।'' कुछ समय पश्चात् श्री कृपा राम जी और करमी रसूलपुर, स. गुरदयाल सिंह नूरपुर और सोमनाथ रमदासपुर वाले लड्डू के डिब्बे लेकर महाराज जी के पास पहुँचे। महाराज जी के हुक्म अनुसार सब संगत को लड्डू से चाय पिलाई गई।

(स्वयं बीबी किशन कौर पत्नी श्री भागमल, टांडा)

साखी नंबरः 82

श्री गरीब दास पर कृपा करना

श्री प्रीतम दास वैद्य,गाँव रेरू वाले(उस समय गाँव अलावलपुर) संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में रहकर डेरे में देसी दवाईयों की सेवा करते थे। लगभग सन् 1965 ई. की बात है, श्री प्रीतम दास वैद्य जी का लड़का गरीब दास जो कि सातवीं कक्षा में पढ़ता था। संत सरवण दास महाराज जी के लिए टकानुओं साफकर माला बनाकर लाया। उसने डेरे में आकर वह माला महाराज जी के गले में डालकर नमस्कार की, महाराज जी ने पूछा,''काका, यह किससे माला बनाई है?'' काके गरीब दास ने उत्तर दिया, महाराज जी टकानुओं की माला आप के लिए बनाकर लाया हूँ तो संत सरवण दास महाराज जी ने आर्शीवाद देते हुए कहा,''तुम इंजिनियर बनोगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। काके गरीब दास ने दसवीं कक्षा पास करने के बाद सरवेयर इंजिनियर का डिप्लोमा किया। डिप्लोमा करने के बाद उस को मृदा और जल संरक्षण इंजिनियर विभाग में सरवेयर की नौकरी मिली। श्री गरीब दास जी ने बताया कि,''आज मैं महाराज जी की कृपा से इस विभाग में सेवा निभा रहा हूँ और मुझे किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है।''

(स्वयं श्री गरीब दास सुपुत्र स्वर्गीय श्री प्रीतम दास वैद्य, गाँव रेरू, 8, जुलाई 2003)

साखी नंबरः 83

श्री कृपा राम की इच्छा पूर्ण करना

श्री कृपा राम जी और बीबी करमी, गाँव रसूलपुर ब्रह्मणा के रहने वाले थे। श्री कृपा राम जी के मन में यह पक्का निश्चय था कि मैंने गुरू उस महात्मा को धारण करना है, जो महात्मा मुझे स्वप्न में आ कर पहले दर्शन देंगे। एक समय उन्हें रात के समय स्वप्न आया। स्वप्न में उन्हें एक महात्मा के दर्शन

हुए, पर वह उनके नाम का नहीं पता था। एक बार कृपा राम जी नहर के किनारे जालन्धर को जा रहे थे और उन्हें डेरे की साथ वाली नहर पर संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज सरवण दास जी उस को साथ लेकर कुटिया में आए। कृपा राम जी बहुत खुश थे, कि आज मुझे पूर्ण महात्मा मिल गए है। जिन्होंने मेरे मन का संकल्प पूरा किया है। इस के बाद कृपा राम जी और बीबी करमी जल्दी-जल्दी महाराज जी के दर्शन के लिए कुटिया में आने लगे। उन दोनों को महाराज जी ने नाम-दान की बख्शिश की। बहुत बार संत सरवण दास महाराज जी रसूलपुर सुबह 4 बजे श्री कृपा राम जी के घर जाया करते थे। बीबी करमी जी की माता बीबी भानी जी डेरे में रह कर सेवा करते थे। कृपा राम जी और बीबी करमी जी बहुत समय डेरे में व्यतीत करते थे और लंगर में सेवा करते थे।

साखी नंबरः 84

श्री कृपा राम को गंगा के दर्शन करवाने

एक समय संत सरवण दास महाराज जी ने संगतों समेत कुंभ के अवसर पर हरिद्वार जाने का प्रोग्राम बनाया जिस दिन महाराज जी श्रद्धालुओं समेत हरिद्वार जाने लगे, तो श्री कृपा राम ने निवेदन किया कि,''महाराज जी हमें भी अपने साथ हरिद्वार ले चलो,''मैं भी गंगा पर स्नान कर लूँगा।'' संत सरवण दास महाराज जी ने कहा,''कृपा राम यहां ही गंगा है और साथ ही महाराज जी ने कहा कि, हमारे आने तक आपने डेरे में ही रहना है।'' महाराज जी संगत के साथ हरिद्वार चले गए। श्री कृपा राम के मन में शंका रही कि महाराज जी सारी संगत को ले गए और मुझे कहा कि,''यही गंगा है।'' श्री कृपा राम रात को डेरे में सो रहे थे, उन्होंने स्वप्न में देखा कि कुटिया में महाराज जी का पेड़ के नीचे चबूतरे पर आसन के आगे एक नलका(नल) है, यहां एक बहुत सुन्दर बीबी है और उसके आस-पास रोशनी है। कृपा राम ने उससे पूछा कि,''तुम कौन हो? और यहां क्या करने आई हो?'' तो बीबी ने कहा,''मैं गंगा हूँ, संसारिक लोग स्नान कर बहुत पाप चढ़ा देते हैं, इस लिए संतों की सेवा कर के मैं शुद्ध होने आई हूँ। इस के बाद कृपा राम की आँख खुल गई, उस ने मन में ही विचार किया कि संत सरवण दास महाराज जी सही कहते थे कि यहां ही गंगा है।

जब कुछ दिनों बाद संत सरवण दास महाराज जी संगत को हरिद्वार की

यात्रा करवा कर वापिस डेरे आए तो बुजुर्ग कृपा राम जी ने महाराज जी को दंड वत्त चरण वंदना की तो महाराज जी ने कहा,"क्यों कृपा राम गंगा देख ली?" तो बुजुर्ग कृपा राम ने कहा कि,"महाराज जी आप धन्य हो।" इस के बाद श्री कृपा राम जी ने अपने मन में यह संकल्प कर लिया था, कि जिस नलके पर गंगा जी के दर्शन हुए है, उस नलके पर मैंने मोटर लगवानी है।

(यह वार्ता दास स्वयं श्री कृपा राम जी और बीबी करमी जी के मुखारविंद से सरवण की है)

साखी नंबर: 85

श्री कृपा राम की रक्षा करनी

श्री कृपा राम जी और बीबी करमी, गाँव रसूलपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक बार की बात है, श्री कृपा राम जी अपने गाँव वाली ज़मीन में बैलों के साथ हल चला रहे थे। उनकी टाँग पर सांप ने काट लिया। वह हल चलाना छोड़कर डेरे की तरफ दौड़े आ रहे थे। जब वह पुल के पास आए तो उनके शरीर पर इतनी जलन लगी कि उन्होंने नहर में छलांग लगा दी। इधर जानी-जान संत सरवण दास महाराज जी खूंडा(डंडा) लेकर पुल के पास पहुँचे, उन्होंने कहा,"ओए, कृपिया यहाँ क्या कर रहा है? तुमने मुझे बहुत तंग कर रखा है। चल नहर में से बाहर निकल।" तो कृपा राम ने नहर में से बाहर निकल कर महाराज जी को नमस्कार की और उन्होंने यहां टाँग पर सांप ने काटा था हाथ लगा कर बताया कि महाराज जी यहां पर सांप ने काट दिया था। यहां सांप ने काटा था उस जगह के इर्द-गिर्द महाराज जी ने खूंडा घूमा कर और कहा,"चल, कुटिया जाकर चाय पी, तुम्हें कुछ नहीं हुआ" तो श्री कृपा राम जी सत् वचन कहकर डेरे की तरफ चल पड़े और उनके शरीर की सारी जलन खत्म हो गई। उन्होंने डेरे में आकर चाय पी और कुछ देर सेवा की फिर महाराज जी से आज्ञा लेकर वापिस अपने गाँव पहुँच कर हल चलाने लग पड़े।

(हैडमास्टर जोगी सिंह जी, ढेपुर, कठार, 9,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 86

बीबी रक्खी पर कृपा करनी

गर्मियों के दिन थे। हैडमास्टर जोगी जी और उनके पिता श्री मेहर दास ढेपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। श्री मेहर

दास जी की सालेहार श्रीमती रक्खी जी श्री ठाकुर दास के साथ उस की शादी हुई थी और उनके दो लड़के और दो लड़कियां थी। सन् 1960 ई. की बात है कि श्री मेहर दास जी की सालेहार बीबी रक्खी की पीठ पर ज़ख्म हुआ था। उसको कहीं से भी आराम नहीं आ रहा था और डॉक्टरों तथा हकीमों ने उसे जवाब दे दिया था। एक दिन श्री मेहर दास की दादी बीबी गंगी और बीमार रक्खी सुपत्नी श्री ठाकुर दास सभी इकट्ठे हो कर संत सरवण दास महाराज जी के पास आए। उस समय काका जोगी उनके साथ थे। सभी डेरे में आकर महाराज जी को नमस्कार कर बैठ गए। किसी ने कोई बात नहीं की क्योंकि इससे पहले श्री मेहर दास को संत सरवण दास महाराज जी ने कहा था कि हमारे साथ कोई घरेलू बात नहीं करनी। जानी-जान महाराज जी ने पूछा ,''मेहर दास यह बीमार बीबी कौन है?'' तो मेहर दास ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, मेरी सालेहार रक्खी, गाँव बजवाड़ा, ज़िला होशियारपुर के रहने वाले हैं। महाराज जी ने पूछा,''इस बीमार बीबी की कितनी लड़कियां है?'' मेहर दास जी ने जवाब दिया कि,''दो लड़कियां हैं।'' महाराज जी ने कहा ,''इस की बड़ी बेटी की शादी कर दो।'' जब कि रिश्ता भी कोई नहीं हुआ था। श्री मेहर दास जी ने निवेदन किया,''महाराज जी शादी कब करें? तो महाराज जी ने कहा, ''यह रविवार छोड़कर अगले रविवार कर दो। रात को बारात आए और प्रात:काल 4 बजे उस लड़की के फेरे करने हैं।'' सभी महाराज जी को नमस्कार कर अपने-अपने घर चले गए। दो दिन बाद ही श्री ठाकुर दास और बीबी रक्खी की लड़की का रिश्ता अमृतसर में पक्का हो गया ।ए कर विवारछ ोड़करद ूसरेर विवारक ीश ाादीर खद ीग ई ।ब ारात शनिवार रात की आनी तय हो गई। महाराज जी के वचन अटल हुए। उनकी बड़ी लड़की दरशो की शादी एक रविवार छोड़कर अगले रविवार हई। बारात अमृतसर से रात को आई और सुबह प्रात:काल 4 बजे फेरे कर दिए गए। उसके बाद बीबी रक्खी की तबीयत में सुधार होना शुरू हो गया। लगभग तीन महीनों में सारा ज़ख्म ठीक हो गया। उसके बाद बीबी रक्खी ने एक लड़के(जिस का नाम मनसा राम रखा गया जो कि आजकल पटवारी की नौकरी कर रहा है)और एक लड़की सीता को जन्म दिया। इस प्रकार महाराज जी ने बीबी रक्खी का कष्ट दूर किया। श्री ठाकुर दास और बीबी रक्खी जी श्री हुकम चन्द जज साहिब के चाचा जी और चाची जी थे।

साखी नंबरः 87

श्री सुन्दर राम की शंका दूर करना

हैडमास्टर जोगी राम जी के दादा जी सरपंच श्री सुन्दर राम का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय श्री सुन्दर राम जी महाराज जी के पास डेरे में आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, श्री मेहर दास जी के छोटे पुत्र श्री भाग राम की सगाई करनी है।'' संत सरवण दास महाराज जी ने तीन बार कहा कि,''सगाई मत करो। फिर दोबारा श्री सुन्दर दास जी ने कहा,''महाराज जी, अगर वहां सगाई न की तो मेरी बहन धामियां वाली ने गुस्से हो जाना है। क्योंकि यह रिश्ता उस ने किया है तो महाराज जी ने कहा कि ,'' भाग राम जी की सगाई कर लो, पर हमने सगाई पर नहीं आना।'' श्री सुन्दर राम जी के बहुत बार कहने पर महाराज जी ने कहा कि,''हम आऐंगे ज़रूर पर मेहमानों के सामने नहीं आना।'' जिस दिन सगाई हुई तो संत सरवण दास महाराज जी श्री सुन्दर दास के घर जा कर वापिस आ गए। उस दिन श्री भाग राम की सगाई हुई और तीसरे दिन उनके घर सन्देश आ गया कि सगाई वाली लड़की मर गई है तो उससे अगले दिन श्री सुन्दर राम और उनका पौत्रा जोगी राम महाराज जी के पास डेरे में आए। जब वह महाराज जी को नमस्कार करने लगे तो महाराज जी ने कहा,''सरपंचा, कर आए सगाई।'' तो श्री सुन्दर राम जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, अगर आप जी को पता था कि इस तरह होना है तो पहले ही बता देते।'' महाराज जी ने कहा कि,''हमने तुम्हें तीन बार तो कहा कि सगाई मत करो।''

साखी नंबरः 88

श्री सिमरन दास को पुत्रों की दात बख्शिश करना

श्री सिमरन दास जी (पुत्र श्री धन्ना राम जी) उनकी पत्नी बीबी प्रकाश कौर संत सरवण दास महाराज के श्रद्धालु थे। उनकी तीन बेटियां थी और दो बेटे जन्म लेकर मर गए थे। सन् 1969 ई. की बात है, कि श्री सिमरन दास जी की बहन बीबी गुरमीत कौर सुपत्नी श्री लश्कर राम, गाँव रमदासपुर वाले एक दिन श्री सिमरन दास और बीबी प्रकाश कौर को साथ लेकर महाराज सरवण दास जी के पास आकर निवेदन किया कि,''महाराज जी, मेरे भाई के घर तीन बेटियां ही है और इनके दो लड़के जन्म लेकर मर चुके हैं। इनके घर कोई पुत्र नहीं है, आप कृपा करो।'' संत सरवण दास महाराज जी ने श्री सिमरन दास जी

को अपने पास बुलाया और उसको दो बार आर्शीवाद दिया और कहा ,''कोई चिंता मत करना, आपके घर दो लड़के जन्म लेंगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर सन् 1970 ई. में एक लड़के ने जन्म लिया, जिसका नाम श्री जसपाल रखा गया। उसके पश्चात् सन् 1977 ई. में दूसरे लड़के ने जन्म लिया, जिसका नाम श्री राजेश कुमार रखा गया। इस प्रकार सरवण दास महाराज जी ने उनको पुत्रों की दात बख्शिश की।

(स्वयं श्री सिमरन दास पुत्र श्री धन्ना राम जी, गाँव कंगनीवाल, 09,जुलाई 2003)

साखी नंबरः 89

श्री गुरबचन सिंह विरदी को संतान की बख्शिश करना

श्री गुरबचन सिंह विरदी (पुत्र श्री भगत राम) बीबी रमेश कौर रायपुर रसूलपुर वाले संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। उनके घर तीन लड़के और एक लड़की जन्म लेकर मर गए थे। सन् 1948ई.की बात है, श्री गुरबचन सिंह और बीबी रमेश कौर ने महाराज जी के चरणों में अरदास की कि ,''महाराज जी, हमारे घर तीन लड़के और एक लड़की जन्म लेकर मर चुके हैं।'' आप कृपा करो, महाराज जी ने कहा,''चिंता मत करो, लड़की का जन्म होगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। एक साल पश्चात् उनके घर एक लड़की ने जन्म लिया। जिसका नाम महाराज जी ने मेहर कौर रखा, इस से कुछ दिनों पश्चात् उनके घर एक और लड़की ने जन्म लिया। जिसका नाम महाराज जी ने किहर कौर(केहरो) रखा।

इस से कुछ वर्ष पश्चात् श्री गुरबचन सिंह ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि ,''महाराज जी, आप जी की कृपा से मेरे घर दो लड़कियां है। मैं बहुत खुश हूँ , आप की मर्जी है अगर आप ने मुझ पर कृपा करनी है, तो मुझे लड़के की दात बख्शिश करो। महाराज जी ने कहा,''इस बार लड़का जन्म लेगा।'' महाराज जी के वचन अनुसार, उनके घर एक लड़के ने जन्म लिया। जिसका नाम महाराज जी ने श्री बलदेव सिंह रखा। बीबी रमेश कौर को संतान की बख्शिश की।

(स्वयं बीबी मेहर कौर पत्नी जगजीत सिंह, सतोवाली, पुत्री श्री गुरबचन सिंह विरदी)

साखी नंबर:90

श्री सोहन सिंह को संतान की बख्शिश करनी

श्री सोहन लाल (पुत्र श्री ब्रिज लाल) बीबी बचनी, गाँव रायपुर संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। उनके घर पाँच लड़कियां थी। श्री सोहन लाल जी वर्ष पश्चात् अपने घर में सत्संग करवाते थे और महाराज जी जाते थे।

सन् 1945 ई. की बात है, एक दिन सुबह श्री सोहन लाल जी महाराज जी के पास आए, उस समय महाराज जी गेट पर खड़े थे। श्री सोहन लाल जी ने नमस्कार की और निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरी पाँच लड़कियां हैं, आप कृपा कर पुत्र की दात बख्शिश करो जी।''

महाराज जी ने कहा ,''दो लड़के होंगे, भजन सिमरन किया करो।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। पहला पुत्र पैदा हुआ, उसका नाम महाराज जी ने ओम प्रकाश रखा। कुछ वर्ष पश्चात् दूसरे पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम सालगराम रखा। इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी ने श्री सोहन लाल को दो पुत्रों की बख्शिश की।

(स्वयं श्री सोहन लाल पुत्र श्री ब्रिज लाल, रायपुर, जालन्धर)

साखी नंबर:91

बाबू मेहर चन्द की इच्छा पूर्ण करना

बाबू मेहर चन्द(पुत्र श्री करना राम)बीबी भागवंती, प्रीत नगर, जालन्धर वालों का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। बाबू मेहर चन्द जी रविवार महाराज जी के दरबार में संगत के जोड़े जमा करने की सेवा किया करते थे। उनके छः पुत्र और तीन लड़कियां थी।

एक समय बाबू मेहर चन्द ने महाराज जी के चरणों में अरदास की कि,''महाराज जी, तीनों लड़कियां जवान हैं, इन के कहीं रिश्ते नहीं हो रहे, आप कृपा करो जी। महाराज जी ने कहा,''भजन सिमरन किया करो, तीनों लड़कियों के विवाह सरकारी नौकरी करते लड़कों के साथ होंगे।'' ऐसे वचन करते हुए महाराज जी ने सूरानुस्सी, जंडूसिंघा, रमदासपुर, गाँव की ओर इशारा किया। महाराज जी के वचन अटल हुए। तीनों लड़कियों की शादी उपरोक्त तीनों गाँव में हुई और तीनों लड़के सरकारी नौकरियां करते थे। आज भी तीनों

लड़के सरकारी नौकरियां करते है। (तीन लड़कियां शकुंतला,कौशल्या और बीबी निर्मला)

(बीबी कौशल्या पत्नी श्री जोगिन्द्र पाल, रमदासपुर, 11,जुलाई 2003)

साखी नंबर:92

श्री कर्म चन्द पर कृपा करना

श्री माघी राम जी, ब्यास गाँव के रहने वाले थे। उन्होंने बाबा पीपल दास जी महाराज के पास से नामदान प्राप्त किया था। उनके दो सुपुत्र थे। श्री अजीत राम और श्री कर्म चन्द। दोनों निरोट महिरा गाँव, पठानकोट में चमड़े का कारोबार करते थे। श्री कर्म चन्द जी पठानकोट में रहते थे।

एक बार की बात है, कि श्री कर्म चन्द को पहाड़ियों ने कत्ल के झूठे केस में फंसा दिया। पुलिस ने उनको जेल में बन्द कर दिया और मुकदमा चलने लगा।

श्री अजीत राम ने संत सरवण दास महाराज जी के पास निवेदन किया कि ,''महाराज मेरे भाई कर्म चन्द को झूठे केस में फंसा दिया है, आप जी कृपा करो।''

महाराज जी ने वचन किया कि,''कर्म चन्द केस से बरी हो जाएगा और गाँव का सरपंच बनेगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री कर्म चन्द जी कत्ल के केस से बरी हो गए और निरोट महिरा गाँव के सरपंच बने।

(स्वयं श्री रूप लाल पुत्र श्री अजीत राम, ब्यास गाँव, 11, जुलाई 2003)

साखी नंबर:93

श्री साधु राम की इच्छा पूरी करनी

श्री साधु राम लम्बड़दार (पुत्र श्री इंद्र दास) बीबी अमरो, गाँव लद्देवाली, जालन्धर, संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे।

एक बार की बात है, कि गर्मियों के दिन थे। श्री साधु राम जी महाराज जी को पंखे से हवा दे रहे थे। उनको हवा देते समय विचार आया कि कोई और आदमी मेरी जगह आकर महाराज जी को पंखे से हवा दे। उसी समय जानी-जान महाराज जी ने कहा,''साधु राम बस करो अब पंखा मत चलाओ।''साधु राम जी मन-ही-मन में बहुत शर्मिन्दा हुए और सत् वचन कहकर बैठ गए।

(श्री साधु राम लम्बड़दार पुत्र श्री इन्द्र दास, गाँव लद्देवाली, जालन्धर, 12, जुलाई 2003)

साखी नंबर:94

श्री तरसेम लाल को नौकरी बख्शिश करना

श्री हरी राम और बीबी जवाली जो कि पहले गाँव बल्लां में रहते थे, बाद में मक्सूदां रहने लगे थे। बाबा पीपल दास जी के समय से डेरे आते थे। बाबा जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् अक्सर संत सरवण दास महाराज जी पास आया करते थे। एक समय श्री तरसेम लाल जी अपने पिता हरी राम जी को साइकिल के पीछे बिठाकर डेरे में आए। यह बात लगभग सन् 1955 ई.की है, संत सरवण दास महाराज जी उनको नहर के पुल पर मिले। जब उन्होंने महाराज जी से नमस्कार की तो उन्होंने कहा,''कुटिया चलो, हम आते हैं।''

जब महाराज जी डेरे में आकर पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान हुए, उनके पास श्री हरी राम, उनका सुपुत्र तरसेम लाल और कुछ और संगत भी बैठी थी। महाराज जी ने कहा,''हरी राम तुम्हारे इस पुत्र ने थानेदार बनना है।'' श्री हरी राम जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, आपकी इच्छा है, जो मर्जी बना दीजिए।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री तरसेम लाल जी सन् 1963 ई.में पुलिस भर्ती हुए और सन् 1996ई. में थानेदार रिटायर हुए।

(स्वयं श्री तरसेम लाल पुत्र श्री हरी राम, मक्सूदां,13, जुलाई 2003)

साखी नंबर:95

सत्गुरू अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं

यह साखी उस समय की है, जब सन् 1971 ई.की भारत-पाकिस्तान जंग के समय सारा देश सहमा हुआ था। सरहदों पर लड़ाई लड़ रहे बहुत सारे सैनिकों के संपर्क परिवारिक सदस्यों से नहीं हो रहे थे। जिस कारण उनके परिवारिक रिश्तेदार और संबंधी भी चिंतित थे। टैलीविज़न, मोबाइल, उस समय समाज में इतने नहीं थे। लोग ज़्यादातर रेडियो से ही जंग संबंधी संक्षिप्त ख़बरे सुना करते थे। श्री राम लाल सुपुत्र श्री भगत राम बरनाला के रहने वाले थे जो कि भारतीय सेना में थे और इस लड़ाई दौरान सरहद पर देश की रखवाली के लिए तैनात थे। उन से संबंधित भी घर वालों को कोई ख़बर नहीं मिल रही थी। परिवार पूरी तरह से परेशान था और संत सेवी परिवार होने के कारण, उन्होंने अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, कि महाराज जी राम लाल की कोई फोन ख़बर नहीं आई। महाराज जी ने परिवार को भरोसा दिया,''आप जाओ, उसको कोई छू भी नहीं

सकता(अर्थात कोई हानी नहीं पहुँचा सकता) ।'' पूर्ण ब्रह्मज्ञानी सब के दिलों की जानने वाले सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने राम लाल जी को सरहद पर जाकर मोर्चे पर प्रत्यक्ष दर्शन दिए और वचन किए कि, ''कोई चिंता नहीं करनी। आप देश की रक्षा के लिए डटे रहो।'' दुश्मन आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। थोड़े समय पश्चात् ही जंगबंदी का ऐलान हो गया और राम लाल भी छुट्टी लेकर वापिस घर बरनाले आ गए। उसने अपनी आपबीती अपने लड़के कुलविन्दर सिंह और परिवारिक सदस्यों को सुनाई। सारा परिवार धन्य गुरूदेव उच्चारण करने लगा और शुक्राने की अरदास करने के लिए अगले दिन डेरे बल्लां पहुँचा। इस प्रकार सत्गुरू अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं, आवश्यकता सिर्फ़ विश्वास की होती है।

साखी नंबर:96

श्री खुशी राम और बीबी बचनी पर बख्शिश करना

श्री खुशी राम(पुत्र श्री मीहा राम)बीबी बचनी सरमस्तपुर के रहने वाले थे। उनका संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। हर रविवार महाराज जी के चरणों में अरदास करने आया करते थे। सन् 1945 ई. की बात है, उनके घर एक पुत्र जन्म लेकर मर गया।

श्री खुशी राम और बीबी बचनी ने महाराज के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर पुत्र जन्म लेकर मर गया है।'' महाराज जी ने कहा,''भजन सिमरन किया करो, चार काके और दो लड़कियां होगी।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर चार पुत्र और दो लड़कियां हैं।

(बीबी बचनी सुपत्नी श्री खुशी राम, गाँव सरमस्तपुर, 13जुलाई,2003)

साखी नंबर: 97

भारत की आज़ादी के बारे में बताना

कवि मेहरू राम और उनके परिवार, गाँव संघवाल वालों का संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। बाबा पीपल दास जी अकसर गाँव संघवाल और नज़दीक के गाँव में गज़ा(भिक्षा माँगने)करने जाया करते थे। बहुत बार संत सरवण दास महाराज जी भी उनके साथ जाया करते थे और अक्सर प्रात:काल उठ कर संगत को भजन करने के लिए प्रेरित किया करते थे। कवि मेहरू राम जी अकसर संत सरवण दास महाराज जी को मिलने जाया करते थे।

सन् 1945 ई.की बात है,कि श्री मेहरू राम जी महाराज जी पास डेरे में आए। संत सरवण दास महाराज जी रात्रि को उन्हें गाँव ले गए, महाराज जी ने रात को कथा की। उसके पश्चात् रात को श्री मेहरू राम जी ने प्रात:काल चार बजे उठकर स्नान किया। जब सूर्य निकलने में थोड़ा समय था, तो महाराज जी ने मेहरू राम को कहा,''यह लो शीशा(दर्पण), इस में देखो सूर्य पूरा उदय हुआ है।'' श्री मेहरू राम ने शीशे(दर्पण)में देखा तो सूर्य आधे से भी कम और टेढ़ा दिखाई दिया। उन्होंने इस बारे महाराज जी को बताया, तो महाराज जी ने कहा,'' अच्छा, अब अंग्रेज़ों का राज नहीं रहेगा।'' महाराज जी के वचन अटल हो गए। दो वर्ष के भीतर-भीतर अंग्रेज़ों का राज भारत में से समाप्त हो गया और भारत आज़ाद हो गया।

(स्वयं श्री राम किश्न सुपुत्र कवि मेहरू राम, संघवाल, जालन्धर 16, जुलाई 2003)

साखी नंबर: 98

बीबी हरजीत कौर की शंका दूर करना

श्री रक्खा सिंह, गाँव आदमवाल, होशियारपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। महाराज सरवण दास जी भी आदमवाल जाया करते थे। सन् 1969 ई.की बात है कि बीबी हरजीत कौर सुपुत्री श्री रक्खा सिंह सरकारी प्रशिक्षण कॉलेज लाडोवाली में बी.ऐड. करते थे और कभी भी कॉलेज से छुट्टी नहीं की थी। मकर सक्रांति वाले दिन की बात है कि बीबी हरजीत कौर कालेज जाने से पहले महाराज जी के मुख से महीने का नाम सरवण करने आई। महाराज जी ने कहा,''सत्संग खत्म होने के बाद जाना।'' बीबी हरजीत कौर सत् वचन कह कर बैठ गए और मन में विचार किया कि आज मुझे देर से जाने पर अध्यापिका ने डांटना है। बीबी हरजीत कौर जी जब सत्संग खत्म होने के बाद कॉलेज में पहुँचे तो उन को पता लगा कि आज किसी कारण क्लास नहीं लगी। बीबी हरजीत कौर ने मन में विचार किया कि संत सरवण दास महाराज जी जानी-जान है। नहीं तो पहले हमेशा मुझे कहा करते थे कि बीबा चाय पानी पी कर जल्दी जाओ, ताकि तुम्हारी पढ़ाई खराब न हो।

(स्वयं बीबी हरजीत कौर सुपुत्री श्री रक्खा सिंह महे, गाँव आदमवाल, होशियारपुर)

साखी नंबरः 99

भाई अम्मी सिंह के लड़के सरदार प्रकाश सिंह को नौकरी की बख्शिश करना

श्री जीवन राम और बीबी पूरो, गाँव पथियाल, होशियारपुर वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। वह अक्सर महाराज जी के पास आया करते थे। इस लिए उनका पुत्र भाई अम्मी सिंह और बीबी चनण कौर और समूह परिवार का महाराज से बहुत प्रेम था। जिस समय महाराज जी फतोवाल, लाम्बड़े गर्मियों के दिन में आम चूसने जाया करते थे, तो महाराज जी अक्सर गाँव पथियाल जाते।

सन् 1971 ई. की बात है, एक समय भाई अम्मी सिंह का लड़का स.प्रकाश सिंह अपनी माता चनण कौर के साथ डेरे में आए। उन दिनों वह फरीदाबाद में आइशर टरैक्टर कंपनी में मेकैनिक का काम करता था। जाने के समय श्री प्रकाश सिंह उनकी माता चनण कौर ने महाराज के पास से घर जाने की आज्ञा मांगी कि,''कल हमने गाँव कंदोला जाना है। इस लिए आपने हमारे साथ ही चलना है। आते हुए हम आपको आदमपुर छोड़ देंगे।'' जब दूसरे दिन महाराज जी जीप में बैठकर श्री प्रकाश सिंह और बाकी लोगों के साथ कंदोला जा रहे थे। तब महाराज जी ने कहा ,''प्रकाश तुम्हारी नौकरी कैसे है।'' उन्होंने उत्तर दिया महाराज जी मैं फरीदाबाद में आइशर टरैक्टर कंपनी में कच्ची नौकरी कर रहा हूँ और पक्की नौकरी के लिए साक्षात्कार दिया है, जिस का कोई उत्तर नहीं आया। महाराज जी ने कहा,''तेरी नौकरी पक्की है, तुम्हें नौकरी मिल जाएगी।''

जब कंदोले से वापिस आते हुए महाराज जी ने श्री प्रकाश सिंह को आदमपुर उतार दिया। जब वह फरीदाबाद में पहुँचे तो मकान मालिक ने उनको पहुँचने पर बताया कि आपकी नौकरी की चिट्ठी आ गई है। इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी के वचन अटल हुए।

(भाई अम्मी सिंह पुत्र श्री जीवन राम, गाँव पथियाल, होशियारपुर, 16,जुलाई 2003)

साखी नंबरः 100

श्री सुरैण दास के परिवार पर कृपा करनी

श्री पुन्नू राम और बीबी बन्ती, रायपुर रसूलपुर वालों का संत सरवण

दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। वह सारा परिवार महाराज जी का श्रद्धालु था। लगभग सन् 1958ई. की बात है कि पठानकोट रोड बन रहा था। श्री पुन्नू राम के लड़के श्री सुरैण दास और उनके दो छोटे भाई श्री श्रद्धा राम एंव श्री सोहन लाल सड़क के ऊपर पत्थर बिछा रहे थे। उनके पास से संत सरवण दास जी गुज़रे तो उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार की निवेदन किया,''हमारी यह टोकरियां कब बन्द होगीं?'' तो महाराज जी ने कहा,''अभी ही बन्द कर दो।'' उन तीनों भाईयों ने ठेकेदार को बता दिया कि,''आज से हमने यह काम नहीं करना।'' महाराज जी से पूछा ,''क्या करें।'' महाराज जी ने कहा,''आप सोडा-पानी बेचा करो।'' तीनों भाईयों ने कहा''सत् वचन।'' साथ ही महाराज जी ने कहा,''रविवार को डेरे आ कर कुछ बोतलें संतों और संगत को पिलाया करो।''

महाराज जी की ऐसी कृपा हुई कि सन् 1961 ई. में श्री सुरैण दास के छोटे भाई श्री राम चन्द विरदी इंग्लैंड चले गए। उससे कुछ वर्षों के बाद एक और भाई श्री मीत राम जी भी इंग्लैंड चले गए। श्री सुरैण दास के लड़के श्री कुन्दन लाल ने बताया कि हमारे परिवार पर महाराज सरवण दास जी ने ऐसी कृपा की। हमारे परिवार में से किसी ने भी टोकरी उठाने की मज़दूरी नहीं की।

(श्री कुन्दन लाल पुत्र सुरैण दास, गाँव रायपुर रसूलपुर, 19, जुलाई 2003)

साखी नंबर: 101

श्री हरजी मल्ल को तरक्की बख्शिश करनी

श्री पाला राम जी और उनकी पत्नी बीबी गाबी जी एंव सारा परिवार, गाँव ब्यास वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। वह अकसर महाराज जी के पास आते थे। कई-कई दिन डेरे में रहा करते थे।

श्री पाला राम जी का लड़का श्री हरजी मॅल बीमा कम्पनी में नौकरी करते थे। लगभग सन् 1965 ई. की बात है कि श्री हरजी मॅल ने अपनी पत्नी बीबी रेशम कौर को बताया कि,'' मैंने नौकरी छोड़ देनी है। एक तो पैसे बहुत कम है। दूसरा तरक्की भी नहीं होती।'' कुछ दिनों के बाद श्री हरजी मॅल और बीबी रेशम कौर जी महाराज जी के पास आ कर नमस्कार की। बीबी रेशम कौर ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, यह कहे रहे हैं कि नौकरी छोड़ देनी है, एक तो पैसे बहुत कम है। दूसरा तरक्की भी नहीं होती।''

महाराज जी ने कहा,''हरजी मॅल नौकरी नहीं छोड़नी, चिंता मत करना। तरक्की जल्दी हो जाएगी, भजन सिमरन करते रहो।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री हरजी मॅल की एक महीने बाद तरक्की हो गई।

(बीबी रेशम कौर, गाँव ब्यास, जालन्धर, 20,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 102

स. गुरबचन सिंह और बीबी सुरजीत कौर को पुत्रों की बख्शिश करनी

स. वीर सिंह जी, गाँव बल्लां के रहने वाले है। सारे परिवार का महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उन की ज़मीन कुटिया के पास ही है। एक समय उनके सुपुत्र स. गुरबचन सिंह और उनकी पत्नी बीबी सुरजीत कौर(आजकल फतियाबाद हरियाणा में)महाराज जी के पास आए। उन्होंने महाराज जी को नमस्कार करने के बाद निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर चार लड़कियां हैं। कृपा करके पुत्र की दात बख्शिश करो। उस समय बीबी सुरजीत कौर गर्भवती थी। महाराज जी ने कहा,''भजन सिमरन किया करो,चिंता मत करो, इस बार लड़की जन्म लेगी। उसे बाद तीन पुत्र जन्म लेंगे।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर कुछ महीनों बाद लड़की ने जन्म लिया। उसके बाद तीन पुत्रों सरदार तरसेम सिंह, गुरनाम सिंह और रविन्दर सिंह ने जन्म लिया।

(स्वयं बीबी सुरजीत कौर पत्नी स.गुरबचन सिंह, गाँव बल्लां, 20,जुलाई 2003)

साखी नंबर: 103

स. कर्म सिंह हवलदार की रक्षा करनी

स. कर्म सिंह हवलदार पुत्र स. ज्वाला सिंह अबादपुर, जालन्धर में रहते थे। वह मिल्टरी में सेवा करते थे। श्री कर्म सिंह और उन की पत्नी बीबी अमर कौर एवं सारा परिवार का महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था।

पहले, दूसरे महायुद्ध सन् 1939-1945 ई. की बात है कि उस समय भारत अंग्रेज़ों के अधीन था इस लिए अंग्रेज़ों ने भारतीयों को न चाहते हुए भी युद्ध में शामिल कर लिया, ग्यारह हज़ार फौज़ी इंग्लैंड ने भारत से जापान युद्ध के लिए भेजे। उस समय श्री कर्म सिंह भी सेना में थे। अमेरिका ने जापान के दो शहरों हीरोशिमा और नागासाकी पर दो बम फैंके। जिस कारण वहां कई

लोगों की जानें गई और सामान का भी बहुत नुक्सान हुआ। युद्ध बन्द हो गया था।

बीबी अमर कौर ने महाराज जी के पास आ कर निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरे पति स. कर्म सिंह का कोई पता नहीं आया।''

महाराज जी ने कहा,''भारत से गए सैनिकों में से ज़्यादातर लड़ाई में शहीद हो गए हैं। इस समय स. कर्म सिंह और उनके पचास साथी ठीक हैं। उन्होंने वहां से स्यालकोट मिल्टरी कैंट में पहुँचने के बाद घरों को वापिस आऐंगे।''

महाराज जी के वचन अटल हुए। महीने के बाद स. कर्म सिंह जी घर पहुँचे उस समय वह रोगी थे। उन की तबीयत ठीक नहीं थी। कुछ दिनों के बाद दोनों पति-पत्नी महाराज जी के पास आए। महाराज जी को स. करम सिंह ने बताया कि,''महाराज जी, ग्यारह हज़ार भारती सैनिकों में से केवल पचास सैनिक ही ज़िन्दा वापिस आए हैं।'' उन्होंने कहा,''महाराज जी की कृपा के साथ मैं जापान से सिंगापुर फिर मद्रास से स्यालकोट अपने पचास साथियों संग पहुँचा हूँ जी।''

महाराज जी ने उनका दवाई के साथ इलाज किया और वह ठीक हो गए। उसके बाद बीबी अमर कौर को अपने साथ स्यालकोट में ले गए थे। भारत-पाकिस्तान के विभाजन तक वह स्यालकोट में ही रहे। उस के बाद वह भारत में आकर गदाईपुर गाँव में रहने लगे थे।

साखी नंबर: 104

स. कर्म सिंह की मुक्ति करनी

करीब दस साल बाद स. कर्म सिंह जी बहुत बीमार हो गए थे। उन्होंने महाराज जी के चरणों में अरदास की कि,''महाराज जी, आप कृपा करो या तो मुझे ठीक कर दो या फिर मेरी मुक्ति कर दो।''

महाराज जी ने दोनों पति-पत्नी को कहा कि,''भजन किया करो, या तो करर्म संहर विवारत कठ ोकह ोज ाएगाय ात ोि फरइ सक ोम ुक्तिह ो जाएगी।'' रविवार सुबह स. कर्म सिंह जी परलोक सिधार गए।

साखी नंबर: 105

चारों पुत्रों का सरकारी मुलाज़िम होना

जब स. कर्म सिंह परलोक सिधार गए तो कुछ दिनों के बाद महाराज

जी उनके घर गदाईपुर गए। बीबी अमर कौर ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरी दो लड़कियां हैं और चार लड़के हैं। बड़े लड़के तरसेम लाल की आयु 14 साल है। उससे छोटे लड़के अमरीक 3 साल का है। अमरीक से छोटा लड़का मदन एक साल छः महीने का है और सबसे छोटा लड़का 22 दिनों का है।''

महाराज जी ने कहा,''अमर कौर मालिक का हुकम है पर कोई चिंता मत करना। तुम्हारे चारों पुत्र अफसर बनेंगे।'' बीबी अमर कौर ने आज बताया कि,''महाराज जी हमेशा मुझे हौंसला देते थे। मैंने पशु रख कर उनका दूध बेच कर सारे बच्चों को पढ़ाया। आज महाराज जी की कृपा से मेरा बड़ा लड़का जिस की मौत हो चुकी है मिल्टरी में से रिटायर्ड हुआ था। दूसरा लड़का अमरीक जिस ने एम.ऐ. की है आज वह बैंक ऑफ़ बड़ौदा में मैनेज़र है। तीसरा लड़का मदन लाल नहरों के विभाग में नौकरी करता है और चौथा लड़का सुगरीव कुमार भी एम. ऐ. पढ़ा है। वह भी सरकारी नौकरी करता है। यह सब सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा है।''

(स्वयं बीबी अमर कौर पत्नी श्री कर्म सिंह, गदाईपुर, जालन्धर, 21 जुलाई 2003)

साखी नंबरः 106

स. कर्म सिंह पर कृपा करनी

स. कर्म सिंह हवलदार पुत्र स. महिंगा सिंह बॅधण,गाँव पंडोरी निजरां नज़दीक आदमपुर के रहने वाले हैं। वह फौज में सेवा करते थे। जब भी वह फौज में छुट्टी काट कर जाते तो महाराज सरवण दास जी को नमस्कार कर के जाते थे। एक समय उनकी ड्यूटी लेह लद्दाख में थी। जब वह छुट्टी काट कर वापिस जा रहे थे। तो महाराज पास डेरे आकर नमस्कार कर निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरी नौकरी दूर लेह लद्दाख में है। मैं छुट्टी काट कर वापिस जा रहा हूँ ,आप आर्शीवाद दो।

महाराज जी ने कहा,''अगर आपकी नौकरी दूर है, तो बहुत जल्दी आप नज़दीक आ जाओगे।'' जिस समय स. कर्म सिंह बॅधण महाराज जी से आर्शीवाद लेकर लेह लद्दाख में अपने कैंप पहुँचे तो उस समय उनको जानकर बहुत हैरानी हुई, कि उनकी पंजाब की बदली के ऑडर हो चुके हैं। महाराज जी के वचन अटल हुए। वह कुछ दिनों के बाद पंजाब आ गए।

(इबलविन्दर सिंह बँधण पुत्र श्री कर्म सिंह बँधण, गाँव पंडोरी निज़रां, जालन्धर)

साखी नंबरः 107

बलटोई दोबारा खीर से भरना

श्री फग्गण राम और उनके सभी परिवार, गाँव सरमस्तपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। वह डेरे में लंगर की सेवा किया करते थे। श्री सदा राम की आयु 12 वर्ष की थी। महाराज जी ने संगत के लिए खीर बनाई। दोपहर की पंगत लगाई गई और सारी खीर संगत में बांटी गई। उस के पश्चात् कुछ संगत और डेरे में आई। सारी संगत महाराज जी को नमस्कार कर बैठ गई। उस समय श्री कृपा राम रसूलपुर, श्री संतू राम जी किशनगढ़, श्री फग्गण राम सरमस्तपुर और स्वयं श्री सदा राम जी जिनकी आयु 12 वर्ष और श्री जगतराम रसोइया ने श्री सदा राम को महाराज जी पास भेजा, उन्होंने महाराज जी को बताया कि,''खीर खत्म हो गई है।'' तो महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''चलो, हम भी चलकर देखते हैं।''

जब महाराज जी ने सब सेवादारों को साथ लेकर रसोई में खीर वाली बलटोई देखी तो उस समय बलटोई खीर से भरी हुई थी। महाराज सरवण दास जी कहने लगे,''आप कह रहे थे, कि खीर हैं नहीं, खीर तो बहुत है।'' सारी संगत हैरान हो गई और महाराज जी भी मुसकुराने लगे। आई संगत को खीर खिलाई गई।

साखी नंबरः 108

श्री सदा राम और बीबी हरबंस कौर की शंका दूर करनी

एक समय की बात है,कि सरमस्तपुर से श्री सदा राम और उनकी पत्नी बीबी हरबंस कौर ने डेरे में आना था। श्री सदा राम ने अपनी पत्नी से कहा कि,''दो रूपए मेरी जेब में डाल दो। हमने संतो को नमस्कार करनी है।'' तो बीबी हरबंस कौर ने उनकी जेब में दो रूपए डाल दिए और कहा ,''संतों को नमस्कार एक रूपए से भी की जा सकती है।''

जब वह दोनों डेरे पहुँचे तो श्री सदा राम ने महाराज जी के आगे दो रूपए रखे और दोनों ने नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''बेटी एक रूपए से भी नमस्कार की जी सकती है।'' कहते हुए महाराज जी ने एक रूपया बीबी हरबंस कौर को वापिस कर दिया दोनों यह कौतुक देखकर हैरान रह गए।

साखी नंबरः 109

संत मार्ग पवित्रता का मार्ग है

एक समय श्री सदा राम और बीबी हरबंस कौर डेरे में महाराज जी को नमस्कार करने के लिए बर्तन में दूध डालकर नमस्कार करने के लिए आ रहे थे। बीबी हरबंस कौर ने दूध वाला बर्तन रास्ते में ही रख दिया और बल्लां वाली सेवादार बीबीयों के साथ गले लगकर मिलने लगी। जब बीबी महाराज जी के चरणों में दूध वाला बर्तन रखकर नमस्कार करने लगी तो संत सरवण दास महाराज जी कहने लगे,''जा बेटी पहले दूध वाले बर्तन को बाहर पानी से धोकर लाओ, दूध वाला बर्तन कभी नीचे नहीं रखते।''''जब महापुरूषों के दर्शन को आना हो फिर सीधा आना चाहिए। रास्ते में रूकना नहीं चाहिए।'' बीबी हरबंस कौर और श्री सदा राम जी ने महाराज जी से माफी मांगी और दोनों महाराज स्वामी सरवण दास जी की आध्यात्मिक शक्ति से हैरान रह गए।

साखी नंबरः 110

संतान की बख्शिश करनी

एक समय की बात है श्री सदा राम जी जब फौज में से छुट्टी आते तो डेरे में महाराज जी की संगत में जाते हैं। सर्दियों के दिन थे, दोनों पति-पत्नी डेरे में महाराज जी के पास बैठे थे। उस समय एक बीबी डेरे में आई। उस ने महाराज जी के पास निवेदन किया कि ,''महाराज जी मेरी कोई संतान नहीं है,कृपा करो।''

महाराज जी संत चेतन दास को आवाज़ लगाई,''चेतन दास बीबी कुछ मांग रही है।'' सारी संगत देख रही थी। उस समय डेरे में आमों के पेड़ बहुत थे और एक ही आम के पेड़ को एक ही बेमौसमी आम लगा था। संत चेतन दास जी ने उस आम के नीचे लोही की। झोली आम गिर पड़ा। उन्होंने आम महाराज जी को लाकर दे दिया और कहा ,''महाराज जी यह आम इस बीबी की झोली में डाल दो। '' महाराज सरवण दास जी ने वह आम बीबी की झोली में डाल किया। इस कौतुक को श्री सदा राम और बीबी हरबंस कौर के अलावा और संगत भी देख रही थी।

साल बाद फिर एक दिन श्री सदा राम पत्नी के साथ डेरे में आए। उस वक्त वह बीबी जिस को संतों ने आम का फल दिया था, वह बीबी अपने पास

पुत्र को उठाई संतों के वहां नमस्कार करने आई हुई थी। इस प्रकार महाराज जी ने उस बीबी को पुत्र की दात बख्शिश की।

(स्वयं श्री सदा राम और पत्नी हरबंस कौर, गाँव सरमस्तपुर, 22, जुलाई 2003)

साखी नंबर: 111

बीबी के रोग काटने

सन् 1965 ई. की बात है कि श्री कर्म चन्द पुत्र श्री बीरू राम, गाँव दूहड़े, जालन्धर, वाले डेरे में महाराज जी के दर्शन करने आए थे। गर्मियों के दिन थे। महाराज जी पेड़ की नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। संगते सत्संग श्रवण कर रही थी। इस वक्त एक बीबी जिस के पास एक साल का बच्चा था। रोती हुई ने महाराज जी के चरणों पर नमस्कार की। महाराज जी ने चार-पाँच जुते मारे और कहा कि, ''उस आम के पेड़ के नीचे बैठ।''

15 मिनट बाद उस बीबी को महाराज जी ने अपने पास बुलाया और कहा, ''लंगर में से चाय-पानी पी कर आओ।'' जब वह चाय-पानी पी कर वापिस आई, तो महाराज जी ने कहा ,''बता बेटी क्या बात है?'' बीबी ने कहा,''महाराज जी, मुझे बहुत समय से परेशानी थी। मैंने बहुत इलाज करवाया, पर आप ने जो जूते लगाए हैं उस से मैं शांत हो गई हूँ।'' यह कौतुक श्री कर्म चन्द और कुछ संगत देख कर हैरान रह गई।

(श्री कर्म चन्द पुत्र श्री बीरू राम, गाँव दूहड़े, जालन्धर, 22 जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 112

अमरू उठ कर बैठ जा

रविवार का दिन था। सन् 1976ई. में मार्च के महीने की 14 दिनांक थी (14.03.1976)। सर्दी का मौसम था। सोने से पहले अमर नाथ(गाँव मन्नण)ने दुकान बंद कर की और सो गया। लगभग ग्यारह बजे का समय था। अमर नाथ को आवाज़ सुनाई दी। यह क्या? यह तो चोर है जो अमर नाथ की दुकान के साथ वाली दुकानों के ताले तोड़ कर समान लूट रहे हैं। जब कोई गाड़ी आती और रोशनी होती वह छुप जाते। गाड़ी के निकल जाने के बाद फिर वह अपना काम शुरू कर देते। आस-पास की कई दुकानें उन्होंने लूटीं। इधर अमर नाथ सर्दी की ठंडी रात में ही घबराहट के कारण पसीने के साथ लथ-पथ था। चोर गिनती में ज़्यादा थे। अमर नाथ को डर था कि दुकान लूटने के

साथ-साथ कहीं चोर उस को खत्म न कर दें। अब उस को दुकान में पड़ी रकम और सारा समान अपनी जान से ज़्यादा कीमती नहीं लग रहा था। पता नहीं चोर लूटने के बाद उस को जिन्दा छोड़ेंगे या मार देंगे। यही सोच उस को पानी-पानी कर रही थी।

इस सोच और डर के तुफान में से पार लगाने के लिए सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का नूरानी स्वरूप अमर नाथ के पास आया। रोशनी ही रोशनी हो गई। उधर चोर आस-पास की दुकानें लुटने के बाद अमर नाथ की दुकान के शटर को खोलने की कोशिश कर रहे हैं। इधर सत्गुरू जी का नूरी स्वरूप अमर नाथ के पास खड़ा है। चोरों से शटर उठाया नहीं गया। थक हार कर चले गए। उपरोक्त घटना 14.03.1976और इससे पहली घटना जिस में महाराज जी ने अमर नाथ लोगों को सब्ज़ी बेचने का काम शुरू करने के लिए कहा था, जो 26.01.1970 की घटना थी के विषय-वस्तु के मध्य नज़र सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के प्रेम में अमर नाथ ने निम्नलिखित कविता लिखी हुई है -

26.01.1970 सन् जानो याद इन को किया
जो वचन जुबान से बोले भगवान के इन शरीकों
वह तो मिटने नहीं वह पत्थरों से लकीरें
वह तो मिटने नहीं।..............................
14.03.1976जानो रविवार दिन आ गया,
अमरू उठ कर बैठ जा योगी एक जगा गया।
रविवार फिर चल कर बीत गया,
वक्त सोने का आ गया,
अमरू उठ...
9:35 का वक्त हो गया,
ज़ोर नींद ने डाल लिया
अमरू उठ...............................
इस योगी की क्या निशानी
न कान में कुण्डल न गले में माला
यह तो भगवान ने रूप बदल लिया।

अमरू उठ..................................

जब वक्त ग्यारह हुआ

यह बल्लां में से आ गए

एक मस्ताना योगी

यह आ कर बात समझा गए

अमरू उठ................................

अब सत्गुरू तुम्हारे आ गए

रक्षक भी तुम्हारे आ गए

अमरू उठ.................................

जब अमरू ने होश संभाली दीया बाती लगा लिया

अमरू उठ ....

आस-पास के ताले टूट गए

चोरों ने घेरा डाल लिया

अमरू उठ ....

दिल अमरू का डोल गया

अमरू उठ कर बैठ जा यह बल्लां में से आ गए

अमरू उठ ....

योगी अपना नाम जपा गए

अमरू को सत्नाम जपा गए

अमरू उठ कर बैठ जा यह चोरों से छुड़वा गए

अमरू उठ.................................

आगे हाल सत्गुरू जाने

अमरू का दिल घबरा गया

अमरू उठ.....................................

वह बात लिखी है यहाँ

जो बात लिखा गए

अमरू उठ...............................

उस दिन की यह बात है

जिस दिन कर्मे को साथ सुला लिया

अमरू उठ ....

हो जाऐंगे अचानक से मिलाप

बिछड़ी हुई संगत के

अंग संग हो कर सहायता वह करते हैं

कहीं गए नहीं आस-पास ही हैं

29.03.1976को गुरमेल मेरे पास आया था

उस यह भजन सुनाया था

गुरमेल यह बात कहता था

मैंने और भी बढ़ौत्तरी करनी थी

गुरमेल को चुप करवाया था

गुरमेल घर को आया था

बाद में यह लेख लिखवाया,

जो नाम संतों का लेता है

बूटे को यह बात कह देना

गुरमेल यह बात कहता है

जो बीच कुटिया के रहता है

एक बूटा लगा गए हैं कुटिया में जिसको हवाईघर कहकर

आवाज़ देते होते थे

यह बात भी अच्छी लगती है

किंग जोड़ी अंदर से बजती है

जय संतों की।

साखी नंबर: 113

श्री जैमल सिंह के आँखों की रोशनी ठीक करनी

श्री जैमल सिंह जी, गाँव राऊवाली के रहने वाले थे और उनका संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। वह हर मकर सक्रांति, हर पूर्णिमा और हर अमावस वाले दिन डेरे में आ कर श्री आसा की वार का कीतन करते थे। एक समय की बात है कि उन को दिखाई देना हट गया। कुछ दिन वह

डेरे नहीं आए। जिस समय संत सरवण दास महाराज जी राऊवाली देखने उनके घर गए तो श्री जैमल सिंह ने कहा कि,''मेरी नज़र बन्द हो गई है इस कारण मैं डेरे नहीं आ सका।'' उस समय रास्ते कच्चे होते थे। महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''आप कुछ पैसे दे कर किसी लड़के को साथ ले कर डेरे आ जाया करो। वह कुछ महीने इस तरह करते रहे।'' एक समय वह डेरे आए तो संत सरवण दास महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी या तो मेरी मुक्ति कर दो या फिर मेरी नज़र ठीक कर दो।'' महाराज सरवण दास जी ने पास बैठी एक बीबी को कहा,''बेटी इस आदमी की आँखों पर हाथ लगा दो।'' पर उस बीबी ने ऐसा नहीं किया। जब महाराज जी ने तीसरी बार कहा तो उस ने अपना हाथ श्री जैमल सिंह जी की आँखों पर लगा दिया। ऐसा करने के बाद उस को थोड़ा साफ़ दिखाई देने लगा। महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''यह बीबी भजन बन्दगी करने वाली है। जिस के इस तरह करने के साथ श्री जैमल सिंह तुम्हे दिखाई देने लगा है।'' तो उस बीबी ने कहा कि ,''महाराज जी, मेरा तो बहाना ही है सब कुछ तो आप ही कर रहे हो।'' इस घटना के बाद श्री जैमल सिंह जी की आँखों की रोशनी आनी शुरू हो गई। इस के बाद वह अक्सर डेरे में आ कर सुबह चार बजे कीर्तन किया करते थे।

(स. सोहन सिंह संघवाल, 23, जुलाई 2003)

साखी नंबर: 114

स्वर्ण दास पहलवान की भविष्यवाणी करनी

श्री मंगल राम और बीबी नामी,गाँव रायपुर रसूलपुर वाले संत सरवण दास जी महाराज के श्रद्धालु थे। महाराज जी उनके घर जाया करते थे।

एक समय संत सरवण दास महाराज जी उनके घर गए। उस समय बालक स्वर्ण दास जी जिस की आयु लगभग दो वर्ष की थी। जब बीबी नामी ने इस बालक का नतमस्तक महाराज जी को किया, तो उस समय महाराज जी ने कहा ,''इस बालक ने बड़े होकर डेरे में सेवा करनी है।''

महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री स्वर्ण दास पहलवान हर रोज़ डेरे में रहा करते थे और छुट्टी वाले दिन डेरे में सेवा किया करते थे।

(बीबी चन्नण कौर पत्नी स्वर्गीय श्री स्वर्ण दास पहलवान, 26,जुलाई 2003)

साखी नंबरः 115

सन् 1965 ई. की लड़ाई के बारे में पहले ही बताना

संत सरवण दास जी महाराज का संत समाज से बहुत प्रेम था। महाराज जी अक्सर संतों को मिलने जाया करते थे।

सन् 1965 ई. की बात है, डेरा 108संत मेला राम जी, नगर फिल्लौर में संत सम्मेलन था। जिस में अनेकों संत महात्मा पहुँचे। संत महापुरूषों ने प्रवचन किए। संत सरवण दास जी ने सब जीवों को परमात्मा का सिमरन करने का,प्रेम प्यार से रहने का पावन उपदेश दिया। महाराज जी ने सभी संगत को सम्बोधन करते हुए कहा ,''कुछ दिनों पश्चात् समय भयानक आएगा।'' संगत सोचने लगी कि,''यह संतो ने क्या कह दिया है, देश में सभी ओर शांति है।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। जब कुछ दिनों बाद भारत और पाकिस्तान पर अचानक हमला कर दिया था।

(यह साखी श्री दर्शन दास जी ने संत गरीब दास जी महाराज को सुनाई थी)

साखी नंबरः 116

श्री धन्ना सिंह को ज़मीन की बख्शिश करना

श्री धन्ना सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी बंत कौर, गाँव टांडा राम सहाए तहसील दसूहा, ज़िला होशियारपुर के रहने वाले थे। उन्होंने सन् 1949 ई.में संत सरवण दास जी के पावन चरण कमलों में आना शुरू किया। सन् 1950 ई.की बात है, एक समय उन्होंने संत सरवण दास जी महाराज के पास आकर निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे गाँव 12 घुमा ज़मीन बिक रही है। हम तीनों मैं, श्री बंता राम और हीरा सिंह तीनों मिलकर वह ज़मीन खरीदना चाहते है। आप कृपा करो जी।'' महाराज सरवण दास जी ने वचन किया,''धन्ना सिंह, कोई चिंता नहीं करनी, वह ज़मीन आप तीनों ने मिलकर खरीदनी है, भजन सिमरन करते रहो।''धन्ना सिंह ने निवेदन किया,''महाराज जी! मैं गरीब हूँ, मैं वह ज़मीन कैसे खरीदूँगा। महाराज सरवण दास जी ने वचन किए कि,''छः वर्ष बाद वह ज़मीन तुम तीनों को मिलनी है।''

महाराज सरवण दास जी के वचन अटल हुए। छः वर्ष के बाद सन् 1956ई.में वह 12 घुमा ज़मीन श्री धन्ना सिंह, श्री बंता राम और श्री हीरा सिंह ने खरीदी। श्री धन्ना राम अक्सर संत सरवण दास जी महाराज के चरणों में डेरे में रह कर लंगर की सेवा किया करते थे। उन्होंने खरीदी हुई ज़मीन में एक अलग

नगर बसाया, यहां उन्होंने श्री गुरू रविदास मंदिर का निर्माण करवाया।

(श्री तरसेम लाल पुत्र श्री धन्ना सिंह,27,सितम्बर2003)

साखी नंबरः 117

श्री साधु राम और बीबी दानी देवी को संतान की बख्शिश करना

श्री साधु राम सुपुत्र श्री सुन्दर दास, गाँव छॅती चॅक डोगरा, ज़िला लायलपुर पाकिस्तान बनने के बाद सारा परिवार पाकिस्तान छोड़ कर लाड़ोवाली, जालन्धर में रहने लगे। श्री साधु राम और उनकी सुपत्नी बीबी दानी देवी के घर में एक लड़का जिस की आयु 7 वर्ष की थी, उस की मौत हो गई थी। इस कारण दोनों पति-पत्नी बहुत उदास रहा करते थे। एक दिन उन्होंने अपने रिश्तेदार श्री ईशर दास, गाँव रायपुर वालों से संत सरवण दास जी की प्रशंसा श्रवण की। श्री ईशर दास जी ने बताया कि,''संत सरवण दास जी महाराज पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है। जिनकी शरण जो जीव जाता है, उस की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है।'' एक दिन साधु राम जी अपनी पत्नी समेत कुटिया में संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में आए। उस समय महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे के ऊपर विराजमान थे और उनके आगे कुछ संगत बैठी थी। दोनों पति-पत्नी महाराज जी को नमस्कार कर बैठ गए। महाराज जी ने सब संगत को चाय पीने के लिए भेज दिया। दोनों पति-पत्नी चाय पीने के बाद आकर महाराज जी के पास बैठ गए। महाराज जी ने श्री साधु राम जी से पूछा,''आज आप किस तरह आए हो?''श्री साधु राम जी ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया,''महाराज जी! हमारा एक लड़का सात वर्ष का होकर मर चुका है, अब हमारे कोई संतान नहीं है, आप हम पर कृपा करो जी।'' कुछ देर चुप रहने के पश्चात् महाराज जी ने कहा कि ,''आपके घर तीन लड़के और दो लड़कियां होगी, कोई चिंता नहीं करनी, परमात्मा का सिमरन किया करो।'' यह मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता। महाराज जी से आर्शीवाद लेकर दोनों पति-पत्नी वापिस घर आ गए। उन्होंने हर रविवार महाराज जी के चरणों में आना शुरू कर दिया। महाराज जी के वचन अटल हुए, उनके घर तीन लड़के और दो लड़कियों ने जन्म लिया।

साखी नंबरः 118

श्री साधु राम जी पर बख्शिश करनी

सन् 1947 ई. में पाकिस्तान बनने के बाद श्री साधु राम जी और

उनका परिवार, गाँव छॅंती चॅक डोगरा, ज़िला लायलपुर पाकिस्तान से आकर पंजाब में लाडोवाली, जालन्धर में पंजाब से गए मुसलमानों की जगह पर मकान बना कर रहने लगे। वह जगह वक्फबोर्ड की थी। वक्फबोर्ड के साथ श्री साधु राम जी की जगह के मालिकाना के लिए मुकदमा चल गया। सन् 1952 ई. की बात है, कि श्री साधु राम जी जो महाराज जी के दरबार में हर रविवार को आया करते थे, तो महाराज जी के आगे निवेदन किया कि ,''महाराज जी जिस मकान में हम रह रहे हैं। वह जगह भारत से गए मुसलमानों की थी। मैं इस जगह पर सन् 1947 ई. से रह रहा हूँ। मेरा वक्फबोर्ड से मुकदमा चल रहा है।'' उस समय महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। महाराज जी ने कुछ देर चुप रह कर वचन किया,''साधु राम तुम मुकदमा जीत गए हो, कल तुम्हे मुकदमा जीतने की सूचना मिल जाएगी।'' महाराज सरवण दास जी के वचन अटल हुए। दूसरे दिन उनके वकील की चिट्ठी आ गई, जिस पर लिखा हुआ था कि,''आप मुकदमा जीत गए हो। सरकार की ओर से मकान वाली जगह आप को अलाट कर दी गई है।

साखी नंबर: 119

श्री साधु राम जी की शंका दूर करना

श्री साधु राम जी हर रविवार को डेरे में आकर लंगर में सेवा किया करते थे। सन् 1961 ई. की बात है, कि उनके घर इतनी गरीबी आई कि घर में कोई पैसा नहीं था। उन्होंने मन में विचार किया कि,''आज मैंने डेरे नहीं जाना क्योंकि अगर रास्ते में साइकिल पंक्चर हो गया, तो मैं साइकिल को पंक्चर कहां से लगवाऊँगा।'' साथ ही मन में यह विचार आया कि,''अगर आज मैं महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने नहीं गया तो मैं रविवार की लंगर की सेवा से वंचित रह जाऊँगा।'' उनकी पत्नी बीबी दानी देवी ने उनको प्रश्न किया कि,''आज आपने महाराज के दर्शन करने के लिए कुटिया नहीं जाना?'' तो श्री साधु राम जी ने अपने मन की सारी बात बता दी कि,''मेरे पास कोई पैसा नहीं है। उस की पत्नी ने कहा कि,''आप डेरे ज़रूर जाओ, महाराज जी जानी-जान हैं।'' श्री साधु राम जी साइकिल पर घर से डेरे की ओर चल पड़े। जब वह घर से दो किलोमीटर दूर आए तो उनकी नज़र रास्ते में पड़े पाँच रूपए के नोट पर पड़ी उसने साइकिल से उतर कर पाँच रूपए का नोट उठाया और रेलवे चौंक पर आकर दो रूपए के आम महाराज जी के लिए खरीदे। श्री

साधु राम जी डेरे पहुँचे, उस समय महाराज सरवण दास जी कुर्सी पर विराजमान थे और उनके आगे एक मेज़ पर आम रख कर साथ दो रूपए रखकर महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने कहा,''साधु रामा दो रूपए अपने पास रख लो, कई बार साइकिल का पंक्चर लगाने के लिए पैसे नहीं होते।'' महाराज जी के ऐसे वचन सुनकर उन्होंने महाराज जी के चरण पकड़ लिये और निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप जानी-जान हो। हम संसारी जीव भूलनहार है और आप बक्शणहार हो।''

साखी नंबर: 120

श्री साधु राम जी को अंतिम समय दर्शन देने और सहाई होना

श्री साधु राम जी का जब अन्तिम समय आया, उस समय वह बीमार हो गए। 28मार्च,1988ई.को उन्हें जालन्धर में अस्पताल में दाखिल कर दिया गया। 30 मार्च,1988ई.को दोपहर के समय उन्होंने अपने पुत्र श्री रेशम लाल को बुलाया और कहा कि,''मैंने कल एक बजे संसार छोड़ चले जाना है।'' जब 31मार्च एक बजे का समय आया तो उस समय उनके पास श्री धर्मपाल फोरमैन, गाँव जमशेर, श्री केवल कृष्ण, इंजिनियर, गांधी कैंप जालन्धर, श्री मंगत राम, श्री अजय कुमार, बीबी गुरमीतो खुरला किंगरा और स्वयं श्री रेशम लाल हाज़िर थे। इस समय श्री साधु राम ने कहा कि,''मैं अब जा रहा हूँ। मुझे लेने के लिए बाबा पीपल दास जी, संत सरवण दास जी और संत हरी दास जी आ गए हैं।'' कुछ समय में ही उन्होंने अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग दिया।

साखी नंबर: 121

स. लक्ष्मण सिंह और बीबी कर्म कौर पर कृपा करना

स. लक्ष्मण सिंह और बीबी कर्म कौर, गाँव गाखलां, जालन्धर के रहने वाले थे। दोनों की शादी के कुछ वर्षों बाद लक्ष्मण सिंह इंग्लैंड चले गए। जब वह इंग्लैंड में पक्के हो गए तो उन्होंने बीबी कर्म कौर और बच्चों को विदेश मंगवाने के लिए कागज़ भर दिए पर उनके कागज़ आए नहीं ।इस कारण स. लक्ष्मण सिंह इंग्लैंड में और बीबी कर्म कौर भारत में बहुत परेशान रहते थे। एक दिन बीबी कर्म कौर ने किसी से महाराज सरवण दास की प्रंशसा सुनी कि महाराज सरवण दास जी ऐसे संत है, जिनके दरबार से कोई खाली नहीं जाता है। एक दिन बीबी कर्म कौर महाराज जी के दर्शन पाने के लिए कुटिया में आई।उ सस मयस ंतस रवणद ासम हाराजज ीप ेड़के न ीचेच बूतरेप र

विराजमान थे। बीबी कर्म कौर ने जब महाराज जी के दर्शन किए तो उसका मन निहाल हो गया। उन्होंने मन में विचार किया कि सच्चे गुरू मिल गए है, अब मेरी सारी मुश्किलें हल हो जाएंगी। बीबी कर्म कौर महाराज जी को नमस्कार कर महाराज जी के पास बैठ गई। महाराज जी ने उसको लंगर में से चाय पानी छकने के लिए कहा। बीबी कर्म कौर जी लंगर में से चाय पानी छक कर बाद में महाराज जी के पास आकर निवेदन किया कि,"मेरे पति को इंग्लैंड में गए काफी साल हो गए हैं। वह इंग्लैंड में पक्के हैं। उन्होंने मेरे कागज़ अप्लाई किए हैं, पर वह कागज़ आए नहीं, आप कृपा करो जी। महाराज सरवण दास जी ने वचन किए ,"बेटी चिंता मत कर, तुमने कुछ महीनों में ही इंग्लैंड चले जाना है और तुम्हे वहां कोई कमी नहीं होगी। आप अपने पति का पता लेकर आओ। हम उसे स्वयं चिट्ठी लिखेंगे।"

कुछ दिनों पश्चात् बीबी कर्म कौर अपने पति का पता लेकर आई। संत सरवण दास महाराज जी ने अपनी तरफ से स. लक्ष्मण सिंह को चिट्ठी(पत्र) लिखी, जिस में उन्होंने स. लक्ष्मण सिंह को कहा कि,"आप बीबी कर्म कौर केक ागज़ोंक ीज ांचक रोअ ैरउ नकोइ ंग्लैंडब ुलानेक ीक ोशिशक रो, परमात्मा की कृपा से बीबी कर्म कौर का इंग्लैंड जल्दी आने का प्रबंन्ध बन जाएगा।" संत सरवण दास महाराज जी के वचन अटल हुए। कुछ महीनों बाद ही बीबी कर्म कौर का इंग्लैंड जाने का काम बन गया। बीबी कर्म कौर महाराज जी से आर्शीवाद लेकर इंग्लैंड पहुँच गई। जब भी बीबी कर्म कौर इंग्लैंड से आते तो महाराज जी की कुटिया में ही रहते थे। इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी ने स. लक्ष्मण सिंह और बीबी कर्म कौर पर कृपा की।

बीबी कर्म कौर ने महाराज सरवण दास जी की प्रंशसा में यह कविता लिखी थी:-

तेरी हस्ती से जाऊँ बलिहारे नहर कंडे रहन वालिया।
धन्य माता-पिता जिन्होंने ऐसा पुत्र जाया,
जन्म मनुष्य का पूरा मूल्य पाया,
छोड़ गए दुनिया पर रोशनी जाहरी।
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
यह हस्ती नहीं मिली नरमाई से,

यह हस्ती मिली सत्य की कमाई से,
पहले विषयों के सिर लात मारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
इस हस्ती के लिए मन जाग नथ्या,
अैर-गैर के पास यह जाता नहीं तथ्या,
तो ही नाम रखा बलिकारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
यह हस्ती के लिए मिट्टी जाना शरीर को,
हाथ से न छोड़ा कमान और तीर को,
तभी नाम रखा ब्रह्मचारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
यह हस्ती न बिके बीच बाज़ारों में,
रोते गए कई यहां मालिक हज़ारों के,
यह तो मांगती है प्रेम की पुजारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
इस हस्ती को वही पकड़ सकता,
अन्दर ही अन्दर जो बात पढ़ सकता,
उसकी भरती है फलों की खारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
इस हस्ती के वही फूल तोड़ता,
दुनिया के विषयों से जो मन मोड़ता,
जिस को चढ़ जाए नाम की खुमारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
इस हस्ती का महक उस को चढ़ता,
खुल जाता जिसके अन्दर वाला परदा,
उस को भूल जाती दुनिया यह सारी,
तेरी हस्ती से जाऊँ................................।
हो कर बड़ा दाता सत्गुरू दानी भी कहा गया,

दु:खी दिलगीर को तुमने गले से लगा लिया,
मुझसे होनी नहीं सिफ़्त तेरी सारी,
नहर कंडे रहन वालिया..........................।
उम्र दाता जी मेरी दिनों दिन बीतती,
खड़ी हूँ द्वारे तेरे नाम दान मांगती,
मुझे मिल जाए नाम की खुमारी,
नहर कंडे रहन वालिया तेरी हस्ती से जाऊँ बलिहारी।

साखी नंबर: 122

स. दर्शन सिंह की सन् 1971 ई. की लड़ाई समय रक्षा करनी

बाबा पीपल दास जी महाराज, गाँव(बुहलोवाल)लांबड़ा में गर्मियों के दिनों में लांबड़ा गाँव में कई दिन रह कर आम चूसने जाया करते थे। उनके साथ संत सरवण दास जी महाराज भी जाया करते थे। इस गाँव के रहने वाले स. महिंगा सिंह और बीबी धन्ती दोनों बाबा पीपल दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। बाबा जी के ब्रह्मलीन होने के बाद संत सरवण दास महाराज जी गाँव लांबड़ा में जाया करते थे।

सन् 1971 ई. की बात है कि स. महिंगा सिंह के सुपुत्र जो कि फौज़ में नौकरी करते थे। नवम्बर के महीने स. दर्शन सिंह जी ने महाराज जी के पास कुटिया में आ कर निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप कृपा करो हमने आप के हुक्म के अनुसार अपने घर में सत्संग करवाने हैं।'' महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''दर्शन सिंह तुम्हें कष्टों वाली जगह पर जाना पड़ेगा इस लिए आपने जल्दी सत्संग करवाने है। कल ही सुबह सत्संग रखो। हम सारा राशन यहां से ही भेज देते हैं।'' तो स. दर्शन सिंह ने निवेदन किया कि ,''महाराज जी एक दिन का वक्त दे दो।'' महाराज जी के आज्ञा के अनुसार स. दर्शन सिंह के घर में तीसरे दिन सत्संग रखे गए। सत्संग वाले दिन महाराज जी सुबह प्रात:काल गाँव में पहुँचे और महाराज जी ने सत्संग किया।

उस से कुछ दिनों के बाद ही सन् 1971 ई. की भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू हो गया। स. दर्शन सिंह जी को टैलीग्राम के द्वारा बुलाया गया और भारत-पाकिस्तान सीमा पर छम्भजोड़ीया मोर्चे लगाए गए। 11-12 दिसम्बर रात की बात है। स. दर्शन सिंह साथ छ: फौज़ी काफी दिनों से सोए नहीं थे। इन सब को नींद आ गई। महाराज जी ने उस जगह मोर्चे पर प्रगट हो कर स.

दर्शन सिंह और बाकी फौज़ियों को हाथ से हिलाकर जगाते हुए कहा,''सोना नहीं है, उठो।'' यह कौतुक देख कर सारे हैरान रह गए। कुछ समय बाद महाराज जी अलोप हो गए।

(स. दर्शन सिंह पुत्र श्री महिंगा सिंह, गाँव लांबड़ा, होशियारपुर)

साखी नंबर: 123

महाराज सरवण दास जी का संत गुरदित्त राम के साथ मिलाप

लगभग सन् 1961 ई. की बात है सरदार प्यारा सिंह और बीबी बेअन्त कौर एवं सारे परिवार ने मिल कर संत सरवण दास महाराज जी के आदेश अनुसार अपने घर गाँव लांबड़ा नज़दीक बुहलोवाल में सत्संग रखवाया। जिस में संत वरखा दास जी, संत राम लाल जी महिले वाले, संत ऊधमदास जी लांबड़ा, संत करतार सिंह जी वैद्य और श्री प्यारा सिंह का लड़का श्री गुरदेव सिंह पाठ करने की सेवा निभा रहे थे। सत्संग से एक दिन पहले संत सरवण दास महाराज जी खंडियाला में बस के द्वारा पहुँचे। वहां से महाराज जी को सरदार गुरदेव सिंह जी अपने घर ले कर गए। महाराज जी के लांबड़ा में पहुँचने पर बहुत संगते इकट्ठी हुई। महाराज जी ने सत्संग किया। रात का लंगर छकने के बाद महाराज जी ने श्री प्यारा सिंह को अपने पास बुला कर कहा कि,''कल प्रातःकाल हमें संत गुरदित्त राम को सैणपुर में मिलने के लिए जाना है।'' महाराज जी ने श्री प्यारा सिंह को कह कर अपने कमण्डल में बादाम डलवाए। दूसरे दिन प्रातःकाल सुबह चार बजे महाराज जी ने बीबी बेअन्त कौर को कह कर ताज़ा मक्खन डिब्बे में डलवाया और साथ ही बादामों को डिब्बे से निकलवा कर थरमस दूध की भर कर उस में डलवा ली। महाराज जी ने कुछ थाली और गिलास भी साथ ले लिये। महाराज जी सरदार प्यारा सिंह और कुछ ओर संगतों को साथ ले कर संत गुरदित्त राम जी की कुटिया सैणपुर कुंए पर मिलने के लिए लांबड़ा से चल पड़े। दूसरी ओर से संत गुरदित्त राम जी महाराज जी को मिलने के लिए लांबड़ा की ओर चल पड़े। संत गुरदित्त राम जी और संत सरवण दास महाराज जी का मिलाप सैणपुर और गाँव लांबड़ा की हद ऊपर हुआ। दोनों संतों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया। संत गुरदित्त राम जी ने महाराज सरवण दास जी को कहा,''महाराज जी, हम आप को लेने आए हैं।'' दोनों संत संगतों के साथ संत गुरदित्त राम जी की कुटिया पर पहुँचे। कुटिया पहुँचने पर संत सरवण दास महाराज जी ने महाराज

गुरदित्त राम जी को दूध और मक्खन छकने के लिए दिया और उन्होंने कहा ,''महाराज सरवण दास जी पहले आप छको।'' फिर सारी संगत को छकाया गया। इस तरह दोनों महापुरूष काफी समय तक सत्संग करते रहे। महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''एक बार हमने इन महापुरूषों को कहा कि कुंभ पर आप भी चलो, हमने भी जाना है।'' संत गुरदित्त राम जी ने कहा कि,''महाराज जी, बताओ कब पहुँचना है? आपने अपनी गाड़ी में जाना है, हमने अपनी गाड़ी में जाना है।'' महाराज सरवण दास जी ने कहा कि ,''महाराज, गुरदित्त राम जी पैदल ही मेरे से पहले हरिद्वार पहुँच गए। इस तरह दोनों महापुरूषों की ज्ञान चर्चा सुनकर संगतें निहाल हुई। महाराज सरवण दास जी संगत के साथ महाराज गुरदित्त राम जी से आज्ञा ले कर गाँव लांबड़ा पहुँचे, उस के बाद महाराज सरवण दास जी ने वहां सत्संग किया। उस के बाद महाराज जी संगतों को आर्शीवाद देकर डेरे में पहुँचे।

(श्री गुरदेव सिंह पुत्र स. प्यारा सिंह, गाँव लांबड़ा, 6,अगस्त 2003)

साखी नंबर: 124

तुम्हारे सभी बच्चे विद्या पढ़ेंगे और नौकरी करेंगे

श्री बालमुकन्द जी उनकी सुपत्नी बीबी कृष्णा देवी जी, गाँव कोहजा नज़दीक शाम चौरासी के रहने वाले थे। उन्होंने सन् 1963 ई. से महाराज सरवण दास जी के चरणों में आना शुरू किया और उन के चरणों के ही सेवक बन गए। सन् 1969 ई.की बात है कि श्री बालमुकन्द पटवारी जी के पिता जीवन यात्रा पूरी कर गए। श्री बालमुकन्द जी ने महाराज सरवण दास जी की आज्ञा के अनुसार अपने घर में सत्संग रखवाए। जिस के भोग 26,अगस्त को पाए गए। जिस में संत प्रेम दास नंगल बाहदा वाले पाठी थे। श्री किशन सिंह जी मस्ताना जी नाहलां वाले र्कीतनी थे। सत्संग वाले दिन सुबह संत हरी दास जी, संत गरीब दास जी और संत निरंजन दास जी प्रात:काल ही श्री बालमुकन्द जी के घर पहुँच गए। संत सरवण दास जी महाराज तकरीबन बारह बजे उनके घर में पहुँचे। महाराज सरवण दास जी ने संगतों को सत्संग श्रवण करवाया। इस के उपरान्त महाराज जी ने लंगर छका। श्री बालमुकन्द जी ने अपने बच्चे चार लड़के एक लड़की के साथ महाराज जी को नमस्कार किया और निवेदन किया,'' आप जी ने इन बच्चों पर कृपा करनी।'' महाराज सरवण दास जी ने कहा ,''आपके सभी बच्चे पढ़ेंगे और सरकारी नौकरी

करेंगे।'' संत सरवण दास महाराज जी के वचन अटल हुए उन के पाँचों ही बच्चों ने शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी प्राप्त की। इस तरह महाराज जी बालमुकन्द के परिवार पर कृपा की।

(स्वयं श्री बालमुकन्द पुत्र श्री दास राम, गाँव कोहजा, आजकल अबादपुर, जालन्धर, पंजाब, 23, दिसम्बर 2003)

साखी नंबरः 125

श्री नसीब राम की शंका दूर करनी

मास्टर नसीब राम पुत्र चन्दू राम, गाँव राजपुर नज़दीक भोगपुर के रहने वाले है। वह पूर्ण गुरू की तलाश में कई वर्षों से घुमते रहे। आखिर सन् 1955-1956ई. की बात है कि उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु ओर से उन की महिमा श्रवण की। कुछ दिनों के बाद वह कुटिया की ओर महाराज जी के दर्शन करने के लिए चल पड़े और मन में विचारते हैं कि अगर संत सरवण दास महाराज जी पूर्ण महात्मा है तो मेरे मन की बात जान लेंगे कि मैं पूर्ण गुरू की तलाश करता हुआ बहुत थक गया हूँ।

जिस समय वह कुटिया में पहुँचे उस समय संत सरवण दास महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर बिराजमान थे। श्री नसीब राम जी का महाराज जी के दर्शन करते ही तन आनन्दित हो गया। जब उन्होंने महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''बहुत जगह भटक कर तुम थक कर आए हो अभी भी अच्छा हो गया। तुम सही समय आ गए हो।'' महाराज जी के मुखारविंद से ऐसे वचन श्रवण करके श्री नसीब राम जी सारी शंका दूर हो गई और निवेदन किया,''मैं बहुत भटक कर आप जी के पास आया हूँ अब आप मेरे पर कृपा करके मुझे नाम-दान बख्शिश करो जी।'' इस तरह श्री नसीब राम जी महाराज जी के सेवक बन गए।

साखी नंबरः 126

आपकी इच्छा पूरी होगी

श्री नसीब राम जी और उनकी सुपत्नी बीबी रतन कौर महाराज जी की सेवा में आया करते थे उनकी एक लड़की थी। दोनों के मन में तीव्र इच्छा थी कि हमारे घर में एक पुत्र हो। पर नसीब राम के मन के विचार थे मेरे सत्गुरू जानी-जान है वह मेरे मन की इच्छा पूरी करेंगे। सन् 1969 ई. की बात है कि महाराज जी ने श्री नसीब राम जी को मकर सक्रांति(माघी) से एक दिन पहले

डेरे आने का हुक्म किया। महाराज जी के हुक्म अनुसार मकर सक्रांति से एक दिन पहले ही वह महाराज जी के पास आ गए।

रात को महाराज सरवण दास जी श्री नसीब राम को गाँव डेरे में ले गए। दूसरे दिन प्रात:काल जब महाराज जी वापिस कुटिया जाने लगे तो मास्टर नसीब राम ने मन में सोचा कि मेरी सुपत्नी गर्भवती है हमारे घर में पुत्र का जन्म हो। वह ऐसे सोच ही रहे थे कि महाराज जी ने कहा,''मास्टर जी आपकी इच्छा पूरी होगी आपके घर पुत्र जन्म लेगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। मास्टर जी के घर जुलाई के महीने लड़के ने जन्म लिया। जिस का नाम महाराज जी ने बलराज सिंह रखा।

साखी नंबर: 127
बारिश बहुत आ रही है

गर्मियों के दिन थे मास्टर नसीब राम जी और उनकी पत्नी डेरे में महाराज जी के दर्शन करने के लिए आए। महाराज जी ने सत्संग किया उस के बाद 12 बजे पंगत लगाई गई। सब संगतों ने लंगर छका। जब सब संगतें लंगर छकने के बाद महाराज जी के पास आ कर बैठ गई तो महाराज जी ने सब को हुक्म करते हुए कहा,''जल्दी से सब अपने-अपने घरों को चले जाओ, बारिश बहुत ज़ोर से आ रही है।'' सब संगतों ने देखा कि आसमान बिल्कुल साफ़ है कि कहीं भी बादल नहीं है। सब संगतें महाराज जी का हुक्म मान कर घरों को चली गईं। कुछ मिनटों के बाद पता नहीं कहां से बादल आ गया। बहुत तेज़ी से बारिश, लगभग दो घण्टे लगातार होती रही। यह कौतुक मास्टर जी ने अपनी आँखों से देखा।

साखी नंबर: 128
लंगर बेअन्त है

एक समय की बात है कि मास्टर नसीब राम जी कुटिया में महाराज जी के दर्शन करने के लिए आए पर महाराज जी ने उन को लंगर में सेवा करने का हुक्म दिया। मास्टर जी लंगर की सेवा करने लग पड़े। सब संगतों को 12 बजे लंगर छकाया गया। इस उपरान्त संगतें महाराज जी से आज्ञा लेकर अपने घरों को वापिस चली गईं। मास्टर जी और श्री साधू राम, गाँव लढ़ोई और कुछ और सेवादार महाराज जी के पास आ कर बैठ गए। कुछ समय बाद ही 20 के करीब गिनती में संगतें आई सब महाराज जी को नमस्कार करके महाराज के पास बैठ

गए। महाराज जी ने मास्टर जी के साथ कुछ सेवादारों को संगतों को लंगर छकाने के लिए हुक्म किया जब मास्टर जी ने लंगर वाले कमरे में जा कर देखा कि टोकरी में केवल पाँच प्रसादे ही हैं। सेवादार ने महाराज जी के पास आ कर निवेदन किया कि,''महाराज जी, टोकरी में केवल पाँच प्रसादे ही हैं आप हुक्म करो हम प्रसादे और बना लें।'' महाराज जी ने सेवादार को हुक्म किया कि ''टोकरी के ऊपर कपड़ा डाल कर हमारे पास आ जाओ।'' सेवादार महाराज जी का हुक्म मान कर टोकरी के ऊपर कपड़ा डाल कर वापिस महाराज जी के पास आया तो महाराज जी ने कहा कि,''टोकरी के ऊपर से कपड़ा नहीं उठाना। एक तरफ से थोड़ा-सा कपड़ा उठा कर टोकरी में से प्रसादे लेकर लंगर छकाओ। लंगर बेअन्त है।'' जब सेवादारों ने अंदर जा कर देखा तो टोकरी प्रसादों से भरी हुई थी। सब संगतों ने लंगर छक लिया पर टोकरी में अभी भी बहुत प्रसादे थे। यह सब कौतुक मास्टर नसीब राम जी के साथ सब सेवादारों ने अपनी आँखों से देखा।

साखी नंबरः 129

स. गुरदेव सिंह को ऑपरेशन से बचाना

सन् 1973 ई. की बात है, कि स. गुरदेव सिंह जी मिल्टरी में सर्विस करते थे। वह दिल्ली में मिल्टरी 977 ए.डी. रैजीमैंट वर्कशॉप में ऐजूकेशन मास्टर की नौकरी करते थे। सितम्बर के महीने उनके गुर्दे में अचानक बहुत दर्द हुई। वह दो महीने छुट्टी लेकर नवम्बर के महीने वापिस नौकरी पर पहुँचे। वह 20 दिन अस्पताल में दाखिल रहे। इस दौरान उनके एक्स-रे लिए गए, टैस्ट किए गए। उनको पत्थरी निकलने की बहुत दवाईयां दी गई, पर पत्थरी नहीं निकली। आखिर 24वें दिन ब्रिगेडियर सचदेवा निरीक्षण करते हुए उनके पास पहुँचे, वह कहने लगे,''इस को कितनी देर लटकाई रखना है, इस का ऑपरेशन कर दो।''

स. गुरदेव सिंह का ऑपरेशन करने के लिए नाम लिख लिया गया। कर्नल तीर्थ सिंह सरर्जिकल स्पैशलिस्ट ने स. गुरदेव सिंह का ऑपरेशन करना था। ऑपरेशन करने से एक दिन पहले शाम को अरदास करने के पश्चात् वह बैड पर आँखें बन्द कर लेट गए।

अचानक संत सरवण दास जी महाराज ने आवाज़ लगाई,''चिंता न कर, बलदेव हम आ गए हैं।'' श्री बलदेव सिंह ने मन में विचार किया कि महाराज वर्ष हो गया आप को चोला छोड़े, अब आपने क्या आना है।''

महाराज जी ने दूसरी बार फिर इस तरह आवाज़ लगाई,“चिंता न कर, बलदेव सिंह हम आ गए हैं।”(गुरदेव सिंह को महाराज जी प्रेम से बलदेव कहा करते थे।)

फिर स. गुरदेव सिंह को महाराज जी बैड के नज़दीक खड़े भगवी पगडी़, सफेद कुरता और धोती पहने नज़र आए।“बलदेव हम आ गए हैं।” जब स. बलदेव सिंह ने आँखे खोलकर देखा तो उसको कुछ भी नज़र नहीं आया।उ सनेम नह ीम र्न वचार्र कया,य हकै साक ैतुकह ै,म ेराक ल ऑपरेशन होना है।

इतने में स. गुरदेव सिंह के बहुत ज़ोर से दर्द हुई। वह बहुत मुश्किल से बाथरूम पहुँचे। उनको बहुत ज़ोर से पेशाब के साथ खून आया। उस को इस तरह महसूस हुआ जैसे कि पेशाब के साथ पत्थरी भी बाहर निकल गई हो। प्रात:काल चार बजे अस्सिटैंट आया। उस ने पेट की सफाई के लिए अनीमा लगाया। उस के बाद उसे एक्स-रे के लिए ले गए। यहां हवलदार ने एक्स-रे लिया। फिर ऑपरेशन थिएटर में ले गए। जब स. गुरदेव सिंह के डाक्टर ऑरेपशन करने के लिए टीका लगाने लगे तो स. गुरदेव सिंह ने कहा मेरे इंजैक्शन न लगाना जब तक कर्नल तीर्थ सिंह नहीं आता। उस के बाद लगाना। आया, साइन कर दिए गए। उस के बाद कर्नल तीर्थ सिंह आए, उन्होंने कल वाला और आज वाला दोनों एक्स-रे देखे। दोनों एक्स-रे में से आज वाले एक्स-रे में पत्थरी नज़र नहीं आ रही थी। फिर वह दोनों एक्स-रे लेकर सरर्जिकल एड़वाइज़र ब्रिगेडियर सचदेवा के पास गए और कहा कि,“कल वाले एक्स-रे में पत्थरी थी और आज सुबह वाले एक्स-रे में पत्थरी नहीं है, मैं किस चीज़ का ऑपरेशन करूँ। यह बिल्कुल ठीक है। कल इतनी बड़ी पत्थरी से रातों रात कहा गायब हो गई।” उस के बाद स. गुरदेव सिंह का एक और एक्स-रे करवाया गया जो कि उसका 14 वां एक्स-रे था। रेडियोलॉजी स्पैशलिस्ट चंन्द्र प्रकाश ने स्वयं एक्स-रे लिया और 14 एक्स-रे सक्रीन पर लगा कर देखे। पहले 12 एक्स-रे में पत्थरी नज़र आई पर 2 एक्स-रे जो ऑपरेशन वाले दिन लिए गए, उस में पत्थरी नज़र नहीं आई। लिख कर रिर्पोट स. गुरदेव सिंह को दी गई। जिस में लिखा था, stone has moved out, you can not be operated.

फिर स. गुरदेव सिंह ने रात वाला सारा कौतुक कर्नल तीर्थ सिंह को

बताया। उन्होंने कहा,''काका जब मैं तुम्हारे बैड के पास आता था, तुम्हारा ऑपरेशन करने को मेरा दिल नहीं करता था।''

उस के बाद स. गुरदेव सिंह दिल्ली से कुछ दिनों पश्चात् छुट्टी लेकर सीधा डेरे पहुँचे। जब उन्होंने नमस्कार की तो जानी-जान संत हरी दास जी ने कहा,''हमने कहा कहीं साईं लोग मारा ही न जाए, हमें तुम्हारी बहुत चिंता थी।'' स. गुरदेव सिंह ने निवेदन किया कि,''महाराज जी आपने चिंता की तो मैं ऑपरेशन से बच गया, आपने पत्थरी निकाल दी।''

(स्वयं स. गुरदेव सिंह, 08, जून2003)

साखी नंबर: 130

सत्गुरू जी द्वारा मास्टर रतन चन्द जी को नाम-दान की बख्शिश करनी

मास्टर रतन चन्द, गाँव बोदला नज़दीक टांडा के रहने वाले थे। उनका महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। एक समय उन्होंने सत्गुरू जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी दास को नाम-दान की बख्शिश करो।'' हज़ूर महाराज जी ने कहा कि,''हमने आप को नाम-दान की बख्शिश समय करनी है, जिस समय बहुत बारिश होगी। उस के बाद मास्टर रतन चन्द जी एक वर्ष लगातार डेरे आते रहे।''

सन् 1970 ई.गर्मियों की बात है कि जब मास्टर रतन चन्द सुबह डेरे में आए। महाराज जी को नमस्कार कर के सत्गुरू जी के पास बैठ गए। महाराज जी ने मास्टर रतन चन्द को कहा,''मास्टर जी आपने आज हमारे पास ही रहना है।'' जिस समय दोपहर के दो बजे तो हज़ूर महाराज जी ने मास्टर रतन चन्द को कहा कि,'' आप हमारे कमरे में चलो।'' आज तुम्हें नाम-दान की बख्शिश करनी है। मास्टर जी ने महाराज जी का हुक्म मान कर सत्गुरू जी के कमरे में चले गए और मन में विचार करते हैं कि महाराज जी कहते थे कि ,''जिस दिन आप को नाम-दान की बख्शिश करनी है, उस दिन बहुत बारिश होगी। पर आज तो बारिश होने का कोई अनुमान नहीं। आकाश बिल्कुल साफ़ है। कोई बादल नहीं।'' जिस समय मास्टर जी अंदर जा कर बैठ गए तो कुछ मिनटों में पता नहीं कहां से बादल आ गए और बारिश शुरू हो गई। मास्टर जी यह कौतुक देखा कर बहुत हैरान हुए। इस प्रकार महाराज जी के वचन अटल हुए और दो घण्टे बहुत तेज़ी से बारिश हुई।

(स्वयं मास्टर रतन चन्द पुत्र श्री नामा राम, गाँव बोदला, टांडा, 21,अगस्त 2003)

साखी नंबर: 131

स. गुरदीप सिंह और बीबी हरबंस कौर को पुत्र की दात बख्शिश करना

स. गुरदीप सिंह और उनकी पत्नी बीबी हरबंस कौर जो कि गाँव नूरपुर के रहने वाले थे, उनके घर तीन लड़कियां थी। उनके घर पुत्र की कमी थी। किसी ने उनको बताया कि आप संतों महात्माओं के पास जाओ। आपकी मनोकामना पूरी होगी पर उनके मन में विचार था, कि अगर हमारी किस्मत में लड़का हुआ तो हमें ज़रूर मिलेगा। एक दिन उन्होंने अपने गाँव के रहने वाले मिस्त्री गुरदयाल सिंह और बीबी मेहर कौर के पास से संत सरवण दास महाराज जी की प्रंशसा श्रवण की। फिर एक दिन स. गुरदयाल सिंह और बीबी मेहर कौर स. गुरदीप सिंह को साथ लेकर संत सरवण दास महाराज जी के पास आकर नमस्कार की। स. गुरदयाल सिंह जी ने महाराज जी आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी इनके घर तीन लड़कियां है। आप कृपा कर पुत्र की दात बख्शिश करो।'' महाराज सरवण दास जी ने वचन किए कि, ''आपके घर पुत्र पैदा होगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए, उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया।

साखी नंबर: 132

स. गुरदयाल सिंह को बचाना

स. गुरदयाल सिंह, गाँव नूरपुर के रहने वाले थे। वह महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। एक समय की बात है, कि स. गुरदयाल सिंह जालन्धर शहर में मकान का निर्माण कर रहे थे। जब वह मकान की तीसरी मंजिल की तैयारी कर रहे थे, तो अचानक पैड टूट गई। उस समय स. गुरदयाल सिंह जी ने महाराज सरवण दास जी को याद किया, जब वह तीसरी मंजिल से ज़मीन पर गिर गए। उनको इस तरह महसूस हुआ, कि जैसे संत सरवण दास महाराज जी ने उसको अपने हाथ पर उठाया हो। उनके केवल पीठ पर ही चोट लगी। उसी रात को ही महाराज सरवण दास जी ने स. गुरदयाल सिंह के सपने में प्रगट होकर कहा कि,''तुम बिल्कुल ठीक हो, कोई चिंता नहीं करनी।'' महाराज की कृपा से कुछ दिनों में ही स. गुरदयाल सिंह बिल्कुल ठीक हो गए।

(बीबी मेहर कौर पत्नी स. गुरदयाल सिंह, नूरपुर,जालन्धर)

साखी नंबरः 133

श्री राम लाल की शंका निवारण (दूर) करना

श्री पाला राम जी और उनकी सुपत्नी बीबी गाबी देवी, ब्यास गाँव वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। श्री पाला राम जी अक्सर महाराज जी के चरणों में रहकर सेवा किया करते थे। एक समय श्री पाला राम जी ने अपने सुपुत्र श्री राम लाल जी को महाराज जी के पास भेजा। उन दिनों में किशनगढ़ के पास यहां पैट्रोल पंप है, वहां बहुत कीकर होती थी। वहां से ब्यास गाँव से डेरे को कच्चा रास्ता आता था। श्री राम लाल जी जब अपने घर से प्रातःकाल चल कर डेरे महाराज जी को मिलने आ रहे थे। तब वह कीकर पास आए तो रास्ते में किसी ने जादू-टोना किया था। श्री राम लाल का पैर टोने के ऊपर रखा गया। महाराज सरवण दास जी हमेशा संगत को वहम-भरम, जादू-टोने और कर्म कांडो से मुक्त होकर परमात्मा का नाम जपने का उपदेश दिया करते थे। जब श्री राम लाल जी डेरे में पहुँचे। उस समय महाराज जी कुर्सी पर विराजमान थे। श्री राम लाल जी ने महाराज जी को नमस्कार की तो जानी-जान घट-घट की जानने वाले महाराज जी ने श्री राम लाल की शंका निवारण करते हुए कहा, ''राम लाल रास्ते में आते हुए तुम्हारा पैर टोने के ऊपर रख हो गया था, यह तुम्हारे मन का भरम है। टोने के ऊपर पैर रखने से कुछ नहीं होता। परमात्मा का सिमरन किया करो।'' महाराज जी के मुख से यह वचन सुनकर श्री राम लाल जी हैरान रह गए, कि महाराज जी को इस बात का कैसे पता चल गया। महाराज सरवण दास जी जानी जान है। जिन्होंने मेरे मन का भ्रम दूर कर दिया।

(स्वयं श्री राम लाल जी पुत्र श्री पाला राम, ब्यास गाँव, 23,अगस्त2003)

साखी नंबरः 134

श्री गुरदास राम सुच्ची पिंड गाँव वालों का पहली बार कुटिया पर आना

श्री गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज के अनेकों श्रद्धालुओं में से श्री गुरदास राम जी बॅधण, सुच्ची पिंड गाँव वाले महाराज जी के बहुत ज़्यादा श्रद्धालु थे। वह सन् 1962 ई. से लेकर आज तक हर रविवार हर सक्रांति तथा और वार्षिक समागमों में नतमस्तक होने के लिए आता थे। उन्होंने सत्गुरू

स्वामी सरवण दास महाराज जी की याद में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण अपनी मेहनत की कमाई में से करवाई है।

मुझे बचपन से ही संतों महापुरूषों की संगत करने का रूचि थी। हमारे गाँव में एक महात्मा संत कूकर दास जी, गाँव ढडे वाले आया करते थे। उस समय हमारा पुराना घर जो गाँव में था। संत कूकर दास जी वहां आया करते थे। मैं उन को भजन छकाया करता था और वह हमें संतों की साखियां सुनाया करते थे जो कि मुझे बहुत अच्छी लगती थी। फिर वह गुरू रविदास महाराज जी के जीवन से सम्बन्धित साखियां सुनाया करते थे। वह बताया करते थे कि किस तरह गुरू रविदास महाराज जी ने जाति-पाति के विरूद्ध आन्दोलन चलाया और राजा-महाराजाओं को अपने सेवक बनाया। किस तरह महाराज जी ने मीरा भाई, झाला भाई, राजा नागर मॅल और राजा पीपा आदि को अपने सेवक बनाया किस तरह महाराज जी ने उल्टी गंगा बहाई। चार युगों के जनेऊ निकालकर दिखाए। किस तरह गंगा पर पत्थरी तिराई और किस तरह गोरखनाथ का अहंकार तोड़ा एंव किस तरह महाराज जी सिकन्दर लोधी की जेल में से बाहर आए। उन को अपना सेवक बनाया।

इन कथा-कहानियों को सुन कर मेरा मन दुःख से भर जाता था और मैं अपने मन में सोचता कि उस समय हमारे लोग कैसे होंगे, जो महाराज गुरू रविदास जी के श्रद्धालु नहीं बने या उनके बताए हुए मार्ग पर नहीं चले। हे परमात्मा! सत्‌गुरू रविदास महाराज जी आज होते और हम उनके श्रद्धालु बनते तथा उनके मिशन को आगे बढ़ाते।

मेरी पत्नी बहुत बीमार रहती थी। एक मेरे रिश्तेदार श्री मंगत राम जो कि प्रीत नगर के रहने वाले थे और टांडा रोड पर काम करते थे उन्होंने मुझे कहा कि ,"गुरदास तुम पैसे क्यों खराब कर रहे हो। किसी दिन अपनी पत्नी को साथ लेकर मेरे साथ हमारे संतों की कुटिया में चलो। शायद वहां से ही उस को आराम आ जाए।" उन्होंनें मुझे बल्लां वाले संत श्री गुरू सरवण दास महाराज जी की महिमा सुनाई। उन की बातें सुन कर मेरे मन को ऐसे लगा कि जैसे मुझे मेरी मंजिल मिलने वाली हो। उन्होंने मेरे साथ सलाह की कि,"मैं लोहड़ी वाले दिन उनके साथ संतों की कुटिया को जाऊँगा।" संतों के दर्शन करने का मेरे मन को बहुत उत्साह था इसके दौरान मेरे पिता जी के मामा जी का पुत्र श्री लक्ष्मण दास जी सरमस्तपुर वाले हमारे घर आए। उन्होंने भी मेरी

पत्नी की हालत देख कर मुझे संतों के पास जाने की सलाह दी। उन्होंने मुझे कहा कि, ''तुम मंगते को साथ लेकर संतों को मिल और लड़की(बीबी बचनी) की बीमारी बारे उन को बताना।''

तो योजना अनुसार मैं साइकिल पर बाईपास से होता हुआ सरमस्तपुर पहुँचा और श्री लक्ष्मण दास ने मुझे संतों की कुटिया का रास्ता समझाया और मैं साइकिल पर संतों की कुटिया के दरवाज़े पर पहुँच गया। उस समय महाराज जी की कुटिया में एक-दो कमरे ही थे और आस-पास कांटों की बाड़ लगाई थी। तो मैं अपनी साइकिल खड़ी कर के महाराज जी के कमरे की तरफ़को आगे बढ़े। डेरे के अंदर महाराज जी की कुटिया आस-पास बहुत सारे आम के और अमरूद के पेड़ थे। उस समय महाराज जी पेड़ के नीचे चबूतरे पर विराजमान थे। मुझे देख कर(जैसे कि महाराज जी मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे) महाराज जी पेड़ के नीचे से उठ कर बाहर की तरफ को आ रहे थे, मैंने देखा कि नूरानी ज्योत सफेद कुरता, सफेद धोती और हल्की भगवी दस्तार और लाल नूरानी चहरे पर रंगदार चश्मा लगाया और एक हाथ में खूंडा(डंडा) पकड़ा मेरी तरफ आ रहे थे और मेरे पास आ कर रूक गए। जब सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के दर्शन किए और चरणों पर अपना सिर रखा मुझे इस तरह प्रतीत हुआ जैसे कि मुझे आज सत्गुरू रविदास महाराज जी मिल गए हो और मेरे से सत्गुरू जी के चहरे का नूर सहा नहीं था जा रहा। तो मैं सत्गुरू जी के साथ डेरे के अंदर गया। महाराज जी फिर पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठ गए और मुझे कहा कि,''तुम पहले अंदर जा कर लंगर छक कर आओ और फिर हमारे पास बैठना फिर हम आपकी बात सुनेंगे।'' उस समय कुटिया का आकार बहुत छोटा था।

''जैसा सत्गुरू सुनीदा, तैसा ही मैं डीठ।''

हजूर महाराज सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की महिमा तो मैंने अपनी दुकान पर आते संतों के श्रद्धालुओं से सुनी थी। पर आज दर्शन करके मैं धन्य हो गया था। जिस तरह महाराज जी के बारे में सुना था वैसा ही मैंने देखा।

तो लंगर छकने के बाद मैं महाराज जी के पास आ कर बैठ गया।

महाराज जी ने मुझे अपने पास बुलाया और मेरे आने का कारण पूछा। मैं महाराज जी को सारी व्यथा सुनाई। महाराज जी ने कहा,''तुम रविवार को

आना और वह लड़की अपनी पत्नी को साथ लेकर आना। हम लड़की को दवाई देंगे।''

फिर महाराज जी ने मुझे कहा ,''तुम क्या करते हो?''

''जी मैं साइकिल रिपेयर का काम करता हूँ।'' मैंने उत्तर दिया।

''तुम चिंता मत करना हम तुम्हारे सारे काम करेंगे।'' महाराज जी ने मुझे आर्शीवाद दिया। यह सुन कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे इस तरह महसूस हुआ कि मुझे तो आज सच में ही सत्गुरू रविदास महाराज जी मिल गए। पूरे सत्गुरू मिल गए है, जिन की मुझे बचपन से ही तलाश थी।

शाम को मैंने महाराज जी से आज्ञा मांगी कि,''महाराज जी मुझे इज़ाजत दे दो ताकि मैं घर को जाऊँ।'' चरणों पर शीश झुकाया और साइकिल चलाक रअ पनेघ ारस ुच्चीि पंडग ाँवप हुँचा ।घ ारप हुँचक रम ैंनेअ पनी पत्नी(बीबी बचनी) को बताया कि, ''आज मैं बल्लां वाले संतों के दर्शन करके आ रहा हूँ और उन्होंने मुझे कहा कि वह दवाई देंगे और तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी।'' महाराज जी की महिमा सुन कर मेरी पत्नी को बहुत खुशी हुई और अपने ठीक होने का हौंसला बन गया।

अब रविवार के दिन की मैं बहुत उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि मुझे अब पूर्ण गुरू मिल गए थे और उनके दर्शन करने का मुझे बहुत उत्साह रहता था।

इस तरह रविवार का दिन आया, मैं अपनी पत्नी और अपनी बेटी को साइकिल पर बिठा कर डेरे ले गया। समय बीतता गया। हम हर रविवार, हर सक्रांति, हर महीने के नवरात्रे और बैसाखी पर डेरे जाने लग पड़े और महाराज जी से सत्संग सुनते। सक्रांति पर महाराज जी के मुखारविंद से पवित्र महीने का नाम सुनते। महाराज जी जोकि हकीमत के बहुत माहिर थे और डेरे में ही ज़ड़ियों बूटियों से दवाईयां तैयार करवाते और रोगियों को देते थे। महाराज जी हमें दवाई दी। धीरे-धीरे मेरी पत्नी ठीक होनी शुरू हो गई।

(श्री गुरदास राम जी बॅधण, गाँव सुच्ची पिंड, जालन्धर)

साखी नंबर: 135

महाराज जी का चार वर्ष की बच्ची द्वारा कुरता खींचना और चार काके मांगना

एक बार की बात है कि हम डेरे को जा रहे थे। अभी छोटे पुल पर पहुँचे

थे कि महाराज जी नहर के किनारे पर खड़े थे तो इस लिए हमने साइकिल एक तरफ़ खड़ी कर महाराज जी को नमस्कार की। हमारे साथ मेरी बेटी सीता भी थी। जो समय चार वर्ष की ही थी उसने महाराज जी का कुरता पकड़ कर खींचना शुरू कर दिया और कहने लगी कि,''मैंने तो आज काका लेकर ही जाना है।'' महाराज जी मुस्कुराए और कहने लगे कि,''ठीक है देंगे।'' परन्तु सीता ने ज़िद न छोड़ी तो महाराज जी ने हाथ अपने हाथ खोल कर कहा,''बता, तुझे कितने काके चाहिए।'' तो सीता ने महाराज जी के हाथ की चार उंगलियां पकड़ कर कहा कि,''मुझे चार काके चाहिए।'' यह सुन कर सत्गुरू जी लाजवाब हो गए और दयाल हो कर कहा कि,''जा मुझे चार भाई मिलेंगे।''''तो सत्गुरू जी के वचनों के साथ आज मेरे चार सुपुत्र हैं यह सब महाराज जी की ही कृपा है। जिस को बड़े-बड़े डॉक्टर कहते थे कि इस औरत को बच्चा नहीं हो सकता। आज महाराज जी की कृपा के साथ पुत्रों पौत्रों के साथ खेल रही है।''

(श्री गुरदास राम जी बॅधण, गाँव सुच्ची पिंड, जालन्धर)

साखी नंबरः 136

डेरे के और श्रद्धालुओं के साथ मिलाप

डेरे आते-जाते मेरा मिलाप महाराज जी के अधिक श्रद्धालु श्री कृपा राम जी और उनकी पत्नी बीबी कर्मी जी के साथ हुआ जो कि महाराज जी के श्रद्धालु हैं जोकि बचपन से ही महाराज जी के डेरे आते थे उन्होंने तो महाराज जी के पिता जी बाबा पीपल दास जी के भी दर्शन किए है। इस से अलावा श्री सोहन सिंह संघवाल वाले, श्री बेली राम जी बल्लां वाले, श्री बिक्कर सिंह रायपुर वाले और अनेक श्रद्धालुओं के साथ मेरा मिलाप हुआ।

साखी नंबरः 137

श्री गुरदास राम को डेरे से घर भेजना

यह घटना सन् 1963 ई. की है कि मैंने महाराज जी को बताया कि मेरी पत्नी के बच्चे नहीं बचते तो महाराज जी ने दवाई दी और कहा कि,''इस के साथ सब ठीक हो जाएगा।'' उस समय संत गरीब दास महाराज जी दवाईयां तैयार करते थे और महाराज जी उन को दिशा निर्देश देते थे। छोटे महाराज जी संत हरी दास महाराज जी डेरे सत्संग किया करते थे।

मैं हर रविवार डेरे जाता था। एक बार मुझे महाराज जी कहने लगे कि

,''तुम जल्दी से घर चले जाओ।'' मैं महाराज जी से प्रसाद लेकर जल्दी घर को रवाना हो गया और घर पहुँचते ही मैं बहुत हैरान हुआ कि मेरे घर के आगे बहुत औरतें इकट्ठी हुई देख कर मैं बहुत चिंतित हुआ। उस दिन कार्तिक की सक्रांति थी। इस दिन मेरे घर मेरे पहले लड़के सुखदेव का जन्म हुआ। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि क्यों महाराज जी ने मुझे जल्दी घर भेज दिया था क्योंकि सत्गुरू सब जानी-जान थे। यह मेरा लड़का सातवां था इस कारण यह बहुत कमज़ोर था। दूसरे दिन मैं खुशी से प्रसाद लेकर महाराज जी के डेरे पहुँचा और महाराज जी को बताया कि,''काके का जन्म हुआ है, पर काका सातवां है।'' यह सुनकर महाराज जी चुप कर गए, तो मैंने महाराज जी को कहा कि,''महाराज जी, काके की जंतरी देखकर उसका नाम रखो।'' पर महाराज जी चुप रहे, यह देखकर मैं चिंतित हो गया कि पता नहीं काका बचेगा या नहीं, तो महाराज जी कहने लगे,''चिंता वाली कोई बात नहीं है, यह लड़का बहुत बड़ा आदमी बनेगा। इस का नाम हम फिर रखेंग।'' तो मुझे महाराज जी ने काके को पहनाने के लिए कपड़ा दिया। मैं वह लेकर घर पहुँचा। काका सातवां होने के कारण बहुत कमजोर था, इस लिए उसे लोई में ही लपेट कर रखते थे।

अब मेरी यह इच्छा थी, कि मैं काके के मुडण करवाऊँ और अपने घर सत्संग करवाऊँ और महाराज जी के चरण भी अपने घर डलवाऊँ। इसके लिए मैंने महाराज जी से निवेदन किया। महाराज जी ने कहा कि,''अगर तुम्हारी ऐसी ही श्रद्धा है, तो हम ज़रूर आएँगे।'' महाराज जी ने श्री बेली राम और भाई अमीं सिंह की ड्यूटी लगाई कि,''गाँव सुच्ची पिंड भाई गुरदास के घर सत्संग आरम्भ करो ताकि वह लड़की बचनी डेरे आना फिर शुरू करे। क्योंकि मेरे पत्नी के काका था। जिस कारण वह डेरे नहीं आती थी।''

इस तरह सतगुरू जी के वचन लेकर श्री बेली राम ने मेरे घर सत्संग किया। मेरे घर वाले और गाँव निवासी बहुत हैरान थे, कि ऐसी कौन सी हस्ती, किस की कृपा से मेरे घर में खुशियां थी? पहले तो सारे समझते थे, कि पता नहीं हम कौन से बाबा के पास जाते हैं। हमारे पर कई तरह के शक करते थे। अब वह सब हैरान थे यहां तक कि मेरी पत्नी के पास आने से भी डरते थे।

अब सत्संग वाला दिन आया मेरे मन में बहुत उत्साह था क्योंकि आज मेरे घर गुरू महाराज जी आने वाले थे।

(श्री गुरदास राम जी बॅधण, गाँव सुच्ची पिंड,जालन्धर)

साखी नंबर: 138

हजूर का मेरे घर में चरण डालना

सत्संग से एक दिन पहले मैं महाराज जी को लेने के लिए बड़ा ऑटो रिक्शा किराए पर लेकर डेरे पहुँचा। महाराज जी पहले ही मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने महाराज जी को नमस्कार किया और घर चलने के लिए निवेदन किया।

महाराज जी ने खुशी में झूमते संत चेतन दास जी को आवाज़ लगाई,''चेतन दासा, आ जाओ चले सुच्ची पिंड गाँव को, यह भाई हमें लेने आया है।''

महाराज जी के साथ संत चेतन दास, श्री सोहन सिंह संघवाल, श्री दर्शन सिंह संघवाल, बीबी करमी जी और महाराज जी के हजूरी रागी भाई जैमल सिंह, राउवाली वाले भी ऑटो रिक्शा में सवार होकर तकरीबन 8बजे मेरे गाँव पहुँच गए।

जैसे ही महाराज जी रिक्शा से उतरे तो महाराज जी के दर्शनों के लिए सुच्ची पिंड गाँव की संगत की बाढ़ आ गई, क्योंकि ऐसी ईलाही ज्योत पहले कभी भी हमारे गाँव में नहीं आई थी। महाराज जी का फूलों के हार डालकर स्वागत किया गया। गाँव के बाहर महाराज जी की सवारी के आगे-आगे कीर्तन कर रही संगत महाराज जी को मेरे घर तक ले आई। महाराज जी भी बहुत खुश आ रहे थे। पूरा दिन संगत का मेरे घर आना जाना लगा रहा, महाराज जी एक बड़े पलंग पर विराजमान थे और संगत को सत्संग सुना रहे थे।

शाम होते ही भाई जैमल सिंह जी राउवाली वालों ने कीर्तन किया। इस के उपरान्त महाराज जी ने और सारी संगत ने भोजन किया। रात को भी महाराज देर रात तक हमें कथा सुनाते रहे। मुझे तो मेरा घर आज बैकुंठ ही नज़र आ रहा था क्योंकि आज मेरे गुरूदेव मेरे घर आए हैं। महाराज जी ने कहा,''देखो भाई हम आज तक किसी के घर रात नहीं रूके,पर भाई गुरदास का प्रेम हमे यहां खींच कर ले आया है, इस के प्रेम ने ही हमें यहां बांधकर बैठाया हुआ है।'' आधी रात को महाराज जी ने अरदास की और संगत को आराम करने के लिए कहा। उसी रात काके सुखदेव और उनकी माता को बहुत तेज़ बुखार हो गया। मैंने चिंतित होकर महाराज जी को बताया कि ,''महाराज जी, काके और उसकी माता को बहुत तेज़ बुखार हो गया है।''

महाराज जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखकर प्यार दिया और कहा,''कोई बात नहीं है, यह दोनों सुबह तक ठीक हो जाएँगे। मेरे घर में सफाई देखकर महाराज जी बहुत खुश हुए और बीबी कर्मी को कहने लगे,''कर्मी देख लड़की ने घर में कितनी सफाई रखी हुई है''और मेरी पत्नी(बचनी)को कहने लगे, ''कुड़े(बेटी)गाँव वाले तुम्हें क्या कहते थे, कि पता नहीं किस बाबा के पास जाती है, आज इन सब को पता चल गया कि आप तो हमारे पास आते थे।'' महाराज जी खिल-खिलाकर हँस पड़े,''इन सब को पता चल गया कि आप तो हमारे पास आते थे।'' महाराज जी खिल-खिलाकर हँस पड़े और कहा,''यह तो हद हो गई।''

सत्संग वाले दिन महाराज जी प्रातःकाल चार बजे ही सैर को निकल पड़े। उनके साथ श्री सोहन सिंह, श्री दर्शन सिंह, श्री बेली राम और मैं भी सैर को बाहर, गाँव चौहकां वाली नहर को चल पड़े। जब महाराज जी सुबह की सैर से वापिस गाँव में दाखिल हो रहे थे, मैंने अपने मफलर से महाराज जी के जोड़े साफ किए जो कि धूल मिट्टी से भर गए थे और महाराज जी के चरणों की धूल माथे पर लगाई।

गाँव में दाखिल होते अब बहुत दिन निकल आया था। संगत महाराज जी को प्रणाम कर रही थी। यहां से भी महाराज गुजरते संगत उनको नमस्कार कर रही थी। रास्ते में महाराज जी को रोककर श्री बतना राम जी, श्री उदय राम के पिता जी ने महाराज जी को निवेदन किया कि,''महाराज जी उनके घर भी चरण डालें।'' महाराज जी उनके घर गए, अरदास की और प्रसाद का भोग लगाया और वापिस मेरे घर को चल पड़े। रास्ते में एक ओर गाँव के बुर्जुग श्री बारू राम जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरे घर भी चरण डालों क्योंकि मेरे घर बहुत देर से किसी चीज़ का वास है और उस के कारण गन्दे कपड़े और ईंटें-पत्थर गिरते रहते हैं।'' तो महाराज जी उनके घर में दाखिल होकर बाहर आ गए और कहा कि,''ले भाई आज के बाद यहां ऐसा कुछ नहीं होगा।'' तो महाराज जी के वचन अनुसार तब से आज तक वहां कोई ईंट-पत्थर आदि नहीं गिरा।

अब महाराज जी वापिस मेरे घर में पहुँच गए स्नान के बाद महाराज जी ने जल-पान किया। उधर भाई जैमल सिंह जी हाथ में तूम्बा और दूसरे हाथ में खड़ताले बजाकर बहुत ही मीठी आवाज़ में अमृत समय से कीतन कर रहे थे।

घर में जगह कम होने के कारण दीवान को मेरे नज़दीक जगह जिस को ड्योढ़ी का वेहढ़ा(आंगन)कहा जाता था में सजाया गया। ज्ञानी ठाकुर दास, गाँव बॅसी वालों ने गुरवाणी का रसभिन्ना कीतन किया और सबद पढ़ा-

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करै।।

गरीब निवाज गुसाईयां मेरा माथे छत्र धरै।। रहाऊ।।

उनके बाद ज्ञानी जैमल सिंह ने भूमीया सिंह की संगीतमयी साखी सुना कर संगतों को निहाल किया। उनके बाद श्री बेली राम जी ने सत्गुरू कबीर साहिब जी का सबद पढ़ा और महाराज जी ने उस की व्याख्या की।

गुर सेवा ते भगति कमाई।।

तब एह मानस देहि पाई।।

इस देहि को सिमरन देव।।

सो देहि भज हरि की सेव।।

भजहो गोबिंद भूलि मत जाहु।।

मानस जन्म जा ऐहि लाहु।। रहाऊ।।

महाराज जी ने कहा-'' भाईयों! यह मानस जन्म हम को भाग्य के साथ मिला है। पिछले जन्म में की भक्ति के कारण ही यह मानस जन्म हम को मिला है। तो इसी लिए हमें परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए क्योंकि इस मानस देह(योनी) को तो देवी-देवता भी चाहते हैं कि परमात्मा हम को मानस जन्म दें तो हम उस परमात्मा की भक्ति करके जन्म-मरण से रहित हो जाऐं और हमारी मुक्ति हो जाए। क्योंकि संत महात्मा जब अपने पाँच भौतिक शरीर को छोड़ कर बैकुंठ को जाते है तो देवी-देवता अपने माथे पर हाथ मार कर रोते है। देवी-देवता तो वर के दाता हैं मुक्ति के नहीं। मुक्ति तो केवल गुरू के पास ही होती है। हाए! हाए! हमने तो कौड़ियां ही खरीदी हैं परमात्मा हम को भी मानस जन्म दें तो हम भी उस की भक्ति करके जन्म-मरण से मुक्ति प्राप्त करें। सो हम को यह जन्म मिला है तो हम इस को विषय-विकारों, शराब-कबाब में पड़ कर नष्ट कर रहे हैं।'' फिर महाराज जी ने कहा-

सो सो रोग दरो गया।

महाराज जी ने कहा,'' भाईयों! इस संसार में सभी जीव दु:खी हैं, राजा -महाराजा, देवी-देवता, ऊँट, भेड़, बकरियां सभी दु:खी है। क्योंकि सभी विषय-विकार, चुगली, निन्दा में फंसे हैं। सब दु:खी हैं, सिर्फ संत महापुरूष

सुखी हैं जो परमात्मा का भजन करते हैं बाकी सारी दुनिया दु:खी है। दु:खी आते और दु:खी ही चले जाते हैं। जो परमात्मा का भजन-सिमरन करते हैं वह ही सुख प्राप्त करते हैं बाकी सारी दुनिया दु:खी है। महाराज जी ने जगद्गुरू रविदास जी की महिमा में यह सबद उचारा:-

आए काशी में तारा नागर मॅल जिस,

एकदम माया वाली फाँसी किन तोड़ी आ।

इस संसार में जितने भी संत महापुरूष आते हैं वह हमारे लिए आते हैं। उन्होंने हमारे लिए जाति-पाति के विरूद्ध आवाज़ उठाई। राजा-रानियों के साथ टक्कर ली और हमें जीने के लिए हक दिलवाए। हमें उनकी शिक्षाओं पर चलना चाहिए। उनके बताए हुए मार्ग पर चलते हुए हमें अपने बच्चों को पढ़ाना चाहिए तांकि हमारी कौम जो सदियों से पिछड़ी हुई है ऊपर उठ सके।

सत्गुरू रविदास महाराज जी से बिना चार युगों में ओर किसी ने भी हमारे बारे में नहीं सोचा। बल्कि हमें और दबाया गया। हज़ारों संत-महापुरूषों, ऋषि-मुनि और देवी-देवता हुए पर हमारे ऊपर किसी ने दया नहीं की। हमारे पास से जीने का हक छीना। आज हम गुरू रविदास महाराज जी की मेहर से जागृत हुए हैं। हमारे गुरू रविदास महाराज जी हैं।

गुरू जी के मिशन को आज बाबा साहिब डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने अमली जामा पहनाया और हमें जीने का हक दिया। तो भाईयों आओ हम गुरू रविदास महाराज जी के सपने को साकार करें और बेगमपुरा शहर वासी बनें।

जपो जी सतनाम सतनाम।।

एक बार यह हमें जन्म मिला है फिर दोबारा नहीं मिलना। तो हमें परमात्मा की भक्ति करके जन्म को सुधारना चाहिए।

यह नाम तुम्हारे अन्दर है। पूरे गुरू को मिल कर इस की पहचान करो।

दुनिया में सब दु:खी है। ऊँट, घोड़े, बकरियां और शेर आदि सब दु:खी हैं। जिन्होंने परमात्मा का नाम जपा है वह ही खुशियां ले गए हैं। इसी लिए हमें उस परमात्मा की भक्ति करके इस मानस(मनुष्य)जन्म का लालच लेना चाहिए।

सत्गुरू कबीर साहिब जी हमें चेतावनी देते हुए कहते है कि,''हे भाई, उस गोबिन्द को ढूंढ़ो, फिर-फिर करते तो सारी उम्र बीत जाती है। इसी लिए अब से ही परमात्मा की भक्ति करो क्योंकि वृद्ध अवस्था में मुहँ में से शब्द

कोई उचारो और निकल कोई और शब्द जाता है। तो भाईयों उस प्रभु की भक्ति करो। इस शब्द के बाद महाराज जी ने गुरू रविदास महाराज जी के शब्द-

पढ़िए गुनिए नाम सब सुनीए अनुभऊ भऊ न दरसै।।

की व्याख्या करते हुए संगतों से कहा कि,''भाईयों, गुरू जी कहते हैं कि पढो़ लिखो और अपने बच्चों को भी पढ़ाओ। क्योंकि लोहा तब तक सोना नहीं बन सकता जब तक उस को पारस नहीं छू लेता। तो भाईयों पूरे गुरू की तलाश करके अपने अन्दर नाम की तलाश करो जो तुम्हारे अन्दर है। जंगलों, तीर्थों और देवी-देवताओं के पास कुछ नहीं है। जो कुछ है वह तुम्हारे अन्दर है।''

महाराज जी के मुखारविंद से यह शब्द सुन कर संगतें धन्य-धन्य कर उठीं। महाराज जी ने अरदास की कि,''यह लड़का बहुत विद्या वाला हो। भाग्यशाली हो और लम्बी उम्र वाला हो तथा अपने माता-पिता को सुख देने वाला हो।''

मैंने महाराज जी से निवेदन किया कि,''महाराज जी आप अपनी पवित्र रसना में से काके का नाम भी रखो।'' सत्गुरू जी बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंने मेरे से पकड़ कर काके अपनी गोद में बैठाया और उसको फूल पकड़ाया और आर्शीवाद देते हुए काके का नाम सुखदेव रखा और कहा कि,''सुखदेव बहुत ही सुख देने वाला होगा। बहुत ही आज्ञाकारी एंव धार्मिक सोच का होगा।''

इस सौभाग्य मौके पर मैंने सत्गुरू जी की इस इतिहासिक फेरी को हर इतिहासिक और यादगार बनाने के लिए फोटोग्राफर को बुलाया था जिस ने महाराज जी के साथ काके सुखदेव तथा और संगतों की तस्वीरों को अपने कैमरे में बन्द किया जो आज भी मेरे पास सुरक्षित है और एक कमरे में सुशोभित है। जब भी मेरा मन करता है तो मैं महाराज जी के दर्शन करके उस समय को याद करता हूँ।

दोपहर का लंगर छकने के बाद गुरू जी ने संगतों को इजाज़त दी कि वह अपने-अपने घर को जाए। शाम को बहुत खुशी भरे मूड में डेरे को रवाना हो गए।

इस तरह समय बीतता गया मैं और मेरी पत्नी ने बच्चों को साथ लेकर हर रविवार और हर सक्रांति को कुटिया जाते थे। ज्यों समय बीतता गया

विश्वास महाराज जी में इतना बढ़ता गया कि जो भी काम करना सबसे पहले महाराज जी से हुक्म लेते और फिर वह काम करते। महाराज जी ने मुझे नाम-दान की दात भी बख्शिश की। उस समय महाराज जी बहुत जल्दी नाम-दान नहीं देते थे। पहले कई वर्ष व्यक्ति को परखते तो भी कई वर्षों बाद उस को नाम-दान देते।

सन् 1965 ई. के दौरान महाराज जी की ओर से बनारस, में श्री गुरू रविदास महाराज जी के जन्म स्थान, सीर गोवरधनपुरमें यहां महाराज जी ने अवतार धारा था उस महान् स्थान की खोज करके संत हरी दास महाराज जी की ओर से आषाढ़ की सक्रांति सन् 1965 ई. को नींव पत्थर रखवा कर एक बहुत बड़े मन्दिर का निर्माण करवा रहे थे और उस का काम अभी भी चल रहा था। मुझे भी महाराज जी ने कहा,''भाई, तुम भी बनारस जा आओ।'' तो महाराज जी के हुक्म अनुसार मैं सन् 1967 ई. में पहली बार बनारस गया।

मन्दिर के निर्माण का सारा खर्च महाराज जी की ओर से ही करवाया जा रहा था। संत हरी दास महाराज जी और संत गरीब दास महाराज जी की देख-रेख में संगतें बहुत उत्साह के साथ सेवा कर रही थी। उस समय बनारस में बहुत छूआ-छात था। पर पंजाब की संगतों के साथ बनारस में बहुत कम छूआ-छात हो रही थी क्योंकि पंजाबी वहां जा कर अछूत नहीं लगते थे। बहुत सुन्दर थे। वहां के गवाले राजपूत संगतों के साथ बहुत घुल-मिल कर रहते थे और अपने कुँओं पर नहाने देते थे। जब कि बनारस के हमारी बिरादरी के भाईयों के साथ वह बहुत छूआ-छूत करते थे।

मेरे मन में तो बचपन से ही एक इच्छा थी कि मैं अपने घर में एक धार्मिक जगह का निर्माण करूँ। सत्गुरू जी के मिलने के साथ इरादा और भी पक्का हो गया कि मैं अपने सत्गुरू जी की यादगार अपने घर में बनाऊँगा।

तो एक बार मैं महाराज स्वामी सरवण दास जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी मैं घर में आपकी याद में एक मन्दिर बनाना चाहता हूँ।'' तो सत्गुरू जी ने कहा कि,''तुम ने मन्दिर क्या करना है?'' तो मैंने जवाब दिया कि,''महाराज जी मैंने आपके नाम पर एक यादगार बनानी है, ताकि मैं कह सकूं कि मेरे सत्गुरू जी मेरे घर आए थे और मैंने उनकी याद में यह मन्दिर बनवाया है।''

यह सुन कर महाराज जी मुस्कुराए और चुप कर गए। सन् 1968ई. में

मेरे दूसरे लड़के के जन्म के समय मेरे घर गुरू महाराज जी ने दूसरी बार चरण डालें। मेरे घर में जगह बहुत कम थी। महाराज जी ने कहा,''गुरदास, घर में बहुत थोड़ी जगह है।''

मैंने कहा,''महाराज जी, अगर आपकी कृपा हुई तो मैं और जगह ले लूंगा।'' महाराज जी ने आर्शीवाद दिया और कहा,''हमने तुम्हारे बहुत काम करने हैं। क्योंकि तुम बहुत भरोसे वाले हो या तुझे यह वचन है कि जिस काम को हाथ डालेगा वह सफल होगा।''

साखी नंबर:139

महाराज जी दिलों की जानते थे

श्री कृपा राम जी, रसूलपुर वाले महाराज जी के बहुत श्रद्धालु थे। उन्होंने मुझे बताया कि एक बार मैं और मेरे रिश्तेदार शहर से गाँव की ओर आ रहे थे। जब हम सरमस्तपुर के पास आए, मैंने अपने रिश्तेदारों को कहा कि,''आप गाँव को चलो। मैं डेरे से महाराज जी के दर्शन करके आता हूँ।'' उन्होंने मुझे कहा कि,''हम भी तुम्हारे साथ डेरे चलते हैं और महाराज जी के दर्शन कर लेंगे। हमने सुना है, कि संतों के डेरे जलेबियां मिलती हैं।''और वह मेरे साथ चल पड़े। रास्ते में मैं सोचने लगा कि डेरे कौन-सी हर रोज़ जलेबियां बनती है। वह तो किसी बड़े समागम पर ही बनाई जाती हैं।

आज अगर इनको जलेबियां नहीं मिली तो बहुत बेइज्जती हो जाएगी। महाराज जी मेरी लाज रख लें। यह सोचते-सोचते हम डेरे पहुँच गए। महाराज सरवण दास जी अपने आसन पर विराजमान थे। हम तीनों ने नमस्कार किया और बैठ गए।अब महाराज जी तो सब जानी-जान थे। मुझे कहने लगे,''किरपो की तरफ इशारा कर डोली में जलेबियां पड़ी हैं, इनको ला दे खाने के लिए।'' बहुत उत्साह के साथ मैंने सत्य वचन कहकर डोली में पड़ी जलेबियां कटोरियों में डालकर उन दोनों को खाने के लिए दी। मैं मन ही मन में सोचने लगा, महाराज जी अंर्तयामी हैं। आज उन्होंने मेरी लाज रख ली।

मैंने फिर दोबारा महाराज जी के चरणों में नमस्कार किया। महाराज जी मुस्कुराए और कहा,''कृपा राम, इन को भी साथ ले जाओ और चाय पानी पिलाओ।''

इस तरह महाराज जी अपने सेवकों के मन की हर बात जान लेते थे।

(श्री गुरदास राम जी बॅधण, गाँव सुच्ची पिंड, जालन्धर)

साखी नंबरः 140

अलोप हो जाना

एक बार की बात है, कि रविवार का दिन था। शाम के समय मैं डेरे में ही था। मैं और कृपा राम डेरे के बाहर मोखिया वाली नहर को सैर करने के लिए निकल गए। रास्ते में बातें करने लग गए कि ,''कहते हैं कि सत्गुरू रविदास महाराज जी और सत्गुरू कबीर जी महाराज जब ब्रह्मलीन हुए तो उनका शरीर नहीं मिला था, बल्कि उनकी जगह एक चादर और कुछ फूल ही मिले थे और सेवकों ने आधी चादर का संस्कार कर दिया था और मुसलमानों ने आधी चादर को दफना दिया था। यह कैसे हो सकता है, कि सत्गुरू कबीर जी अलोप हो गए।''

यह बातें करते हुए हम डेरे वापिस आ गए। बाहर हाथ मुँह धोकर हम महाराज जी के पास आकर बैठ गए। उस समय महाराज जी पलंग पर समाधि लगाकर बैठे थे।

अब पूरा सत्गुरू वही है, जो अपने सेवकों के मन में शंका न रहने दे और भी संगत बैठी थी। सो हम भी संगत में बैठ गए। कुछ समय हुआ तो महाराज जी अपने पलंग पर आराम करने के लिए लेट गए और ऊपर एक पतली चादर ले ली। दस मिनट हुए तो हमने देखा कि महाराज जी पलंग पर नहीं थे, सिर्फ चादर ही बिछी हुई थी, मैं और कृपा राम एक दूसरे का मुँह देखने लगे। डेरे के इधर-उधर महाराज जी को कमरे में देखने लगे कि कहीं महाराज जी उधर तो नहीं गए और मैंने कृपा राम को कहा,''यह तो महाराज जी ने हमारे साथ कौतुक किया है, जिस तरह सत्गुरू रविदास जी महाराज और कबीर जी ने किया था। महाराज जी हमें छोड़ कर चले गए हैं, अब हम क्या करें?'' कृपा राम की आँखों में आँसू भर कर कहा,''सत्य में महाराज जी हमें छोड़ कर चले गए हैं।''

अभी हम यह बातें ही कर रहे थे कि हमने देखा कि महाराज जी के पलंग पर वह चादर जो महाराज जी ने ऊपर ली थी। वह अब ऊपर को उठ रही है और महाराज जी फिर उसी तरह प्रगट हो गए। महाराज जी उठ कर बैठ गए। अभी हम महाराज जी को पूछने लगे थे कि,''वह कहां गए थे।'' तो महाराज जी ने कहा कि,''आप जाओ और सेवा करो पर यह बात किसी को न बताना।''

सो हम दोनों समझ गए कि सत्गुरू अंर्तयामी हैं और महाराज जी ने हमारे मन की शंका दूर करने के लिए यह कौतुक दिखाया है। सो धन्य-धन्य सत्गुरू जी जो अपने सेवकों के मन में कोई शंका नहीं रहने देते। इस कौतुक की बात मैं आज ही कर रहा हूँ।

एक बार की बात है कि हजूर महाराज जी का एक सेवक जो कि बहुत श्रद्धावान था। एक बार वह पहाड़ों में किसी काम पर गया। महीने बाद वह डेरे आया तो वह हमें यह बात सुनाने लगे कि,''मुझे जंगल में एक साधु मिले थे, जिन्होंने धूनी लगाई हुई थी, जो कोई भी उनको वस्तु भेंट करता तो वह हर वस्तु आग में फैंक रहे थे। उनके पास एक शेर भी बैठा था, भाई वह तो बहुत करनी वाले संत थे, अपने संतो से भी ज़्यादा।''

यह बातें करते-करते वह डेरे में महाराज जी को नमस्कार करने आया। महाराज जी अंर्तयामी थे। उन्होंने उस सेवक के मन की शंका दूर करनी थी। यह सेवक डेरे में आया तो महाराज जी के चरणों में नमस्कार किया तो देखता है कि महाराज जी के पास दो शेर बैठे हैं, एक दायें तरफ,एक बायें तरफ यह कौतुक देखकर वह महाराज जी के चरणों में गिर गया और रोने लगा और कहा,''महाराज जी मुझे क्षमा कर दो, आपसे बड़ा कोई नहीं, आप तो अंर्तयामी हैं, मैं भूल गया था।'' महाराज जी खिलखिला कर हंस पड़े और कहने लगे,''क्यों भाई वहां जंगल में संतों के पास शेर बैठा था।'' हाथ पर हाथ मार कर कहने लगे,''हद हो गई।'' ऐसे थे सत्गुरू जी जो अपने सेवकों के मन की बात पहले जान लेते थे।

साखी नंबर : 141

पढ़ाई और सफ़ाई पर पहल

समय बीतता गया, मैं अपने बच्चों समेत कुटिया को हर रविवार, हर सक्रांति को जाता। शाम को हम जब महाराज जी से आज्ञा मांगी कि,''महाराज जी हमें छुट्टी दो ताकि हम घर को जाए।'' तो महाराज जी ने कहा,''अभी थोड़ा ठहरो।'' फिर महाराज जी ने अपने कमरे में जाना और अपनी अलमारी से कोई फल या कोई मिठाई लाकर बच्चों को प्रसाद देना और कहना कि अब आप जाओ।''

महाराज जी ने हमेशा संगत से कहना कि बच्चों को पढ़ाओ लिखाओ। खासतौर पर महाराज जी लड़कियों की पढ़ाई पर बहुत ज़ोर देते थे और कहते

थे कि,''अगर हमारी लड़कियां पढ़ी लिखी होंगी तो हमारी अगली पीढ़ी भी पढ़ी लिखी होगी।''

महाराज जी हर समय परमात्मा से यह अरदास करते थे कि,''मेरी पढ़ी-लिखी कौम हो। मेरी कौम के लोग बड़े-बड़े अफ्सर लगे और इनका जीवन स्तर ऊँचा हो।''

महाराज जी लंगर तैयार होने के समय आप लंगर की भट्ठिओं पर आ जाते थे और देखते थे कि लंगर साफ तैयार हो रहा है। हर लंगर बरताने वाला सेवादार अपने मुँह पर कपड़ा बांध कर लंगर बनाए और बरताए।

महाराज जी अक्सर वचन किया करते थे कि संत महात्मा के पास सादे बन कर आते हैं। किसी की इतनी हिम्मत नहीं होती थी कि वह महाराज जी के चेहरे को देख सके, उनके चेहरे का नूर ही ऐसा था, कि वह तो नूरानी ज्योत थे।

साखी नंबरः 142

मेरा वैद्य गुरू गोबिन्दा

''मेरी पत्नी की आयु बढ़ानी''

यह बात सन् 1972 ई. की है कि मेरी पत्नी (बीबी गुरबचन कौर) को छठे महीने गर्भ था इस के दौरान उनको बहुत तकलीफ हो गई। सो मैं गुरू महाराज जी के डेरे गया तो महाराज जी को कहा कि,''मेरी पत्नी की तबीयत बहुत खराब हो गई है।'' महाराज जी ने कहा कि,''तुम उस को शहर डॉक्टर के पास दिखाओ।'' सो महाराज जी का हुक्म ले कर अपनी पत्नी को लेडीज़ डॉक्टर के पास ले कर गया। उस ने मेरी पत्नी की हालत देखी तो कहा कि, ''इन की हालत बहुत खराब है। इस समय बच्चे और उसकी माँ को जान का खतरा है। इस लिए आप इस को सरकारी अस्पताल में ले जाओ।''

मैं उसी समय फिर महाराज जी के पास गया तो सारी बात बताई। सत्गुरू जी ने कहा कि,''तुम यहां क्यों आए जल्दी से लड़की को अस्पताल ले कर जाओ।'' महाराज जी का हुक्म ले कर मैं अपनी पत्नी को सरकारी अस्पताल जालन्धर में ले गया। डॉक्टर ने उस को चैकअप किया और कहा कि,''इन दोनों का बचना बहुत मुश्किल है, फिर भी हम कोशिश कर लेते हैं। मेरी पत्नी तकरीबन पन्द्रह दिन अस्पताल में रही। आखिर डॉक्टरों ने जवाब दे दिया और कहा कि,'' इन को घर ले जाओ और बस सेवा करो। क्योंकि

बच्चे की पैदाईश हो रही थी और वह मरा हुआ था।'' उधर क्या कौतुक हुआ। महाराज जी के सेवक श्री सोहन लाल, संघवाल वाले की पत्नी और कुछ और बीबियों ने मेरी पत्नी की अस्पताल में देख कर आ रही थी तो उन्होंने सोचा कि ,''चलो, डेरे से हो चलते हैं।'' सो वह डेरे आई तो उन्होंने महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी सब कुछ जानी-जान था। उन्होंने उन बीबियों से पूछा कि,''बेटी आप इस समय कहां से आई हो।'' तो उन बीबियों ने उत्तर दिया कि,''महाराज जी हम सरकारी अस्पताल जालन्धर गई थीं, गाँव सुच्ची पिंड, वाली बचनी को देखने गए थी।'''' बेटी अब उस लड़की का क्या हाल है?'' महाराज जी ने पूछा।

''महाराज जी उस की हालत तो बहुत खराब है। उस के मरा हुआ काका जन्मा है। डॉक्टर ने तो उस को जवाब दे किया है कि अब वह भी नहीं बचेगी और इसी लिए डॉक्टर ने कहा है कल उस को घर ले जाओ उन की समझ से बाहर थी।''

उन बीबियों ने महाराज जी को बताया। महाराज जी कहने लगे,''और वह लड़की क्या कह रही थी।''

''बस महाराज जी वह कहती थी कि,''महाराज जी मुझे बचा लेंगे या नहीं?''

यह सुन कर महाराज जी बहुत चिंतित हुए अपने पलंग पर समाधि लगाकर बैठ गए काफी समय महाराज जी समाधि लगाकर बैठे रहे। फिर महाराज जी की समाधि खुली तो महाराज जी खिल-खिलाकर हँस पड़े और वचन किया।

''बेटी उस को जा कर कह दो कि हमने अकाल पुरूष से उस की उम्र मांग ली है। उस के तो छोटे-छोटे बच्चे है। जाओ उस को अब कुछ नहीं होगा।''

महाराज जी के वचन सुन कर बीबियां हैरान हो गई और सोचने लगी कि वह तो बस मरने वाली ही है और महाराज जी उस के जीने की बातें कर रहे है।

सो महाराज जी सारी रात बहुत चिंतित रहे और सारी रात घोर तपस्या करते अरदास करते रहे कि उस लड़की की जान बच जाए क्योंकि उस के छोटे-छोटे बच्चे हैं।

साखी नंबरः 143

हजूर का अस्पताल आना

दूसरे दिन महाराज जी बीबी करमी रसूलपुर और कुछ सेवकों को साथ लेकर सिविल अस्पताल जालन्धर पहुँचे। महाराज जनरल वार्ड में पहुँचे। मेरी पत्नी का बैड दूसरी मंजिल पर था, सो महाराज दूसरी मंजिल पर गए और मरीजों को अपने हाथ से फल बांटते हुए महाराज मेरी पत्नी के बैड के पास पहुँच कर रूक गए। मैं भी वहां था। हम दोनों महाराज जी के दर्शन कर हैरान रह गए। सारे अस्पताल के मरीज़ महाराज जी के दर्शन कर बहुत हैरान हुए। डॉक्टर ने महाराज जी के साथ उनका नेतृत्व किया।

आखिर में महाराज सरवण दास जी मेरी पत्नी के बैड के पास रूक गए। मेरी पत्नी ने महाराज जी को नमस्कार करना चाहा। तो महाराज जी ने रोकते हुए वचन किए,''न कुड़े तुम अभी बहुत कमज़ोर हो, आप बैठे रहो।'' मैंने महाराज जी को नमस्कार किया।

महाराज जी ने अपने गले में से हार उतार कर मेरी पत्नी के गले में डाल दिया, फिर दूसरा हार उतार कर मेरे गले में डाल दिया और कहा,''ले कुड़े, तुम ने अब चिंता नहीं करनी, हम तुम्हारे सभी दुःख लेकर जा रहे हैं, तुम ने एक पुत्र को नहीं रोना, तुम्हारे और दो पुत्र होंगे।''

''महाराज जी अब क्या चिंता करना, आप स्वयं भगवान मेरे गरीब की ख़बर लेने आए हो।'' मेरी पत्नी ने उत्तर दिया और निवेदन किया कि,''महाराज जी बड़ा पुत्र आपके चरणों में अर्पण करूँगी।''

उस समय मैंने संकल्प किया, कि बड़ा पुत्र महाराज जी को दे देना है। अस्पताल में सब डॉक्टर और सब मरीज हैरान थे, कि यह कौन सी ज्योत है, जिस का इतना तेज़ प्रकाश है, इतने बुर्जुग होते हुए भी उनका इतना नूर है, इतना भखता चेहरा है। महाराज जी हमें आर्शीवाद देकर स्वयं डेरे की ओर रवाना हो गए। शाम को हम भी डॉक्टर के कहने पर गाँव सुच्ची पिंड आ गए। महाराज जी की कृपा से मेरी पत्नी की तबीयत धीरे-धीरे ठीक होनी शुरू हो गई। हमने सोचा कि कुछ दिनों तक हम महाराज जी के दर्शन को बहुत उत्साह से जाएंगे। महाराज जी के अटल वचनों के अनुसार मेरे घर एक लड़के ने जन्म लिया। कुछ वर्षों बाद दूसरे ने जन्म लिया। जिस का नाम सुरेन्द्र दास रखा गया। जब सुरेन्द्र दास 5 वर्ष के थे, गाँव सुच्ची पिंड में संत सम्मेलन हुआ और

सुरेन्द्र दास को भगवा भेष पहना के डेरे में ले आए।

(श्री गुरदास राम बॅधण, गाँव सुच्ची पिंड, जालन्धर)

साखी नंबरः 144

ज्योति-ज्योत समाने सम्बन्धित चमत्कार

11जून 1972 ई. की बात है। मैं अपने घर में चूल्हे के आगे बैठकर चाय पी रहा था, कि चूल्हे के अंदर एक जबरदस्त धमाका हुआ। मैंने चाय वहां ही रख दी और अपनी धर्म पत्नी को कहा,''मैं डेरे जा रहा हूँ, महाराज जी हमें छोड़ कर चले गए हैं।'' उसने कहा,''आपको कैसे पता चला है?'' तो मैंने कहा,''मुझे पता चल गया।'' मैं जल्दी से डेरे पहुँचा तो मेरे मन की शंका ठीक निकली। संगत का रो-रो कर बुरा हाल हुआ था। महाराज जी की पवित्र देह को शरीर जो कि फूलों से ढक कर रखा गया था। देश-विदेश से संगत एकत्रित होने लगी। संगत आती-जाती रही और महाराज जी के दर्शन करती। सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के पाँच भौतिक शरीर में से खून की धारा निकली, जिसके कुछ छींटे गुरदास राम जी के ऊपर पड़े। 11जून 1972 ई. को महाराज जी की पवित्र देह को ठूठी, शवरे और देसी घी, चन्दन की लकड़ी और सामग्री से संस्कार किया गया।

हजूर महाराज हरि दास जी को महाराज सरवण दास जी की गद्दी नशीन निवाज़ा गया। महाराज हरिदास जी और महाराज गरीब दास जी बनारस में महाराज जी के हुक्म अनुसार मन्दिर का निर्माण करवा रहे थे। उनके सिर पर अब डेरे की ज़िम्मेदारी भी आ गई। संत हरिदास जी ने यहां महाराज जी का कमरा था, महाराज जी की स्मृति में एक बहुत विशाल मन्दिर का निर्माण शुरू करवाया। संगत के सहयोग से एक विशाल मन्दिर एक वर्ष में बनकर तैयार हो गया। महाराज जी की पहली बरसी 11जून, 1973 ई. को इस मन्दिर का उद्घाटन किया गया।

इधर मेरे मन के संकल्प अनुसार जो कि मेरे मन में बचपन से ही थी कि मैंने महाराज जी की यादगार अपने घर में बनानी है को और मज़बूती मिली कि जिस तरह उनके श्रद्धालुओं ने उनकी याद में मन्दिर बनवाए। मैंने भी उनकी याद में अपने घर में और अपने खर्चे पर उनकी यादगार(मन्दिर)ज़रूर बनाना है।

अब दोबारा मैंने महाराज हरि दास जी के समय की बात करता हूँ। एक

बार मैंने हरि दास महाराज जी से निवेदन किया कि,''महाराज इस तरह मैंने महाराज सरवण दास जी की याद(स्मृति)में अपने घर में उनकी यादगार मन्दिर बनाना चाहता हूँ।'' महाराज जी ने कहा,''देख भाई गुरदास ये काम बहुत मुश्किल है।'' महाराज जी की कृपा से मेरा काम बहुत अच्छा था, घर का खर्च कर मैं कुछ रूपए बचा लेता था क्योंकि मेरे अन्दर तो एक ही धुन सवार थी, कि मैंने अपने सत्गुरू की यादगार बनानी है।

सन् 1974-1975 में मैंने अपने गाँव के बाहर ज़मीदार से 13 मरले ज़मीन खरीद ली। मैंने यह बात महाराज हरिदास जी को बताई तो वह बहुत प्रसन्न हुए। अब महाराज जी को भी यकीन हो चुका था कि,''यह भाई ज़रूर कुछ न कुछ कर अपना संकल्प पूरा करेगा।''

सो महाराज जी ने हर रविवार को मुझ से यह पूछना कि,''कैसे हो भाई वह तुम्हारा काम?'' मैंने कहना,''महाराज जी, आप कभी न कभी तो करोगे ही ऐसा मेरा यकीन है।''यह सुन महाराज जी मुस्कुराने लगते।

एक बार मैं और कृपा राम रसूलपुर वाले ने यह बात की कि,''महाराज जी की यादगार बनानी चाहता हूँ, उस ने भी मुझे कहा कि,'' देख गुरदास यह कामत ेर ाजे-महाराजेय ास ंत-महापुरूषोंक े ह ै ।अ पनेब सक े न हीं।'' रविवार का दिन था। मैं और कृपा राम शाम को डेरे से बाहर निकल कर नहर की ओर घूमने निकले। कृपा राम कहने लगा,''भाई तुम्हारे वो काम नहीं होना जो तुम मन्दिर बनाने का कह रहे हो।'' मैंने पूछा,''क्यों नहीं?'' कृपा राम ने कहा,''जब तक किसी जगह पर कोई महापुरूष भक्ति नहीं करते, वह जगह उतनी देर नहीं बन सकती।'' उसने मुझे कई उदाहरण दी कि वह जगह गुरूद्वारे या मन्दिर बनते-बनते रह गए। सो मैंने कहा,''देख कृपा राम तेरी बात ठीक है, पर जिस जगह पर पूरे गुरू की मेहर हो तो वहां क्यों मन्दिर या गुरूद्वारा नहीं बन सकता।'' मैंने कहा,''वहां मेरे सत्गुरू की मेहर हुई है।'' हम दोनों बातें करते-करते डेरे के अन्दर आ गए।

महाराज हरिदास जी पलंग पर विराजमान थे, हमारे आने से पहले महाराज जी यह बात कर रहे थे,''गाँव सुच्ची पिंड वाला गुरदास महाराज सरवण दास जी की स्मृति याद में अपने घर मन्दिर बनाना चाहता है, पर यह काम बहुत मुश्किल है और मन्दिर की ओर इशारा कर कहने लगे वह चाहता है, ऐसा मन्दिर बनाना है, भाई यह काम बहुत मुश्किल है।''

पास बैठे बेली राम बल्लां वालों ने कहा,''महाराज जी ऐसा मन्दिर बनाने के लिए सारी संगत और आपका सारा ज़ोर लग गया है तो यह अकेले कैसे मन्दिर बना सकता है?''

महाराज जी कहने लगे,''हां भाई यह बात तो ठीक है।'' उस समय मैंने उठ कर खड़ा होकर दोनों हाथ जोड़कर कहा।'' अगर हुक्म हो तो एक निवेदन करूँ।''

''हां क्यों नहीं कर कर'' महाराज जी हरि दास जी ने कहा।

''महाराज जी मैं एक गरीब आदमी हूँ और साइकिलों की रिपेयर कर के अपने परिवार का गुज़ारा करता हूँ, हमसे तो अपने घर के खर्चे ही पूरे नहीं होते। मैं मन्दिर बनाने वाला कौन होता हूँ , हां मेरे मन को इतना विश्वास ज़रूर है कि अगर महाराज जी आप की कृपा हुई तो यह मन्दिर तो कुछ भी नहीं (मन्दिर की तरफ इशारा करके) अगर आप की मेहर हो तो मैं सोने का मन्दिर अपने गुरू की याद में बनवा सकता हूँ।''

यह सुन कर महाराज जी बहुत वैराग में आ गए तो कहने लगे,''हां बता भाई बेली रामा,'' यह भाई क्या कहता है।'' और बेली राम कोई बात न आई।

महाराज जी ने मुझे कहा,''जा भाई तुम्हारा सत्गुरू सरवण दास महाराज जी पर बहुत भरोसा है इसी लिए तुम्हारे सारे काम उन्होंने आप ही करने हैं।''

साखी नंबर: 145

महाराज सरवण दास जी की याद में गाँव सुच्ची पिंड में श्री गुरदास राम की ओर से मन्दिर का निर्माण करवाना।

समय बीतता गया हर वक्त मुझे यह ही याद सताती रहती थी कि मैंने सत्गुरू जी की याद बनानी है वह भी अपने घर और अपने खर्च के साथ। सो इस से सम्बन्धित मैंने अपने भाई श्री अनंत राम से बॅधण के साथ बात की कि,''मैंने अपने घर में महाराज की यादगार बनानी है।'' उस ने कहा,''ठीक है। यह घटना सन् 1977 ई.की है, उस समय पंजाब में अकाली सरकार थी। उन्होंने कहा वह अकाली मंत्री बीबी सतवंत कौर को महाराज जी के मन्दिर का नींव पत्थर रखने के लिए गाँव सुच्ची पिंड ले आएंगे।

महाराज जी के हुक्म से मन्दिर का नींव पत्थर रखने का दिन निश्चित हो गया। दो दिन पहले सत्संग करवाया गया। मेरे पाँव ज़मीन पर नहीं लग रहे

थे क्योंकि आज सत्गुरू जी मेरे बचपन का संकल्प पूरा करने जा रहे थे।

सत्संग वाले दिन मैं प्रात:काल एक कार किराए पर लेकर डेरे पहुँचा। महाराज जी को नमस्कार किया और निवेदन किया,''महाराज जी, आज आप मेरा वह संकल्प पूरा करने जा रहे हो, जो बचपन से मेरे मन में था और हर रविवार पूछते थे कि,''कैसे भाई। वह तुम्हारा काम।''और मैंने कहना कि,''महाराज जी, कभी तो आप करोगे ही सो आज आप वह काम पूरा करने जा रहे हो।''

यह सुन कर महाराज जी वैराग में आ गए, आँखों में आँसू लाकर कहने लगे,'' भाई हद हो गई इतना बड़ा तुम्हारा विश्वास।'' महाराज जी ने वचन किए ''राम चंदर के गुरू वशिष्ठ कहने लगे'' हे राम, तेरा देव और कोई नहीं है, तेरा देव तो तुम्हारा विश्वास है।''

''इस लिए भाई गुरदास यह सारे तुम्हारे काम तेरा विश्वास ही करवा रहा है। भाई तुम्हारे ऊपर महाराज सरवण दास जी की बहुत कृपा है।''

महाराज जी से बहुत आदर भाव और उत्साह से मैं अपने गाँव सुच्ची पिंड लेकर आया। महाराज जी ने मन्दिर का नींव पत्थर रखा और बाद में बीबी सतवंत कौर ने नींव पत्थर रखा और उन्होंने मुझे पाँच हज़ार रूपए का सामान मन्दिर के लिए देने का वायदा किया।

इस के अतिरिक्त मौके पर एकत्रित संगत और रिश्तेदारों ने एक-एक, दो-दो रूपए इकट्ठे कर मुझे मन्दिर के निर्माण के लिए दिए।

दूसरे दिन बड़े उत्साह से मिस्त्री करनैल सिंह जी जो कि मिस्त्री दलीप सिंह(जिन्होंने महाराज जी का सुन्दर मन्दिर डेरे में बनाया था) के पुत्र थे और मन्दिर का निर्माण शुरू कर दिया।

महाराज जी की मेरे पर बहुत कृपा थी और मेरी दुकान पर काम भी बहुत अच्छा था। मन्दिर के लिए तो मैंने बहुत देर से पैसा-पैसा बचा कर रखा हुआ था। सो मन्दिर का काम लैंटर तक पहुँच गया।

मन्दिर के लिए जो ग्रांट बीबी सतवन्त कौर ने मन्ज़ूर किया था वह प्राप्त करने के लिए मैं बी.डी.ओ. के दफ़्तर तक पहुँच की। उस समय जो जालन्धर के बी.डी.ओ. थे। उस की बदली थोड़े दिन पहले ही जालन्धर हुई थी। मैंने उन को उनके दफ़्तर में मिला तो उन्होंने कहा कि,''आपको पाँच हज़ार का सामान सीमेंट, ईटें, सरिया जल्द ही मिल जाएगा।'' इस तरह कई

दिन बीत गए, पर सामान गाँव न पहुँचा। एक दिन फिर मैं बी.डी.ओ.साहिब को मिला, उन्होंने मुझे कहा कि सारा सामान आपके गाँव जल्दी पहुँच जाएगा, सो कुछ ही दिनों में सीमेंट, सरिया, ईटों और रेत के ट्रक घर पहुँच गए। लैंटर पाया गया।

एक दिन दोपहर का समय था, मैं अपनी दुकान पर काम कर रहा था। दुकान के आगे बहुत ट्रैफिक था। मैंने वहां बी.डी.ओ.साहिब की जीप रूकी देखी। मैं जाकर बी.डी.ओ.साहिब को कहा कि,''सरदार साहिब, आज आप मेरे बाज़ार में आए हो, बताओ आपकी क्या सेवा करें? और मैं आपको चाय पानी पिलाऊँ।''

उन्होंने जवाब दिया,''भाई तुम तो स्वयं पैसे-पैसे का पंक्चर लगाते हो, तुमने हमारी क्या सेवा करनी है?'' यह कहकर चले गए।

कुछ दिनों बाद मैं सीमेंट लेने उनके घर गया और कहा कि,''मुझे यह पत्र तसदीक कर दो, ताकि मुझे सीमेंट मिल जाए।'' उस दिन वह बहुत परेशान थे, उन्होंने मुझे कहा कि,''सरकार ने मुझे बहुत दु:खी किया है, अभी एक महीना पहले ही मेरी बदली जालन्धर की हुई है, अब फिर आज मेरी बदली का पत्र आ गया है।''

उन्होंने मुझे कहा कि,''तुम दफ़्तर आ जाना। मैं वहां ऐपलिकेशन रिकमैण्ड कर दूंगा।''

दूसरे दिन दोपहर को मैं उनके दफ़्तर गया और उनको मिला, वह आज मुझे मिलकर बहुत खुश हुए। मुझे बड़े आदर से बिठाया और कहा,''यह देखो आपके कहने अनुसार मेरी बदली रूक गई है और यह पत्र आ गई है कि मेरी बदली जो अमृतसर हो गई थी, वह रूक गई है और अब मैं जालन्धर ही रहूँगा। यह सब आपकी ही मेहर हुई है।''

मैंने कहा,''सरदार साहिब, मैंने तो स्वाभाविक ही कह दिया था, पर यह सब कृपा मेरे गुरू महाराज की है।'' बी.डी.ओ साहिब अब मुझसे बहुत प्रभावित हुए। जब भी जाना, मुझे जितनी बोरी सीमेंट चाहिए होती थी, मैं फार्म भर कर उन्हें दे देता तो वह उतनी ही बोरी मन्ज़ूर कर देते। अब उन्होंने जब भी रेलवे रोड से निकलना तो मेरी दुकान पर रूक कर मुझे मिल कर और चाय पी कर जाते। बाज़ार वालों ने देखना कि इस के पास तो बड़े-बड़े अफ़सर आते है। एक बार उन्होंने बी.डी.ओ को पूछा कि,''आपका यहां साइकिल

रिपेयर की दुकान पर क्या काम है?'' तो उन्होंने जवाब दिया कि,''यह कोई और गैर साधारण व्यक्ति नहीं है, इस पर इनके गुरू महाराज की बहुत कृपा है, यह जो कहता है, वही हो जाता है। धन्य है यह भाई और धन्य है इस के गुरू महाराज जी।''

सो यह सब गुरू कृपा का फल है। इस में मेरी कोई तारीफ नहीं है।

सो इस तरह मन्दिर के निर्माण का काम कभी चलते रहना और कभी मैं उस को रूकवा देता क्योंकि मैं अकेला था और काम बहुत बड़ा है। सत्गुरू की कृपा से मन्दिर के निर्माण का काम बहुत बड़ा है। सत्गुरू की कृपा से मन्दिर के निर्माण का काम एक वर्ष में पूरा हो गया। अब इस की तैयारी ही बाकी थी। घर के खर्च से जो कुछ भी बचता मैं और मेरी पत्नी संभाल कर रखते फिर दस वर्ष बाद 1986-87 में मन्दिर की तैयारी का काम शुरू किया और तीन महीनों में यह भी पूरा हो गया। कुछ महीनों बाद फर्श लगवाए गए। मन्दिर के निर्माण में सब से अधिक सहयोग मेरी पत्नी गुरवचन कौर का रहा और साथ मेरे बच्चे भी मिस्त्री के साथ मज़दूर का काम करवाते। महाराज जी के कौतुक का वर्णन करना कोई आसान बात नहीं है।

साखी नंबर: 146

महाराज जी ने प्रातःकाल चार बजे हाज़िर होना

श्री कृपा राम जी का सारा परिवार महाराज जी के बहुत ही श्रद्धालु है। श्री कृपा राम जी मेरे साथ महाराज जी की बातें करते-करते अक्सर रो पड़ते थे। एक बार मेरे घर मेरी लड़की की शादी थी तो श्री कृपा राम और बीबी कर्मी जी रात को ही आए। रात को खाना खाने के बाद हम सभी परिवार के सदस्य बैठ गए महाराज जी की बातें शुरू हो गई। बीबी कर्मी जी ने बताया कि,''महाराज सरवण दास जी प्रातःकाल ही सैर के लिए निकल पड़ते थे। मैं प्रातःकाल ही दूध रिढ़कती थी। एक बार मैं दूध रिढ़क रही थी मेरे मन में विचार आया कि मक्खन बहुत निकला है। कितना अच्छा होगा कि महाराज जी आ कर मक्खन खायें और लस्सी पीयें।'' यह बात तो अभी मेरे मन में ही थी कि बाहर महाराज जी ने प्रातःकाल ही आ कर दरवाज़ा खट-खटाया और अन्दर आ गए कहने लगे,''ले बीबी कर्मो हम आ गए हैं, ले आओ लस्सी और मक्खन खाने आए हैं। तुम कह रही थी कि कितना अच्छा होगा कि हम आ कर लस्सी और मक्खन खायें।''

मैं महाराज जी के अचानक दर्शन करके हैरान हो गई। महाराज जी ने लस्सी पी और मक्खन खाया। हमें कहने लगे,''कर्मो आज हम बहुत खुश है माँग लो जो कुछ माँगना। मैंने कहा महाराज जी हमें सुख शांति और अपने चरणों का सहारा बख्शिश करो। बस और कुछ नहीं चाहिए।'' महाराज जी ने कहा,''जाओ, इसी तरह होगा। बीबी कर्मी जी और श्री कृपा राम जी सारी उम्र महाराज जी के चरणों के भवरें रहे और उन के बाद उन का परिवार पुत्र-पौत्रें भी उनके जैसे महाराज जी के श्रद्धालु थे। महाराज जी के श्रद्धालु जिन को महाराज जी पर भरोसा था। जब महाराज जी को याद करते थे महाराज जी वहीं जा कर उन को दर्शन देते थे।

साखी नंबर: 147

हजूर महाराज स्वामी सरवण दास जी के अस्थियों के कलश को हरिद्वार ले कर जाना

महाराज जी के पवित्र अस्थियों के कलश को एक विशाल शोभा यात्रा के रूप में हज़ारों संगतों की गिनती में डेरे से जालन्धर रेलवे स्टेशन तक एक बहुत बड़े मोटर कारों के काफिले के रूप फूलों के हारों के साथ श्रृंगार कर बैंड-बाजों की धुन के साथ संगतें 6बजे स्टेशन पर पहुँची। मेरी दुकान रेलवे रोड पर थी तो मैं भी स्टेशन पर महाराज हरीदास जी और महाराज गरीब दास जी एंव संगतों के दर्शन करने के लिए पहुँचा। संगतों की बाढ़ आई हुई थी। सारी संगत हरिद्वार जाने को तैयार थी। मैंने सोचा कि सारी संगत हरिद्वार जा रही है तो यह कैसे हो सकता है कि मैं यहीं रह जाऊँ। मन में बहुत वैराग आया। मैंने संत गरीब दास महाराज जी से पूछा कि महाराज जी हरिद्वार को ओर गाड़ी कब जाएगी। उन्होंने कहा कि,''एक रात को 9 बजे जाती है। लक्सर से एक डिब्बा उससे उतार कर दूसरी गाड़ी के साथ जोड़ा जाएगा। वह गाड़ी हरिद्वार पहुँचती है। स्टेशन पर महाराज गरीब दास जी ने महाराज सरवण दास जी की एक पवित्र निशानी महाराज जी के पहनने वाली दस्तार रूपी निशानी मुझे बख्शिश की(जो आज तक मेरे पास मौजूद है जब मेरा मन करता है मैं उस के दर्शन कर लेता हूँ)तो शाम को मैंने जल्दी से दुकान बंद कर के घर पहुँच कर सारी तैयारी कर मैं स्टेशन से हरिद्वार जाने वाली गाड़ी में सवार हो गया। यह हरिद्वार जाने का मेरा पहला मौका था। मुझे डर था कि कहीं मैं भूल न जाऊँ। ऐसा न हो कि मेरे जाने से पहले ही महाराज जी की अस्थियाँ जल प्रवाह कर दिए जाएँ। तो मुझे उन के दर्शन भी न हो। पर मेरे मन को यह यकीन था कि

मुझे महाराज जी की अस्थियों के कलश के दर्शन ज़रूर होंगे। मैं सुबह हरिद्वार पहुँच गया। पूछते-पूछते मैं निर्मला छावनी में गुरू रविदास आश्रम पहुँचा। वहाँ मुझे संत धर्मात्मा नन्द जी मिले जब मैंने देखा वहाँ कोई भी संगत जालन्धर से नहीं पहुँची थी यह देख कर मुझे बहुत हैरानी हुई। संत धर्मात्मा नन्द को मैंने बताया कि,''सभी संगत और संत हरीदास महाराज जी एवं संत गरीब दास महाराज जी मेरे से तीन-चार घण्टे पहले चले थे फिर वह क्यों अभी तक यहाँ नहीं पहुँचे। हम उनको देखने के लिए निर्मला छावनी स्टेशन पर पहुँचे। जल्द ही अस्थि कलश वाली गाड़ी स्टेशन पर आ गई। संगतें शोभा यात्रा के रूप में इकट्ठी हो कर महाराज जी की पवित्र अगुवाई में आगे को बढ़ रहे थे। जब सभी ने मुझे देखा तो सब हैरान हो गए और मुझे पूछने लगे। महाराज जी ने मुझे कहा कि,''यह कैसे हुआ तुम तो हमें स्टेशन पर गाड़ी में चढ़ाने आये थे। तुम किस तरह यहाँ पहुँच गए?'' मैंने कहा,''महाराज जी, मुझे तो आपने स्वयं उड़ा कर पहुँचा दिया। यह सब आप की ही कृपा है। यह तो आप ही जानते हो।''

सारी संगत आश्रम से जल-पान करके शोभा यात्रा के रूप में बैंड-बाजों के साथ महाराज जी की अस्थियाँ जल प्रवाह करने के लिए गंगा तट पर पहुँची। संत हरी दास महाराज जी की आज्ञा के साथ संत गरीब दास महाराज जी ने अरदास की और जयकारों की गूंज में महाराज जी के पवित्र अस्थि कलश जल प्रवाह किये।

शामको सभी संगतें स्टेशन से जालन्धर को रवाना हो गई।

साखी नंबर: 148

साधु वचन अटल

एक बार की बात है। यह घटना महाराज हरी दास जी के समय की है। मैं रेलवे रोड़ पर दुकान कर रहा था। मेरी दुकान संग वहाँ 60 दुकानें थी। यहां जालन्धर इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट की दुकानों को तोड़ कर चौंक बनाने की स्कीम थी और हाईकोट का फैसला था कि यहां मोड़ पर बहुत भीड़ रहती है तो इसी लिए यहां चौक बनाना चाहिए।

सभी दुकानदारों को दुकानें खाली करने के नोटिस आ गए कि दो दिनों में दुकानें खाली कर दें नहीं तो सब कुछ मलिया मेट कर दिया जाएगा।

उस समय काफ़ी मंत्री संत बल्लां वालों के श्रद्धालु थे इसी लिए वह डेरे आया जाया करते थे। सारे दुकानदार इकट्ठे हो कर डेरे जा कर संतों को मिले

और उन को निवेदन करें कि,''महाराज जी, आप मंत्री जी को कह कर यह चौक बनवाने की स्कीम रूकवा दो।''

स्कीम मुताबिक हम सारे दुकानदार महाराज जी के डेरे पहुँचे। महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी पलंग पर विराजमान थे। हमें कहा कि,''पहले आप सभी चाय पी कर आओ।'' महाराज जी के हुकम मुताबिक हम चाय का लंगर छक कर फिर महाराज जी के पास आ कर बैठ गए। हमने महाराज जी से निवेदन किया कि,''हम गरीब दुकानदार है, हमारी दुकानें रेलवे रोड पर है। सरकार हमारी दुकानों को तोड़ कर चौक बनाना चाहती है। इस तरह हम बर्बाद हो जाऐंगे। तो आप कृपा करके मंत्री जी जो कि आपके सेवक है उन को कह कर रेलवे रोड की स्कीम रूकवा दो क्योंकि वह आप के डेरे आते रहते हैं।'' महाराज जी ने हमारी बात सुनी और सोच कर हम सब को एक साखी सुनाई।

महाराज जी ने कहा मुगल बादशाह ने हिन्दुस्तान पर हमला किया क्योंकि हमारा देश बहुत अमीर था इसी लिए उस ने लालच में हमारे पर हमला किया। जब वह अपनी सेना के साथ हमला करने आ रहे था तो रास्ते में उस को गुरू नानक देव जी बैठे मिले। बाबर ने उन को नमस्कार की और अपनी कामयाबी के लिए निवेदन किया। महाराज गुरू नानक देव जी ने उन को आर्शीवाद दिया। युद्ध में बाबर की जीत हुई। वापिस आते समय बाबर बहुत सारा धन लूट कर आ रहा था तो उस की मुलाकात फिर गुरू जी से हुई। बाबर ने गुरू जी को नमस्कार की और कहा,''माँग ले साधु जो कुछ माँगना'' गुरू जी ने कहा,''सारे ज़माने के मँगतिया, हमारे आर्शीवाद के साथ जीत प्राप्त करके हमें अब तू दान दे रहा है और कह रहा है कि हम तेरे पास से धन-दौलत माँगे। तू तो स्वयं मंगता है। तू हमें क्या देगा।'' बाबर गुरू जी के चरणों पर गिर पड़ा और माफ़ी माँगने लगा।

''सो भाईयों यह मंत्री लोग तो हमारे पास आर्शीवाद लेने आते हैं।''

महाराज जी ने कहा,''भाई हमने उस को तुम्हारी सिफ़ारिश नहीं करनी पर हां जाओ आप की दुकानों को कुछ नहीं होगा। उन को कोई नहीं तोड़ेगा।''

सो हम सभी दुकानदार महाराज जी से आर्शीवाद ले कर रेलवे रोड आ गए। वहाँ आ कर हमें पता लगा कि हमें स्टे मिल गई है और सरकार ने दुकानों को तोड़ने से न कर दिया है। हम सभी बहुत हैरान हुए।

सो यह सब विश्वास और श्रद्धा की बातें है सेवक श्रद्धा भावना के साथ अपने गुरू से जो मर्ज़ी करवा लेता है। यह सब गुरू की महिमा है।

रविदास सोई साधु भले निर्मल जाने बैन।

जा कर दरसु और परसु सो मन उपजे सुख चैन।।

फिर कई वर्ष तक सरकार ने चौक बनाने के प्रति चुप धारण की रखी। सन् 1979 ई. में इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट ने फिर सारे दुकानदारों को दुकानें खाली करने के नोटिस दे दिए। दो सरकारी छुट्टी थी तीसरे दिन रविवार था। चौथे दिन सरकार ने कब्जा लेना था। छुट्टियों में कोई स्टे या अपील न हो सकी सारे दुकानदारों ने भाग-दौड़ की पर कुछ न बना। सभी ने कहा कि,"अब तो दुकानें तोड़ी ही जाएगी। कोई रोक नहीं सकता। हाईकोट का हुक्म है।

सो सारे दुकानदार इकट्ठे हुए और सलाह बनाने लगे कि,"कैसे किया जाए?" मैंने उनको कहा कि,"भाईयों तुम अपनी कोशिश करो, मैं तो अपने सत्गुरू जी के पास जा कर उन के चरणों में निवेदन करूँगा।" सो मैं डेरे पहुँचा। महाराज हरी दास जी अपने आसन पर विराजमान थे। मैंने उन को नमस्कार की। उन्होंने मुझे चाय का लंगर छकने के लिए कहा। मैंने चाय पी कर फिर महाराज जी के पास आ कर निवेदन किया कि,"महाराज जी, सरकार हमें 60 दुकानदारों को उठा कर वहां चौंक बनवाना चाहती है। सभी गरीब दुकानदार है। हम सब किस जगह पर जाऐंगे। किस जगह हम रोटी कमायेंगे।

सो आप कृपा करके हमें बचा लो।" महाराज जी सोचने लगे और मुझे इशारे के साथ कहा,"तुम चले जाओ। मैं महाराज जी का इशारा समझ गया और रेलवे रोड पर अपने साथी दुकानदारों को कहा कि,"अब अपनी दुकानों को कुछ नहीं होगा। मेरे गुरू जी का मुझे आर्शीवाद है।" वह कहने लगे कि,"यह कैसे हो सकता है?" कुछ दुकानदार डी.सी. को मिलने गए हुए थे। वह भी आ गए। डी. सी. ने उन को कहा कि मैं सरकार को तुम्हारी सिफारिश करूँगा कि,"तुम्हें स्टे मिल जाए पर यह हाईकोट का फैसला है। मैं कुछ नहीं कर सकता।"

सो सोमवार कब्ज़े का दिन आया। इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट के सभी अधिकारी सैंकड़ों पुलिस जवानों के साथ बुल्डोज़र से दुकानों को तोड़ने के लिए आ गए। दुकानों को घेर लिया और कोई भी पास न आए। सभी दुकानदारों की

जान मुट्ठी में आ गई कि अब दुकानें गई ही। पर मुझे अपने सत्गुरू पर पूरा भरोसा था।

ट्रस्ट की ओर से दुकानों को तोड़ने की पूरी तैयारी थी कि चंडीगढ़ से टेलीफोन आ गया कि रेलवे रोड की स्कीम अभी रोक दी जाए और दुकानों को कोई नुकसान न पहुँचाया जाए। सभी दुकानदारों में खुशी की लहर दौड़ आई सभी कहने लगे कि,''भाई, यह ठीक कह रहा था कि संतों का हुक्म है कि दुकानों को कुछ नहीं होगा'' करीब 22 वर्ष हो गए। महाराज जी के आर्शीवाद के साथ वह दुकानें आज भी वहीं पर ही है। सो अगर सिक्ख पूरे भरोसे वाला हो तो वह अपने गुरू के पास सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

साखी नंबर: 149

गुरू की प्रंशसा

एक बार की बात है कि महाराज हरी दास जी मन्दिर के पास अपने पलंग पर विराजमान थे। मैं भी महाराज जी को नमस्कार करके शाम की चाय का लंगर छका और महाराज जी के पास आ कर बैठ गया। कुछ प्रेमी जो महाराज जी के बहुत श्रद्धालु थे बाहर से किसी और महात्मा की उपमा सुना रहे थे कि,''महाराज जी, वहां वह संत है। जो बहुत त्यागी है बहुत ही कम खाते हैं जो कोई उन को दान करता है वह उस वस्तु को आग में फैंक देते है। बहुत ही विद्वान संत है।''

यह सब महाराज जी बहुत ही ध्यान से सुन रहे हैं। मैंने भी उन की बात बहुत ध्यान के साथ सुनी। एक श्रद्धालु महाराज जी को पंखे से हवा दे रहा था। मैं बहाने से उससे पंखा पकड़ कर महाराज जी को हवा देने लग पड़ा। जब उन की बात खत्म हुई तो मैंने हाथ जोड़ कर कहा,''महाराज जी अगर आज्ञा हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ।'' महाराज जी ने कहा,''हां भाई ज़रूर करो तुम क्यों नहीं, करो ज़रूर करो।''

मैंने कहा,''जी मैंने तो वह ही कहना है जो मैंने आपकी संगत से सीखा है।(संगत की ओर ध्यान करके)हमें अपने गुरू महाराज जी के पास बैठ कर उन की उपमा ही करनी चाहिए।'' यह सुन कर महाराज जी उठ कर चले गए। मैंने कहा,''भाईयों हमें गुरू महाराज जी की हाज़िरी में उन की ही बात करनी चाहिए। बाद में जिस की मर्ज़ी बात करो, अब महाराज जी उठ कर चले गए

अब चाहे जिस की मर्ज़ी उपमा करो पर अपने गुरू के सामने किसी और की उपमा करना शोभा नहीं देता। गुरू पर भरोसा नहीं रहता।''

पास बैठे गाँव मन्नणा वाले संत अमर दास जी कहने लगे कि,''यह बात ठीक है। इस भाई पर महाराज जी की कृपा है। पास बैठे एक और आदमी ने कहा,''हां भाई, इस ऊपर महाराज जी की बहुत कृपा है। अगर कृपा न होती तो संगतों को स्टेशन पर चढ़ाने आया संगतों से कई घण्टें पहले ही हरिद्वार कैसे पहुँच जाता? यह सब कृपा की बात है।'' यह सुन कर सभी मुझ से पूछने लगे कि,''यह कैसे हुआ कि संगतों को स्टेशन पर गाड़ी चढ़ाने आए आप किस तरह सब से कई घण्टें पहले हरिद्वार पहुँच गए?'' मैं अभी यह सब बताने ही लगा था कि उधर से महाराज हरी दास जी ने किसी आदमी को भेजा कि,''मैं इस बात को यहीं पर रोक दूँ।'' मैंने महाराज जी के हुक्म की पालना करते वह भेद की बात वहीं ही रोक दी।

सो सत्गुरू जी सब कुछ जानी-जान है। हमारा ही भरोसा होना चाहिए। पर भरोसा बनाना बहुत मुश्किल है। क्योंकि गुरू महाराज जी अपने सेवकों के कई तरह से इम्तिहान लेते हैं। फिर जा कर अपने सेवकों के काम करने है।

साखी नंबर: 150

मन्दिर बनाना

यह बात सन् 1978ई. की है जब मैं महाराज जी की याद में मन्दिर बनवा रहा था। बी.डी.ओ. साहिब की बदली रूक जाने के कारण मेरा बहतु सत्कार करने लग पड़े। जितने भी थैले सीमेंट के चाहिए वह फॉर्म रिकमैंड कर देते और मुझे उतना ही सीमेंट मिल जाता था। उस समय सीमेंट की बहुत कमी रहती थी।

एक दिन की बात है कि बी.डी.ओ. साहिब मुझे कहने लगे कि,''इतना सीमेंट आप क्या करते हो?'' तो मैंने उन को सारा बताया कि,''मैं इस तरह अपने गुरू महाराज जी की याद में अपने ही घर में और अपने ही खर्च पर अकेला ही मन्दिर बनवा रहा हूँ।'' यह सुन कर बी.डी.ओ. साहिब बहुत ही हैरान हुए। वह कहने लगे,''इतना बड़ा कार्य और वह भी अकेले आदमी और वह भी जो साइकिल रिपेयर करता हो। सच में यह तो आप के ऊपर सत्गुरू की कृपा है। नहीं तो आम तौर पर मन्दिर, गुरूद्वारे तो गाँवों में सभाओं की

तरफ से बनाए जाते है। यह मैंने पहली बार देखा है कि एक अकेला आदमी मन्दिर बना रहा हो वह भी बिना किसी बाहरी मदद। अपने ही खर्च पर। सच में ही आप के ऊपर आप के गुरू जी का हाथ है और यह सब उनकी ही कृपा है।'' पूर्ण सत्गुरू अपने सिक्ख के जन्म-मरण के बंधन काट देते हैं परन्तु अगर सेवक बुरे कार्यों से हटे। सत्गुरू अपने सेवक को नाम-भजन का धन देते हैं और वह सिक्ख बहुत ही भागों वाला होता है।

मैं मन्दिर का निर्माण करवा रहा था अकेले को ही सारे काम करने पड़ते थे। दुकान भी खोलनी। मिस्त्री को रेत, सीमेंट और ईंटों का प्रबंध कर के देना। बहुत ही भाग-दौड़ रहती थी। क्योंकि बच्चे अभी छोटे थे। फिर भी वह मिस्त्री की मदद करते। पत्नी ने मिस्त्री और मज़दूरों के लिए रोटी और चाय पानी तैयार करना। उस को भी बहुत काम पड़ता था। पर सत्गुरू जी ने इतनी हिम्मत और हौंसला बख्शिश था कि हम दोनों कभी भी निराश न हुए। कभी निर्माण का काम बंद करवा देते। तीन-चार महीने बाद जब कुछ रूपये ज़मा हो जाते तो फिर काम शुरू करवा देते।

साखी नंबरः 151

कामरेड को सत्य का ज्ञान देना

यह घटना हजूर महाराज स्वामी सरवण दास जी के समय की है। गाँव रायेपुर वाली सड़क पर एक कामरेड स.दयाल सिंह का कुँआ था। उनके पास महाराज जी का श्रद्धालु काम करता था। जोकि उनके पशुओं की देखभाल करता था। वह कामरेड को महाराज जी की बातें सुनाता और बताता कि ,''हमारे संत इस तरह के है वह बाल ब्रह्मचारी है और उदासीन थे।'' कामरेड जोकि परमात्मा में कम विश्वास करता था। उसने कहना कि,''तुम ऐसे ही बातें करते रहते हो, यह संत महात्मा सभी ऐसे ही होते हैं। भगवान् आदि नाम की कोई वस्तु नहीं है। यह विज्ञान का युग है। संत आदि कुछ नहीं है।'' उस कामे ने कामरेड को फिर भी महाराज जी के कौतुक बारे बताते रहना पर कामरेड ने इस को ऐसे कह कर टाल देना।

समय बीतता गया। महाराज जी अंर्तयामी थे। एक दिन ऐसा हुआ कि महाराज जी सुबह के समय नहर-नहर सैर करते कामरेड दयाल सिंह के खेतों की तरफआ रहे थे। कामरेड ने देखा कि दूर से किसी वस्तु की चमक पड़ रही है। उस चमक को देखने के लिए वह आगे बढ़ा तो आगे आ कर उसने महाराज

सरवण दास जी के दर्शन किए तो ऐसी नूरी ज्योत के दर्शन करके उस का मन खींचा गया। उसने महाराज जी को नमस्कार की। कम्युनिस्ट विचारों का होने कारण उसका संत महात्मा में विश्वास नहीं था। उसने महाराज जी का इम्तिहान लेने के लिए कहा,''महाराज जी बारिश नहीं होती।''

''कोई बात नहीं कल को बारिश हो जाएगी।'' महाराज जी ने कहा।

''कितने बजे'' कामरेड ने पूछा।

''कल को ग्यारह बजे बारिश हो जाएगी'' महाराज जी ने उत्तर दिया। यह कहकर सत्गुरू डेरे की ओर चल पड़े। अब कामरेड अपने घर गया और सारी रात वह सोचता रहा कि हां कहां बारिश होनी है। ऐसे संतों के कहने पर बारिश कैसे हो सकती है।

दूसरा दिन हुआ। कामरेड भी बहुत उत्सुकता से ग्यारह बजने की प्रतीक्षा कर रहा था। बहुत तेज़ धूप थी। 10:45 बजे थे कि कहीं भी कोई बादल का नाम निशान नहीं था। बस ग्यारह बजने की देर थी कि चारों तरफ से बादल छा गए और मिनटों में जल थल एक कर गया। आधा घण्टा ज़ोरों की बारिश हुई। कामरेड का अहंकार टूट गया। वह दौड़ा-दौड़ा महाराज जी के डेरे में पहुँचा। महाराज जी के चरणों में नमस्कार की। उस दिन से वह महाराज जी का पक्का श्रद्धालु बन गया। हर रविवार डेरे आने जाने लगे। अब उस को पता चल चुका था कि सत्गुरू अंर्तयामी है। जो अपने सिक्ख सेवकों के मन की बातों को जानते हैं और उनके भ्रम दूर करते हैं।

एक बार कामरेड महाराज जी को कहने लगा कि,''महाराज जी, बहुत बुरा हुआ कि मेरे पास एक बछड़ा(सांड)है। जिस को मैं बहुत मेहनत से पालन पोषण किया ताकि बड़ा हो कर मैं उससे कुँए आदि चलाने का काम ले सकूं। वह गढ्डे में गिर गया और उस की कमर टूट गई। बेचारा एक जगह ही बैठा रहता है। इस करके आप कोई दवाई दीजिए ताकि वह ठीक हो जाए।''

महाराज जी ने सोचकर कहा,''आपने उस को जब भी पानी पिलाना हो तो उस को रात का रखा हुआ पानी ही पिलाना। ताज़ा पानी नहीं पिलाना।'' कामरेड ने गुरू जी का वचन सुन कर सत् वचन कहकर ऐसे ही करना शुरू कर दिया। महीना ही बीता कि उसका बछड़ा ठीक होकर चलने फिरने लगा। कामरेड अब बहुत खुश हुआ। महाराज जी पर उसका विश्वास भरोसा और भी पक्का हो गया। उसने अपने मन ही मन कहा कि यह बछड़ा मैं महाराज जी

के डेरे ही दे कर आना हैं क्योंकि यह उनकी ही कृपा से ठीक हुआ है।

एक दिन वह बछड़े के ऊपर लाल कपड़ा डालकर उस को डेरे ले आया। महाराज जी को नमस्कार करके कहा कि,''महाराज जी बछड़ा ठीक हो गया है इसी लिए मैंने यह आप को अर्पण करता हूँ।'' महाराज जी ने कहा कि,''कामरेड ठीक है। यह बछड़ा हमारा हो गया। हम इस को जिसे मर्ज़ी दे दें। तो तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं होगा।'' कामरेड ने कहा कि,''महाराज जब यह आपका ही हो गया। आप इसे जिसे मर्ज़ी दे दीजिए। मुझे कोई एतराज़ नहीं।''

महाराज जी ने बछड़े का रस्सा पकड़ कर मिट्ठू बस्ती वाले भगत राम को उसका रस्सा पकड़ा कर कहा,''ले भगत राम इस को तुम ले जाओ और अपने खेतों में इससे काम करवाओ।'' भगत राम वछड़े को अपने घर ले गया और कई वर्ष उसने उस बछड़े से काम करवाया। महाराज जी की कृपा से भगत राम ने वह ज़मीन यहाँ जे.पी. नगर बनाया है, लाखों रुपये में बेची।

साखी नंबरः 152

अजीब इलाज़ बीमारी को ठीक करना

यह बात सन् 1947 ई.से पूर्व की है। उस समय छुआ-छात का काफी बोलबाला था। एक हिमाचल का रिटायर्ड मैजिस्ट्रेट था। उसके शरीर पर कुछ जख्म निकल आए थे। उसने उन जख्मों का बहुत इलाज़ करवाया। परन्तु वह ठीक नहीं हुए। जख्मों पर जलन होनी और सारी रात नींद नहीं आती थी। किसी से उसको पता चला कि बल्लां में नहर के किनारे संतों की कुटिया है जो कि हिक्मत के बहुत माहिर है और बाल ब्रह्मचारी संत है। सो इस बाबत वह महाराज स्वामी सरवण दास जी महाराज के डेरे आया। महाराज जी के डेरे आ कर महाराज जी को प्रणाम किया। महाराज जी तो अंर्तयामी थे। महाराज जी ने उस के शरीर के जख्मों को देखा और कहा,''भाई इस का इलाज़ है भी और नहीं भी। अगर है तो बहुत मुश्किल है।''

''आपइ सत रहक रों कअ पनेघ ारज ाओअ ौरए कह फ़्ताअ ाप मूलियों का सेवन अधिक मात्रा में करना। चाहे उनकी सब्ज़ी बनाकर खाना चाहे वैसे ही खाना। एक हफ़्ते के बाद आप हमारे पास आना तो हम आपको दवाई देंगे। पर जहाँ कहीं से भी आप को मूलियां मिलेगी एक हफ़्ता ज़रूर खाना।''

इस तरह वह भाई अपने घर गया। उसने अपने घर के आस-पास खेतों में देखा पर मूलियां नहीं मिली। परन्तु एक जगह एक ज़मीनदार के कुँए पर उस ज़मीनदार ने अपने लिए एक क्यारी मूलियां बीजी थी। उसने उस ज़मीनदार को कहा कि,"यह मूलियां आप मुझे दे दो। जितने मर्ज़ी पैसे ले लेना पर ज़मीनदार ने कहा पैसों की ज़रूरत नहीं जितनी मर्ज़ी मूलियां आप ले जाओ।" पहले दिन भाई ने मूलियों की सब्ज़ी बना कर खाई और कुछ मूलियां सलाद के रूप में खाई। रात को उसको बहुत अच्छी नींद आई और जख्मों में जलन को भी बहुत आराम मिला। सो इस तरह उसने दूसरे दिन भी मूलियों का सेवन किया। दिनों दिन उसको काफी आराम आने लगा उसके जख्म भी सूखने लगे। रात को नींद भी बहुत अच्छी तरह से आने लगी। जख्मों में भी ठंडक आने लगी। इन मूलियों के सेवन से उसको काफी आराम आ गया। उसने सोचा कि यह तो इलाज़ बहुत ही सस्ता और बढ़िया है मैं तो ऐसे ही भटकता रहा और पैसे खराब करता रहा।

अब हफ़्ते बाद वह भाई महाराज जी के हुक्म अनुसार डेरे आया। महाराज जी ने उस की सेहत के बारे में पूछा तो उसने बताया कि,"अब उसको रूपये से सत्तर पैसे आराम है।" उसने महाराज जी को कहा कि,"महाराज जी आप तो कहते थे इस बीमारी का इलाज़ बहुत मुश्किल है परन्तु मुझे तो सिर्फ़ मूलियों का ही सेवन करने से आराम आ गया।" महाराज जी मुस्कुराए और कहा कि,"हम फिर भी कहते हैं कि इस का इलाज़ बहुत मुश्किल है।" उस भाई ने कहा,"वह कैसे महाराज जी?"

सत्गुरू जी ने कहा कि,"वह इस तरह है कि एक बहुत ज़हरीला फनीअर साँप लाया जाए फिर उसको मारा जाए। मार कर उस को ज़मीन में दबाया जाए वह भी ऐसी ज़मीन में यहाँ किसी पेड़ की छांव रहती हो और सूर्य की रोशनी कम। फिर कुछ वर्ष पश्चात् जब वह साँप गल-सड़ जाए तो उस ज़मीन की बहाई कर वहाँ पर मूलियां बोई जाए और फिर उन मूलियों का सेवन किया जाए तो इस बीमारी को आराम आएगा। कितना मुश्किल काम है।" महाराज जी ने कहा," वह जिस जगह से आप ने मूलियों का सेवन किया है वहाँ यह सब कुछ हुआ है। जो आप के घर के पूर्व की ओर है। वहाँ एक आम का पेड़ है। उस की छांव वाली मूलियां आपने खाई हैं, तो ही आराम आया है। कितना मुश्किल काम है। वहाँ साँप को मार कर दबाया गया था।"

उस भाई ने हैरानी से कहा,''महाराज जी, आप को जहाँ बैठे हुए यह सब कुछ कैसे पता है कि वहाँ पर मूलियों की क्यारी है।'' महाराज जी हंस पड़े तो कहा,''भाई साधुओं से कुछ भी छिपा नहीं होता। वह तो आँखें बंद करके सब कुछ देख लेते हैं।''

यह सुन कर वह भाई महाराज जी के चरणों में सिर रख कर वैराग में रोने लग पड़ा और धन्य-धन्य कर उठा।

सो ऐसे थे सत्गुरू जो अंतर्यामी थे और अपने सेवकों के मन की शंका का निवारण बहुत ही सुंदर उदाहरण के साथ करते थे। परन्तु यह कभी भी नहीं कहते थे कि यह हमने किया है।

साखी नंबर: 153

संत सरवण दास जी महान थे

इस तरह का एक प्रसंग आपको मैं सुनाता हूँ, यह तो सब को पता है कि महाराज जी बाल ब्रह्मचारी थे और छोटी आयु में ही अंग कटी योग धारण कर अपने शरीर को अलग-अलग कर लेते थे। उस समय महाराज जी कुटिया में अकेले ही रहते थे।

बीबी करमी जी ओर श्री कृपा राम जी रसूलपुर वाले जो कि बचपन से ही महाराज जी के श्रद्धालु थे। उन्होंने तो महाराज जी के पूज्य पिता बाबा पीपल दास जी के दर्शन भी किए थे। हमारे घर सुच्ची पिंड गांव जब भी कोई प्रोग्राम होता था, वह रात को ही आ जाते थे। हमने आधी-आधी रात तक महाराज जी की बातें करनी और वैराग में रो पड़ना।

उन्होंने बताया कि,''महाराज जी के शब्द गुरु संत बाबा हरनाम दास जी थे जिनके नाम पर जालन्धर में मोहल्ला हरनाम दास बना है। हमें कहने लगे कि यह तो (संत सरवण दास जी)बब्बर शेर हैं, है तो हमारा ही सेवक पर हमें इस से डर लगता है, क्योंकि यह भक्ति में बहुत आगे हैं। इतनी घोर तपस्या यह करता है।''

महाराज जी छुआ-छूत के कट्टर विरोधी थे। अपने सत्संग में संगत को अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए बहुत ज़ोर देते थे। महाराज जी आप हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के अच्छे विद्वान थे। डेरे में आप बच्चों को पढ़ाया करते थे। श्री बिशना राम जी बल्लां, श्री बेली राम जी, श्री फकीर सिंह जी, जो कि इस समय इंग्लैंड में है। सब महाराज जी के पास

डेरे में शिक्षा ग्रहण करा करते थे। महाराज जी अपनी कौम को पढ़ा लिखा और खुशहाल देखने के लिए परमात्मा के चरणों में प्रार्थना किया करते थे, कि मेरी कौम पढ़े-लिखे और इनके बच्चे भी बड़े-बड़े अफसर बने और यह भी दूसरों में मान से जीवन बिता सकें।

साखी नंबरः-154

श्री बख्शी राम की बीमारी दूर करना

श्री भगत राम जी जोकि गांव बल्लां से जा कर रामदास गांव में रहते थे। उनके सारे परिवार का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। श्री भगत राम जी ने बाबा पीपल दास जी से नाम की दात प्राप्त की हुई थी।

लगभग सन् 1969 ई.की बात है, कि श्री भगत राम का लड़का बख्शी राम जिसकी आयु उस समय लगभग 25 वर्ष की थी। वह बहुत बीमार हो गया। बख्शी राम का इलाज डॉक्टरों और वैद्यों से करवाया, पर उसे किसी से भी आराम नहीं आया। श्री भगत राम जी अपने सुपुत्र को संत सरवण दास जी महाराज जी पास लेकर आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी इस लड़के का इलाज़ बहुत डॉक्टरों और वैद्यों से करवाया पर इसे आराम नहीं आया। इस की दोंनों टांगे नहीं चलती। आप जी इस पर कृपा करो जी।''

महाराज जी ने कहा,''परमात्मा का भजन सिमरन करा करो। मंगलवार के बाद इस को आराम आना शुरु हो जाएगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री बख्शी राम जी की तबीयत मंगलवार के बाद ठीक होनी शुरु हो गई। श्री बख्शी राम ने बताया कि,''महाराज सरवण दास जी ने मेरे पर कृपा की थी। आज तक मैं उस तरह कभी बीमार नहीं हुआ।''

(25जुलाई, 2003, श्री बख्शी राम, गांव रमदासपुर)

साखी नंबरः-155

श्री गुरमेज राम पर कृपा करनी

श्री गुरमेज राम और बीबी नंती जी गांव ढ़क्क पंडोरी नज़दीक फगवाड़ा के रहने वाले थे। उन्होंने श्री गुरदास राम जी सुच्ची पिंड गांव वालों से संत सरवण दास जी की प्रंशसा सुनी तो उन्होंने मन ही मन में महाराज जी के दर्शन किए तो उनका मन आनन्दित हो गए। इस तरह कुछ महीने हर रविवार डेरे में आते थे। दोनों पर महाराज जी ने नामदान की बख्शिश की। एक समय श्री गुरमेज राम जी बहुत बीमार हो गए। कई डॉक्टरों के पास उनका इलाज

करवाया। पर उनको आराम नहीं आया। एक दिन श्री गुरमेज राम और बीबी नंती डेरे में आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, मेरी सेहत ठीक नहीं रहती, आप कृपा करो जी।'' महाराज जी ने उसे अपने पास बुलाया और फरमाया कि,''अपनी दोनों आंखे बंद करो, ध्यान दोनों आंखों के बीच टिकाओ।'' महाराज जी ने उस के मस्तक ऊपर हाथ फेरते हुए कहा कि,'' कुछ दिखाई देता है।'' श्री गुरमेज राम ने उतर दिया कि,''महाराज जी, बहुत तेज़ रोशनी दिखाई दे रही है।'' उस के बाद महाराज जी ने कहा कि,''भजन सिमरन करते रहना। आज के बाद आपकी सेहत ठीक रहेगी।'' महाराज जी के अटल वचनों के अनुसार उस के बाद उनकी सेहत ठीक होनी शुरु हो गई और बिल्कुल ठीक हो गए।

साखी नंबरः 156

जाओ जा कर सेवा करो तुम्हें कुछ नहीं हुआ

श्री पूरन चंद मडार जी की सुपत्नी श्रीमती राज कौर मडार जी बताते है कि,''एक बीबी संत कौर थी उनकी एक बेटी थी जिस नाम संतोष कौर था उस को एक अजीब सी बीमारी थी कि उस को ठंडी बहुत लगती थी एवं गर्मियों में भी उस को पोह-माघ जैसी ठंडी लगती रहती थी। उस लड़की का बहुत इलाज़ करवाया गया पर डॉक्टरों की समझ में उसकी बीमारी कभी भी नहीं आई और उसको कहीं से भी आराम नहीं आया।'' श्रीमती राज ने उनको अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पास जाने की सलाह दी कि,''महाराज जी बहुत दयालु हैं। वह आपकी बेटी पर ज़रूर कृपा करेंगे। आप गाँव बल्लां में जा कर महाराज जी के पास निवेदन करो।'' तो श्रीमती संत कौर जी ने जब श्री राज कौर जी से महाराज जी की प्रंशसा सुनी तो उनके मन में संतों के प्रति श्रद्धा हुई और वह अपनी बेटी को साथ लेकर गाँव बल्लां की ओर चल पड़े। जब वह गाँव बल्लां में पहुँचे तो नहर के पास आ कर उन को याद आया कि संत महापुरूषों के पास स्नान कर स्वच्छ हो कर जाना चाहिए और संत कौर ने अपनी बेटी को उस नहर में ही स्नान करवा दिया। जब उस लड़की ने नहर में स्नान किया तो उसकी आधी बीमारी तो उसी समय ही दूर हो गई और ठंडी लगनी हट गई।

जब उस लड़की ने अपनी माता को इस के बारे बताया तो उनके मन में संतों के प्रति ओर भी श्रद्धा बढ़ गई तथा उनकी पूरी उम्मीद बढ़ गई कि उनकी

बेटी अब पूरी तरह से ठीक हो जाएगी। यह ही सोचते हुए वह महाराज जी के पास पहुँचे उस समय महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। उन्होंने महाराज जी को नमस्कार की और अपनी लड़की की बीमारी के बारे में बताया तो महाराज जी ने उस लड़की को कहा,''जाओ जा कर सेवा करो तुम्हें कुछ नहीं हुआ।'' इस के साथ ही लड़की को इस तरह महसूस हुआ कि वह अब पूरी तरह से ठीक हो गई है।

सो इस तरह संत कौर जी जो उम्मीद और श्रद्धा से सत्गुरू पास आई थी तो उनके मन की आशा पूरी हुई तथा उनका दुःख दूर हो गया। इस तरह संतों पर श्रद्धा रखने से उस का फल ज़रूर मिलता है।

साखी नंबरः-157

''यहाँ पूजा का धन आता है''

श्री पूरन चंद मडार जी बताते हैं कि,''उनके बड़े भाई श्री श्रद्धा राम जी भी सत्गुरु स्वामी सरवण दास जी पास अक्सर सेवा के लिए आया करते थे। चाहे ही उनको महाराज जी की कृपा से 'नाम की दात' डेरा ब्यास से मिली हुई थी, पर महाराज जी प्रति उनके दिल में बहुत श्रद्धा थी।

एक बार श्री श्रद्धा राम जी और उनके साथी नाम दास जी डेरा ब्यास से सत्संग सुन कर वापिस अपने गाँव की ओर आ रहे थे, वह मकसूदां से सीधे जो नहर गाँव बल्लां के बीच से निकलती है उस नहर के किनारे-किनारे अपने गाँव की ओर आ रहे थे। जब वह गाँव बल्लां के नज़दीक महाराज स्वामी सरवण दास जी की कुटिया के नज़दीक पहुँचे तो श्री श्रद्धा राम के मन में विचार आया कि महाराज जी की कुटिया से लंगर खाकर चलते हैं और उन्होंने अपने साथी नाम दास को कहा कि हम कुटिया से लंगर खाकर गाँव को चलते है तो नाम दास कहने लगा,''भाई यहाँ तो पूजा का धन आता है मैंने यहाँ पर लंगर नहीं खाना।'' पर श्रद्धा जी ने कहा कि,''मैंने तो भाई लंगर खाकर ही जाना है, तुम खाओ या न खाओ। ऐसी बातें करते वह कुटिया में पहुँच गए। महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। संगतें बैठी थी। उन दोनों ने आ कर महाराज जी को नमस्कार की और बैठ गए। महाराज जी ने श्रद्धा राम को कहा,''श्रद्धा तुम जा कर लंगर खाओ, नाम दास को बैठा रहने दो, यहाँ तो पूजा का धन आता है।'' महाराज जी के मुखारविंद से यह वचन सुन कर नाम दास जी के हृदय पर चोट लगी तथा उसको अपने शब्दों पर बहुत अफसोस

हुआ और वह महाराज जी के चरणों पर गिर पड़ा और महाराज जी से क्षमा मांगी। जब पूरी बात संगत को पता चली तो वह भी बहुत हैरान हुई। इस तरह जानी-जान सत्गुरू को पहले ही पता होता है कि कोई मन में क्या धारण कर आया है तो ऐसे साधू ही पूर्ण संत महापुरूष होते हैं जो दूसरों के मन की बातें पहले ही जान लेते हैं।

साखी नंबर: 158

कल को 12 बजे बारिश होगी

श्री पूरन चंद जी बताते हैं कि स्वामी सरवण दास महाराज

जी पैदल ही कभी-कभी जालन्धर शहर जाया करते थे।

इसी तरह महाराज जी एक बार जालन्धर को पैदल जा रहे थे। जब वह गाँव नूरपुर पहुँचे तो दोपहर का समय था। गर्मी बहुत थी और कई दिनों से बारिश नहीं हुई थी। इतने में एक नूरपुर का ही ज़मीदार महाराज जी के पास आया तथा उसने महाराज जी को नमस्कार की और कहने लगा,''महाराज जी, गर्मी बहुत पड़ रही है, फसलें सूखी जा रही है। आप कृपा करो बारिश ही आ जाए।'' इस व्यक्ति ने महाराज जी को मज़ाक के तौर में यह शब्द कहे थे वह सोचता था कि इस तरह भगवें वस्त्र पहन कर बहुत से साधू घूमते-फिरते हैं तथा उसको संतों महापुरूषों पर विश्वास ही नहीं था पर वह यह नहीं जानता था कि जिन संतों को उसने यह शब्द कह दिए हैं वह तो कोई अवतारी महापुरूष है जो जन-कल्याण के लिए ही संसार पर प्रगट हुए है। उनको नहीं पता था कि स्वामी सरवण दास महाराज जी जिस तरफ अपना खूंडा घूमाते थे हवा भी उस ओर चल पड़ती थी तथा उसने तो अकेली बारिश पड़ने की बात की थी। उसकी यह बात सुन कर महाराज जी ने कुछ समय सोचा और वचन किया,''कल 12 बारिश हो जाएगी।'' यह वचन कर महाराज जी आगे चल पड़े। फिर दूसरे दिन सुबह को वह व्यक्ति 12 बजे की प्रतीक्षा करने लगा, क्योंकि वह देखना चाहता था कि संतों के वचन पूरे होते हैं, कि नहीं और इसी तरह समय 12 बजे के नज़दीक आ गया, पर आकाश में कहीं भी कोई बादल नहीं दिखाई दे रहा था। वह व्यक्ति सोचने लगा कि अब बारिश नहीं होगी। बहुत तेज़ धूप थी। जब 12 बज गए तो पता नहीं आकाश में एक दम से ही बड़े ज़ोर से बादल आ गए और ज़ोर से बारिश होने लगी। काफी देर तक बहुत बारिश हुई और सब तरफ पानी ही पानी हो गया। फिर वह व्यक्ति महाराज जी

पास आया और महाराज जी के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा। उस को पता चल गया, कि सत्गुरु स्वामी सरवण दास जी पूर्ण संत महापुरुष हैं और वह कुछ भी कर सकते हैं। कभी भी संतों महापुरुषों को परखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

साखी नंबरः 159

बताओ तुम्हारे साथ कैसे हुई

यह घटना श्री पूरन चंद मड़ार जी के लड़के श्री राम प्रकाश के साथ हुई थी। राम प्रकाश जी एक बार अपने घर की छत पर सो रहे थे। उन्होंने रात को सोते हुए देखा कि कोई उसको दातर से काट रहा था। जब सुबह उसकी प्रातः काल आँख खुली तो उनके कपड़ों पर भी खून लगा हुआ था पर उसके शरीर पर कहीं भी चोट का निशान नहीं था। वह यह सब देखकर बहुत हैरान और परेशान हुआ कि यह मेरे साथ क्या हुआ है और वह उसी वक्त ही महाराज जी की कुटिया की ओर चल पड़ा।

जब वह महाराज जी के पास पहुँचा तो महाराज जी ने आते ही उसको पूछा,''हां भाई, बताओ तुम्हारे साथ कैसे हुआ?'' यह सुनकर वह महाराज जी के चरणों में गिर गया और कहने लगा,''महाराज जी मुझे आपने ही तो बचाया है, यह कौतुक क्या था?'' महाराज जी ने उत्तर दिया,''तुम पर आई भारी बला टल गई है, तुम्हारे इस दुःख का निपटारा स्वप्न में ही हो गया है।''

इस तरह पूर्ण संत महापूरुष अपने सेवकों पर आ रहीं बलाओं को भक्ति के बल के साथ दूर कर देते है और सूली से सूल बना देते हैं।

साखी नंबरः 160

अब पछताए क्या बने

9 जून 1972 ई. की बात है कि श्री गुरमेल राम जी और बीबी नंती डेरे में सुबह आए। जब वह शाम को घर जाने लगे तो महाराज पास से उन्होंने आज्ञा मांगी। महाराज जी कहा,''हमारे पास रहो चौथ को चले जाना।''

श्री गुरमेल राम जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, बच्चे घर पर अकेले हैं। हम फिर आ जाऐंगे।'' महाराज जी ने कहा,''दोबारा इस तरह हम से मिलाप नहीं होगा।'' श्री गुरमेल राम ने मन में विचार किया कि शायद महाराज जी ने चौथ को कहीं बाहर जाना होगा। दोनों फिर महाराज जी के पास से आज्ञा लेकर गाँव चले गए। 12 जून सुबह 3 बजे वह अपने घर सो रहे थे,

तो बहुत जोर से आवाज़ सी हुई। श्री गुरमेल जी और बीबी नंती उठ कर बैठ गए तथा सोचा कि कहीं कोई गोली चली है। दिन चढ़ते उनको ख़बर मिल गई कि महाराज जी ज्योति-जोत समा गए, तो वह बहुत पछताए कि अगर हम महाराज जी के पास रह लेते तो अच्छा था।

(30,जुलाई2003, श्री गुरमेल राम और बीबी नंती)

साखी नंबरः 161

श्री रेशम लाल पर कृपा करनी

श्री नंदा राम जी गाँव नौगज्जा के रहने वाले थे। वह महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। श्री नंदा राम का सुपुत्र श्री रेशम लाल स्कूल पढ़ने के पश्चात् अपने साथियों के समेत महाराज जी के पास आ कर पढ़ाई किया करते थे। महाराज जी हर समय उन को पढ़ाई के लिए प्रेरित किया करते थे। महाराज जी डेरे में हर रविवार खीर और पूऐ का लंगर विद्या पढ़ रहे बच्चों तथा संगत के लिए लगाया करते थे। 1963-64 ई. की बात है। उस समय श्री रेशम लाल आठवीं कक्षा में पढ़ते थे। उसके साथ गाँव बल्लां के रहने वाले श्री मुंशी राम जी का लड़का मलकीत भी था। संत सरवण दास महाराज जी ने कहा,'' आपने अफ्सर बनना है इसी लिए पढ़ाई ध्यान से किया करो।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। श्री रेशम जी ने बताया कि,'' मैंने महाराज जी की कृपा से दसवीं कक्षा पढ़ने के बाद डिप्लोमा किया। आज महाराज जी की कृपा से मैं कारपोरेशन डिपार्टमैंट जालंधर में इन्सपैक्टर हूँ। यह सब कृपा संत सरवण दास महाराज जी की है।

(श्री रेशम लाल,गाँव नौगज्जा (आजकल संतोखपुर),जालंधर, 30,जुलाई 2003)

साखी नंबरः 162

श्री दर्शन सिंह हवलदार की 1971 ई. के भारत-पाक युद्ध समय रक्षा करना

श्री तुलसी राम जी और बीबी महां कौर गाँव बूरे जट्टां होशियारपुर वालों का संत सरवण दास जी महाराज से बहुत प्रेम था। 1971 ई. के भारत-पाक युद्ध की बात है, कि जब युद्ध शुरू हुआ श्री तुलसी राम के सुपुत्र स. दर्शन सिंह जोकि फौज में नौकरी करते थे। महाराज जी पास डेरे में आर्शीवाद लेने आए। उन्होंने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,'' महाराज जी मैं युद्ध में

जा रहा हूँ। आप जी ने कृपा करनी।''

महाराज जी ने कहा,''दर्शन चिंता मत करना तुम्हारे शरीर पर खरोंच भी नहीं आएगी।''श्री दर्शन सिंह महाराज जी से आर्शीवाद लेकर जम्मू-कश्मीर में पुंछ सैक्टर में युद्ध में शामिल हुए। जब वह युद्ध कर रहे थे, तो उनके 22 साथियों समेत उनको पाकिस्तानी फौज ने घेर लिया। उनके चारों तरफ बम गिरने लगे। स. दर्शन सिंह ने महाराज जी के चरणों में अरदास की कि,''महाराज जी हमारी रक्षा करो।'' महाराज जी उस जगह प्रगट हुए, तो दर्शन सिंह को कहा कि,''कोई चिंता नहीं करनी।'' दर्शन सिंह और उसके साथी एक गढ्डे में घुस कर उसके कोनों में छिप गए। सारी रात वह इसी तरह गढ्डे में ही रहे। सुबह होने पर वह उस गढ्डे से निकल गए। कुछ दिनों बाद लड़ाई बन्द हो गई।

जब वह घर पहुँचे तो उनके पिता श्री तुलसी राम स. दर्शन सिंह को डेरे में लेकर आए। जब दोनों ने महाराज जी को नमस्कार कर महाराज जी के पास थड़े के पास बैठ गए, तो महाराज जी ने कहा,''भगवान की कृपा से दर्शन सिंह फौजी के शरीर पर खरोंच तक नहीं आई।'' स. दर्शन सिंह ने निवेदन किया कि,''महाराज जिनकी आप रक्षा करने वाले हो उस को खरोंच भी कैसे लग सकती है।''

(गुरदेव सिंहपुत्र श्री तुलसी राम, बूरे जट्टां, होशियारपुर, 02,अगस्त 2003)

साखी नंबर: 163

कीचड़ में फंसी हुई बस को बाहर निकालने की कथा

''श्रीमान गुरदयाल सिंह और बीबी मेहर कौर पर कृपा करना''

लगभग 1942 ई.की बात है। श्रीमान् गुरदयाल सिंह का विवाह बीबी मेहर कौर गाँव कमालपुर नौरा, ज़िला शेखपुर(ननकाना साहिब से आधा किलोमीटर दूर)आज कल पाकिस्तान में स्थित है। सरदार गुरदयाल सिंह जी की बारात संत सरवण दास महाराज जी और उनके साथ रागी ठाकुर दास जी का जत्था भी गया। बारात दो दिन कमालपुर नौरा में रही। सभी संगत ने कथा और कीर्तन का आनंद माना वापिस आते ही बारात एक बस में आ रही थी। रास्ते में बस कल्लर मिट्टी और कीचड़ में फंस गई। ड्राइवर ने सारी सवारी को बस में से उतर कर धक्का लगाने के लिए कहा, पर बस न निकली। फिर महाराज सरवण दास जी ने सारी संगत को कहा,''बस में बैठ जाओ।'' जब

सारी संगत बस में बैठ गई तो महाराज सरवण दास जी भी बस में बैठ गए। महाराज जी ने बस को अपना खूंडा लगाते हुए कहा,''ले भाई अब बस को मैंने धक्का लगाना है।'' कहते हुए ड्राइवर को बस चलाने के लिए कहा। ड्राइवर ने कहा,''आप सब ज़ोर लगाकर हट गए अब बस कैसे निकल सकती है?'' कहते हुए जब बस चलाई तो उसी समय बस निकल गई। सभी संगत महाराज जी के इस कौतुक को देखकर हैरान रह गई।

(स्वयं बीबी मेहर कौर पत्नी स. गुरदयाल सिंह, गाँव ढेपुर-कूपुर, कठार बाद में नूरपुर, जालन्धर)

साखी नंबरः 164

बीबी मेहर कौर की मनोकामना पूर्ण करनी

मिस्तरी गुरदयाल सिंह और बीबी मेहर कौर कपूर रहते थे। उनका संत सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था।

एक समय की बात है कि बीबी मेहर कौर ने अपने मन में धारा की उसने पाँच सक्रांति संगत के जोड़े साफ करने हैं। उन दिनों मकर सक्रांति गाँव बल्लां डेरे में लगती थी। बीबी ने ऐसा ही किया, पाँच सक्रांति संगत के जोड़े साफ किए। पाँच सक्रांति के बाद महाराज सरवण दास जी ने बीबी मेहर कौर को कहा,''बेटी तुमने अपने मन में पाँच सक्रांति जोड़े साफ़ करने का संकल्प किया था,अब वह पूरा हो गया है। बस अब जोड़े साफ़ नहीं करने।'' महाराज जी के वचन सुनकर बीबी मेहर कौर हैरान रह गई, कि मेरे महाराज जी पूर्ण महात्मा हैं।

(स्वयं बीबी मेहर कौर, आज कल संतोखपुर, जालन्धर)

साखी नंबरः 165

श्री मस्सा सिंह फौजी की शंका दूर करनी

श्री उत्तम सिंह विरदी और सारा परिवार गाँव राएपुर-रसूलपुर के रहने वाले महाराज जी के श्रद्धालु थे। 1962-63 ई.की बात है, कि श्री उत्तम सिंह का लड़का मस्सा सिंह जोकि फौज में नौकरी करता था, छुट्टी काटने के लिए घर आए। उनको सुबह 9 बजे मेरठ में नौकरी जाना था। श्री मस्सा सिंह और उनकी पत्नी बीबी नसीब कौर ने दोपहर 12 बजे महाराज जी के डेरे में आकर महाराज जी को नमस्कार किया और निवेदन किया,''महाराज जी, मैं आज मेरठ जा रहा हूँ, सुबह 9 बजे मेरठ पहुँचना है।''

महाराज जी ने कहा कि लंगर खा कर जाना। जब दोनों लंगर-पानी छक कर महाराज जी के पास आए तो मस्सा सिंह को महाराज जी ने कहा,''जा कर गरीब दास के साथ दवाईयां पिसवाओ।'' बीबी नसीब कौर को कहा,''बेटी तुम जाकर बीबी भानी के साथ गेहूँ साफ़ करने की सेवा करो।'' फौजी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैंने आज नौकरी पर जाना है। कल सुबह 9 बजे से पहले स्टेशन पहुँचना है। महाराज सरवण दास जी ने कहा तुम जाकर सेवा करो।''

मस्सा सिंह संत गरीब दास जी महाराज के साथ दवाईयां पीसने लग गए। जब तीन बज कर पैंतालिस मिनट हुए तो महाराज जी ने दोनों को अपने पास बुला लिया और कहा कि,''तुम्हें बहुत जल्दी है।'' इस के बाद महाराज जी ने उनको प्रसाद दिया और जाने की आज्ञा दी।

उन्होंने अपने गाँव आकर सामान बांधा और 4:30 बजे घर से चल पड़े तो उनको राएपुर(आज कल डॉ.अम्बेडकर चौक)एक टांगा मिला। जो कि सवारी छोड़ने आए थे। उस में बैठकर वह पठानकोट रोड पर पहुँचे तो कुछ देर बाद उनको जम्मू-दिल्ली जाने वाली बस मिल गई। जिस में बैठकर वह दिल्ली रवाना हुए। जब वह प्रात:काल दिल्ली बस स्टैंड पर पहुँचे तो वहाँ उनकी यूनिट की गाड़ी फौजियों के मेरठ से दिल्ली बस स्टैंड पर छोड़ने आई थी। उनकी यूनिट के फौजियों ने उनको पहचान लिया। कहा,''सरदार जी आ जाइए इधर से ही चलते हैं, हम यहां अपने कुछ साथियों को छोड़ने आए थे।'' उस फौजी गाड़ी में बैठकर फौजी मस्सा सिंह जी में 8:15 बजे पहुँच गए, जब कि उन्होंने 9 बजे ड्यूटी पर जाना था। यह सारा कौतुक देखकर मस्सा सिंह ने मन में विचारा कि मेरे गुरू पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है। जिनकी कृपा से मैं समय पर ड्यूटी पर पहुँच गया।

(2,अगस्त2003 अमरीक सिंह पुत्र श्री मस्सा सिंह फौज़ी,राएपुर, जालन्धर)

साखी नंबर: 166

श्री मुंशी राम लम्बड़दार की शंका दूर करनी

श्री मस्सा सिंह जी के मामा जी श्री मुंशी राम लम्बड़दार जी का संत महापुरूषों से बहुत प्रेम था। वह जब भी अपनी बहन को गाँव राएपुर मिलने आते तो डेरा बल्लां में संत सरवण दास जी के दर्शन कर ज़रूर जाते थे। 1965-66ई. की बात है, कि श्री मुंशी राम जी गाँव दूहड़े से गाँव राएपुर को

अपनी बहन के घर जा रहे थे, तो उनका रास्ते में मन बना कि आज पहले राएपुर जाऐंगे। उस के बाद डेरे में संतों के दर्शन करेंगे।

जब वह नहर के रास्ते से जा रहे थे, तो डेरे आने वाले पुल पार कर छोटी पुली से थोड़ा आगे गए तो रास्ते में फनीयर सांप बैठा था। उन्होंने कुछ देर इंतज़ार करने के बाद जब सांप से बच कर एक तरफ से चलने लगे तो सांप फिर आगे आ गया। तो छोटी पुली से होते हुए डेरे आ गए। उस समय संत सरवण दास जी महाराज थड़ा साहिब पर विराजमान थे। जब लम्बड़दार ने महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''लम्बड़दार तुमने हमें भुला दिया था। पहले राएपुर चले जाना था। तुम तो डेरे आने जाने वाले रास्ते के आगे से निकल गए थे।'' महाराज जी के वचन सुनकर निवेदन किया कि ,''महाराज जी आप सब जानी जान हो।''

(02,अगस्त 2003,अमरीक सिंह पुत्र श्री मस्सा सिंह राएपुर, जालन्धर)

साखी नंबर: 167

लम्बड़दार के मन का वहम दूर करना

एक समय मुंशी राम लम्बड़दार अमृत समय डेरे में महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने आए। महाराज जी को नमस्कार कर महाराज जी के कमरे में बैठ गए। महाराज जी ने बालक हवाईगर जी को कहा,''हवाईगर बाहर कुछ संगत नामदान लेने आई है, उनको अन्दर बुला लो।'' बालक हवाईगर जी ने उन संगत को महाराज जी पास कमरे में बुला लिया। महाराज जी के आदेश अनुसार बालक हवाईगर जी अमृत तैयार करने लग गए। उस समय लम्बड़दार जी जो कि महाराज जी पास बैठे थे। उन्होंने मन में विचार किया कि मैंने तो नाम भजन डेरे ब्यास से लिया है, तो उठकर जब बाहर आने लगा तो महाराज जी ने कहा,''बैठ जा लम्बड़दार तुम्हारे मन का वहम निकाल दें।''

उस के सामने ही महाराज जी ने कुछ संगत को पाँच शब्द नाम दिया और साथ ही पाँच शब्दों के मुकाम और स्थितियों का वर्णन कर दिया। यह सारा कौतुक देखकर लंबड़दार जी बहुत हैरान हुए और महाराज जी के चरणों में झुक कर कहा कि,''महाराज जी आप सब जानी जान हो।''

(02,अगस्त 2003, अमरीक सिंह पुत्र श्री मस्सा सिंह फौजी, गाँव राएपुर रसूलपुर आजकल संतोखपुर,जालन्धर)

साखी नंबरः 168

श्री साधू राम पर कृपा करनी

श्री साधू राम जी और उनकी पत्नी बीबी पारो जी महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। उनके मन में यह तीव्र इच्छा थी कि महाराज जी जब भी मेरे पर नाम दान देने की बख्शिश करें तो मुझे अंदर(भीतर)का ज्ञान दें। लगभग 1945 ई. की बात है कि श्री साधू जी और उनकी पत्नी महाराज जी के पास डेरे में आए तो उन्होंने महाराज सरवण दास जी के आगे नाम दान बख्शिश करने के लिए निवेदन किया। महाराज जी ने कहा,''आप किसी दिन सुबह प्रातःकाल गाँव डेरे में आना। उस समय गाँव डेरे में एक कच्चा मकान था।'' कुर्छि दनोंके ब ादश्र ीस ाधूर ामज ीअ ौरउ नकीप त्नीब ीबीप ारोद ोनों प्रातःकाल गाँव डेरे में पहुँचे। श्री साधू राम जी को हुक्का पीने की आदत थी। जानी-जान महाराज सरवण दास जी ने कहा,''साधू राम आज के बाद कभी हुक्का नहीं पीना।'' श्री साधू राम जी ने कहा,''सत्य वचन जी।'' फिर उस के बाद दोनों को केवल एक शब्द(नाम दान)की बख्शिश की। महाराज जी ने दोनों को आँखें बंद कर अपना ध्यान दोनों आँखें के ऊपर टिका कर शब्द का अभ्यास करने के लिए कहा।

महाराज जी ने श्री साधू राम जी के सिर पर हाथ रखते हुए कहा,''बाद में मत कहना कि हमें कुछ दिखाया ही नहीं।'' श्री साधू राम जी बताते हैं कि कुछ समय मैंने संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से वह आनंद देखा जो कि बयान ही नहीं किया जा सकता। ऐसे कहते हुए आज उनका मन बहुत उदास हो गए और उनकी आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने आगे कहा कि आज तक संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से मुझे किसी भी वस्तु की कमी महसूस नहीं हुई।

साखी नंबरः 169

श्री गुरदयाल सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी हरि कौर को पुत्रों की दात बख्शिश करनी

श्री गुरदयाल सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी हरि कौर जी जो कि आबादपुर के रहने वाले थे। उन्होंने महाराज सरवण दास जी की महिमा सुनी। दोनों पति-पत्नी डेरे में महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने आए। उन्होंने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''हमारे घर केवल एक लड़की ही है। महाराज जी हमारे बच्चे जन्म ले का मर जाते हैं। आप कृपा करो जी।''

महाराज सरवण दास जी ने कहा,''कोई चिंता नहीं करनी और परमात्मा की कृपा से आपके घर दो पुत्र पैदा होंगे।'' जो कि बिल्कुल ठीक रहेंगे। महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर में दो पुत्रों ने जन्म लिया।

(बीबी मेहर कौर सुपत्नी सरदार गुरदयाल सिंह, नूरपुर)

साखी नंबर: 170

श्री नाजर सिंह और उनकी सुपत्नी बीबी धन्ती को पुत्रों की दात बख्शिश करनी

श्री नाजर सिंह और बीबी धन्ती जो कि गाँव रेरू के रहने वाले थे। उनके घर तीन लड़कियां ही थी। एक दिन उन्होंने बीबी अमरो जिसके मायके गाँव मोखे और ससुराल गाँव रेरू थे। उन को संत सरवण दास महाराज जी की महिमा सुनाई कि,''वह पूर्ण महात्मा है। वह आप पर भी बख्शिश करेंगे। आप दोनों पति-पत्नी मेरे साथ महाराज जी के पास चलो।'' फिर एक दिन वह बीबी अमरो, बीबी धन्ती को साथ ले कर महाराज सरवण दास जी के पास आए। बीबी अमरो ने महाराज सरवण दास जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी बीबी धन्ती के तीन लड़कियां ही है। लड़का कोई नहीं है आप इस पर कृपा करो जी।''

महाराज सरवण दास जी ने कहा,''बेटी, इसके घर एक पुत्र नहीं बल्कि, पाँच पुत्र होंगे।'' महाराज सरवण दास जी के वचन अटल हुए। श्री नाजर सिंह और बीबी धन्ती के घर पाँच पुत्र हुए। इस प्रकार महाराज सरवण दास जी ने उन पर कृपा की।

(श्रीमती गुरमेज कौर पत्नी श्री जगदीश लाल,आबादपुर, 6,अगस्त 2003)

साखी नंबर: 171

स.कुलदीप सिंह को पुत्र की बख्शिश करनी

श्री गुरदयाल सिंह जी और बीबी मेहर कौर गाँव नूरपुर वालों का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। महाराज जी अक्सर नूरपुर उनके घर जाया करते थे। दोनों पति-पत्नी और सारा परिवार महाराज जी के दरबार में सेवा किया करते थे।

एक दिन गाँव नूरपुर के निवासी नंबरदार के पुत्र कुलदीप सिंह ने कहा कि ,''अगर बल्लां वाले संत इतनी करनी वाले हैं, तो मेरे कोई औलाद नहीं है, मुझे औलाद की बख्शिश करें तो मैं उनको ही मांनूगा।'' स. गुरदयाल सिंह

तथा बीबी मेहर कौर ने उनको महाराज सरवण दास जी की महिमा सुनाई और कहा कि,''आप उनके पास चलो तुम्हारे पर उनकी कृपा होगी।''

फिर एक दिन मिस्त्री गुरदयाल सिंह, स.कुलदीप सिंह तथा उन की पत्नी को साथ ले कर डेरे में आए और महाराज जी के आगे निवेदन किया कि ,''महाराज जी, इनकी शादी को काफी वर्ष हो गए। इनके कोई औलाद नहीं है। आप कृपा करो।'' महाराज जी ने दोनों को आर्शीवाद देते हुए कहा कि आपके घर पुत्र जन्म लेगा महाराज जी के अटल वचन अनुसार कुछ समय पश्चात् उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया।

(बीबी मेहर कौर)

साखी नंबरः 172

स. कपूर सिंह की बीमारी दूर करनी

स.कपूर सिंह जी जो कि गाँव राएपुर रसूलपुर ज़िला जालन्धर के रहने वाले थे। उनकी महाराज सरवण दास जी प्रति बहुत श्रद्धा है। उसके पेट में अक्सर दर्द रहता था। जिस का इलाज़ उन्होंने बहुत सारे डॉक्टरों व वैद्यों हकीमों के पास से करवाया। पर उनको आराम नहीं आया। जब उनके पेट में ज़्यादा दर्द होती थी तो वह महाराज जी पास आ कर दवाई खा लेते थे तो दर्द से आराम आ जाता था।

एक बार उनके पेट में बहुत तेज़ दर्द हुई तो उन्होंने डेरे आ कर महाराज जी आगे निवेदन किया महाराज जी ने कहा कि,''आज तुम्हें बिल्कुल ठीक कर देंगे। साथ ही महाराज जी ने कहा कि जाओ। लंगर खा कर आओ।'' जब वह लंगर में आ कर बैठे तो हलवा कद्दू की सब्ज़ी बिल्कुल थोड़ी सी ली। (स.कपूर सिंह ने मन में विचार किया मुझे वाये वादी वाली चीज़ से दर्द बढ़ती है, कद्दू की सब्ज़ी भी वाये वादी वाली है)इतने में ही उस का ध्यान अपने पीछे की ओर गया तो क्या देखते हैं कि हजूर महाराज जी उसके पीछे खड़े है। महाराज जी ने सेवादार को कहा कि,''एक चम्मच भर कर सब्ज़ी का इस को डाल दो।'' कपूर सिंह ने कहा कि,''महाराज जी बस इतनी ही काफी है।'' महाराज जी ने सेवादार को फिर कहा कि,''इस को और सब्ज़ी का चम्मच भर कर डालो।'' सेवादार ने सब्ज़ी का एक और चम्मच डाल दिया। महाराज जी ने कहा कि,''तुमने दवाई खा-खा कर खत्म कर दी है। आज तुम्हें मीठे कद्दू की सब्ज़ी खिला कर ही ठीक कर देंगे।'' स.कपूर सिंह ने सत्य वचन कह कर

सारी सब्ज़ी खा ली। स.कपूर सिंह ने बताया कि उस दिन के बाद आज तक उनके पेट में वह दर्द दोबारा नहीं हुई। इस प्रकार सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने स.कपूर सिंह को कद्दू की सब्ज़ी खिला कर ही दर्द से उस की सदैव के लिए निवृती कर दी।

(स्वयं स.कपूर सिंह पुत्र स.चमन सिंह, राएपुर रसूलपुर, 7,अगस्त 2003)

साखी नंबर: 173

स.कपूर सिंह की शंका दूर करनी

एक समय की बात है कि राएपुर रसूलपुर गाँव में कुछ लकड़ियां पड़ी थी। उन्होंने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे पास कुछ लकड़ियां है। आप वह लकड़ियां उठवा कर डेरे में ले आओ जी।'' एक दिन शाम को महाराज सरवण दास जी ने श्री सत्तू किशनगढ़ तथा श्री जगत राम दोनों को स.कपूर सिंह के पास भेजा कि स.कपूर सिंह के बैलगाड़ी पर लकड़ियां ले आओ। दोनों सेवादार स.कपूर सिंह के घर राएपुर रसूलपुर में गए तथा लकड़ियां डेरे पहुँचाने के लिए कहा। स.कपूर सिंह ने उत्तर दिया,''अब बादल बहुत आ गए, मैं लकड़ियां सुबह छोड़ आऊँगा। आप डेरे जाओ।'' श्री जगत राम तो मान गए पर श्री सत्तू ने कहा,''अभी ही जाना है।''

स.कपूर सिंह दोनों को साथ ले कर गाँव से लकड़ियां बैलगाड़ी पर ले कर जब डेरे पहुँचे। उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार की तो उस समय जानी-जान महाराज जी ने कहा,''सत्तू जब तुम्हें कपूर सिंह कहता था कि बादल बहुत आ गया है, मैं यह लकड़ियां सुबह छोड़ आऊँगा, तुम उस का कहना क्यों नहीं माने?'' महाराज जी के इस प्रकार वचन करने से सारे हैरान रह गए कि महाराज जी डेरे थे इन को सारी वार्तालाप का कैसे पता चला?'' फिर महाराज जी ने कहा कि,''लंगर खा कर फिर लकड़ियां उतारना।'' महाराज जी ने सेवादार को कह कर दोनों बैलों को गुड़ और रोटी दी। जब स. कपूर सिंह जी गाँव वापिस जाने के लिए महाराज जी से आज्ञा लेने लगे तो महाराज जी ने कहा ''कपूर सिंह बैलों को डंडा नहीं मारना। तुम्हारे घर पहुँचने पर बारिश।''

जब स.कपूर सिंह बैलगाड़ी पर बैठ कर वापिस गाँव जा रहे थे तो उन्होंने धीरे से एक बैल के डंडा मार दिया। वह डंडा उनके हाथ में से निकल कर ज़मीन पर गिर पड़ा। जब वह घर पहुँचा तो बहुत ज़ोर से बारिश पड़ी।

स.कपूर सिंह ने मन में विचार किया कि संतों ने सत्य ही कहा था कि घर पहुँचने पर बारिश होगी। दूसरे दिन सुबह स.कपूर सिंह डेरे में आए। जब उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''तुम्हें कहा था कि बैल के डंडा नहीं मारना, पर तुमने एक बैल के डंडा मारा था। दूसरे के भी मार देते। तुम्हारा डंडा कल रात का वहीं पर पड़ा है। जाते हुए उठा कर ले जाना।''

महाराज जी के वचन सुन कर स.कपूर सिंह जी बहुत हैरान हुए। जब वह महाराज जी से आज्ञा ले कर गाँव वापिस जा रहे थे। उनका डंडा वहीं का वहीं पड़ा था। वह उस डंडे को उठा कर घर ले गए। इस कौतुक का स.कपूर सिंह पर बहुत प्रभाव पड़ा। उस की श्रद्धा और भी बढ़ गई।

(स्वयं स.कपूर सिंह जी)

साखी नंबर: 174

गेहूँ जल्दी काट लो

स.कपूर सिंह जी अक्सर डेरे में आया करते थे। गेहूँ की कटाई का समय था। एक दिन वह सुबह डेरे में महाराज सरवण दास जी के दर्शन करने आए। जब स.कपूर सिंह ने महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी ने कहा,''कपूर सिंह शक्कर डाल कर पानी पी कर जल्दी घर चले जाओ और घर जा कर गेहूँ काट लो।'' स. कपूर सिंह ने उत्तर दिया,''महाराज जी, मशीन वालों को कहा था वह कहते थे हमारे पास अभी समय नहीं है। हम हफ़्ते तक मशीन ला कर गेहूँ काट देंगे। दूसरा कारण महाराज जी, मेरे भाई गुरदयाल सिंह को बुखार हुआ है और मदद करने के लिए कोई नहीं है।'' महाराज सरवण दास जी ने कहा,''गेहूँ अभी ही जा कर काटनी है। व्यक्ति और आ जाऐंगे तथा गुरदयाल सिंह भी तुम्हारे साथ गेहूँ कटवाएगा।'' साथ ही महाराज जी ने कहा कि,''सारी गेहूँ कट जाने तक मशीन लगातार चलती रहे। बंद नहीं करनी।'' स.कपूर सिंह जी सत्य वचन कह कर महाराज जी से आज्ञा ले कर वापिस कुएँ पर पहुँच गए। उन्होंने क्या देखा कि गेहूँ काटने वाले मशीन ले कर 8-9 व्यक्ति पहुँचे हुए हैं। और दो रिश्तेदार भी आए हुए हैं। उसके भाई गुरदयाल सिंह ने भी कहा कि,''मैं अब ठीक हूँ। मैं भी गेहूँ कटवाऊँगा।'' उस वर्ष उन्होंने 15 खेत गेहूँ के बोए हुए थे। गेहूँ काट कर बाँध कर रखी हुई थी। मशीन लगातार चार दिन और चार रात चलती रही।

जब थोड़ी सी गेहूँ रह गई तो कपूर सिंह ने साथियों को कहा कि,''मशीन बंद करके इकठ्टे चाय पीते हैं। यह थोड़ी सी गेहूँ तो बारिश आते ही काट देंगे।'' उस समय आसमान बिल्कुल साफ था। जब वह चाय पी ही रहे थे तो अचानक ही बहुत तेज़ बारिश हुई। खेतों में पानी ही पानी हो गया। स.कपूर सिंह ने अपने साथियों को बताया कि,''संत सरवण दास महाराज जी ने कहा था कि मशीन बंद नहीं करनी। देख लीजिए हमने मशीन बंद कर दी तो बारिश आनी आरम्भ हो गई। अगर जो थोड़ी सी गेहूँ बची थी उसको भी काट कर मशीन बंद करते तो संतों के अटल वचन अनुसार मशीन बंद होने पर ही बारिश आनी थी।''

(स.कपूर सिंह,7,अगस्त 2003)

साखी नंबर:175

स.प्यारा सिंह को झूठे केस से बचाना

1962 ई. दिसम्बर महीने की बात है। श्री चन्नण सिंह गाँव खडियाला सैनियां के घर में सत्संग था। संत सरवण दास महाराज जी उनके घर में गए। स.प्यारा सिंह की पत्नी बीबी बेअन्त कौर तथा उनका बेटा श्री बलदेव सिंह गाँव लाम्बड़ा नज़दीक बुलोवाल से महाराज जी के दर्शन करने गए। महाराज सरवण दास जी ने सत्संग किया। जिस समय सभी संगत ने लंगर खा लिया तो महाराज सरवण दास जी ने बीबी बेअन्त कौर तथा बलदेव सिंह को अपने पास बुलाया और कहा कि,''प्यारा सिंह पर लड़ाई दौरान झूठा केस पड़ गया है।'' महाराज जी ने बलदेव सिंह को कहा कि,''तुम कल फिरोज़पुर में जा कर प्यारा सिंह को मिल कर आओ तथा उस को कहना कि तुम सच्चे हो और कोई चिंता नहीं करनी।''

दूसरे दिन बलदेव सिंह ने अपने पिता श्री प्यारा सिंह को महाराज जी के सारे वचन सुनाऐ और सुनते ही प्यारा सिंह को हौंसला हो गया। उन्होंने मन में विचार किया कि जानी-जान संत महाराज जी ने मेरी परेशानी जान ली है।

श्री प्यारा सिंह ने अपने बेटे को बताया कि,''भारत-चीन लड़ाई दौरान मेज़र करतार सिंह दफ़्तर आए। उन्होंने मुझे एक बैग दिया और कहा कि,''यह बैग अपने पास रख लो।'' मैंने वह बैग दफ़्तर में रख लिया। जब कुछ दिनों बाद मेज़र करतार सिंह ने बैग माँगा, मैंने देखा कि जहाँ मैंने वह बैग रखा था, वह बैग वहाँ नहीं था। वह किसी ने चोरी कर लिया था। मैंने मेज़र करतार सिंह

को बताया कि,‘‘वह बैग किसी ने चोरी कर लिया है।’’ स.करतार सिंह ने कहा कि उस बैग में तो बहुत सारे रूपये थे। पर मैंने उनको कहा,‘‘मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं है।’’ इस प्रकार मेरे ऊपर चोरी का केस बन गया। बलदेव सिंह ने अपने पिता को पूछा कि,‘‘आप ने कोई वकील नहीं किया।’’ तो स.प्यारा सिंह ने कहा कि,‘‘मैं सच्चा हूँ और मेरे वकील स्वयं महाराज जी है।’’

एक हफ़्ता रह कर जब बलदेव सिंह फिरोज़पुर से वापिस डेरे में आए तो महाराज सरवण दास जी उनको अपने साथ सैर के लिए ले गए। महाराज जी ने तरवैणी ऊपर छोटे पुल पर खड़े हो कर परमात्मा के आगे अरदास की,‘‘हे अकाल पुरख अगर प्यारा सिंह सच्चा है तो तरक्की करके सूबेदार बन कर कुटिया में आए।’’ महाराज जी ने कहा कि,‘‘बलदेव सिंह, अब तुम घर जाओ। उसके बाद म्समअमद बतवचे में केस चला। फैसले के लिए ळण्व्ब्ण् ठ०ात्क् बैठा दिया गया। पहले दिन सारा केस प्यारा सिंह के विरूद्ध जा रहा था। दूसरे दिन पदुनमतल शुरू होने से पहले सभी फाइलें बदली हो गई फैसला सरदार प्यारा सिंह के हक में हुआ। वह चोरी के झूठे केस से बरी हो गए। यूनिट फिरोज़पुर केस की रिपोर्ट भेजी गई। उसके बाद सरदार प्यारा सिंह को तरक्की मिली। नायब सूबेदार बनने के बाद छुट्टी मिलने पर डेरे में महाराज जी के दर्शन करने के लिए आए।

उन्होंने महाराज जी को नमस्कार की और कहा कि,‘‘महाराज जी, आप की कृपा से मैं झूठे केस में से बरी हो गया हूँ।’’ महाराज जी के आदेश के अनुसार उन्होंने अपने घर में सत्संग करवाए। महाराज जी सत्संग वाले दिन उनके घर गाँव लाम्बड़ा में गए। महाराज जी ने सत्संग करते हुए सभी संगत को सम्बोधन करते हुए कहा,‘‘हे अकाल पुरख, भीड़ के समय हमने अरदास की थी कि प्यारा सिंह सच्चा है और साफ बरी हो जाए तथा इस को तरक्की मिले। शुक्र अदा करने के लिए सत्संग करवाए हैं।’’ इस प्रकार महाराज संत सरवण दास जी ने सरदार प्यारा सिंह को झूठे केस से निवृत किया।

साखी नंबर: 176

आज दूध बढ़ गया है

यह घटना 1970 ई. की है जब कि डेरे में सत्संग का प्रवाह चल रहा था। प्रात:काल 3:30 बजे संत सरवण दास महाराज जी गाँव डेरे से कुटिया में

पहुँचे। महाराज जी ने स.गुरदेव सिंह जी को पूछा,''संगत को चाय पानी भी पिलाते हो ।'' स.गुरदेव सिंह ने उत्तर दिया कि,''महाराज जी, आज दूध बढ़ गया।'' महाराज जी ने कहा,''क्या...आज दूध बढ़ गया है?''

अच्छा, महाराज जी ने आंगन के दो चक्कर लगाए। देखते-देखते ही क्या हुआ। जो भी श्रद्धालु महाराज जी के पास आए दूध की बाल्टी ले कर आ रहा था। महाराज जी ने सेवादारों को हुक्म किया कि,''दूध वाली बड़ी बाल्टी में डाली जाओ।'' थोड़ी देर बाद श्री लभ्भू राम ने निवेदन किया कि,''बड़ी बाल्टी दूध से भर गई है। महाराज जी ने कहा कि अब दूध छोटी बाल्टी में डालो। फिर महाराज जी ने श्री लभ्भू राम जी को कहा कि,''बड़ी बाल्टी में सवा मन चावल डाल कर खीर बनाओ और साथ-साथ संगत के लिए चाय पानी का लंगर भी चल रहा था। फिर महाराज जी ने लभ्भू राम जी को हुक्म किया कि,''सवा मण आटा घोल कर माल पूऐ बनाओ।''

उसके बाद महाराज जी सैर के लिए चले गए और आठ बजे वापिस आए। महाराज जी के हुक्म अनुसार सत्संग हुआ और दस बजे लंगर की पंगत लगाई गई। महाराज जी ने सेवादारों को कहा कि,''माल पूऐ की लूट डाल दो।'' महाराज जी ने सारी सगंत को लंगर छका कर जल्दी से घर जाने के लिए कहा। सेवादार सोच रहे थे कि आज महाराज जी जल्दी से जल्दी लंगर छका कर क्यों भेज रहे हैं? उस समय कुछ संगत ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, हम तो अभी आए ही हैं। महाराज जी ने कहा,''लंगर खाओ।''

कुछ ही समय में गाँव मन्नणां की ओर से बादलों की काली घटा आई और दो घंटें बहुत ज़ोरदार बारिश हुई तो सारी संगत ठंडी से कांपने लगी। महाराज जी ने हुक्म अनुसार सभी संगत को चाय पिलाई गई और सभी संगत को छुट्टी दी गई। इस प्रकार जो दूध बढ़ गया था(भाव खत्म हो गया था)महाराज जी की कृपा से दूध की कई बाल्टियां भर गई।

(स्वयं स.गुरदेव सिंह जी पुत्र स.प्यारा सिंह, गाँव लाम्बड़ा)

साखी नंबर: 177

मुट्ठी भर कर संगत की ओर लुगाठें फेंकना

यह साखी 1972 ई. की है। जोकि सुखविंदर सिंह पुत्र श्री सरना राम गाँव किशनगढ़ जो कि अम्बाला में नौकरी करते थे। उनके साथ बीती थी।

सुखविंदर सिंह जी के दो लड़कियां थे और पुत्र कोई नहीं था। एक बार

वह डेरे में आए। महाराज सरवण दास जी के पास निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर दो लड़कियां ही हैं। आप जी कृपा करो पुत्र की दात बख्शिश करो।'' महाराज जी कहने लगे,''बैठ जाओ।'' सुखविंदर सिंह और उन की पत्नी नसीब कौर बाकी बैठी हुई संगत में बैठ गए। कोई महाराज जी का श्रद्धालु सेवक लुगाठें ले कर आए। वह लुगाठें महाराज जी के पास पड़ी हुई थी। महाराज जी ने एक मुट्ठी भर कर लुगाठें संगत की ओर फैंकी। उनमें से एक लुगाठ बीबी नसीब कौर की झोली में गिर गई। उन्होंने इस को महाराज जी का प्रसाद समझा। क्योंकि लुगाठ बीबी नसीब कौर की झोली में गिरी थी तथा उन्होंने समझा कि महाराज जी ने पुत्र का आर्शीवाद दिया है। यह बात आगे जा कर सच भी हुई। झोली में गिरी लुगाठ के खाने से ही उन को पुत्र की प्राप्ति हुई।

साखी नंबर: 178

बीबी धन्ती को तुरन्त घर भेजना

यह घटना 1952 ई. की है। माता धन्ती पत्नी रेशम सिंह गाँव राएपुर ज़िला जालन्धर के साथ बीती। बीबी धन्ती जी महाराज सरवण दास जी के बहुत श्रद्धालु थे। वह डेरे में रोज़ाना दूध तथा लस्सी ले कर आते थे। इसी तरह ही एक दिन जब बीबी धन्ती डेरे में आए। महाराज जी को नमस्कार की और पास बैठ गए, तो महाराज जी कहने लगे,''बीबी जी, यहाँ मत बैठो, जल्दी-जल्दी घर चले जाओ। रास्ते में कहीं नहीं रूकना, सीधे घर चले जाना।'' बीबी धन्ती जी सोचने लगे कि,''आज क्या बात हो गई महाराज जी ने तो मुझे ऐसे कभी भी नहीं कहा।'' वह यह सोचती-सोचती घर को चली गई और घर जा कर देखा कि उनकी कोठड़ी भी खुली पड़ी थी और ट्रंक भी खुला ही रह गया था। ट्रंक में उनके गहने और माया थी। पर बीबी यह देख कर हैरान थी कि सब कुछ खुला होने के बावजूद भी उनकी कोई भी चीज़ गुम नहीं हुई। सो इस तरह महाराज जी ने बीबी धन्ती के घर सम्पत्ति की रक्षा की और बीबी धन्ती को भी समझ आ गई कि महाराज जी ने उस को घर को जल्दी जाने के लिए क्यों कहा था?

साखी नंबर: 179

बीबी अमरो के दु:ख काटने

1970 ई. की बात है। श्री साधू राम अलावलपुर के रहने वाले थे।

उनकी पत्नी बीबी अमरो दो साल से बीमार थी। वह चल-फिर भी नहीं सकती थी। श्री साधू राम जी महाराज सरवण दास जी प्रति बहुत श्रद्धा थी। साधू राम अपने गाँव से बीबी अमरो को साइकिल पर बैठा कर साइकिल पैदल लेकर आए। जब वह डेरे पहुँचे तो महाराज सरवण दास जी ने बीबी अमरो के दो डंडे मारे तो वह ठीक हो गई। फिर महाराज जी उनके पीछे दौड़े गाँव मोखे तक। कहाँ तो बीबी अमरो चल-फिर नहीं सकती थी पर जब महाराज जी ने डंडे मारे तो वह दौड़ने लग पड़ी।

फिर महाराज जी ने उनको डेरे ला कर कहा,''अब घर जाओ।'' बीबी अमरो बल्लां निवासी गोले की भतीजी थी तथा रमदासपुर वाले पूरन की लड़की थी। जब वह नहर के पास गए तो कहने लगे,''संतों ने हमें चाय नहीं पिलाई हम चाय चाचा गैले के घर जा कर पीयेंगे।'' इतने में महाराज जी आगे से आ गए तथा कहने लगे,''तुम्हें डेरे चाय नहीं मिलती चलो डेरे।'' डेरे ला कर महाराज जी ने कहा,'' आपका दुःख यह खूंडे(डंडे) लगने से हटना था।'' इस प्रकार महाराज जी ने बीबी अमरो पर कृपा की थी।

साखी नंबरः 180

आज बारिश होगी

संत सरवण दास महाराज जी प्रति दिन शाम को गाँव डेरे रात को जाया करते थे। गाँव में प्रति दिन शाम को सत्संग हुआ करता था। एक दिन की बात है महाराज जी शाम के सात बजे कुटिया से गाँव डेरे को जा रहे थे। संगत के साथ संत गरीब दास जी मिस्त्री दौलत राम गाँव चमिआरे वाले भी उनके साथ थे। महाराज जी व्यंग्म चाल में जा रहे थे और दाऐं हाथ से अपना खूंडा घूमा रहे थे। साथ-साथ संगतें भी पा रही थी। अचानक महाराज सरवण दास जी रूके और अपनी धोती को सही करके बाँधने लग पड़े और कहने कि,''इस तरह हम एक गाँव प्रोग्राम पर जा रहे थे। संत चेतन दास जी हमारे साथ थे। पैदल जाते समय हमारी धोती का लड़ खुल गया था, हमने संत चेतन दास जी को बताया चेतन दास हमारी धोती का लड़ खुल गया है संत चेतन दास जी कहने लगे,''महाराज जी, आज ज़रूर बारिश होगी। सो उस दिन बहुत बारिश हुई।'' ऐसे उच्चारण कर करके महाराज जी गाँव को चले गए। उस रात आसमान बिल्कुल साफ था और रात के दो बजे। बहुत ज़ोरदार बारिश हुई। जो महाराज जी के साथ संगत थी उन्होंने विचार किया कि संत चेतन दास जी ने ठीक ही कहा था कि,''महाराज जी, आज आपकी धोती का लड़ खुला है। बारिश

ज़रूर होगी सो ऐसी बात आज हुई। महाराज जी ऐसे ब्रह्मज्ञानी थे जिनके ऐसे करने से बारिश ज़रूर होती थी।

साखी नंबरः 181

श्री दौलत राम जी की इच्छा पूर्ण करनी

श्री दौलत राम पुत्र श्री मेला राम जी गाँव चुखियारा जिनके मन में यह बात थी कि मैंने गुरू उन महात्मा को धारण करना है जो सत्‌गुरू रविदास जी महाराज के मिशन पर चलते हो और सारे दबे-कुचले समाज को सहारा देते हों और उनके मन में यह बात भी थी कि ऐसे जानी-जान महात्मा मुझे पहली बार मिलने पर ही नाम की बख्शिश कर दें। वह ऐसे गुरू की तलाश में रहते थे।

एक दिन की बात है कि मिस्त्री दौलत राम जी के गाँव अरजनवाल से श्री जगीरी राम जी आए जो कि गाँव अरजनवाल के रहने वाले थे और मिस्त्री दौलत राम जी के रिश्तेदार थे। जब वह गाँव चुखियारा में रात रहे तो रात समय उन्होंने संत सरवण दास महाराज जी की बहुत महिमा की कि,''जहाँ संत सरवण दास महाराज जी नाम के रसीऐ, ब्रह्मज्ञानी है वहाँ साथ ही हमारे समाज का उद्धार करने आए हैं। संत सरवण दास महाराज जी सत्‌गुरू रविदास महाराज जी के मिशन को घर-घर पहुँचाते हैं और संगतों को हमेशा अपने बच्चे को विद्या की प्रेरणा, नशों से रहित रहने की, अंधविश्वास से मुक्त होने की और परमात्मा का नाम जपने का पावन उपदेश देते थे।'' जिस समय श्री दौलत राम जी ने संत सरवण दास महाराज जी की महिमा श्रवण की तो उनके मन में पूर्ण विश्वास हो गया कि जिन महापुरूषों की मुझे तलाश थी वह महापुरूष मुझे मिल गए हैं।

इस दिन से दूसरे दिन ही 1964 ई. को दशहरे के दिन को श्री दौलत राम जी एक पगड़ी ले कर साइकिल पर कुटिया की ओर चल पड़े और उनका पक्का संकल्प और श्रद्धा थी कि,''महाराज जी, आज मेरे पर कृपा करके नाम दान की बख्शिश करेंगे।'' जब श्री दौलत राम जी कुटिया में पहुँचे तो उस समय महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। उनके पास ही सत्संग हो रहा था। जब श्री दौलत राम जी ने महाराज जी के दर्शन किए तो उनको ऐसा अनुभव हुआ कि आज मेरे मन की भटकन खत्म हो गई। मुझे पूर्ण गुरू मिल गए हैं। उनके मन की अवस्था ऐसी हो गई जैसे पपीहे को स्वाति बूंद प्राप्त हो जाती

है। श्री दौलत राम जी ने महाराज जी को नमस्कार की और सत्संग में बैठ गए। दो घंटें बाद सत्संग की समाप्ति हुई और 12 बजे महाराज जी ने सभी संगत को लंगर खाने के लिए कहा। सभी संगतें लंगर छकने के लिए चल पड़ी। महाराज जी थड़ा साहिब से उठ कर अपने कमरे में पलंग पर विराजमान हो गए। श्री दौलत राम जी भी महाराज जी के पीछे ही कमरे में आ गए और पगड़ी महाराज जी के आगे रख कर निवेदन किया कि,''मेरे पर नाम दान की कृपा करो। जानी-जान महाराज सरवण दास जी ने श्री दौलत राम जी के परिवार बारे पूछने के बाद उन को नाम दान की बख्शिश कर दी। इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी ने श्री दौलत राम जी के मन का संकल्प और इच्छा पूरी की।

(स्वयं श्री दौलत राम जी,गाँव चुखियारा, 9 सितम्बर 2003)

साखी नंबर: 182

महाराज सरवण दास जी का श्री दौलत राम जी के घर जाना

मिस्त्री दौलत राम जी और उनका परिवार हर रविवार, हर सक्रांति पर संत सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने के लिए कुटिया में आया करते थे। 1971ई. की बात है, गाँव चुखियारा के वसनीक एक आदमी ने मिस्त्री दौलत राम जी को बताया कि,''कल हमारे रिश्तेदारों के गाँव खोजेवाल में सत्संग पर महाराज सरवण दास जी आए। उनका सत्संग सुनकर संगत ने अपना जीवन सफल किया।'' उस समय मिस्त्री दौलत राम जी के मन में संकल्प हुआ कि कभी हमारे घर में भी संत सरवण दास जी महाराज सत्संग करने आऐंगे। पर उनके मन में संत सरवण दास महाराज जी के प्रति अधिक श्रद्धा थी। उनके मन में पक्का संकल्प हो गया कि महाराज सरवण दास जी मेरे घर में आकर संगत को सत्संग श्रवण करवायेंगे। वह अगले दिन ही सुबह महाराज जी के चरणों में हाज़िर हुए। उस समय ज्येष्ठ का महीना था। 15 ज्येष्ठ1971 ई.को महाराज जी के दर्शन करने के लिए कुटिया पहुँचे। उस समय संत सरवण दास जी महाराज थड़े पर विराजमान थे। मिस्त्री जी महाराज जी को नमस्कार कर उनके पास ही बैठ गए। इस के बाद एक आदमी ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर चरण डालो जी।'' महाराज जी ने उस को कहा कि,''कोई बात नहीं,जब समय आ गया तो हम अवश्य आऐंगे।'' इस के बाद मिस्त्री दौलत राम जी ने मन में सोचा कि कहीं महाराज जी, मुझे भी जवाब न दें। अभी वह मन में विचार कर रहे थे,उसी

समय सब के मन की जानने वाले महाराज सरवण दास जी ने पूछा,'' भाई, तुम आज किस तरह आए हो?'' मिस्तरी दौलत राम जी ने महाराज जी आगे नम्रता सहित निवेदन किया,''महाराज जी, मैंने अपने घर में आपके चरण डलवाने हैं। आप कृपा करनी जी और महाराज जी सत्संग करवाने का भी विचार है।'' महाराज जी ने कहा कि,''25 ज्येष्ठ दिन मंगलवार सत्संग होगा और हम भी आऐंगे।'' महाराज जी के मुख से ऐसे वचन सुनकर मिस्त्री का मन खुश हो गया। वह शुभ दिन 25 ज्येष्ठ दिन मंगलवार आ गया। महाराज सरवण दास जी, कवि तोता राम, संत प्रेम दास, मास्टर ठाकुर दास गाँव बसी और अन्य संगत समेत श्री दौलत राम जी के घर पहुँचे। महाराज जी जिस समय जीप से उतरे तो दौलत राम जी ने महाराज जी को नमस्कार की और महाराज जी ने कहा कि,''इस गाँव में हमारे समाज का यह पहला सत्संग है।'' महाराज जी ने संगत को सत्संग कर निहाल किया। इस प्रकार ब्रह्मज्ञानी महाराज सरवण दास जी ने मिस्त्री दौलत राम के प्रेम को देखते हुए उनके गाँव चुखियारे में पहली बार चरण डाले।

साखी नंबर: 183

श्री गुरमेल राम और बीबी नंती के पुत्र ठीक करने

श्री गुरमेल राम और बीबी नन्ती जी गाँव डक्क पंडोरी नज़दीक फगवाड़ा के रहने वाले थे। उनके चार पुत्र हैं। भाद्र के महीने उनका एक लड़का जिस की उम्र 2 साल की थी। वह बीमार हो कर मर गया। उसके बाद दूसरे साल उनका दूसरा लड़का जिस की उम्र 4 साल थी उसी महीने भाद्र को मर गया था। एक दिन वह सुच्ची पिंड गाँव में अपने रिश्तेदार श्री गुरदास राम और बीबी बचनी के घर गए तथा उनसे महाराज सरवण दास जी की प्रशंसा सुनी। श्री गुरदास राम जी ने बताया कि,''संत सरवण दास महाराज जी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है उनकी कृपा से ही हमें सब कुछ प्राप्त हुआ है।'' एक दिन श्री गुरदास राम और बीबी बचनी जी श्री गुरमेल राम और बीबी नन्ती को महाराज जी के पास ले कर आए। इस तरह उन्होंने डेरे आना शुरू कर दिया। 1968ई. की बात है उस समय उनके दो लड़के देस राज और सोहन लाल थे। उन का लड़का सोहन लाल भाद्र के महीने बीमार हो गया। श्री गुरमेल राम जी लड़के सोहन लाल को फगवाड़ा में दाखिल करवा कर महाराज जी के पास आए। उन्होंने महाराज जी के पास आ कर निवेदन किया कि,''महाराज जी कृपा करो कि 1966ई. में भाद्र के महीने मेरे पहले लड़के की मृत्यु हो गई। जिस की

आयु दो वर्ष की थी। उससे एक साल बाद भाद्र के महीने मेरे दूसरे लड़के की मृत्यु हो गई जिस की उम्र चार वर्ष की थी और महाराज जी अब फिर साल बाद मेरा लड़का सोहन जिस की उम्र 7 साल की है वह बीमार है, यह भी भाद्र का महीना है। आप कृपा करो वह बहुत बीमार है और मैं उस को फगवाड़ा में दाखिल करवा कर आया हूँ।'' महाराज सरवण दास जी ने रेरू वाले वैद्य को अपने पास बुला कर लड़के के लिए दवाई मंगवा कर गुरमेल को दे दी और कहा कि,''जा कर अपने लड़के को दे देना, लड़का ठीक हो जाएगा। कोई चिंता नहीं करनी। घबराना नहीं। महाराज जी की कृपा से आप का यह लड़का ठीक हो जाएगा। भजन सिमरन करते रहना।'' श्री गुरमेल जी महाराज जी से आज्ञा ले कर फगवाड़ा अस्पताल में पहुँचे और जा कर लड़के को दवाई दी। दवाई देने के एक घण्टे बाद लड़का बिल्कुल ठीक हो गया। श्री गुरमेल जी उस को घर ले कर गए। उसके बाद उनका कोई भी लड़का इस तरह बीमार नहीं हुआ। श्री गुरमेल जी बताते हैं कि,''आज संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से मेरे दोनों लड़के ठीक है और उनके बच्चे भी जवान हो चुके हैं।''

(श्री गुरमेल राम जी, डक्क पंडोरी, 11सितम्बर, 2003)

साखी नंबर: 184

मास्टर जग्गू राम को मुक्ति प्रदान करना'

मास्टर जग्गू राम गाँव रायपुर-रसूलपुर सारा परिवार ही संत सरवण दास महाराज जी का श्रद्धालु है। मास्टर जग्गू राम जी अक्सर डेरे में रहकर लंगर की सेवा और चिट्ठी लिखने की सेवा किया करते थे। वह अपने स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के बाद प्रतिदिन दरबार में आकर सेवा किया करते थे। 1971 ई. की बात है, कि मास्टर जग्गू राम बहुत बीमार हो गए। इसी कारण उनके बड़े भाई कर्म सिंह बंगड़ भी इंग्लैंड से आए। उन्होंने महाराज सरवण दास जी की आज्ञा अनुसार 12 मई1971 ई.को मास्टर जग्गू राम जी को गुलाब देवी अस्पताल जालन्धर में दाखिल करवा दिया। अस्पताल दाखिल दौरान भी मास्टर जग्गू राम जी सुबह शाम अपना नित नेम करते थे।21 मई 1971 ई. को संत सरवण दास जी महाराज उनको गुलाब देवी अस्पताल देखने गए। महाराज जी ने उनको सत्संग श्रवण करवाया। बाद में महाराज जी ने आप सभी मरीजों को प्रसाद दिया। मास्टर जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरा अस्पताल में मन नहीं लगता। यह अस्पताल मुझे जेल समान लगता है। मेरे

मन में हर समय आप जी के दर्शन की इच्छा रहती है और अब मैंने बचना नहीं है। कृपा करो आप मेरी मुक्ति कर दो।'' महाराज जी ने कहा,'' अच्छा! आज 21 तारीख है। कोई बात नहीं, हम 28 तारीख को तुम्हें सदा के लिए अपने पास ले जाएँगे।'' इस के बाद मास्टर जग्गू राम जी ने महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी ने जग्गू राम को आर्शीवाद देकर कहा कि,'' हर समय भजन सिमरन करते रहना।'' उसके बाद महाराज जी अस्पताल से डेरे वापिस आ गए। उस के बाद 28 मई को लगभग 12 बजे मास्टर जी ने अपने पुत्र रजिन्दर को कहा कि,'' मुझे बिठा दो। मैं महाराज जी को नमस्कार कर लूँ।'' उन्होंने डेरे की ओर मुखकर तीन बार नमस्कार की। फिर वह लेट गए और उन्होंने कहा कि,'' मुझे संत सरवण दास जी महाराज अपने पास ले जाने के लिए आ गए हैं।'' उस के बाद वह दोबारा नहीं बोले। उनके सुपुत्र ऐसा देखकर डॉक्टर को बुलाकर ले आए। जब डॉक्टर ने मास्टर जी को देखा, उस समय वह अपना शरीर त्याग चुके थे। इधर डेरे में महाराज जी अपने आसन पर बैठे थे। उस समय संत निरंजन दास जी ने महाराज जी को कोका कोला की बोतल पिलाई। उस के बाद महाराज जी समाधि लगाकर बैठ गए। जब उन्होंने अपनी समाधि खोली तो राएपुर से एक आदमी ने आकर बताया कि,'' महाराज जी, मास्टर जग्गू राम जी की मृत्यु हो गई है।'' इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी ने मास्टर जग्गू राम की मुक्ति की।

(स्वयं मास्टर रजिन्दर बंगड़, पुत्र स्वर्गीय जग्गू राम गाँव राएपुर रसूलपुर,12 सितम्बर, 2003)

साखी नंबर: 185

स.प्रकाश सिंह की 1965 ई. की भारत-पाक युद्ध समय रक्षा करना

स.प्रकाश सिंह गाँव राएपुर के रहने वाले थे। वह समय मिलने पर संतों की संगत किया करते थे। वह फौज में नौकरी करते थे। 1965 ई. के भारत-पाक युद्ध समय वह अपने मोर्चे पर लड़ रहे थे। उनके मोर्चे के आस-पास बहुत ज़ोर से बम गिरने लग पड़े। वह घबरा गए। उस समय संत सरवण दास महाराज जी उनके सामने प्रगट हुए तो फौजी साहिब ने महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी ने उसको आर्शीवाद देते हुए कहा कि,'' कोई चिंता मत करना।'' उस के बाद महाराज जी अलोप हो गए। इस कौतुक के बाद उनके मोर्चे के आस-पास बम गिरने बंद हो गए। जब जंग खत्म हुई तो प्रकाश

सिंह जी महाराज जी को मिलने के लिए आए और उन्होंने यह सारा कौतुक संगत को सुनाते हुए बताया कि,''इस प्रकार महाराज जी ने मेरी रक्षा की।''

साखी नंबरः 186

साखी रक्षा करने की

होशियारपुर ज़िले का एक व्यक्ति डेरे आया करता था। भारत-पाक बंटवारे की बात है,जब कत्ले-आम हो रहा था, एक बार कुछ जुनूनी लोगों ने उसको पकड़कर लकड़ियां इक्ट्ठी कर उस को बीच में बाँध कर रख दिया, ऊपर काँटों वाली लकड़ियां रख दी, लकड़ियों को जुनूनी लोगों ने आग लगा दी,उसने महाराज जी को याद किया। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की इतनी कृपा हुई कि तूफानी आंधी आई, लकड़ियां उसके ऊपर से गिर गई, उस समय अंधेरा था, उसने अपनें हाथों से बंधे रस्से खोल लिए और वहाँ भाग निकला। उससे कुछ दिन बाद वह व्यक्ति डेरे आया। महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। उसने आपबीती महाराज जी को सुनाई। महाराज जी ने कहा,''वह कोई तूफान नहीं था।'' महाराज जी ने अपने हाथ उस आदमी को दिखाते हुए कहा,''यह देखो हमारे हाथों में काँटे लगे हुए हैं। हमने उस समय तुम्हारे ऊपर रखी लकड़ियां और छापों को धक्का मारकर तुम्हें जलती आग से बचाया था।'' उस समय उस आदमी ने महाराज जी के चरण पकड़ लिये। उस समय राएपुर वाले रजिन्दर बंगड़ और श्री जग्गू राम जी महाराज जी पास ही आए थे।

साखी नंबरः 187

संत सरवण दास महाराज जी का श्रीमान् जगीरी राम को अंग कटी योग दिखाना

श्री जगीरी राम जोकि गाँव अरजनवाल जालन्धर के वसनीक थे। उनके पिता श्री रूलिया राम जी बाबा पीपल दास जी महाराज जी के सेवक थे। इस लिए सारा परिवार ही महाराज जी का श्रद्धालु परिवार है। 1952-53 ई. की बात है, श्री जगीरी राम जी कुटिया में आए। उस समय यहां आज डेरा सुशोभित है, गाँव बल्लां के आस-पास घना जंगल था।

बल्लां मन्दिर वाली जगह पर दो कच्चे कमरे थे और बाहर थड़े पर माघी का कार्यक्रम होता था। रात को महाराज सरवण दास जी श्री जगीरी राम को गाँव बल्लां में ले आए। कथा उपरान्त महाराज जी अपने कमरे में बैठ कर

भक्ति करने लगे और संत हरि दास महाराज जी भी समाधि लगाकर बैठ गए। श्री जगीरी राम और 5-6संगत के आदमी आराम करने लग पड़े। रात के एक बजे महाराज जी उठे और जगीरी को भी उठाया और उसके हाथ में पानी का कमण्डल पकड़ा दिया। महाराज जी उसको साथ लेकर कुटिया की ओर आ रहे थे। इस जगह पर घना जंगल था। महाराज जी ने कहा,''आप यहीं रूको हम आते हैं।'' तो स्वयं जंगल में चले गए। फिर जगीरी राम जी आधा घण्टा प्रतिक्षा करते रहे। उस के बाद पीछे ही महाराज जी को देखने चले गए। उस समय गर्मियों के दिन और चांद की चांदनी थी। क्या देखते हैं, महाराज जी के अलग-अलग अंग पड़े हैं। वह ऐसा कौतुक देखकर घबरा गए और समझे कि महाराज जी का कोई कत्ल कर गया है, वह वापिस डेरे आए। आगे क्या देखा कि संत सरवण दास महाराज जी आगे खूंडा लेकर खड़े थे और मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा,''जगीरी रामा, ऐसे घबराते नहीं। यह बात किसी से नहीं करनी।'' महाराज जी उसको साथ लेकर फिर डेरे गाँव में आ गए। उस वक्त 2 बजे का समय था महाराज जी समाधि लगाकर बैठ गए और जगीरी राम को आराम करने के लिए कहा।

साखी नंबर: 188
चोरों को सच का उपदेश देना

1957 ई. की बात है कि यहां आज डेरा संत सरवण दास सच्चखंड बल्लां सुशोभित है, वहां छोटी-सी कुटिया होती थी। छापों की वाड़ होती थी। रात को संत सरवण दास जी और संत हरि दास जी गाँव बल्लां गए हुए थे। रात को डेरे में कोई मौजूद नहीं था। रात को दो चोर डेरे में आ गए। उन्होंने कटोरियों की बोरी भर ली, जब वह डेरे से बाहर जाने लगे, तो उनको दिखाई देना बन्द हो जाए। जब डेरे की हद के अंदर आ जाते तो दिखाई देने लग जाता। इस तरह सुबह के 4 बज गए। महाराज जी ने कुटिया में आने से पहले दो तीन आदमी कुटिया में भेज देते थे। यह कौतुक सेवादार प्रेमियों ने देखा, जब स्वामी सरवण दास महाराज जी आए तो उन्होंने सत्गुरू जी के दर्शन किए और वह महाराज जी के चरणों में गिर गए और क्षमा मांगी। महाराज जी ने उनको माफ कर दिया और आगे से चोरी करने से रोका और परमात्मा का नाम जपने के लिए कहा, इस प्रकार उन चोरों का महाराज जी ने उद्धार किया।

साखी नंबरः 189

दूध आ रहा

पहले माघी(मकर सक्रांति)का दिन गाँव डेरे में लगता था। यहां आज कल गांव के अंदर शानदार मन्दिर सुशोभित है। 1950 ई. की बात है, माघी समागम था। महाराज जी ने सेवादार प्रेमियों को कहा,''संगत को चाय पिलाओ।'' सेवादारों ने निवेदन किया,''महाराज जी, चाय की देग रखी हुई है, पानी उबल रहा है, पर अभी दूध नहीं आया। इस कारण चाय में देरी हो रही है।'' जानी-जान महाराज जी ने कहा,''आप पानी में चीनी और चाय पत्ती डाल दो।'' अरजनवाल से चार सेवादार दूध लेकर आ रहे हैं।'' कुछ ही समय में श्री सगली राम, श्री वीर सिंह, श्री गुरनाम सिंह, और श्री जगीरी राम दो गागर(पतीले)दूध की लेकर महाराज जी पास पहुँच कर महाराज जी को नमस्कार की और कहा कि,''हम आपके चरणों में दूध लेकर आए हैं।'' सेवादारों ने चाय तैयार की। सेवादार प्रेमियों से यह वार्तालाप सुनकर यह चारों व्यक्ति बहुत हैरान हुए। बोलना जी ! जय संतों की।

(श्री जगीरी राम पुत्र श्री रूलिया राम, गाँव अरजनवाल,13,सितम्बर 2003)

साखी नंबरः 190

लड़का आपकी गरीबी दूर करेगा

1957 ई. की बात है,कि श्री जगीरी राम जी के घर उनकी सुपत्नी बीबी तेज कौर की कोख से एक लड़के का जन्म हुआ। श्री जगीरी राम प्रसाद लेकर महाराज जी पास आए और उन्होंने महाराज जी के चरणों में निवेदन किया,''आप की कृपा से लड़के ने जन्म लिया है।'' महाराज जी ने कहा,''चेतन दासा, आज जगीरी राम के घर लड़का हुआ है, नाम रखना है।'' महाराज जी थड़ा साहिब पर विराजमान थे। संत चेतन दास जी अपनी झोंपडी के बाहर बैठे थे। उन्होंने उत्तर दिया,''महाराज जी इसका पक्का नाम आप ही रख दो। कच्चा नाम इसका घडुका रख दो। यह लड़का बहुत शक्तिमान होगा। विदेश में सैर करेगा और गरीबी दूर करेगा।'' ऐसा उत्तर सुनकर चेतन दास जी से महाराज जी ने कहा,''इसका कच्चा नाम घडुका और पक्का नाम हंसराज रख लो।'' महाराज जी ने कहा लड़का शूरवीर होगा। श्री जगीरी राम जी ने आज बताया, महाराज जी के वचन अटल हुए कि,'' आज मेरा लड़का हंसराज 22 वर्ष से विदेश की सैर कर रहा है और इसने हमारी गरीबी दूर कर दी है।''

साखी नंबरः 191

महाराज सरवण दास जी का आलोप होना

श्री नामदेव जी पुत्र श्री मंगल राम गाँव चक्को वाला शेखा (होशियारपुर) के वसनीक थे। उनका ससुराल परिवार श्री कालू राम और उनकी सुपत्नी बीबी बिशन कौर गाँव जलभेयां के वसनीक थे और संत सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। जब श्री कालू राम की लड़की की शादी 1947 ई. से पहले श्री नामदेव से हुई उस समय श्री कालू राम जी के घर संत सरवण दास जी महाराज आए। नामदेव जी ने जब महाराज जी के नूरानी चेहरे के दर्शन किए उनका मन आनन्दित हो गया। उसके बाद उन्होंने महाराज जी के पास कुटिया में आना शुरू किया। फिर उनके सेवक बन गए। 1948ई.अस्सू कार्तिक मास की बात है महाराज सरवण दास जी सुबह नाम देव जी को लेकर गाँव मोखे की ओर सैर करने चल पड़े। उस समय गाँव मोखे और बल्लां के बीच जंगल, टिब्बे थे।

गाँव मोखे को जाते हुए रास्ते में महाराज जी खड़े हुए। उनके बिल्कुल पास ही जिनके हाथ में कमण्डल था, खड़े हो गए। सत्गुरू जी ने कहा,''नामदेव जी भजन करो और स्वयं शरीर सहित अलोप हो गए।''श्री मान् नामदेव जी को महाराज जी पर भरोसा था। भजन करते रहे एक घण्टे बाद शरीर समेत महाराज जी उसके सामने हाज़िर हो गए। श्री नामदेव जी ने महाराज जी को नमस्कार की,महाराज जी ने वचन किए,''नामदेव तुम घबराए तो नहीं थे।'' नामदेव ने कहा,''महाराज जी, आप की कृपा से मैं घबराया तो नहीं था।'' यह है संतों की रूहानी भक्ति का कमाल।

साखी नंबरः 192

श्री नाम देव जी को ज़मीन बख्शिश करना

1948ई.के अन्त की बात है। संत सरवण दास जी महाराज श्री नामदेव जी के घर चक्कोवाल शेखां गए। गाँव वासियों का महाराज जी से बहुत प्रेम था। रात के समय महाराज जी ने सत्संग किया। सुबह प्रातःकाल उठकर महाराज जी श्री नामदेव जी को साथ लेकर गाँव के पूर्व दिशा की ओर सैर करने के लिए गए। महाराज जी एक ज़मीन में खड़े हो गए। नाम देव से पूछा,''नाम देव यह ज़मीन किसकी है?'' श्री नामदेव ने उत्तर दिया,''यह ज़मीन सरकारी है।'' महाराज जी ने वचन किया कि,''यह दो खेत ज़मीन

तुम्हारी है, तुम जल्दी ही इसके मालिक बन जाओगे। इस सरकारी ज़मीन की लगभग एक वर्ष बाद नीलामी होगी। इसमें से दो खेत तुम खरीदोगे।'' नामदेव ने कहा,'' सत्गुरू जी मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पास पैसे नहीं है। अगर आप जी की कृपा हो जाएगी तो मैं यह ज़मीन खरीद लूँगा।''

लगभग एक वर्ष बाद उस सरकारी ज़मीन की नीलामी हुई जिसमें नामदेव ने दो खेत खरीदे जोकि आज भी उनके पास है। सत्गुरू जी के लिए पाँच कनाल में आम का बाग लगाया, यहां गर्मियों में महाराज जी आम चूसने जाया करते थे। यह है संतों की बख्शिश का भण्डार और नामदेव का ज़मीन का मालिक बनना।

(स्वयं श्री नामदेव, गाँव चक्कोवाल शेखां, 18सितम्बर, 2003)

साखी नंबर: 193

नाम देव राज के परिवार को चोरों से बचाना

एक समय की बात है कि नामदेव उनकी पत्नी गुरबचन कौर शाम को महाराज जी के दर्शन करने के लिए गाँव चक्कोवाल शेखां, होशियारपुर से पैदल आ रहे थे। उनको डेरे की तरफआते काफी अंधेरा हो गया था। इधर महाराज जी संगत समेत गाँव बल्लां में आ रहे थे,तो महाराज जी पुल ऊपर खड़े हो गए, तो वचन किए,'' नामदेव उनकी पत्नी गुरबचन कौर हमारे पास आ रहे हैं, हमने उन्हें साथ लेकर गाँव डेरा में जाना हैं।''

जानी-जान महाराज जी ने जब वचन किए तो उस समय सत्गुरू की संगत का आनंद ले रही संगत हैरान हो गई। दूसरी तरफ नामदेव और बीबी गुरबचन कौर जब किशनगढ़ से बल्लां नहर के रास्ते आ रहे थे। तो उनको दो चोरों ने घेर लिया। उन्होंने कहा,''जो कुछ भी आपके पास है, रख दो।'' नामदेव ने उत्तर दिया कि,''हमने बल्लां कुटिया में संत सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने जा रहे ह।'' चोर यह सुनकर एक तरफ हो गए। इधर महाराज जी पुल पर खड़े होकर उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब महाराज जी पास आए, महाराज जी ने वचन किए,''नामदेव यह समय आपके आने का है हम एक घण्टे से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन चोरों ने आपको कुछ कहा तो नहीं।'' यह सुनकर नामदेव और उनकी पत्नी हैरान रह गए। दोनों ने महाराज जी को नमस्कार की और कहा,'' आज हमें अंधेरा ही हो गया। आपने ही चोरों से रक्षा की है।''

साखी नंबरः 194

संत गरीब दास महाराज जी ने फौजी बलवीर सिंह की रक्षा करनी

फौजी बलवीर सिंह, श्री नामदेव और बीबी गुरबचन कौर गाँव चक्कोवालश ेखा(होशियारपुर)केर हनेव ालेह ैंइ सप रिवारक ाम हाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। महाराज जी अक्सर इनके गाँव जाया करते थे। पी.के.एफ.शांति सेना 1987 ई.में श्रीनगर में भेजी। उस में फौजी बलवीर सिंह भी शामिल थे। वह जंगल में अपने 17 साथियों समेत फौजी गश्त पर थे अचानक उनके कानों में संत गरीब दास महाराज जी की आवाज़ सुनी,''बलवीर जल्दी से इस स्थान से दूर चले जाओ।'' फौजी बलवीर सिंह ने जल्दी से महाराज जी के वचन मानते हुए अपने साथियों को कहा,''सभी एक तरफ हट जाओ।''

वह न माने पर फौजी बलवीर सिंह उस स्थान से एक तरफ हट गया। उनके एक तरफ होने की देर थी कि बारूदी सुरंग फट गई। जिस में उनके 17 फौजी ज़ख्मी हो गए। इस प्रकार संत गरीब दास महाराज जी ने फौजी बलवीर सिंह की रक्षा की। श्रीनगर से वापिस आ कर आप डेरे में नमस्कार करने आए। उस समय संत गरीब दास महाराज जी अपनी कुर्सी पर विराजमान थे।''कैसे फौजी तुम ठीक रहे।'' फौजी ने कहा,''महाराज जी, आप ने कृपा की मैं ठीक हूँ।''

(स्वयं श्री बलवीर सिंह, गाँव चक्कोवाल शेखा, होशियारपुर, 18सितम्बर, 2003)

साखी नंबरः 195

गाँव पंडोरी पर कृपा करनी

1969 ई. के चेत(चैत्र)मास की बात है कि श्री गुरमेल राम और बीबी नन्ती सभी परिवार ने संत सरवण दास महाराज जी के आदेश अनुसार अपने घर में सत्संग करवाए। सत्संग वाले दिन संत सरवण दास महाराज जी, श्री गुरदास राम जी सुच्ची पिंड गाँव वालों को साथ ले कर गए। श्री गुरमेल जी के घर गाँव डक्क पंडोरी(उस समय नागे की पंडोरी) में गए। उस समय पहली बार महाराज जी ने गाँव डक्क पंडोरी में चरण डाले थे। गाँव की संगत संत सरवण दास महाराज जी को आदर सहित भजन पढ़ते हुए गाँव की हद से साथ

ले कर गई थी। गाँव निवासी संगत ने महाराज जी का बहुत आदर सम्मान किया। उस समय श्री गुरमेल जी का घर कच्चा ही था।

श्री बेला सिंह गाँव बल्लां वालों ने महाराज जी ने आधा घण्टा सत्संग किया। उस के बाद महाराज जी और सभी संगत को लंगर खिलाया गया। गाँव निवासी संगत ने महाराज जी के आगे निवेदन किया,'' महाराज जी आप कृपा करो। हमारे गाँव पर बहुत कष्ट है कि पिछले 4 वर्षों से हर वर्ष जवान लड़के मरते हैं।''

महाराज जी कहा कि,''सभी भजन सिमरन किया करो। संतों की संगत किया करो और आप प्रेम से रहा करो। आज के बाद आपके नगर में सुख शांति रहेगी।''आने वाले समय में महाराज जी के वचन अटल हुए जो हर वर्ष लगातार जवान लड़के मरते थे वह सब ठीक हो गया। इस प्रकार संत सरवण दास महाराज जी ने गाँव डक्क पंडोरी पर कृपा की।

साखी नंबर: 196

कच्ची लस्सी

स.तुलसी सिंह और उनकी पत्नी बीबी महां कौर गाँव बूरा, महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। उनकी लड़की परमजीत कौर का गाँव माणकडेरी के फौजी गुरनाम सिंह के साथ विवाह हुआ था।

एक बार संत हरि दास जी महाराज गाँव खंडियाला नज़दीक बुलोवाल में गए थे। वहां श्री तुलसी सिंह और बीबी महां कौर गए हुए थे। श्री तुलसी सिंह ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,'' महाराज जी जाते हुए, हमारी लड़की परमजीत गाँव माणकडेरी के घर भी चरण डालते जाना। महाराज जी जीप द्वारा श्री तुलसी सिंह और बीबी महां कौर और कुछ अन्य सेवादारों समेत गाँव माणकडेरी पहुँचे। बीबी परमजीत ने महाराज जी को नमस्कार करते हुए विचार किया कि,'' घर में बहुत गरीबी है। मैं संतों समेत संगत को चाय कैसे पिलाऊँगी?''

अंर्तयामी महाराज हरि दास जी ने कहा कि,''बेटा हमने चाय नहीं पीनी, कच्ची लस्सी पीनी है।'' महाराज जी ने उसके मन की बात जान ली। बीबी जी ने महाराज जी के साथ गए सेवादारों को कच्ची लस्सी बना कर पिलाई।

(स्वयं बीबी परमजीत पत्नी फौज़ी गुरनाम सिंह, माणकडेरी 6 जुलाई, 2003)

साखी नंबरः 197

संत हरि दास जी महाराज की ओर से श्री धन्ना राम और बीबी करमी को पुत्रों की दात बख्शिश करना

श्री धन्ना राम पुत्र श्री मेला राम और बीबी करमी गाँव सरमस्तपुर के रहने वाले थे। वह संत सरवण दास महाराज जी के समय से ही डेरे में आते थे। बीबी करमी के दो लड़कियां थीं।

एक बार की बात है कि श्री धन्ना राम जी और बीबी करमी डेरे में आए। संत हरि दास जी महाराज पलंग पर विराजमान थे। श्री धन्ना राम और बीबी करमी महाराज जी को नमस्कार कर बैठ गए।

बीबी करमी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी मेरे घर केवल दो लड़कियां ही हैं। आप कृपा कर पुत्र की दात बख्शिश करो।'' महाराज जी ने कुछ समय चुप रहने के पश्चात् कहा,''दोनों भजन सिमरन किया करो।'' संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से दो पुत्रों ने जन्म लिया, जिसका महाराज जी ने बलविन्दर कुमार और कुलविन्दर कुमार नाम रखा।

(स्वयं बीबी करमी पत्नी श्री धन्ना राम, गाँव सरमस्तपुर,11जुलाई, 2003)

(बेली राम की यादों में से)

साखी नंबरः 198

तुमने बस कर नहीं था कहना

गाँव मन्नण निवासी बीबी भागो और बीबी संती, संतों की कुटिया में सेवा करने जाया करती थी। उसको पता चला कि कुटिया में घी की ज़रुरत है। दोनों गाँव वापिस आकर घी की खोज करने लगी। एक घर पता किया वहां घी में मिलावट थी, नहीं खरीदा। कुछ समय बाद उनको पता चला कि श्री बेली राम जी पास ताज़ी सूई गाय है, सोचा शायद उस पास घी मिल जाए।

बेली राम से पूछा तो बेली राम ने कहा,''मेरे पास घी है, देख लो।'' जब उन्होंने घी देखा। तो घी खुशबू बांट रहा था। बिल्कुल शुद्ध घी था।

उन्होंने पूछा कि,''इसका मुल्य क्या है? हमने यह कुटिया लेकर जाना है।''

जब बेली राम ने यह शब्द सुना तो उसने नम्रता के साथ उत्तर दिया,''यह महाराज जी की ही कृपा है, मेरे भाग्य अच्छे हैं, अगर मेरी कमाई थाई पड़ी।''

बीबी भागो और बीबी संती घी कुटिया ले आई। उन्होंने महाराज जी से निवेदन किया,"महाराज जी, घी ले आएें हैं।"

महाराज जी ने घी देखा और संत निरंजन दास महाराज जी को आवाज़ लगा कर कहा,"यह घी डिब्बे में डाल लो और बर्तन खाली कर लड़कियों को दे दो।"

महाराज जी ने भागो और संती से पूछा कि,"घी किससे लेकर आए हो और इसका मूल्य क्या है?"

उन्होंने बताया,"महाराज जी! यह घी बेली राम से लेकर आए हैं,पर उसने इस घी को आपकी मेहर बताकर कोई मुल्य नहीं बताया।"

एक दिन महाराज जी गाँव कराड़ी से आते हुए गाँव मन्नण आए और बीबी संती के घर गए। कुछ देर वहां ठहरने के उपरान्त जब कुटिया आने के लिए उठे और बाहर आए तो नज़दीक पीपल के नीचे बैठे बेली राम को बीबी संती ने आवाज़ लगाई,"जायो, महाराज जी के साथ कुटिया जा आओ।"

श्री बेली राम ने महाराजजी को नमस्कार की और उनके पीछे-पीछे चल पड़े।

जब गाँव से थोड़ा बाहर आए तो महाराज जी ने बेली राम से पूछा," बेली राम! तुम घी के पैसे लेने नहीं आए?"

श्री बेली राम ने विनम्रता से उत्तर दिया,"महाराज जी सब कुछ आपका ही दिया है, फिर पैसे कैसे।"

सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने वचन किया,"ओऐ! बच्चे क्या खाऐंगे? तुमने तो सारा ही घी हमें दे दिया।"

श्री बेली राम ने कहा,"आप ही सब को रिज़्क देने वाले हो।"

महाराज जी शांत हो गए। थोड़ा आगे चलकर रूके और आसमान की ओर देख। खूंडा जो उनके हाथ में था,बाएं हाथ में पकड़ा और आसमान की ओर घुमाया। दोबारा फिर दाएं हाथ में पकड़ लिया और चल पड़े। बेली राम भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

यह स्वयं बेली राम के शब्द है,"उनके बाएं हाथ की मुट्ठी बन्द की हुई थी। वह बन्द मुट्ठी खोलते ही एक कोरा नोट गिर पड़ता। फिर मुट्ठी बन्द कर लेते। फिर मुट्ठी खोलते एक और कोरा नोट गिर पड़ता।"

श्री बेली राम जी नोट उठा-उठा कर अपनी झोली में डालने लगे।

देखते ही देखते श्री बेली राम की झोली नोटों से भर गई। श्री बेली राम ने निवेदन किया,'' महाराज अब बस करो।''

महाराज जी ने उसको डांट कर समझाते हुए वचन किया,''तुमने ऐसे नहीं कहना था।'' कुटिया पहुँच कर महाराज जी आसन पर विराजमान हुए तो श्री बेली राम ने नोटों से भरी झोली महाराज जी के चरणों में ढेर कर दी।

महाराज जी ने कहा,''बेली राम, इन को ले जाओ यह तुम्हारे ही है, घर खर्च लेना।'' महाराज जी ने संत गरीब दास महाराज जी को आवाज़ लगाई। संत गरीब दास महाराज जी हाज़िर हुए। महाराज जी ने हुक्म किया,''गरीब दास बेली राम को दो किलो घी की कीमत दे दो।''

श्री बेली राम के बार-बार मना करने पर भी महाराज जी ने उसको दो किलो घी की कीमत संत गरीब दास महाराज जी के हाथ से दिलवाई।

घर वापिस आते समय कुटिया से बाहर आने वाले रास्ते के नज़दीक चारपाई ऊपर एक महात्मा बैठे थे। श्री बेली राम ने उनको नमस्कार की और सारी घटना बताई। महाराज जी ने कहा,''तुमने गलती की !अगर तुम महाराज जी को अब बस करो न कहते तो पता नहीं आज महाराज जी ने तुम्हारी खुशहाली के लिए कुछ कर देना था।''

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 199

जब अलूणी सिल का भी मूल्य पड़ा

एक दिन हर रोज़ की तरह संत सरवण दास जी महाराज जब सैर के लिए टिब्बों की ओर गए तो रास्ते में गाँव मन्नण निवासी श्री नानक जी का परिवार, जो कि टिब्बे में मूंगफली और अन्य फसलों आदि की खेती किया करते थे, परिवार ने जब देखा कि महाराज जी इधर से निकल रहे हैं तो उनके चरण स्पर्श करने के लिए अपना काम छोड़ कर महाराज जी की तरफ आए।

महाराज जी ने उन को देखकर थोड़ी दूर से कहा कि,''आप अपनी जगह से ही नमस्कार कर लो।''

पहले तो वह नहीं माने, परन्तु जब महाराज जी ने उनको डांटते हुए समझाया तो उन्होंने कहा मान लिया।

महाराज जी नी नानक से पूछा,''रूआंह निकाल लिए?''

''हां जी महाराज जी।'' नानक ने उत्तर दिया।

"कितनी बोरी होगी?" महाराज जी ने पूछा।

"जी बारह बोरी होगी।" नानक का जवाब था

महाराज जी ने पूछा, "क्या भाव है?"

नानक ने विनम्रता से उत्तर दिया, "महाराज जी! आप को जितनी भी बोरी चाहिए कुटिया पहुँचा देते हैं। आप तो सारी दुनिया का पालन-पोषण करते हो। हम थोड़े से काम के आप से कैसे पैसे ले सकते हैं?" महाराज जी आप की कृपा चाहिए।

"नहीं भाई नहीं। तुम्हारी लम्बे समय की मेहनत है। आप का तो यह सब कुछ है। इसके पैसे मिलेंगे तो ही आपके घर का गुज़ारा चलेगा।" महाराज जी ने समझाया।

महाराज जी के वचन सुन कर श्री नानक ने एक बोरी का सौ रुपये भाव बताया।

महाराज जी ने कहा, "सारी बोरियां कुटिया में पहुँचा दो और पैसे गरीब दास से ले लेना।"

सत्गुरू जी ने आगे पूछा, "मूंगफली अच्छी है?"

नानक ने उत्तर दिया, "महाराज जी। इस बार रूआंह तो अच्छे हुए हैं पर मूंगफली कम हुई है।"

महाराज जी ने वचन किया, "अच्छा! कोई बात नहीं। चिंता नहीं करनी।" इस बात में भी कोई राज़ था।

यह कह कर महाराज जी आगे चले गए।

परिवार ने रूआंहां की बारह बोरियां कुटिया पहुँचा दिया। संत गरीब दास महाराज जी ने उन को रूआंहां की पूरी कीमत दे दी।

रूआंहां की कीमत तो उनको मिल गई, साथ ही साथ इस बार उनकी मूंगफली भी अच्छे भाव में बिक गई। "सत्गुरू जी ने हमें कोई कमी नहीं पड़ने दी बल्कि थोड़ी मूंगफली भी महंगे भाव में बिक गई।"

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 200

आँखों का इलाज़ करना

गाँव मन्नण निवासी बीबी सीबो ऐसी बीमार पड़ी कि उसके गाँव के लोग, यहाँ तक कि घर के सदस्य भी उससे नफरत करने लगे। दु:ख के समय

अपने–पराये सब दूर हो जाते है। अन्धेपन का दु:ख तो है ही था परन्तु उससे भी बड़ा दु:ख उस को लोग और घर के सदस्य के पास से बेध्यानी और डांटने का था। पीड़ा असहनीय थी। सभी तरफसे हार गई तो महाराज जी की याद आई। महाराज जी को याद करती, प्रार्थना करती रहती।

महाराज जी की मेहर हुई। एक रात जब वह सो रही थी तो महाराज जी उसके सपने में आए और कहा,''तुम आँखों में कोई दवाई मत डालना। तुम्हारी आँखें थोड़े दिनों में ठीक हो जाएगी।'' उस से थोड़े दिनों के बाद आँखें धीरे–धीरे बिल्कुल ठीक हो गई। आज भी महाराज जी की कृपा से ठीक है।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 201

हमें तो तुम्हार चौबारे बने दिखाई देते है

बीबी सीबो घर की गरीबी को ले कर दिन रात चिंता में रहती थी। घर में इतनी गरीबी कि दुकानदार तो क्या, पड़ोसी भी उधार देने से झिझकते थे। सोचते कि,''पता नहीं, हमें पैसे वापिस मिलेंगे या नहीं मिलेंगे। थोड़ा–सा भी आटा खरीदने के लिए बहुत बार पैसे नहीं होते थे।''

एक दिन इतनी सोच में ही वह पड़ी हुई थी तो महाराज स्वामी सरवण दास जी घर आए तो भविष्य की तस्वीर उसके सामने खींचते कहा,''तुम चिंता मत किया करो। तुम्हारे तो चौबारे(छत पर कमरे)बने गए। तुम्हें चिंता करने की क्या ज़रूरत है?'' समय बदल गया। चौबारे बन गए। आज उनका सारा परिवार महाराज जी की बख्शिश का आनंद मान रहा है।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 202

हीरे के साथ हुई साखी

कुटिया के नज़दीक ही गाँव बल्लां निवासी हीरे का कुआं था। एक प्रात:काल हीरा बैलों की जोड़ी लेकर खेत जोतने आया और जब उसने खेत जोतने के लिए बैलों की जोड़ी का एक चक्कर लगाया तो क्या देखता है कि एक आदमी जिसकी टांगे, बाजू, सिर और बाकी शरीर अलग–अलग हुए पड़े हैं, उसके खेत में पड़े थे।

हीरा नज़दीक जाकर देखने के बजाए भयभीत हुआ बैलों समेत घर वापिस आ गया और गाँव में शोर मचा दिया कि,''मेरे खेत में एक बंदा कटा

पड़ा है। पता नहीं कौन बीती रात वहां कत्ल कर गया।'' गाँव के सारे लोग उसके खेत में लाश देखने के लिए आए। क्या देखते हैं, कि वहां कोई लाश नहीं।

कुछ लोगों ने हीरे को पागल कहा। कुछ लोगों ने कहा,''हीरे ने हमें मूर्ख बनाया है।'' सभी लोग अपने-अपने घर वापिस आ गए। परन्तु हीरे को यकीन नहीं आ रहा था कि क्या बना? जो लाश उसने आज प्रात:काल खेत में देखी थी वह कहां गई? इस सोच में ही हीरा कुछ दिन बीमार पड़ गया।

जानी-जान सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज हीरे के घर गए और उसको पूछा,''हीरे ! तुम उस दिन भाग क्यों आए थे।''

हीरे की हैरानी की हद न रही।

महाराज जी ने समझाया,''वह मैं था। तुम्हें डरने या वहम में पड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर तुम्हें यकीन नहीं तो हमें उस खेत में गिरा खून दिखाओ। जो कत्ल करने पर निकला हो।''

अब हीरे को सारी बात समझ आ गई। कुछ दिनों में ही हीरा बिल्कुल ठीक हो गया।

साखी नंबर: 203

बेआसरों के आसरे

गाँव सुभानपुर ज़िला जालन्धर निवासी एक व्यक्ति की सुपत्नी बहुत बीमार रहती थी। उसने कई डॉक्टरों के पास से उसका इलाज़ करवाया, पर कोई फर्क नहीं पड़ा। कई कर्मकांड किए। क्योंकि जब किसी व्यक्ति को डॉक्टर से इलाज़ करवाने पर भी उसका मरीज़ ठीक न हो तो उसका ध्यान कर्मकांडों की ओर खीचा जाना स्वाभाविक ही है। कर्मकांड करने के बावजूद बीमारी ठीक नहीं हुई। किसी पुरूष ने उसे महाराज जी के बारे में बताया। उस व्यक्ति को जैसे अंधकार में एक रोशनी की किरण मिल गई हो।

दूसरे दिन वह व्यक्ति अपनी सुपत्नी को साथ लेकर साइकिल पर चला। जब कुटिया से थोड़ा पीछे ही था तो साइकिल के टायर ट्यूब का पटाखा चल गया (टायर फट गया)। उसने सोचा यह शुभ नहीं हैं, उसका दिल और बैठ गया।

उधर महाराज जी अपने आसन पर विराजमान थे। उन्होंने नज़दीक बैठे एक श्रद्धालु को हुक्म किया,''जाओ ! वह एक जोड़ा आ रहा है, उनको बुला

लाओ।'' श्रद्धालु गया और उस जोड़े को महाराज जी का फरमान सुनाया,तो वह हैरान रह गए। सोचा कि हम तो कुटिया पहली बार ही आए हैं, महाराज जी ने हमें आवाज़ कैसे लगा ली?

आखिर वह पुरूष साइकिल खड़ा कर अपनी पत्नी को संभालते हुए महाराज जी पास ले आया नमस्कार की।

''कोई बात नहीं। तुम्हारी पत्नी ठीक हो जाएगी, साइकिल भी ठीक हो जाएगा, चिंता न करो।'' महाराज जी ने कहा।

इतना कह कर महाराज जी ने उस औरत को दवाई खाने के लिए दी। दवाई खाने के कुछ समय बाद ही उस औरत को कुछ राहत महसूस हुई। अगले कुछ दिनों के लिए उस औरत को और दवाई देकर खाने का समय और विधि आदि बारे महाराज जी ने उसको समझा दिया और उस पुरूष को कहा,''गाँव मन्नणा तोता राम के पास चले जाना और साइकिल ठीक करवा लेना।''

दोनों मर्द-औरत ने जल-पान किया और महाराज जी की आज्ञा लेकर गाँव मन्नण आकर श्री तोता राम से साइकिल की मुरम्मत करवाई और सारी वार्ता बताई। श्री तोता राम और उस पुरूष की वार्ता सुन वह अन्य लोगों ने उस जोड़े को बताया कि महाराज जी की महिमा बहुत महान है। वह भगवान रूप है, जो दुनिया का भला करने के लिए इस लोक में आए हैं। कुछ दिन दवाई खाने के बाद उस व्यक्ति की पत्नी बिल्कुल ठीक हो गई।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर:204
वैद्यों के वैद्य

स.कर्म सिंह मशहूर वैद्य थे। दूर-दूर से लोग उनके पास रोगों को दूर करने के लिए दवा लेने आया करते थे। घरेलू हालात भी अच्छे थे।

परमात्मा की रज़ा ऐसी हुई कि कर्म सिंह को कोहड़ हो गया। घर के सदस्य जो उसको पहले बहुत चाहते थे उस से नफरत करने लगे। कारोबार बंद हो गया। किसी ने उस से सीधे मुँह बात करना तो दूर उसे घर से बाहर निकालने के लिए सोच रहे थे।

मन बहुत उदास और परेशान हुआ। सोचा कि जिनके लिए मैंने इतना कुछ किया, वह मेरे बारे में क्या सोच रहें है? क्या बनेगा? क्या होगा? दिन-

रात सोच में ही निकल जाता। मानसिक पीड़ा शारीरिक पीड़ा से भी अधिक कष्टकारी होती जा रही थी।

महाराज जी की महिमा सुनी, मन में एक आशा रखते हुए कर्म सिंह महाराज जी पास आया, दर्शन हुए। महाराज जी के रूहानी स्वरूप,चेहरे पर परमात्मा के नाम की लाली देखकर कर्म सिंह निहाल हो गया। गर्मियों के दिन थे। तेज़ धूप होने के कारण वातावरण में अधिक गर्मी थी। ऐसे दिनों में महाराज जी की ओर से संगत के लिए 'शक्कर वाले जल' का प्रबंध किया जाता था।

महाराज जी के पवित्र मुख जिस से निकला हर वचन पत्थर पर लकीर होता था, सो यह हुक्म हुआ,"यह जग लो, और यह शक्कर इसमें डालकर, नलके से पानी भरकर घोलकर पी लो।" स.कर्म सिंह क्योंकि वैद्य थे, पहले तो सोचा कि ऐसे रोग में मीठा खाना उचित नहीं। परन्तु महाराज जी के हुक्म की पालना करते उसने उसी तरह किया जैसे महाराज जी की आज्ञा हुई थी।

शाम हुई, फिर धीरे-धीरे अंधेरा होना शुरू हो गया। ऐसी बीमारी में नींद ने यहां पहले उस से मुख मोड़ा था। आज उसकी आँखों पर मंडराने लगी। जैसे कि समय से उजड़े हुए बाग, जिसका कि तितलियों और भवरों को भी याद भूल गई हो, आज फूलों का धारणी बनने लगा हो और वह घूमती हुए तितलियां तथा भवरें आज उन फूलों की महक को महसूस कर वापिस आने लगे हो।

आँखे नींद से बन्द होने लगी। कर्म सिंह को नींद आ गई। आज स.कर्म सिंह ऐसी गहरी और मीठी नींद में सोया कि जो बीमारी के दिनों में और उस से पहले भी शायद उस को कभी न आई हो। वह अजब और आलौकिक संसार में विचर रहा था।

सुबह हुई। परमात्मा के नाम की महक धरती के ज़र्रे-ज़र्रे को सूरसार कर रही थी। स.कर्म सिंह को जाग आई। उठा क्या देखा कि उसके शरीर पर कोहड़ का नाम-निशान भी नहीं जैसे उसको कभी कोहड़ हुआ ही नहीं था। मन अधिक श्रद्धा और प्रेम से भर गया। स.कर्म सिंह महाराज जी के चरणों में गिर गया। आज सारी सियानप और चतुराई छोड़कर आत्मा अपने असली ठिकाने पहुँच गई। चरणों पर से सिर नहीं उठा रहा था। महाराज जी ने उठाया और कहा,"यह सब उसकी लीला है। सब उसके हाथ में है।"

साखी नंबरः 205

क्यों पुत्र बच कर आ गया?

सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज का एक श्रद्धालु जो गाँव राएपुर-रसूलपुर जालन्धर का वसनीक था। जिसका लम्बे समय से ज़मीन का झगड़ा चल रहा था। विरोधियों की हर बार हार होती। इस लिए विरोधी उस को करारा मज़ा चखाने के लिए हर समय ऐसे मौके की तलाश में रहते थे।

एक दिन सुबह-सुबह वह गाँव के साथ-साथ बहती नहर के ऊपर अकेला घूम रहा था। विरोधियों को पता चल गया। वह तो पहले से ही मौके की तलाश में रहते थे।

विरोधी इक्ट्ठे हुए और पिस्तौल और अन्य हथियार आदि साथ लेकर उस को नहर पर आ घेरा। वह व्यक्ति सहम गया। क्योंकि वह अकेला था और उसको घेरने वाले ज़्यादा व्यक्ति थे।

एक ने उस से कहा,''आज तुम्हें हमने छोड़ना नहीं, मार देंगे। तुम आखिरी समय जिसको याद करना, कर ले।''

उस आदमी ने आँखें बन्द की, अपना मन सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के चरणों में जोड़ा। पावन स्वरूप हृदय में दिखाई दिया। मन ही मन उनको प्रणाम किया। अन्दर से किसी अथाह शक्ति की लहर उठी। उसने आँखें खोली, महाराज जी का नाम ले कर वहां से दौड़ पड़ा। विरोधियों ने पीछे गोलियां चलाई क्योंकि यह मौका पता नहीं फिर मिले जा न मिले, दूसरा अगर यह बच कर निकल गया तो हमने फंस जाना।

परंन्तु पता नहीं गोलियां कहां हवा हो गई। उन्होंने दौड़ कर पकड़ने की कोशिश भी की, परन्तु आज वह सबसे तेज़ दौड़ाक की तरह बाकी दौड़ाकों को बहुत पीछे छोड़ आया था। विरोधियों ने उसके दौड़ते हुए और स्वयं दौड़ते हुए कई वार किए। परन्तु आज जैसे परमात्मा स्वयं उसके साथ था। उसका बाल भी न बांका हुआ।

दौड़ते हुए वह घर जाने की बजाय, गाँव की ओर जाने की बजाय सीधे कुटिया की तरफ आया। कुटिया की तरफ आते देखा कि महाराज सामने खड़े है ओर तेज़ भागा और महाराज जी के पवित्र चरणों में गिर गया। महाराज जी ने कहा,''क्यों बेटा आ गया बच कर?''

महाराज जी ने उसको उठाया और हौंसला दिया,''कोई बात नहीं,

हौंसला रखो सब ठीक हो जाएगा।'' कुछ समय के बाद उस का ज़मीन का झगड़ा समाप्त हो गया। विरोधी इस घटना के बाद भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबरः 206

श्री चानण राम पर कृपा करनी

एक समय गाँव मन्नण,जालन्धर निवासी श्री चानण राम जी की माता ठाकुरी जी महाराज स्वामी सरवण दास जी के दर्शन करने आए। उन ही दिनों श्री चानण राम जी मेरठ में फौज में नौकरी करते थे।

माता ठाकुरी ने महाराज जी को नमस्कार की और निवेदन किया,'' महाराज जी! मेरे पुत्र के घर दो लड़कियां है। कोई बेटा भी होगा जी?''महाराज जी ने पूछा,''तुम्हारा पुत्र कहां है।''

''जी मेरठ फौज में नौकरी करता है।'' माता ठाकुरी ने उतर दिया।

महाराज जी ने कहा,''भजन सिमरन करो परमात्मा की कृपा से इस बार लड़का जन्म लेगा।''महाराज जी के वचन अटल हुए। निश्चित समय बाद उसके घर पुत्र का जन्म हुआ।

(बलवीर मन्नण)

(श्री चानण राम,गाँव मन्नण (जालन्धर),16,जून 2001)

साखी नंबरः 207

मुझे व्यक्ति की योनी डाल दो

कुटिया के आंगन में सत्संग प्रवाह चल रहा था। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी आसन पर विराजमान थे और उन के साथ सभी संगत सत्संग प्रवाह में अधिक आनंद की प्राप्ति कर रही थी।

सत्संग समाप्त हुआ। महाराज जी आसन से उठे। श्री चानण राम महाराज जी की ओर चले तो महाराज जी ने पूछा,''हां भाई।कैसे आए?''

''जी मुझे व्यक्ति की योनी डाल दो।'' चानण राम ने विनम्रता से निवेदन किया। उत्तर सुन कर महाराज जी संगत की तरफ मुख करके मज़ा के साथ कहने लगे,''देखो भाई इस की तरफ यह व्यक्ति नहीं?'' संगत में खड़े स.सोहन सिंह ने कहा,''महाराज जी! अभी यह व्यक्ति नहीं, गधा ही है। इस को व्यक्ति की योनी आप ने ही डालना है, महाराज जी।''

महाराज जी ने वचन किया,'' अच्छा।'' समय दिया, चानण राम दिए समय अनुसार पहुँचा और महाराज जी से नाम की दात प्राप्त की।

(बलवीर मन्नण)

(श्री चानण राम,गाँव मन्नण (जालन्धर),16,जून 2001)

साखी नंबर: 208

रखनेहार सत्गुरू

श्री चानण राम का एक ही पुत्र था जिस का नाम था मदन। एक दिन वह घर की छत पर सो रहा था। रात अभी न होने के कारण, श्री चानण राम उसकी पत्नी और लड़कियां अभी नीचे ही थे। इतने में ज़ोरदार आवाज़ हुई। उन्होंने सोचा कि शायद नज़दीक वाला छप्पर गिर गया होगा। शोर होने लगा। पता चला कि मदन छत से गिर पड़ा है। सभी मदन को देखने के लिए दौड़े। मदन को देखा। वह ठीक था। सभी हैरान थे कि छत(जो कि काफी ऊँची थी) से गिरने पर भी मदन ठीक था। सारे अंग ठीक थे, एक हल्के पीठ दर्द से।

सुबह श्री चानण राम सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पास आए। नमस्कार की और सारी बात बताई। महाराज जी ने सारी बात सुनने के उपरान्त यह वचन किए,'' जिसने फैंकना था फैंक दिया। जिसने रखना था रख लिया।'' साथ ही सलाह दी,''नई दाना मण्डी चले जाना। वहां एक हकीम आता है। उस के पास से दवाई ले आना।''

वचन मान कर, चानण राम मदन को नई दाना मण्डी उक्त हकीम पास ले गए। हकीम ने दवाई और तेल मालिश करने के लिए दिया। बताए अनुसार दवाई खाने तेल मालिश करने के कुछ दिनों बाद में वह बिल्कुल ठीक हो गया।

(बलवीर मन्नण)

(श्री चानण राम, गाँव मन्नण(जालन्धर), 16जून, 2001)

साखी नंबर: 209

डर दूर करना

श्री चानण राम जालन्धर छावनी में नौकरी करते थे। उन दिनों में उस की ड्यूटी चौंकीदार के तौर पर शाम 4 बजे से रात 12 बजे तक होती थी। ड्यूटी खत्म होने के बाद श्री चानण राम कुछ घण्टें वहीं आराम करते और प्रात: काल घर चले जाते।

उन दिनों श्री चानण राम की पत्नी प्रकाश कौर कुछ बीमार हो गई। श्री चानण राम ने सोचा कि ड्यूटी खत्म होने के बाद मैं आज जल्दी ही घर चला जाऊँ तो जो घर जा कर पत्नी की देख रेख कर सकूँ। 12 बजे श्री चानण राम की ड्यूटी खत्म हुई। उपरोक्त सोच मन में रखते हुए आज उस ने पहले की तरह ज़्यादा समय आराम करने की बजाए कुछ समय ही आराम किया और साइकिल पर सवार हो कर घर की ओर चल पड़े।

चानण राम अभी राएपुर रसूलपुर के नज़दीक ही थे कि उस को किसी वस्तु का भय आया। श्री चानण राम डर गए। उस समय कानों में आवाज़ आई,''जो पंक्तियां बताई है, याद कर।'' श्री चानण राम ने चारों तरफ देखा। काली रात के बिना और कुछ भी नहीं था। यह आवाज़ किसकी? फिर उपरोक्त शब्दों को ही सहारा मान कर भजन करने लगे, डर दूर हो गया।

जब श्री चानण राम गाँव के नज़दीक पहुँचा तो उस को अपने आगे-आगे चले जा रहे सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के स्वरूप के दर्शन हुए, जो कि उस के बताने के मुताबिक उससे तकरीबन 100 गज़ की दूरी पर थे। मन ही मन महाराज जी को नमस्कार की और भजन करते हुए घर पहुँच गए। डर तो जैसे कहीं पंख लगा कर उड़ गया।

अगले दिन महाराज जी ने गाँव मन्नणां निवासी श्री पाखर राम द्वारा चानण राम को कुटिया आने के लिए संदेश भेजा। संदेश मिलते ही श्री चानण राम कुटिया पहुँचा। महाराज जी को प्रणाम किया। उस समय महाराज जी अपने आसन पर विराजमान थे। उठे और श्री चानण राम को अपने आसन से दो कदम की दूरी पर एक तरफ ले गए। महाराज जी ने कहा,''रात को नहीं चलना।'' श्री चानण राम ने झूठ ही कह दिया,''जी मैं नहीं चलता।''

यह सुन कर महाराज जी झिड़क कर(गुस्से से)कहने लगे,''रात चला नहीं? और महाराज जी ने उस के साथ बीती रात की सारी घटना ब्यान की। आगे महाराज जी,''रात तुम्हारे यह हुआ नहीं।''

''हां जी महाराज जी।'' श्री चानण राम अब सच के सामने सच को क्या छुपाना।

महाराज जी ने वचन किया,''फिर झूठ क्यों बोले?''

''जी गलती हो गई।''श्री चानण राम ने हाथ जोड़ कर कहा।

''अच्छा। रात को नहीं चलना दोबारा''। महाराज जी ने समझाया।

(बलवीर मन्नण)

(श्री चानण राम, गाँव मन्नण (जालन्धर),16जून, 2001)

साखी नंबरः 210

प्रमाण तथा प्रत्यक्ष

एक समय सुबह-सुबह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सैर करते हुए गाँव ब्यास(जालन्धर)गए। महाराज जी इसी तरह ही सुबह सैर करते हुए कई गाँवों में चले जाते थे और सोते हुए को जगाकर,असल में जागने और गफलत की नींद से छुटकारा पाने के लिए परमात्मा का भजन करने का संदेश दिया करते थे।

जब महाराज जी ब्यास गाँव की संगत को यह शुभ-संदेश दे कर गाँव से बाहर की ओर आ गए तो कुछ व्यक्ति आपस में महाराज जी के पौणाहारी होने के बारे बातें करने लगे। कुछ ने इस को मज़ाक समझा। कुछ ने कहा कि ,"हमने तो सुना है।" आखिर एक व्यक्ति ने सलाह दी कि,"आज हम देख ही लेते हैं। महाराज जी अभी ज़्यादा दूर नहीं गए होंगे। वह नहर वाले रास्ते कुटिया जायेंगे। आप दोनों साइकिल पर सड़क वाले रास्ते से कुटिया जाओ। अगर महाराज जी तुमसे भी पहले पैदल चलते हुए कुटिया पहुँच जायेंगे तो हम समझ जायेंगे कि महाराज जी पोणाहारी है और अगर तुम महाराज जी से पहले कुटिया पहुँच गए तो हम सभी मान लेंगे कि महाराज जी पोणाहारी नहीं है।"

दो व्यक्ति सलाह मान कर साइकिल पर सवार हो कर सड़क वाले रास्ते से साइकिल तेज़ चलाते हुए कुटिया पहुँचे। आगे महाराज जी कुटिया में पहले ही पहुँचे हुए थे और संगत में अपने आसन पर विराजमान थे। जब वह देख कर वापिस जाने लगे तो महाराज जी ने पीछे से आवाज़ लगाई, बात सुन कर जाना। दोनों महाराज जी के पास पहुँच गए। नमस्कार की। महाराज जी ने मज़ाक से उन को पूछा,"कैसे आए? कोई काम था?" पहले तो उन का शर्म के कारण मुँह न खुला। परन्तु महाराज जी के दो-तीन बार पूछने पर उन्होंने सारी बात बताई। महाराज जी मुस्कुराने लगे। *(बलवीर मन्नण)*

(श्री चानण राम,गाँव मन्नण (जालन्धर),16,जून 2001)

साखी नंबरः 211

मूंगफ्ली की रक्षा'

जब मूंगफली पक जाती है तो उसकी अधिक ध्यान रखना पड़ता है।

इस को आदम-रूपी मूंगफली चोरों से बचाना पड़ता है। क्योंकि बिना रक्षा से मूंगफली ज़्यादा फैलाव में आ जाती हैं। उक्त आदम-रूपी मूंगफली चोर पकी हुई मूंगफली तोड़, कच्ची मूंगफली पौधे समेत उखाड़ कर फैंक देते थे।

श्री अमर नाथ जिसने कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के हुक्म अनुसार खेतों में मूंगफली बीजनी शुरू की थी, का काम इतना सफल हुआ कि अब उसके द्वारा तकरीबन 50 एकड़ ज़मीन में मूंगफली बोई हुई थी। रक्षा के लिए उसने उसी ज़मीन में झोपड़ी बनाई हुई थी। सारी ज़मीन एक जगह ही थी।

मूंगफली पक गई। इतनी ज़मीन में ज़्यादातर श्री अमर नाथ अकेला ही देख-रेख करने वाला होता था। अगर एक तरफ देखने जाते तो दूसरी तरफ किसी मूंगफली चोर द्वारा मूंगफली के तने उखाड़े होते थे। अगर दूसरी तरफ जाते तो पहली तरफ यही हाल होता था। श्री अमरनाथ बहुत परेशान हुआ।

एक दिन मुश्किल से समय निकाल कर कुटिया गया। पिछली चिंता के कारण बहुत समय रूक न सका खेतों में वापिस पहुँच गया। क्या देखा यहां रक्षा करने के बावजूद भी मूंगफली तोड़ी जाती थी, वहां आज उस के गैर हाज़िर होने पर भी पूरी ज़मीन में एक लांगर भी तोड़ी हुई नहीं थी।

श्री अमर नाथ के शब्दों में,"जब मैं खेतों में होता हूँ, तो मूंगफली तोड़ ली जाती है। पर जब मैं कुटिया जाता हूँ तो एक भी लांगर खेत से तोड़ी नहीं जाती। यह सब उनकी ही मेहर थी।"

(श्री अमर नाथ गाँव मन्नण, जालन्धर, 13जून, 2001(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 212

श्री चानण राम की चिंत्ता का अंत करना

श्री चानण राम की दो बेटियां जोकि बहुत पढ़ी लिखी थी। शादी के लायक हो गई। रिश्ता करने के लिए कई घर देखे,लड़कों की परख की,परन्तु कहीं भी रिश्ता नहीं हुआ। कई बार जवाब हो जाता और कई बार श्री चानण राम को स्वयं को लड़का या घर ठीक नहीं लगता।

दिन बीतते गए। घूमते-फिरते,फिर असफल रहते श्री चानण राम के मन में चिन्ता रूपी पहाड़ दिन प्रतिदिन बढ़ रहा था। आखिर यह पहाड़ इतना बढ़ गया कि श्री चानण राम इस को उठाने में असमर्थ हो गया। हार कर बैठ गया।

आखिर एक रात श्री चानण राम मन में संकल्प किया, कि आज मैं भजन पर बैठूंगा और उतनी देर नहीं उठूंगा, जितनी देर महाराज जी आवाज़ नहीं लगाते।

बैठा रहा। रात के दो बज गए। आखिर पपीहे की विलाप परवान हुई, आवाज़ आई,"सब कुछ डेरे ही हो जाएगा। एक महीने के अन्दर-अन्दर चिंता मत करो।"

थोड़े ही दिनों में कुटिया में एक परिवार नमस्कार करने आया। उन्होंने संत गरीब दास महाराज जी से अपने लड़के के लिए(जोकि बहुत पढ़ा लिखा था)किसी पढ़ी लिखी लड़की की पूछ की। संत गरीब दास महाराज जी ने बताया,"लड़की तो है, पर घर से गरीब है।" उन्होंने उत्तर दिया,"कोई बात नही, लड़की पढ़ी लिखी हो।" सारा परिवार श्री चानण राम के घर आया। लड़की देखी और पसंद कर ली। रिश्ता हो गया। दूसरी लड़की का रिश्ता भी उसी लड़के के चाचे के लड़के से कुछ दिनों में हो गया। दोनों लड़कियों के पति सरकारी नौकरी करते थे।

(श्री चानण राम, गाँव मन्नण, जालन्धर,16जून, 2001)

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 213

आधी रात का संदेश

हल्की बारिश हो रही थी। तकरीबन रात के 11बज चुके थे। सत्गुरू निरंजन दास महाराज जी उस समय छोटी अवस्था में ही थे।

सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज ने संत निरंजन दास महाराज जी को उठाया और साइकिल पर नूरपुर जाने और संदेश देकर वापिस आने के लिए हुकम किया।

महाराज जी की आज्ञा लेकर संत निरंजन दास महाराज जी वहां चले गए। जब कुटिया से कुछ दूरी पर बाहर आए तो एक जोत साइकिल के आगे कुछ दूरी पर जलने लगी। जिस रास्ते से उन्होंने जाना था, उसी रास्ते उनके साइकिल के आगे-आगे जलती यह जोत नूरपुर तक साथ गई।

संत निरंजन दास महाराज जी ने महाराज जी के हुक्म अनुसार सन्देश दिया और वापिस आ गए। दोबारा उसी तरह साइकिल के आगे जोत जलती हुई, कुटिया तक आई। कुटिया नज़दीक आकर यह जोत आलोप हो गई।

साखी नंबर: 214

माया संतों की दासी

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने आई संगत जब महाराज जी के आगे अधिक माया रखकर नमस्कार करने लगी तो महाराज जी उन को माया वापिस कर देते और कहते,''ओए बच्चे क्या खाएँगे। घर में कोई सामान ले जाना। बच्चे खाएँगे।''

परन्तु जब संगत न मानती तो महाराज जी थोड़ी माया रखकर बाकी वापिस कर देते।

शाम को जब संगत घर को वापिस जाने के समय, महाराज जी के पास से आज्ञा लेते समय भी माया सहित नमस्कार करने लगते तो महाराज जी कई बार ऐसा करने वाले आदमी के मुँह पर हल्का-सा थप्पड़ मारकर या खूंडा मारकर कहते कि,''परिवार को अच्छी वस्तु खाने को लाकर देना। महाराज जी अक्सर कहा करते थे,''साधुओं को माया की कोई कमी नहीं होती। माया तो साधुओं के पीछे-पीछे चलती है।''

(श्री प्रीतम दास, गाँव मन्नण, 25,जून 2001)(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 215

सौ रुपए से चार सौ रुपए हो जाना

यह घटना स. पाखर सिंह के साथ उस समय बीती थी जब उनकी ड्यूटी लेह-लद्दाख में थी। स.पाखर सिंह लेह-लद्दाख से अपनी तनखाह में से संतों के लिए सेवा के तौर पर 100रु पए मनीआर्डर भेजा। इधर संतों को मनीआर्डर के पैसे मिल गए और पैसे ही रसीद वापिस स.पाखर सिंह को मिली तो उन्होंने देखा कि रसीद 400 रुपए की है जब कि उसने 100 रुपए भेजे थे। यह देखकर पाखर सिंह हैरान हो गए कि मैंने अपने हाथों से 100 रुपए का मनीआर्डर भरा था। यह 400रुपए की रसीद मेरे पास कैसे आ गई।

फिर जब पाखर सिंह जी लेह-लद्दाख से छुट्टी आए तो महाराज जी को नमस्कार करने के लिए डेरे पहुँचे। महाराज जी ने हाल-चाल पूछा और पास बिठाया और महाराज जी कहने लगे।

''पाखर सिंह तुम्हारे भेजे 400 रुपए मिल गए थे।'' ''चार सौ रुपए, मैंने तो महाराज जी 100 रुपए भेजे थे और आपको 400 रुपए मिले और मुझे रसीद भी 400 रुपए की वापिस मिली। महाराज जी यह क्या कौतुक है?'' तो

महाराज जी हंस कर कहने लगे। कभी–कभी डॉक्टरों की मोहरें भी बदल जाती है। इस तरह महाराज जी ने अपने सेवक को कितनी प्रंशसा दी।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबरः 216

स.पाखर सिंह जी का सूबेदार बनना

जब पाखर सिंह की बदली लेह–लद्दाख से जालन्धर की हो गई तो वह हवलदार हो गए थे। वह छुट्टी लेकर अपने घर गए और अपनी पत्नी से कहने लगे कि,''अब मैंने हवलदार ही रिटायर हो जाना है।'' उस रात ही पाखर सिंह जी की पत्नी के सपने में महाराज जी आए और कहने लगे, ''पाखर सिंह तुम्हें कहता है कि मैंने हवलदार ही रिटायर हो जाना है। इस ने तो थोड़े दिनों तक सूबेदार बन जाना है।''

उनकी पत्नी ने सुबह सपने के बारे पाखर सिंह जी को बताया तो पाखर सिंह जी अपनी पत्नी को कहने लगे,''क्या कभी सपने सत्य होते हैं?'' जब पाखर सिंह जी छुट्टी बिता कर कैंप में जालन्धर गए तो कर्नल साहिब जी ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा कि,''मेरी तरक्की हो गई है। आप सूबेदार बन गए हो और आपने लखनऊ जाना है।'' पाखर सिंह हैरान हो गए कि महाराज जी के बोल पूरे हुए।

फिर वह डेरे महाराज जी के दर्शन करने गए। महाराज जी को बड़ी श्रद्धा से शीश झुकाया और महाराज जी बहुत खुश हुए। हमारा सेवक सूबेदार बन गया है।

महाराज जी पाखर सिंह जी को कहने लगे,''पाखर सिंहा, तुम अभी ही लखनऊ चले जाओ।'' पाखर सिंह हैरान हो गया। महाराज जी कहने लगे,''तुम कुछ भी हमारे से न पूछो, बस तुम अभी ही चले जाओ।'' पाखर सिंह ने सत्गुरू का हुक्म माना और उसी दिन ही लखनऊ चले गए। तो उस से दूसरे दिन ही 1971–72 ई. की जंग लग गई और जितने जालन्धर कैंप वाले थे, वह सभी बार्डर पर भेज दिए गए। इस तरह महाराज जी ने स.पाखर सिंह को जंग में जाने से बचाया और आज पाखर सिंह जी कहते हैं कि,''शायद मैंने उस जंग में शहीद हो जाना था पर महाराज जी ने मुझे एक दिन पहले ही लखनऊ भेज दिया।''

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबरः 217

दर्द का इलाज़ और अन्य बख्शिश

संतों महापुरूषों की रमज़े तो दुनिया से न्यारी होती है। वह स्वयं ही खुदा का नूर होते हैं और अपने प्रेमी सेवकों की हर मनोकामना पूरी करते है। ज़रूरत होती है अधिक प्यार भावना से उनके चरणों से जुड़ने की। उनके बताए हुए मार्ग पर चल कर अपनी अनमोल जिन्दगी को सफल बनाने की। संत महापुरूष स्वयं ही परमात्मा का स्वरूप होते हैं और जीव रूपी आत्मा को मिलाना और सेवकों की हर मुश्किल का पलों में हल करना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है और ऐसे ही पूर्ण महात्मा का रूप थे 108संत सरवण दास महाराज जी। स.पाखर सिंह नौगज्जा वालों की जिन्दगी इस तरह की संतों की कृपा से सफल बनी। उनके ही शब्दों में:-

''यह बात 1956-57 ई. की है जब मैं फौज में भर्ती हुआ था। सर्विस दौरान मेरी कमर में दर्द था। जिस का इलाज बहुत करवाया।आर्मी के बड़े-बड़े अस्पतालों में इलाज़ करवा चुका था। पर बीमारी नहीं मिल सकी। थक हार कर मैं छुट्टी लेकर वापिस घर आ गया। दूसरे दिन ही मैं संतों के डेरे में गया और महाराज जी को नमस्कार की और महाराज जी ने मुझे कहा,''क्या हाल है?'' मैंने कहा,''महाराज जी सब ठीक है,पर मेरी कमर में बहुत दर्द रहता है जिस कारण मैं बहुत तकलीफ भोग रहा हूँ। डेरे में एक वैद्य होता था, जिस का नाम मुझे याद नहीं है। महाराज जी ने मेरी तकलीफ सुन कर वैद्य जी को आवाज़ लगाई।''

''ओए वैद्य, इधर आओ।'' वैद्य जी महाराज जी के पास आए और कहने लगे,''क्या हुक्म है।'' महाराज जी कहने लगे,''10 गोलियां दे दो'' और मुझे कहने लगे,''तुम्हारा दर्द इन गोलियों से ही छूमन्तर हो जाएगा।'' और,''उन 10 गोलियों से ही मेरा शरीर एक दम ठीक हो गया। दर्द तो उस दिन से ही ठीक हो गई थी। जब कि मुझे आर्मी अस्पताल से भी जवाब मिल गया था।''

इस के बाद मैं दूसरी बार डेरे आया तो महाराज जी को कहा,''मेरे कोई पुत्र नहीं है। चार लड़कियां ही हैं।'' मैंने कहा,''महाराज जी, हमें पुत्र की दात बख्शिश करो जी। हमने बहुत दवाईयां भी खाई थी। फिर भी हम पुत्र को तरस रहे हैं। मेरी फरियाद सुनकर महाराज जी ने मुझे और मेरी पत्नी को एक तरफ

ले गए और उन्होंने मुझे कोई वस्तु लाने को कहा और कहने लगे,''पाखर सिंह यह चींज़ लेकर हमारे पास आ जाओ''और हम दूसरे दिन वह वस्तु लेकर महाराज जी पास गए। महाराज जी ने वह वस्तु हमसे ले ली और खाने के लिए प्रसाद दिया और कोई बात नहीं की और जब गर्भ ठहरे को दो महीने हो गए तो हम महाराज जी के दर्शनों को गए। महाराज जी कहने लगे–

''पाखर सिंह तुम्हारे घर पुत्र आने वाला है।'' इस तरह हमें संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से पुत्र का सुख प्राप्त हुआ।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबर: 218

स.लैम्बर सिंह को चरणों से लगाना

यहब ातस ंतस रवणद ासम हाराजज ीके स मयक ीहै ाल गभग 1965–66ई. के समय जब लैम्बर सिंह जी फौज में नौकरी करते थे। उस समय उनकी ड्यूटी उत्तर प्रदेश के शहर मेरठ में थी। स.लैम्बर सिंह जी संत सरवण दास महाराज जी को कभी नहीं मिले। फौज में स.लैम्बर सिंह के साथ गाँव बल्लां के वसनीक स.स्वर्ण सिंह और एक साथी सर्विस करते थे। वह बताया करते थे कि,''बल्लां वाले संत बहुत पहुँचे हुए महापुरूष हैं। यह सब बातें सुनकर लैम्बर सिंह के मन में संतों के प्रति अधिक श्रद्धा उत्पन्न हो गई और स.लैम्बर सिंह के कहने के मुताबिक एक चमत्कार हुआ। वह इस तरह है,''मैं सोचने लगा अगर आप पहुँचे हुए महापुरूष हैं तो मुझे अपने चरणों से जोड़ लो और इस बात से कुछ दिनों बाद मुझे कैंप में दो आदमी मिलने आए, जबकि मैं उन को जानता भी नहीं था।''

उन्होंने मुझे आकर पूछा कि,''आपका नाम लैम्बर सिंह है।'' मैंने कहा,''हां जी मैं ही लैम्बर सिंह हूँ तो उन्होंने कहा कि संत सरवण दास महाराज जी बल्लां वालों ने आपके लिए प्रसाद भेजा है।'' उन्होंने कहा था कि,''कैम्प में एक लैम्बर सिंह जी है, यह प्रसाद उनको दे देना।'' मैंने प्रसाद तो ले लिया पर मेरे मन में विचार आया कि,''मैं तो कभी संतों के डेरे भी नहीं गया और न ही मैंने कभी उनके दर्शन किए है, फिर उन्होंने मेरे लिए प्रसाद कैसे भेज दिया?'' यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा चमत्कार था। उस के बाद मेरा मन उदास रहने लगा और मैं अपने मन में ही संतों के बारे में सोचने लगा और मन में ही कहा कि,''मुझे दर्शन दो, मुझे अपने चरणों से जोड़ लो।''

इस घटना के 2-4दिन बाद मैं रात के समय सोया पड़ा था। अचानक मुझे लगा कि मेरे पांव पर किसी ने खूंडा(डंडा) मारा है और साथ ही मुझे कोई कह रहा है,''चल ओए उठ।'' इस तरह मेरे दो-तीन खूंडे पड़े और मैं उठा तो मेरे सामने एक ऊँचे लम्बे बुर्जुग खड़े थे। मैंने सोचा,''भाई ये कौन है, जिन्होंने मुझे नींद से जगाया। फिर वह बुर्जुग कमरे से बाहर की ओर चल पड़े और मैं उनके पीछे चल पड़ा।'' थोड़ा आगे जाकर महाराज जी अलोप हो गए, मैं आस-पास देखने लगा कि वह कहाँ चले गए? मुझे ऐसा लगा कि यह संत सरवण दास महाराज जी है। फिर तीन रातें मेरे साथ इस तरह ही खूंडें लगते रहे और आवाज़ आती रही।''चल उठ ओए हमारे साथ चल।'' फिर मुझे यकीन हो गया कि यह संत सरवण दास महाराज जी ही हैं।

फिर मैंने फौज में से छुट्टी ली और मैं सीधा संतों के डेरे की ओर ही चल पड़ा। जब मैं डेरे में पहुँचा तो मैंने देखा कि यह वही बुर्जुग हैं जो मेरे खूंडे मारते थे। वह मेरी तरफ देखकर हंस पड़े और कहने लगे,''आ भाई लैम्बर सिंह आ गया, सही-सलामत पहुँच गए। हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे।'' मैंने उनके चरणों में नमस्कार की और मेरी आँखों में से आँसू आ गए। मुझे महाराज जी ने आर्शीवाद दिया और संत हरि दास महाराज जी को कहा,''यह लैम्बर सिंह, यह बहुत दूर से आया है। इस को चाय पानी पिलाओ।'' बाद में संत हरि दास महाराज जी ने मुझे बताया कि,''आपके आने से पहले संत बार-बार कुटिया से बाहर जा कर देख रहे थे, तो मैंने पूछा,''महाराज जी किस को देख रहे हो?'' तो उन्होंने कहा कि,''अपने एक सेवक फौजी लैम्बर सिंह ने आना है।''

फिर मैं 15-16 दिन उनके पास ही रहा और इस तरह उन महापुरूषों ब्रह्मज्ञानी, पूर्ण महात्मा संत सरवण दास महाराज जी ने मुझे अपने चरणों से लगा लिया।

(बलवीर सिंह)

साखी नंबर: 219

स.लैम्बर सिंह की पत्नी और बच्चों की रक्षा करनी

यह घटना स.लैम्बर सिंह की पत्नी नसीब कौर के साथ बीती थी। जब स.लैम्बर सिंह की पत्नी और बच्चे संतों के डेरे दर्शन करने के लिए बस में आ रहे थे। भारी बरसात के कारण रास्ते बहुत खराब थे और रास्ते में एक छोटी

नहर थी। जो पानी से भरी हुई थी। वहाँ से बस का निकला मुश्किल था उस नहर के ऊपर ही दूसरी तरफ जाने के लिए रेल की पटरी थी। और कोई रास्ता न था। बस वालों ने उन को बस में से उतार दिया और दूसरी तरफ़जाने के लिए पटरी ऊपर चले जाए। मैं और मेरी पत्नी और बच्चे तथा तीन मुसाफिर औरतें हमारे साथ थे। पर वह डेरे जाने वाले नहीं थे। मैं सामान वाला बैग ले कर आगे-आगे चल पड़ा और मेरी पत्नी उन औरतों के साथ पीछे आ रही थी। मैं फौजी था इसी लिए मैं जल्दी-जल्दी दूसरे तरफ पहुँच गया। मेरी पत्नी और वह औरतें अभी पटरी के बीच में ही थे और गाड़ी का हॉर्न बज गया। मैंने पीछे की तरफ देखा कि गाड़ी आ रही है। मैं डर गया और सोचा कि यह अब नहीं बचेंगे। यह अब नीचे आ जायेंगे। मैंने आँखें बंद कर ली और संत सरवण दास महाराज जी को याद करने लगा। गाड़ी बहुत नज़दीक आ रही थी। साथ वाली औरतें डर कर पटरी से नीचे कूद गई। जिनमें से एक की तो टांग टूट गई, एक की बाजू और तीसरी के भी बहुत चोट लगी। मेरी पत्नी पानी में नहीं कूदी वह बच्चों के साथ उसी तरह ही चली रही और मैं आँखें बंद करके खड़ा रहा। जब मेरे पास से गाड़ी निकल गई और मैंने आँखें खोली तो देखा कि मेरी पत्नी और बच्चे पास वाली झाड़ियों पर गिरे पड़े थे। मैंने उनको उठाया और पूछा,''तुम यहाँ किस तरह पहुँच गए। तुम्हारे ऊपर तो गाड़ी चढ़ ही गई थी।'' तो वह रोने लग पड़ी और कहने लगी कि,''मैं संतों को याद करती आ रही थी और मुझे आवाज़ आ रही थी, कि चल नसीब कौर चलती चल और पीछे मेरी पीठ पर खूंडा भी लगा रहा और आवाज़ भी आ रही थी। जब मैं इस तरफ पहुँची तो मुझे पता नहीं चला। गाड़ी मेरे पास से निकली मैं उस की हवा से इस झाड़ी पर गिर पड़ी।'' जब हम डेरे पहुँचे। महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी ने मेरी पीठ पर दो मुक्के मारे और हंस कर कहने लगे कि,'' तुम्हें पता नहीं ओए, पत्नी और बच्चों का कैसे ध्यान रखते हैं? आप आगे चल पड़े और इन को पीछे छोड़ गया।'' और मेरी पत्नी को महाराज जी कहने लगे,'' नसीब कौर, तुम ठीक हो चोट तो नहीं लगी और कहा तुम्हारे कोई पिछले कर्मों का फल मिला कि तुम बच गए।'' हमने कहा,'' महाराज जी, बचाया तो हमें आपने है।'' तो उन्होंने कहा,'' आप तो हमारी तरफ आ रहे थे। हम आप को कैसे मरने देते। ओए कौन सा साधू अपने माथे बदनामी लेता है। लोगों ने कहना था साधुओं के गए थे। गाड़ी के नीचे आ कर मर गए। हम तो अपने

सेवकों के साथ ही रहते हैं।'' इस तरह महाराज जी ने बीबी नसीब कौर की रक्षा की।

(बलवीर मन्नण)

साखी नंबरः 220

हमारी ओर से चाहे खीर बना लो

यह घटना स.रतन सिंह पुत्र स.ज़्वाला सिंह सुमन गाँव मुरादपुर नरिआला ज़िला जालन्धर जो कि 1940 ई. से बम्बई शहर में रह रहे हैं, उन की आँखों देखी है। रतन सिंह के बताने के अनुसार, ''जब उन को पंजाब आने का मौका मिलता था तो वह संत सरवण दास महाराज जी के पास महीना-महीना रहते थे।''

इसी तरह एक बार संगत का इक्ट्ठ महाराज जी के पास बैठा था तो महाराज जी ने कहा,''किस-किस ने चाय पीनी है भाई हाथ खड़े करो।'' तो 25-30 व्यक्तियों ने हाथ खड़े किए और फिर सभी को चाय का लंगर छकाया गया। महाराज जी कहने लगे,''अब बताओ भाई क्या खाना है।'' तो हुक्मां माई कहने लगे,''महाराज जी, हमारी तरफ से चाहे खीर बना लो और देखते हैं आप किस तरह खीर बनाते हो, न दूध है न ही चीनी है।''महाराज जी ने कहा कि,''अगर खीर खानी है तो चावल उबलने रख दो। हुक्मां माई ने फिर कहा कि,''न दूध है न चीनी है खीर कैसे बनेगी?'' महाराज जी ने कहा कि,'' आप को खीर खाने से मतलब है। अभी थोड़ी ही देर बाद हुई थी कि चार-पाँच व्यक्ति दूध की बाल्टियां ले कर आ गए और फिर थोड़ी ही देर बाद एक व्यक्ति चीनी ले कर आया। सारी ही संगत हैरान रह गई कि कुछ ही समय में ही महाराज जी दूध ले आए और चीनी भी ले आए। जो भी चीज़ें डेरे में खत्म हो गई वह सब कुछ ही समय में आ गई। फिर महाराज जी कहने लगे,'' अब खा लो जितनी खीर खानी है।''

साखी नंबरः 221

लंगर का ख़त्म न होने वाला भंडार

यह घटना भी स. रत्न सिंह के साथ ही बीती थी। उस दिन सक्रांति का पवित्र दिन था। डेरे में सत्संग का प्रवाह चल रहा था। संगत भजन-कीर्तन का आनंद ले रही थी। स. रत्न सिंह और उनके साथ मौजूदा गद्दी नशीन संत निरंजन दास जी महाराज लंगर की सेवा संभाल रहे थे। संगत के लिए लंगर

तैयार हो चुका था। जितनी संगत पहले डेरे आती थी, उसी अनुसार लंगर तैयार किया गया था। जितना अन्न का भंडार डेरे में मौजूद था वह सारा ही पका लिया गया था। पर संगत उस दिन 250-300 के करीब हो गई थी। जिस की पहले गिनती 100 के करीब होती थी। अन्न का भण्डार इतनी संगत के लिए थोड़ा था। संत निरंजन दास जी और स. रत्न सिंह जी ने जाकर महाराज जी को बताया कि,'' महाराज जी अपने तैयार किए लंगर में से थोड़ी संगत ही लंगर खा सकती है तो महाराज जी ने कहा ,'' मुझे लंगर वाले कमरे में साथ लेकर चलो। फिर महाराज जी ने कमरे में जाकर अरदास की तो रत्न सिंह को कहने लगे,'' एक कपड़ा लेकर आओ।'' रत्न सिंह ने कपड़ा महाराज जी को दिया और महाराज जी ने वह कपड़ा लंगर से ऊपर दे दिया और कहने लगे,'' आपने यह कपड़ा लंगर से उतारना नहीं है। थोड़ा एक तरफ से लंगर उठाई जाना।'' हमने फिर इसी तरह लंगर बरताना शुरू कर दिया। महाराज जी बीच-बीच में कमरे में आते रहे। इस तरह सारी संगत ने लंगर छक लिया। पर लंगर का भण्डार उसी तरह ही भरा रहा। कहाँ हम सोचते थे, कि संगत भूखी ही न रह जाए। पर बाद में लंगर बचा रहा। हमारे लिए यह एक अनोखा ही चमत्कार था।

साखी नंबरः 222

पुत्रों की दात बख्शिश करना

स. रत्न सिंह जी के बताने अनुसार कि एक बार हम डेरे आए हुए थे। सारी संगत संत सरवण दास जी महाराज पास बैठी थी। एक जमींदार बैलगाड़ी पर गेहूँ की बोरियां लेकर आया। उस की दो पत्नियां भी उसके साथ थी। उन्होंने आकर महाराज जी को नमस्कार की। उसके कोई औलाद नहीं थी। इस लिए उसने दूसरी शादी की थी। पर उसकी दूसरी पत्नी के भी कोई औलाद नहीं हुई। वह जमींदार महाराज जी से हाथ जोड़ कर कहने लगा,'' महाराज जी, मैंने दो शादियां करवाई है। पर फिर भी मेरे कोई औलाद नहीं है। पहली पत्नी को तो डॉक्टरों ने जवाब दिया है, पर औलाद दूसरी पत्नी से भी नहीं प्राप्त हुई।''

महाराज जी ने उस की व्यथा सुनी और उसकी पत्नी को एक सेब दे दिया और वह कहने लगा,'' महाराज जी, इस को तो डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है, जिसको आपने सेब दिया है। फल तो मेरी दूसरी पत्नी को देना था।

महाराज जी कहने लगे ,''ले इसको भी एक दे दो।'' तो उन दोनों ही औरतों की कोख को भाग लग गए। उसकी पहली पत्नी के भी पुत्र पैदा हो गया। इस तरह महाराज जी ने हाथों की लकीरें बदल दी और असंभव को संभव कर दिखाया। ऐसे थे तपस्वी संत सरवण दास महाराज जी।

साखी नंबरः 223

घोड़े की दौड़ और पैदल दौड़

श्री गोनी राम पुत्र श्री घुला राम ब्यास गाँव,जालन्धर वाले बताते हैं कि, '' उन्होंने एक बार अपने घर में सत्संग करवाया। मैं(गोनी राम)महाराज जी को घर ले जाने के लिए डेरे को आया और महाराज जी कुटिया में ही थे। मैं कुटिया के अन्दर गया और महाराज जी को नमस्कार की कि महाराज जी आज हमारे सत्संग है, आज हमारे घर में चरण पाओ जी।'' तो महाराज जी ने उनका निवेदन परवान किया और उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गए। मैंने महाराज जी से कहा,'' महाराज जी आपके जाने के लिए घोड़ा लाऊँ कि पैदल ही चलोगे।'' महाराज जी ने कहा,''घोड़ा क्या करना है, इसी तरह ही चलते है।'' फिर महाराज जी जब कुटिया से बाहर चले तो मैं उनके पीछे-पीछे ही था।

जब मैंने कुटिया से बाहर आकर देखा तो महाराज जी अलोप हो गए थे। मैंने सोचा महाराज जी आगे चले गए हैं। तो मैं खेतों में ही उनके साथ मिलने के लिए पीछे-पीछे भागा पर महाराज जी कहीं भी नज़र नहीं आए और जब मैं किशनगढ़ पहुँचा तो महाराज जी वहां प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं बहुत तेज़ दौड़ कर आया था और मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था। महाराज जी ने मेरी छाती पर हाथ रखकर कहा,'' ओए, तू कितना दौड़ लेगा।''

सो गोनी राम ने तो महाराज जी को घोड़े पर ले जाने के लिए कहा, पर महाराज जी ने उसको दिखा दिया कि उनके लिए बिना किसी सवारी से कहीं भी आना और पल में कहीं भी पहुँच जाना बड़ी मामूली बात है। इस तरह के कौतुक तो पूर्ण संत महापुरूष ही कर सकते हैं।

साखी नंबरः 224

यही दिन ही शुभ है

श्री गोनी राम के बताने अनुसार कि उनके भाई की शादी थी तो श्री गोनी राम जी शादी का दिन पक्का करने के लिए डेरे महाराज जी पास आए

और उन्होंने महाराज जी के पास निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे घर हमारे लड़के की शादी है, आप जी कृपा करो कि हमें शादी के लिए शुभ दिन बताओ।'' सत्गुरू ने उनके निवेदन को सुना और उनको शादी के लिए एक दिन बताया, पर गोनी राम जी के पिता को वह दिन पसंद नहीं आया और वह महाराज जी को कहने लगे कि,''महाराज जी इस दिन से दो दिन आगे शादी नहीं रखी जा सकती? तो महाराज जी गुस्से में आकर खूँडा उठा लिया और कहने लगे,''जो दिन एक बार बता दिया वही ठीक है।''

फिर महाराज जी के वचन अनुसार उस दिन को ही शादी सम्पन्न हो गई और शादी के दो दिन बाद ही गोनी राम के भाई की अचानक मृत्यु हो गई। यह वही दिन था। जिस दिन गोनी राम के पिता शादी करना चाहते थे, पर महाराज जी ने उनको यह दिन नहीं रखने दिया, क्योंकि महाराज जी जानी-जान थे। उनको पहले ही पता था, कि इन के घर उस दिन मौत होने वाली है और शादी में विघ्न पड़ जाना है। संत महापुरूष आने वाले समय को पहले ही जानते होते हैं।

(श्री गोनी राम, ब्यास गांव, 25 दिसम्बर 2003)

साखी नंबरः 225

संतों का वचन न मानना

श्रीमान् बिशनदास जी गाँव महेड़ू ज़िला जालधर के रहने वाले हैं। जो डेरा सचखंड बल्लां में सेवादार है। जो कि आज कल डेरे में प्रसाद की सेवा करते हैं। ब्रह्मलीन 108 सत्गुरू हरिदास महाराज जी रिश्ते में बिशन दास जी के मामा जी लगते हैं। बिशनदास जी को नाम की दात सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी से प्राप्त हुई।

वह बताते हैं कि उन्होंने एक बार नया साइकिल खरीदा और वह डेरे में अपनी पत्नी साथ ले कर महाराज जी के दर्शन करने आए। सर्दियों के दिन थे। काफी सर्दी पड़ती थी। सारा दिन महाराज जी के पास रहने के उपरान्त जब शाम को श्री बिशनदास जी ने महाराज जी से घर वापिस जाने की आज्ञा मांगी, तो महाराज जी कहने लगे,'' आप आज हमारे पास रह लो।'' पहले बिशनदास की पत्नी कहने लगी,''महाराज जी, मैंने तो प्रातःकाल पशुओं की देख रेख करनी होती है।'' साथ ही बिशन दास ने कहा,''महाराज जी मैंने तो सुबह काम पर जाना होता है।'' इसी लिए महाराज जी हमें आज्ञा दे दो जी। महाराज

जी के तीन बार वचन करने पर भी बिशन दास और उनकी पत्नी न माने तो महाराज जी ने उन को वापिस जाने की आज्ञा दे दी।

जब वह डेरे से वापिस घर जाने के लिए चले तो उन्होंने देखा कि साइकिल पंक्चर है, तो वह पैदल ही चल पड़े। काफी देर चलने के बाद उन्होंने एक दुकान से पंक्चर लगवाया और साइकिल पर आगे को चल पड़े। अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि साइकिल का टायर फट गया। अंधेरा भी काफी हो गया था और वह फिर पैदल ही चल पड़े। साथ ही एक दूसरे के साथ बहस करने लगे और दोष देने लगे, बिशन दास ने पत्नी को कहा,''तुम ही नहीं मानी संतों का कहा।'' पत्नी कहने लगी,''आप भी कौन सा माने थे।'' इस तरह वह धीरे-धीरे चलते गए और रात भी काफी हो गई थी। अंधेरा ज़्यादा होने के कारण वह गाँव चोहका में अपने रिश्तेदारों के घर चले गए। वहां जा कर उन्होंने थोड़ी देर आराम किया और प्रात:काल ही उन का साइकिल ले कर अपने गाँव की ओर चल पड़े। थोड़ा आगे जा कर उन की पत्नी की चुन्नी साइकिल के टायर में फंस गई और काफी समय चुन्नी निकालने को लग गया और अब न तो बिशन दास के काम पर जाने समय था तथा न ही उसकी पत्नी के पशुओं की देख रेख करने का समय रहा। जिस काम के कारण वह डेरे में नहीं रहे, उन में से कोई भी काम न हुआ। इस तरह संतों का वचन न मानने के कारण वह सारी रात कष्ट भोगते रहे।

सो इस से सिद्ध होता है कि अपने सत्गुरू का वचन सेवकों को मानना चाहिए। महापुरूषों के हर एक वचन में कोई न कोई राज़ छुपा होता है। जब अगले रविवार बिशन दास जी अपनी पत्नी के साथ डेरे में आए तो महाराज जी ने उन को कहा,''आप उस रात को डरे तो नहीं थे, तुम स्वयं भी खराब हुए और हमें भी परेशान किया, क्योंकि हमें भी आपके साथ ही जाना पड़ा था।''

(स्वयं बिशन दास)

साखी नंबर: 226

डूबने से बचाना

श्री बिशन दास जी के बताने के अनुसार कि जब वह गाँव से जालंधर काम पर पैदल ही आते थे तो रास्ते में एक नहर को पार कर जाना पड़ा था। एक दिन बारिश ज़्यादा होने के कारण वह काम से शाम के समय जब घर आ रहे थे तो नहर में पानी बहुत आया हुआ था। बिशन दास जी को गाँव पहुँचने के

लिए वह नहर को पार करना पड़ना था और वह अपने कपड़े थैले में डाल कर पानी में कूद पड़े। जब वह नहर के बीच में आ गए तो पानी उनकी गर्दन तक आ गया। फिर वह डूबने के डर से वापिस पीछे को आने लगे तो पानी का बहाव तेज़ होने के कारण वह डूब रहे थे। उन को लगा कि अब वह डूब जाऐंगे तो उन्होंने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को याद किया उसी समय उन को एक पेड़ दिखाई दिया और वह धीरे-धीरे उस पेड़ के पास पहुँच गए और उस की डाली को हाथ से पकड़ लिया पर उसके दिमाग और पेट में काफी पानी भर गया था और वह बेहोश हो गए थे तो उस समय सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी उस पास आए तो आ कर उन्होंने बिशन दास के शरीर को खूंडा लगाया और कहा,''उठ जा भाई, यहां कोई जानवर काट लेगा।'' तो मैंने कहा,''महाराज जी आप जी का धन्यवाद है आप जी ने मुझे बचा लिया।''

श्री बिशन दास जी ने यह सारी बात घर जा कर बताई और दूसरे दिन डेरे में महाराज जी पास आए तो महाराज जी ने कहा,''हमें तंग करते हो, हमारा कहना नहीं मानते।'' इस तरह महाराज स्वामी सरवण दास जी ने श्री बिशन दास जी की जान बचाई।

(स्वयं बिशन दास)

साखी नंबरः 227

इसने तो ठीक हो जाना है

बीबी महिन्दर कौर पत्नी स.सुदागर सिंह नागरा ज़िला जालन्धर के रहने वाले थे। जो कि महाराज स्वामी सरवण दास जी के सेवक हैं। बीबी महिन्दर कौर जी बताते हैं कि,''उनके माता जी बीबी भागो जी जो कि आज कल यू.एस.ए. में रह रहे हैं। महाराज स्वामी सरवण दास जी के सेवक हैं और आज कल भी 'डेरा सचखंड बल्लां' साथ अपार श्रद्धा रखते हैं। जब वह अपने पुराने गाँव मन्नणां में रहते थे तो उन की लड़की महिन्दर कौर(जिन्होंने यह साखी सुनाई)जी गंभीर बीमार हो गए। उस समय उनके दो बच्चे थे। वह बीमार इतने ज़्यादा हो गए थे कि उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी और उनके माता बीबी भागो जी बहुत परेशान हो गएऔर वह स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में अरदास करने लगे कि ,''महाराज जी मेरी बच्ची की जान बचाओ। अगर इसने मरना ही था तो यह पहले ही मर जाती अब तो इस

के दो बच्चे हैं। अगर यह मर गई तो उनके सिर से मां का साया उठ जायेंगे। सो महाराज जी आप कृपा करो।''

सो इस तरह वह तीन दिन अपने घर में ही स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में अरदास करते रहे और इधर जानी-जान महाराज जी को पता लग गया कि उनके सेवक उन को याद कर रहे थे। उन पर मुसीबत आई हुई है।

सो चौथे दिन प्रात:काल तीन बजे सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अपने दो तीन सेवकों के साथ उनके घर गाँव मन्नण में पहुँच गए और जा कर उन के घर का दरवाज़ा खटखटाया। बीबी भागो जी ने दरवाज़ा खोल कर देखा कि सत्‌गुरू जी आए हैं। उन्होंने महाराज जी को बहुत आदर-सम्मान सहित अन्दर बुलाया नमस्कार की और कहने लगे,''महाराज जी, आप इस समय हमारे घर?'' तो महाराज जी ने खूंडा नीचे मार कर कहते,''हां बीबी आप हमें तीन दिनों से याद कर रहे थे, तुम्हारी लड़की बीमार है और तुम हमें याद कर करके कही जा रही है, कि इसने मरना था तो पहले मर जाती, बीबी जी, इस का बाल भी बांका नहीं हो सकता, इसने ठीक हो जाना है इस के घर दो और बच्चों ने जन्म लेना है और इसके बच्चों ने विदेशों में जाना है।''

सो उस समय महाराज जी ने उन को इस तरह के आर्शीवाद दिए और वापिस आ गए। इस तरह पूर्ण सत्‌गुरू के वचन पूरे हुए बीबी भागो जी की बेटी महिन्दर कौर उसी दिन से ठीक होना शुरू हो गई और फिर दो और बच्चों का जन्म हुआ और महाराज जी की कृपा से बीबी महिन्दर कौर के बच्चे आज कल इंग्लैंड और कैनेडा में खुशियों से भरा जीवन व्यतीत कर रहे हैं और बीबी भागो भी अमेरिका में रह रहे हैं। इस तरह बीबी भागो जी ने संतों पर पूरी श्रद्धा रखी। मुसीबत समय उन को याद किया और पूर्ण सत्‌गुरू जी ने उन की सहायता की और आर्शीवाद दिए।

साखी नंबर: 228

बीबी हम डेरे में ही रहते हैं

इसी तरह बीबी महिन्दर कौर जी बताते हैं कि जिस समय सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अपना शरीर छोड़ कर सचखंड चले गए तो उनके माता भागो जी सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी को याद करके बहुत रोते रहते थे। अपने घर में भी और खेतों में भी महाराज जी को याद करके रोते रहते थे। एक बार महाराज जी रात को उन के सपने में आए और कहा,''बीबी

हमें याद करके रोया मत करो, हम हर समय आप के साथ ही रहते हैं, हम अब भी डेरे में ही विराजमान हैं सो जब याद आए आप डेरे जा आया करो।'' और उस के बाद बीबी भागो जी के मन को बहुत शांति मिली और उन को यकीन हो गया कि महाराज जी हर समय अपने सेवकों के अंग संग ही रहते हैं।

साखी नंबरः 229

बीबी तुम्हारा बच्चा खेलने गया है

बीबी प्रकाश् कौर पत्नी स्व.श्री साधू राम गाँव ब्यास(जालन्धर) रहने वाले जो कि काफी समय से इंग्लैंड में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बीबी जी बताते हैं कि इंग्लैंड में ही जन्मा उन का पुत्र अचानक ही अकाल चलाना कर गया। अपने पुत्र के वियोग में प्रकाश कौर जी बहुत उदास रहने लगी तो उन्होंने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को एक पत्र लिखा जिस में उन्होंने अपने पुत्र के अकाल चलाने की बात लिखी। फिर इधर से सत्गुरू जी ने बीबी जी को एक जवाब में पत्र लिखा जिसमें महाराज जी ने लिखा,''बीबी जी, आप रोया मत करो आप का पुत्र तो खेलने गया है उस ने वापिस आ जाना है।'' बीबी प्रकाश कौर जी के मन को सत्गुरू जी का लिखा पत्र पढ़ कर बहुत शांति मिली। फिर समय अनुसार महाराज जी के लिखे हुए वचन पूरे हुए और उन को दोबारा पुत्र की प्राप्ति हुई।

साखी नंबरः 230

लूटे हुए पैसे वापिस आने

बीबी रतनी पत्नी श्री भाग राम गाँव काला संघियां ज़िला कपूरथला के रहने वाले महाराज सरवण दास जी के सेवक हैं। श्री भाग राम जी चमड़े के व्यापारी थे। व्यापार के कारण उनके पास काफी पैसे होते थे।

बीबी रतनी जी बताते हैं कि जालन्धर में श्री भाग राम जी अपने काम से वापिस आ रहे थे तो उनके पास 4500 रूपये थे। उस समय के हिसाब से 4500 रूपये एक बहुत बड़ी रक्म थी। कुछ ठगों ने जालन्धर में ही श्री भाग राम के पास से अपनी चालाकी से वह पैसे ठग लिये। वह परेशानी की हालत में जब अपने घर वापिस आए और उन्होंने बीबी रतनी को अपने साथ हुई ठगी के बारे में बताया तो बीबी रतनी जी भी परेशान हो गए। परेशानी की हालत में वह डेरे में गए और सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को अपने साथ हुई

ठगी के बारे में बताया तो महाराज सरवण दास जी ने उन को तसल्ली दी और कहा कि,'' आप चिंता मत करो, आपके पैसे वापिस मिल जायेंगे।''

इस से कुछ दिनों बाद श्री भाग राम जी बूटा मण्डी जालन्धर में आए अचानक ही उन को वह ठगों में से एक ठग दिखाई दिया जिन्होंने उन का पैसा लूटा था। श्री भाग राम जी ने उस ठग को पुलिस हवाले करवाया और उसके बाकी साथी भी पुलिस ने पकड़ लिये और उन्होंने श्री भाग राम का पैसा लूटना भी कबूल कर लिया।

इस तरह सत्गुरू जी की मेहर से उन का पैसा वापिस मिल गया।

साखी नंबरः 231

इनको शरबत पिलाओ

बीबी प्रकाश कौर स्वर्गीय साधु राम गाँव ब्यास ज़िला जालन्धर के रहने हैं और जो कि बहुत समय से इंग्लैंड में जीवन व्यतीत कर रहे है।

एक बार बीबी प्रकाश कौर जी इंग्लैंड से सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के दर्शन के लिए आए थे। महाराज जी थड़े पर विराजमान थे, वाणी का प्रवाह चल रहा था कि इतने को नहर के रास्ते जा रहे मुसाफिर डेरे में आ पहुँचे। उन्होंने आकर महाराज जी को नमस्कार की और संगत में बैठ गए और उनके बैठते ही महाराज जी ने कहा,'' इन को शरबत पिलाओ, भाई हमारे कौन से हल चलते हैं।'' जब महाराज जी ने यह वचन कहे तो वह दोनों मुसाफिर महाराज जी के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे,'' महाराज जी हमसे गलती हो गई हमें क्षमा कर दो।''

सारी संगत हैरान हो गई, कि इनको महाराज जी ने शरबत पिलाने के लिए कहा है, कि वह उठ कर क्षमा मांगने लग पड़े हैं और बाद में उन मुसाफिरों से पता चला,कि जब वह नहर पर चले जा रहे थे,तो वह कुटिया की ओर देखकर आपस में बातें करने लगे कि,'' डेरे से शरबत पीकर चलना है। यहां तो लोगों का ही धन आता है और संतों के कौन से अपने हल चलते हैं।''

जानी-जान सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज जी ने उन मुसाफिरों के डेरे आते ही उनके मन की बात जान ली और महाराज जी ने संगत में ही उनकी आपस में हुई बातें बता कर हैरान कर दिया था। इसी कारण वह महाराज जी के चरणों में गिर गए थे और उनको अपनी गलती का एहसास हो गया था, उन को पता चल गया था कि यह तो कोई पूर्ण संत महापुरूष हैं।

साखी नंबरः 232
जंग में रक्षा करना

स.नानक सिंह विरदी पुत्र स: महिंगा सिंह वासी राएपुर बल्लां सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के सेवक हैं, जो कि फौज में नौकरी करने के बाद आजकल कैनेडा में रह रहे हैं।

स.नानक सिंह जी बताते हैं, कि जब 1965 ई. की जंग पाकिस्तान से लगी थी। तो उनकी ड्यूटी जम्मू सियालकोट सैक्टर में लगी थी।

अगली वार्ता सूबेदार नानक सिंह विरदी जी के शब्दों में,''मेरी ड्यूटी एकशन क्मांडर के तौर पर थी, जंग का माहौल बहुत भयानक था। चारों तरफ आग ही आग नज़र आ रही थी। सारी पलटन ने स्यालकोट के एक गाँव को घेरा डाल लिया पर अभी भी दूसरी तरफ से गोलियां चल रही थी, हम ज़मीन पर रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। अचानक ही मेरी बाएं वाली बाजू में गोली लग गई। गोली का सीधा निशाना तो मेरे दिल पर ही था, पर मेरे हाथ में राइफल पकड़ी हुई थी। जिस कारण गोली बाजू में ही लगी। गोली लग कर बाजू में रही। उस समय मैंने अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को याद किया और भावुक होते हुए कहा,''महाराज जी यह क्या हुआ जी।'' मेरे इन शब्दों को कहने के बाद मुझे सत्गुरू के वचन सुने,''तुम्हें कुछ नहीं होगा ओए, तुम घबराना मत।''

महाराज जी के इन वचनों को सुनने के बाद मुझे ऐसा लगा कि जैसे मुझमें दोबारा जान आ गई हो। मैं और मेरे साथी फिर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, आगे काफी पानी था। जिस में से निकलने के कारण मेरी जिस बाजू में गोली लगी थी, वह बहुत दर्द करने लगी और उसके बाद मेज़र साहिब के हुक्म के अनुसार जख्मियों को अस्पताल पहुँचाया जाने लगा, जब मुझे और मेरे साथियों को एम्बूलैंस द्वारा पठानकोट अस्पताल ला रहे थे, तो हमारी वैन के बिल्कुल आगे एक गोला गिरा पर परमात्मा की कृपा से हमें कुछ नहीं हुआ और वैन बच गई। फिर दूसरे रास्ते द्वारा पठानकोट पहुँच कर वहां से अम्बाला आए। अम्बाला अस्पताल में मेरी बाजू में आप्रेशन कर गोली निकाली। जिस कमरे में मैं दाखिल था। उस में हम तीन आदमी थे। बाकी सारा अस्पताल भी जख्मियों से भरा था। रात का समय था जंग अभी भी जारी थी। एक जहाज़ हमारे अस्पताल के ऊपर से निकला। मैंने अपने साथी को

कहा कि,''रात के समय अपना तो कोई जहाज़ उड़ता ही नहीं। इतने में वह जहाज फिर से चक्कर लगाकर आया। तो साथ के ही वार्ड पर एयर अटैक हुआ। बहुत ज़ोर से भयानक आवाज़ हुई। मैं महाराज जी का सिमरन करता रहा,दूसरी बार हमारी बिल्डिंग पर एयर अटैक हुआ, जिस रूम में मैं था वह बहुत छोटा सा था। उस को छोड़ कर सारी बिल्डिंग ही तबाह हो गई, यहां भी दूसरी बार मुझे मेरे सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने बचाया। मैं उनकी महिमा का ब्यान नहीं कर सकता।आज हमारे सत्गुरू की बहुत मेहर है।

(स्वयं सरदार नानक सिंह विरदी)

साखी नंबर: 233

हम आप के साथ हैं

ज्ञानी मेहर सिंह पुत्र श्री साधू राम जी के बताने के अनुसार कि एक बार उन्होंने अपने खेतों में ट्यूबवैल लगवाना था क्योंकि खेतों को पानी लगाने का ओर कोई साधन नहीं था। मेहर सिंह जी बताते है कि,''उनके पिता श्री साधू राम जी ने सत्गुरू हरि दास महाराज जी को निवेदन किया कि''महाराज जी आप जी हमारे खेतों में चरण डालो और ट्यूबवैल लगवाने का शुभ समय बताओ जी।'' फिर सत्गुरू हरि दास महाराज जी ने वचन किया,''हम आप के साथ हैं, आप आज से आठवें दिन 11 बजे ट्यूबवैल का बोर शुरू करना है।''

फिर जिस दिन बोर शुरू करना था तो श्री साधू राम जी सत्गुरू हरि दास महाराज जी को ट्यूबवैल की अरदास करने के लिए अपने गाँव रमदासपुर में ही खेतों की ओर ले गए। उस समय गाँव की और बाहर की भी काफी संगत महाराज जी के दर्शन को आई हुई थी। जब महाराज जी गाड़ी में से निकले तो सड़क के साथ लगते खेतों को देख कर महाराज जी ने कहा,''यह ज़मीन किस की है?'' तो साधू राम ने कहा,''महाराज जी, मेरी ज़मीन तो आगे है। हमने अगले प्लॉट में जाना है।'' महाराज जी ने फिर खूंडा ज़मीन पर मार कर कहा,''साधू राम यह भी ज़मीन आज से तुम्हारी है।'' साधू राम जी ने कहा,''महाराज जी, अगर आप जी ने बख्शिश की है, तो मैं यह ज़मीन उस से ले लूँगा जिस की यह ज़मीन है।''

फिर महाराज जी श्री साधू राम जी के पलॉट में गए और अरदास

करने के बाद वापिस डेरे पहुँच गए। फिर जब श्री साधू राम जी जिस की वह ज़मीन थी उस के पास गए और उस को ज़मीन खरीदने के लिए कहा तो उस आदमी ने जिस की वह ज़मीन थी ज़मीन बेचने से कोई इन्कार न किया और उसी दिन ही ज़मीन की रजिस्ट्री श्री साधू राम जी को करवा दी।

साखी नंबर: 234

यहां कोठियां बनेगी

सूबेदार सोहन सिंह गाँव चमियारा(जालन्धर)के रहने वाले हैं और यह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के अधिक श्रद्धालु थे। आज भी डेरे से अधिक श्रद्धा रखते हैं। वह बताते हैं कि महाराज जी ने कष्टों के समय अनेक बार अंग-संग सहाई हो कर उन की रक्षा की।

सोहन सिंह जी बताते हैं। एक बार हम सत्संग करवाए और महाराज जी के सत्संग पर घर में चरण डलवाए। लंगर खाने के उपरान्त महाराज जी ने कहा कि,''हम अपने सेवकों को मिलने गाँव खोजेवाल जाना है।'' हमने कहा, ''महाराज जी को खोजेवाल छोड़ आते हैं।'' पर महाराज जी ने कहा कि,''नहीं, हम स्वयं ही चले जायेंगे।'' इसके बाद मैं और मेरा भाई महाराज जी को गाँव की हद तक छोड़ कर आए पर महाराज जी ने हमें गाँव की हद से ही वापिस जाने का हुक्म किया। हम वापिस चल पड़े, जब दोबारा पीछे देखा तो महाराज जी अलोप हो गए।

दूसरे साल हम(सोहन सिंह)सत्संग करवाए और महाराज जी को आने के लिए निवेदन किया। सत्संग करने बाद महाराज जी ने लंगर खाया। फिर सोहन सिंह के पिता के बड़े भाई ने महाराज जी को निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप हमारी ज़मीन पर भी चरण डाल दो जी। महाराज जी ने उनका निवेदन किया मान लिया। उस समय हम ठेके पर ज़मीन ले कर मूंगफली, रूवांगी आदि बीजते होते थे। गरीबी बहुत ज़्यादा थी। जब महाराज जी खेतों में पहुँचे तो महाराज जी ने कहा, ''यहां से आप को क्या बचता होगा भाई, जहां तो बहुत थोड़ी फसल है।'' फिर महाराज जी ने जो खेत में पानी चल रहा था उसमें से एक चुल्लू पानी का भर कर सूर्य की तरफ फैंका और तीन बार ज़मीन पर पाँव मार कर कहा,''यह ज़मीन आज से आप की है।'' ''महाराज जी के इन वचनों के उपरान्त कोई 6महीने बाद उन 7 एकड़ की रजिस्ट्री हमारे नाम हो गई पता नहीं महाराज जी की कृपा से कहां से हमारे पास पैसे आ गए।''

तीसरे साल हमने फिर सत्संग करवाए, महाराज जी को घर में चरण डालने के लिए निवेदन किया। हमारा पूरा परिवार इक्ट्ठा रहता था। सत्संग के बाद महाराज जी ने हमारे आंगन में घूम कर देखा और तीन बार ज़मीन पर पाँव मार कर वचन किए,''यहां कोठियां बनेगीं।''

आज हमें सत्गुरू मालिक सरवण दास महाराज जी ने कोई कमी नहीं रहने दी और उस जगह पर आज महाराज जी की कृपा से हमारी सभी भाईयों की अपनी-अपनी कोठियां बनी हुई है।

साखी नंबरः 235

आप का वह काम तो हो जाना चाहिए था

श्री पूरन चंद मडार पुत्र श्री भुल्ला राम ब्यास गाँव(जालन्धर)जी की पत्नी श्रीमती राज कौर जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के सेवक हैं। इन्होंने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी पास बहुत समय डेरे में रह कर सेवा करते बिताया। लगभग पिछले 20 वर्षों से श्री पूरन चंद मडार जी अपने परिवार के साथ अमेरिका में रह रहे हैं। श्री पूरन चंद जी और श्रीमती राज कौर जी बताते हैं कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की महिमा तो ब्यान ही नहीं की जा सकती।

श्री पूरन चंद मडार और उनके परिवार ने जो समय सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में व्यतीत किया। उस समय उन के साथ जो घटनाएँ बीती और जो कौतुक उन्होंने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के देखे और जो कृपा उन पर हुई उस समय की न भूलने वाली यादों का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया हैं।

श्री पूरन चंद मडार जी बताते हैं कि जब वह गाँव रहते थे तो पढ़ाई के बाद जब उन्होंने नौकरी की तलाश की तो सत्गुरू जी की कृपा से उन को नौकरी मिल गई। दिल्ली में सर्विस करते समय सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की कृपा से उन को डॉ.भीम राव अम्बेडकर जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और वह बहुत समय उनके संपर्क में रहे। उस समय डॉ. साहिब जी ने रिज़र्वेशन पूरी करने की मुहिम चलाई और श्री मडार साहिब जी के दफ़्तर में भी इस सम्बन्ध में बाबा साहिब जी का पुत्र आया और श्री मडार जी ने भी अपने ओर साथी कर्मचारियों के साथ अपनी रिज़र्वेशन की प्रोमोशन का काम कर दिया। यह काम 5 साल तक चलता रहा।

इस बारे में उन्होंने महाराज जी को भी बताया हुआ था। फिर एक बार दिल्ली से वह पंजाब आए और आ कर महाराज जी के दर्शनों के लिए आए। महाराज जी ने उन का हाल-चाल पूछा और साथ ही महाराज जी कहने लगे,''आपके केस का क्या बना भाई?'' तो श्री मडार ने उत्तर दिया,''महाराज जी वह केस अभी चल रहा है।'' तो महाराज जी ने जवाब दिया,'' आपका वह केस तो हो जाना चाहिए था, मैं अभी एक दिन पहले ही तो वहां गया था।'' यह सुन कर मडार साहिब जी हैरान हुए कि महाराज जी तो दिल्ली गए ही नहीं और हमें कह रहे हैं कि हम एक दिन पहले दिल्ली गए थे। फिर महाराज जी ने मडार जी को पूछा,''आप ने अब दिल्ली कब जाना हैं?'' तो मडार जी ने बताया कि,''मैं कल के बाद दिल्ली चला जाऊँगा तो महाराज जी ने कहा,''ठीक है तुम्हारा काम हो जाएगा, आप चले जाना, पर आप हमारे पास से हो कर जाना।''

फिर जब मडार जी दिल्ली पहुँचे और अपने दफ़्तर में गए तो उनके मेज़ के ऊपर उनका प्रमोशन पत्र पड़ा था। जिस में लिखा था कि उन को प्रौग्रेस अफ्सर बना दिया गया है। श्री मडार जी यह कौतुक देख कर बहुत हैरान हुए। जो उन को प्रोमोशन मिलनी थी उससे भी ऊपर की तरक्की उन को मिल गई थी। यह सब स्वामी सरवण दास महाराज जी की कृपा के साथ हुआ था।

साखी नंबर: 236

बाबा सावन सिंह डेरा ब्यास जी का ज्योति-जोत समाना

एक बार सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी श्री मडार जी के निवेदन करने पर दिल्ली में गए। मडार जी ने घर में चरण डलवाने के सम्बन्ध में तो महाराज जी को दिल्ली बुलाया था। महाराज जी ने मडार जी को पूछा, ''अपने पंजाब का कोई और भी नज़दीक रहता है?'' मडार जी ने बताया कि उनके पड़ोस में श्री करम चंद और श्री अमर चंद जी अपने परिवारों के साथ रहते हैं तो महाराज जी ने कहा कि,''उन को बुला कर लाओ।'' जब वह श्री मडार जी के घर में आए, उन की महाराज जी के साथ बातचीत हुई तो उन्होंने महाराज जी को बताया कि,'' वह ब्यास वाले संत सावन सिंह के सत्संगी हैं तो महाराज जी ने उन को कहा, ''आप को तो आज वहां(ब्यास)होना चाहिए था।''उन्होंने महाराज जी को पूछा कि,'' आज क्या खास बात है? जो हमें वहां होना चाहिए था।'' तो महाराज सरवण दास जी ने उत्तर दिया,''आज बाबा

सावन सिंह जी चल बसे हैं।'' इस समय से ठीक आधे घण्टें बाद ही बाबा सावन सिंह जी का कोई श्रद्धालु जो दिल्ली में रहता था। उसने आ कर उन को ख़बर दी कि महाराज सावन सिंह जी चल बसे।

जिस समय महाराज जी ने उन सत्संगियों को यह कहा था कि,''आपको वहां होना चाहिए था।'' यह वह ही समय था जब बाबा सावन सिंह जी ब्रह्मलीन हुए।

साखी नंबर: 237

जाओ ब्यास चले जाओ

श्री पूरन मडार जी के बड़े भाई श्री श्रद्धा राम मडार जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के बहुत श्रद्धालु थे। वह डेरे में आ कर बहुत सेवा किया करते थे। उन्होंने महाराज जी के पास कई बार नाम की दात बख्शिश करने के लिए निवेदन किया। पर महाराज जी ने हर बार उन को मना ही किया।

एक दिन श्रद्धा राम जी मन में यह पूरी तरह धारण कर घर से डेरे की ओर चल पड़े कि आज मैंने महाराज जी से नाम दान ज़रूर प्राप्त करना है। जब वह डेरे पहुँचे तो उन्होंने महाराज जी से फिर नाम दान के लिए निवेदन किया तो महाराज जी ने उन को फिर मना कर दिया। पर श्रद्धा राम जी भी पूरी तरह मन में धारण कर आए थे कि मैंने आज नाम दान ले कर ही जाना है और उन्होंने महाराज जी को फिर पूछा कि,''आप मुझे नाम की दात क्यों नहीं बख्शिश करते?'' तो महाराज जी ने उत्तर दिया कि,''तुम सीधे ब्यास चले जाओ, तुम्हें वहां से ही नाम दान मिलना है तो श्रद्धा राम ने कहा कि वहां तो पहले सत्संग सुनना पड़ता है और फिर नाम की दात मिलती है, मैंने तो वहां कभी सत्संग सुना ही नहीं और न ही मैं कभी वहां गया ही। मुझे वहां से कैसे एकदम नाम की दात मिल जाएगी।'' तो महाराज जी ने उत्तर दिया,''तुम्हें उन्होंने कुछ भी नहीं पूछना और तुम्हें वहां से नाम की दात मिल जानी है।'' तथा फिर महाराज जी के इस तरह कहने पर श्री श्रद्धा राम जी उसी समय ब्यास डेरे को चले गए। वहां उस समय सत्गुरू बाबा चरण सिंह जी गद्दी नशीन थे और श्रद्धा राम जी को उनसे उसी दिन नाम की दात प्राप्त हो गई। इस तरह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी पहले ही जानते थे श्रद्धा राम को ब्यास डेरे से ही नाम की दात मिलनी है।

साखी नंबरः 238

गाड़ी ऊपर से निकल गई

श्री पूरन चंद जी बताते है कि उनके गाँव के श्री पाला राम महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। एक बार वह गाँव से बाहर खेतों में से चारा लेने गए हुए थे। उनके गाँव में से एक रेलगाड़ी की लाइन निकली है। जो कि पठानकोट को जाती है। पाला राम अचानक रेलवे लाइन में चला जा रहा था। उस को यह ध्यान ही नहीं कि गाड़ी की लाइन पर चला जा रहा है। उसी समय अचानक पीछे से गाड़ी भी आ गई। पर पाला राम को पता ही नहीं चला कि गाड़ी उसके ऊपर ही चढ़ गई है अचानक ही उस को लगा कि स्वामी सरवण दास महाराज जी प्रगट हुए और पकड़ कर उस को लाइन के बीच लेटा दिया और उसके ऊपर से गाड़ी निकल गई। यह कौतुक देख कर पाला राम बहुत हैरान हुआ और सत्गुरू जी की जय-जयकार करने लगा। फिर वह सीधा स्वामी सरवण दास महाराज जी के पास प्रसाद ले कर आया और आ कर महाराज जी के चरणों पर गिर पड़ा तथा कहने लगा,''महाराज जी, आपने मुझे बचा लिया।'' तो महाराज जी उस की यह बात सुन कर हंस पड़े।

इसी तरह एक बार श्री पाला राम जी बाहर से घास काट रहा था कि उस को एक मिट्टी में दबे हुए पैसों का भरा बर्तन मिला तो पाला राम उस पैसों वाले बर्तन को ले कर सीधा महाराज जी पास आ गया और उसने वह पैसे महाराज जी के चरणों में भेंट कर दिए क्योंकि उसके मन में श्रद्धा ही इतनी उत्पन्न हो गई थी कि महाराज जी ने उस की जान तो बचाई ही थी तथा उस को एक चोट भी नहीं लगने दी थी।

साखी नंबरः 239

बीमारी का इलाज़

श्री पूरन चंद मडार जी बताते हैं कि एक बार वह दिल्ली में रहते हुए बहुत ज़्यादा बीमार हो गए। यह बात 1950 ई. की है। वह बताते हैं कि मेरी बीमारी इतनी ज़्यादा बढ़ गई थी कि मेरे से कुछ खाया-पीया भी नहीं जा रहा था और उठ- बैठ भी नहीं हो रहा था। सभी स्पैशलिस्ट डॉक्टरों के पास भी दिखाया पर कहीं से भी आराम न आया। वह बताते हैं कि,'' आखिर थक हार कर हम अपने गाँव ब्यास आ गए।'' जहां श्री पूरन चंद जी की बीमारी के बारे में महाराज जी को बताया तो महाराज जी ने वचन किया,''कहीं नहीं जाना, आप उन को जहां ले आओ।''

फिर श्री पूरन चंद जी को कुटिया में महाराज जी पास लाया गया। श्री पूरन चंद जी बताते हैं कि जब महाराज जी ने नब्ज़ देखने के लिए उन की बाजू पकड़ी तो इस तरह महसूस हुआ कि जैसे उनमें दोबारा जान आ गई हो। महाराज जी ने हुक्म किया,''एक मिट्टी का बर्तन लेकर आओ।'' महाराज जी के हुक्म अनुसार बर्तन लाया गया। फिर महाराज जी उस बर्तन में पानी और खूब कलां(कोई देसी जड़ी बूटी)और एक चांदी का रूपया डाला। फिर वह पानी पूरन चंद को पिलाया। वह पानी पीने से ही श्री पूरन चंद मडार जी बिल्कुल ठीक हो गए और थोड़े दिनों में ही उन की पुरानी बीमारी दूर हो गई। विशेष मुलाकात दौरान

(श्री पूरन चंद मडार और उनकी पत्नी श्रीमती राज कौर मडार)

साखी नंबर: 240

वर्ष बाद आना

श्री अमी चंद गाँव राएपुर ज़िला जालन्धर जो कि आज कल इंग्लैंड में रह रहे हैं। महाराज स्वामी सरवण दास जी के श्रद्धालु हैं।

यह बात उस समय की है जब श्री अमी चंद इंग्लैंड जाने से पहले कुटिया में महाराज जी के दर्शन करने के लिए आया करते थे और इस बात से यह भी साबित होता है कि जानी-जान पूर्ण संत-महापुरूष जो भी बात किसी को कहते हैं या कोई वचन करते हैं चाहे वह बात वर्ष बाद या दस वर्ष बाद होनी हो, महाराज जी को अपने कहे वचन कभी भी भूलते नहीं।

श्री अमी चंद जी के मन में नाम की दात लेने की इच्छा पैदा हुई। उन्होंने स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी मुझे नाम की दात बख्शिश करो।'' उन के इस निवेदन पर महाराज जी ने वचन किया कि,''सत्नाम का जाप किया करो और एक वर्ष बाद आप को नाम की दात देंगे।'' सो इस तरह अमी चंद जी महाराज जी के वचनों के अनुसार सत्नाम का जाप करने लगे। पर समय के अनुसार वह यह भूल गए और साथ ही यह भी भूल गए कि महाराज जी ने एक वर्ष बाद आने को कहा था स्वामी सरवण दास महाराज जी किया वचन कैसे भूल सकते थे।

सो जब एक वर्ष पूरा हो गया तो महाराज जी ने श्री अमी चंद जी के घर संदेश भेजा और कुटिया में हाज़िर होने के लिए कहा। श्री अमी चंद को याद भी नहीं था कि महाराज जी ने उन को किस लिए बुलाया है तथा जब वह

कुटिया में महाराज जी पास आए तो महाराज जी ने उन को कहा,''आप को याद नहीं कि हमने आप को एक वर्ष बाद आने के लिए कहा था और आज आप को नाम की दात देनी है।'' यह सुन कर अमी चंद जी बहुत ही हैरान हुए। उन को तो यह बात याद ही नहीं रही थी। उन को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह महाराज जी के चरणों पर गिर पड़े। जिस दिन की यह बात है उस दिन उन को पूरा एक ही वर्ष हुआ था। जब पिछले वर्ष उसने महाराज जी के पास से नाम की दात मांगी थी। सो इस तरह पूर्ण महापुरूष अपने किए वचन कभी भी नहीं भूलते।

साखी नंबरः 241

इन में दो तीन रूपये और डाल कर शराब ले लेना

इसी तरह अमी चंद जी बताते हैं कि एक बार दो व्यक्ति महाराज जी के दर्शन के लिए आए। वह दोनों शराब बहुत पीते थे। जब नहर वाले रास्ते से चले आ रहे थे तो आपस में बातें कर रहे थे उनमें से एक कहने लगा कि,''मैं महाराज जी को दो रूपये रख कर नमस्कार करूँगा।'' दूसरा कहने लगा कि,''महाराज जी, को बिना पैसे से ही नमस्कार कर लेना। इन पैसों में हम दो तीन रूपये डाल कर शराब ले लेंगे।'' दूसरा उस की इस बात पर कहने लगा कि,''बात तो तुम्हारी ठीक है, पर महाराज जी को खाली नमस्कार नहीं करनी चाहिए।'' इस तरह की बातें करते वह कुटिया में पहुँच गए और आ कर महाराज जी को दो रूपये रख कर नमस्कार करने लगे। महाराज जी कहने,''ओए, अपने रूपये उठा लो इनमें दो तीन रूपये और डाल कर शराब ले कर पी लेना, हमें नहीं आप के रूपये चाहिए।''यह सुन कर वह दोनों महाराज जी के चरणों में गिर पड़े। यह कौतुक देख कर संगत भी हैरान हुई। बाद में उस व्यक्तियों से पता चला कि रास्ते में वह इस तरह की बातें करते आ रहे थे। जो महाराज जी ने कही थी क्योंकि जानी-जान स्वामी सरवण दास महाराज जी कुटिया में बैठे ही जान लेते थे कोई क्या बातें कर रहा है। उन दोनों व्यक्तियों को भी अपनी गलती का एहसास हो गया और उन दोनों ने महाराज जी पास से माफी मांगी।

साखी नंबरः 242

शंख बजना

श्री रजनीश पुत्र श्री माणक चंद वासी अमृतसर जी सत्गुरू स्वामी

सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु हैं। रजनीश जी अपनी माता श्रीमति सीतल कौर जी के साथ डेरे में महाराज जी के दर्शन को आया करते थे।

यह घटना उस समय की है, जब महाराज जी ने संसार से चले जाना था। रजनीश जी अपनी माता जी के साथ डेरे में आए हुए थे और वह दो दिन रह कर वापिस अमृतसर अपने घर में चले गए। उन को डेरे से गए को तीन दिन हुए थे। तीसरी रात को उनके घर शंख बजने की आवाज़ें आने लगी वह सारे घर वाले हैरान थे कि यह क्या हो रहा है? इसी तरह कितनी देर तक शंख बजने की आवाज़ें सुनती रही। सुबह के समय उनके पड़ोसियों ने भी उनसे पूछा कि,''आप के घर रात को शंख कौन बजा रहा था?'' यह सुन कर वह और भी हैरान हुए कि यह क्या कौतुक था। इस से कुछ समय बाद ही उनको संदेश मिला कि उनके सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अपना पंच-भूतक शरीर त्याग कर सचखंड जा विराजे हैं और फिर उनको समझ आई कि जो रात शंख बजने की आवाज़ें उनको सुनाई दे रही थे। वह उन को महाराज जी के संसार से चले जाने का ही संकेत थी। वह बताते हैं कि महाराज स्वामी सरवण दास जी अपने आखिरी समय अपने जाने का संकेत दे कर उन को यह एहसास करवा गए कि वह अपने सेवकों के हर समय अंग-संग रहते हैं।

साखी नंबर: 243

जो महाराज जी ने दिखाया वह सब बन गया

स.सुच्चा सिंह जी बताते हैं कि जब वह गाँव कराड़ी में रहते थे। डेरे में सेवा के लिए आते थे तो कई-कई दिन रहते थे। वह बताते हैं कि उस समय इस स्थान पर एक कुटिया ही होती थी एक कमरा और था तथा एक थड़ा जिस पर महाराज जी विराजमान होते थे। उस समय उन्होंने ने सोचा भी नहीं थी कि इस स्थान पर बहुत सुन्दर मन्दिर और भवन का निर्माण होगा।

सुच्चा सिंह जी बताते है कि एक बार वह डेरे में ही नाम-सिमरन कर रहे थे तो उन्होंने देखा इस स्थान पर एक सुन्दर मन्दिर बना हुआ है जिस का नाम 'सचखंड' लिखा हुआ है और इसके साथ ही मन्दिर के सामने एक सुन्दर इमारत भी देखी और एक बहुत ही बड़े भवन के दर्शन किए। वह आज बताते हैं कि यह सब वही कला-कृीतियां है जो उन्होंने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा साथ आज से बहुत वर्ष पहले ही देख लिए थे।

इस तरह सुच्चा सिंह जी ने कांशी वाले मन्दिर के भी दर्शन किए थे।

आज सुच्चा सिंह जी यह सब देख कर हैरान हैं कि जो सत्गुरू जी ने उन को ध्यान में दिखाया था वह सब कुछ बन चुका है और वह बताते हैं कि अभी और भी बहुत कुछ बनना है।

साखी नंबर: 244

अटल वचन

श्री रजनीश जी बताते हैं कि महाराज सरवण दास जी अमृतसर किसी समागम पर गए हुए थे। वहां ही उनके माता जी भी संतों के प्रवचन सुनने के लिए गए हुए थे। जब समागम खत्म हुआ तो महाराज सरवण दास जी वापिस आने लगे तो उनके माता जी ने महाराज जी आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप हमारे घर चरण डालो जी।'' तो महाराज जी ने कोई मना न किया तथा रजनीश जी के माता श्रीमती सीतल कौर साथ उनके घर में आ गए। घर पहुँचने के उपरान्त महाराज जी ने पूछा,''घर हमारा अपना है?'' रजनीश के माता जी ने बताया कि महाराज जी पहले यह हमारा घर था। फिर हमें आर्थिक मुश्किल के कारण बेचना पड़ा। अब हम इस मकान में किराए पर रह रहे हैं। महाराज जी ने वचन किया कि ''कोई बात नहीं। सब कुछ मिल जायेगा।'' फिर महाराज जी के आर्शीवाद से उन्होंने अपने व्यापार में बहुत तरक्की की और उन्होंने अपने मकान मालिक से वह घर जिस कीमत पर बेचा था उससे भी कम कीमत पर बेचा था उससे भी कम कीमत पर खरीदा। जब कि मकान मालिक वह यह घर उन को बेचना भी नहीं चाहिए था।

साखी नंबर: 245

श्रीमान् बंगड़ जी पर महाराज जी की अपार कृपा

श्री सरवण दास बंगड़ पुत्र श्री देवी दत्ता वासी गाँव बल्लां ज़िला जालन्धर जो कि आज कल परिवार समेत काफी समय से इंग्लैंड में रह रहे हैं। श्री बंगड़ जी और महाराज स्वामी सरवण दास जी की अपार कृपा है और उन की डेरा सचखंड बल्लां प्रति बहुत ही श्रद्धा है। कोई भी धार्मिक काम हो या समाज सेवा का काम हो और फिर डेरे की ओर चलाए जा रहे समाज के प्रोजैक्ट का कोई भी काम हो। श्रीमान् बंगड़ जी अपने तन-मन-धन से अपनी ओर से बहुत ही सहयोग देते हैं तथा महाराज जी सेवा के लिए हर समय तैयार रहते हैं। वह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के अधिक श्रद्धालु हैं और वह अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की पवित्र याद में हर

वर्ष डेरा सचखंड बल्लां में आँखों का कैम्प लगाते हैं। जिस का सारा खर्च श्रीमान् बंगड़ जी मौजूद गद्दी नशीन श्री 108संत निरंजन दास महाराज जी और संत रामा नंद जी के आर्शीवाद और उनकी योग्य अगुवाई और देख-रेख में इस महान सेवा के काम को पूरा करते हैं। इस कैम्प में हज़ारों की गिनती में अपनी आँखों की रोशनी गुम कर चुके लोग महाराज जी के दरबार में से और स्वामी सरवण दास महाराज जी की अपार कृपा से अपनी अंधेरी हुई दुनिया में फिर से रोशनी प्राप्त करते हैं।

श्रीमान् बंगड़ जी बहुत भाग्यशाली हैं कि जो महाराज जी की कृपा के साथ उन को इस महान सेवा का अवसर मिला हुआ है। इस कैम्प के द्वारा हर वर्ष श्रीमान् बंगड़ जी अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी पवित्र याद को ताज़ा करते हैं।

श्रीमान् बंगड़ जी बताते हैं कि,''इंग्लैंड जाने से पहले वह महाराज स्वामी सरवण दास जी पास हमेशा ही आया करते थे। उनके मन की इच्छा थी कि वह इंग्लैंड जाए।'' और इसी तरह एक दिन उन्होंने महाराज जी को अपने मन की इच्छा बताई कि,''महाराज जी, मैं इंग्लैंड जाना चाहता हूँ। यह सुन कर महाराज जी कहने लगे कि,''तुम्हारा शरीर तो कमज़ोर है। अगर तुझे वहां ज़ोर का काम करना पड़ा और किस तरह करोगे?'' यह सुन कर श्री बंगड़ जी ने कहा कि,''महाराज जी, किसी तरह भी हो मैंने इंग्लैंड जाना है,और काम करने का आप ने ही बल बख्शिश करना है तथा आप की ही कृपा से मैं काम कर लूँगा''। इस पर सत्गुरू जी कहने लगे,''अच्छा ठीक है। आप इंग्लैंड चले जाओगे और आप को काम भी आपके करने योग्य मिल जाएगा।''

श्री बंगड़ जी बताते हैं कि,''इस से कुछ देर बाद ही महाराज जी की कृपा से मैं इंग्लैंड चला गया और वहां जा कर बहुत ही आसान-सा काम मिल गया। मुझे कोई भी ज़ोर का काम नहीं करना पड़ा और आज तक मैंने जो भी काम किया बहुत ही आसान काम ही किया एवं महाराज जी की कृपा के साथ मुझे इंग्लैंड में कोई भी कष्ट सहना नहीं पड़ा और अब मौजूद समय दौरान तो श्रीमान् बंगड़ जी का अपना व्यापार चलता है और वह तो सिर्फअपनी काम की देख-रेख ही करते हैं। यह सब स्वामी सरवण दास महाराज जी की कृपा का ही परिणाम है कि आज कल श्रीमान् बंगड़ जी काफी खुशहाल हैं। अपने परिवार के साथ खुशियों से भरा जीवन व्यतीत कर रहे है।

श्री बंगड़ जी पर हुई अपार कृपा इसी लिए महाराज जी के गुण वह गाते हैं, हर वर्ष महाराज जी की याद को कर ताज़ा करते एक आँखों का कैम्प लगाते है। श्री सरवण दास बंगड़ बीबी रेशम कौर के परिवार ने डेरे में संत सरवण दास चैरीटेबल आई अस्पताल के लिए 1 करोड़ रूपये भेंट किए।

साखी नंबर: 246

मन की जानने वाले

श्री चमन लाल पुत्र श्री मंगू राम गाँव नेरला ज़िला होशियारपुर जो कि आज कल चंडीगढ़ में बहुत उच्च पद पर सेवा निभा रहे हैं। श्री चमन लाल जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरण सेवक हैं और डेरे की ओर से चलाए जाते धार्मिक और सामाजिक सेवा के कामों में अपने ओर से तन–मन–धन से सेवा निभाते हैं और अक्सर ही डेरे में आते रहते है और कई–कई दिन डेरे में ही रहते हैं।

श्री चमन लाल जी बताते हैं कि,''मैं जब गाँव लहला मिक्की बल में रहता था तो मैं अक्सर ही कुटिया में महाराज स्वामी सरवण दास जी के दर्शन को आया करते थे। कई–कई दिन महाराज जी के पास ही रहते थे। उस समय मैं पढ़ता था। अपने गाँव से साइकिल पर ही महाराज जी के दर्शनों के लिए आते होते थे। इसी तरह मैं एक बार अपने गाँव से महाराज जी के दर्शनों को चल पड़ा जब मैं गाँव से थोड़ा आगे आ गया तो अचानक ही बहुत तेज़ी से बादल आ गए तो रास्ते में ही मुझे अपने दोस्त के पास रूकना पड़ा। वह रात मुझे अपने दोस्त के पास ही गुजारनी पड़ी। दूसरे दिन सुबह मेरा दोस्त भी मेरे साथ ही महाराज जी के दर्शनों को चल पड़ा।''

''भोगपुर में आ कर मैंने अमरूद खरीद लिए और मेरे दोस्त ने सेब खरीद लिए। हम यह फल ले कर आगे चल पड़े। रास्ते में ही अचानक मेरे मन में आया मैंने अमरूद खरीदे और मेरे दोस्त ने सेब खरीदे है, मैंने सोचा कि महाराज जी तो पहले सेब ही खायेंगे मेरे अमरूद तो पड़े ही रहेंगे।

इसी तरह के विचार करते–करते मैं और मेरा दोस्त कुटिया में पहुँच गए। जब हम कुटिया में पहुँचे तो महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। हम दोनों ने महाराज जी को नमस्कार की और अपने साथ लाए सेब और अमरूद महाराज जी को भेंट करके बैठ गए। हम अभी बैठे ही थे कि महाराज जी ने एक सेवक को कहा कि,'' आज तो अमरूद खाने का मन करता है। श्री चमन

लाल के लाए अमरूद काटो और सभी को खिलाओ।'' महाराज जी के मुखारबिंद से यह शब्द सुन कर मेरे सभी भ्रम दूर हो गए और मुझे यह भी पता लग गया कि सच्चे मन से भेंट की गई एक तुच्छ सी वस्तु भी संत-महापुरूष खुशी से परवान करते हैं। पूर्ण संत-महापुरूष अपने सेवकों के मन की बात पहले ही जान लेते हैं।

श्री चमन लाल जी ने डेरे में सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के चरणों में लम्बे समय रह कर धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। डेरे में रह कर टीचर की नौकरी की। महाराज जी ने आप की शादी बीबी जतिन्दर साथ की। आप जी को महाराज जी की कृपा से प्रेस एंड इनफॉर्मेशन में नौकरी मिली और इसी डिपार्टमेंट में नॉर्थ यॉन के डायरैक्टर रिटायर हुए।

साखी नंबर: 247

गुरू धारण

श्री सेवा राम पुत्र श्री जग्गू राम गाँव भाखड़ीआना ज़िला कपूरथला डेरा सचखंड बल्लां के बहुत श्रद्धालु थे। उनके परिवार पर सत्गुरू जी की बहुत कृपा है। श्री सेवा राम जी बताते हैं कि उन को पूरे गुरू की तलाश थी। वह कई साधुओं को मिलते रहते थे। पर उनके मन की इच्छा किसी से भी पूरी न हुई। एक बार श्री सेवा राम जी सुच्ची पिंड में अपने किसी रिश्तेदार के घर गए हुए थे। वहां उन्होंने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की तस्वीर देखी और उनके रिश्तेदारों ने बताया कि यह बल्लां वाले सत्गुरू है। उन्होंने सत्गुरू की उस तस्वीर को नमस्कार की और उनके सामने भी अपने मन की इच्छा प्रगट किया। जब वह शाम को अपने घर गए तो उसी रात सपने में उन को सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन हुए। जब सेवा राम जी सुबह उठे और रात के सपने के बारे उन को याद आया तो उन को बहुत खुशी हुई कि उन की इच्छा पूरी हो गई है क्योंकि उनके मन की यही इच्छा थी कि मैं उन को गुरू बनाऊँगा जो मुझे सपने में दर्शन देंगे तथा उसी दिन ही उन का मन किया कि मेरी इच्छा पूरी हुई है और मुझे अब सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पास जाना चाहिए पर वह बल्लां में कभी भी नहीं आए थे एवं वह सोचने लगे कि मैं बल्लां कैसे जाऊँ। मैं तो वहां कभी गया ही नहीं। फिर उन्होंने अपने गाँव के कुछ लड़कों को अपने साथ बल्लां में जाने के लिए कहा तो उन लड़कों ने सेवा राम जी को साथ जाने से इन्कार कर दिया कि,''हमने तो काम पर जाना है।'' यह सुन कर सेवा राम जी अकेले ही महाराज जी पास जाने के

लिए तैयार होने लगे। जब पूरी तैयारी करके घर से निकले तो उन्होंने देखा कि वही ही लड़के काम से वापिस आ गए क्योंकि उन को उस दिन कोई काम ही नहीं मिला और वह सेवा राम जी के साथ संतों के जाने के लिए तैयार हो गए। इस तरह सेवा राम जी अपने साथियों के साथ महाराज जी पास पहुँच गए। कुटिया में आ कर महाराज जी को नमस्कार की और अपने मन की इच्छा बताई कि मैंने आप जी को गुरू बनाना है। इस तरह महाराज जी ने श्री सेवा राम जी को अपने चरणों में लगा लिया।

साखी नंबर: 248

टांडे वालों के लड्डू आने वाले हैं

विद्या देवी जो कि टांडे में गढ़ी मोहल्ले में रहते हैं। बीबी विद्या देवी और उन का परिवार संत सरवण दास महाराज जी के सेवक थे तथा समय-समय पर महाराज जी के दर्शन को आते रहते थे। बीबी विद्या जी के बताने के अनुसार कि उन का महाराज जी से बहुत प्रेम था। वह बताते हैं कि,''महाराज जी, भी कभी-कभी प्रात:काल समय उनके घर टांडे में चले जाते थे और उनके घर से प्रशादा(रोटी)खाया करते थे। हम हैरान हो जाते थे कि महाराज जी इतनी दूर से हमारे पास किस तरह पहुँच जाते हैं।

बीबी विद्या जी के छ: लड़कियां थे। इस तरह बीबी विद्या ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे लड़कियां ही हैं। महाराज जी ने कहा,''चल कोई बात नहीं, इन्होंने तुम्हारे से क्या ले जाना है?'' इस तरह कुछ समय बाद ही बीबी विद्या की एक-एक करके चार लड़कियों की मृत्यु हो गई।

फिर कुछ समय बाद बीबी विद्या के घर पुत्र पैदा हुआ। पुत्र के जन्म से बाद महाराज जी पास आए। महाराज जी ने उनके पुत्र को आर्शीवाद दिया। बीबी विद्या ने महाराज जी को निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैंने पुत्रों की जोड़ी बनानी है। पर महाराज जी ने कहा कि,''चाँद, तारों में एक ही होता हैं।'' बीबी विद्या ने बार-बार महाराज जी को कहा,''मैंने तो पुत्रों की जोड़ी बनानी है।'' फिर एक बार बीबी विद्या जी को सपने में महाराज जी ने दर्शन दिए और एक बच्चा बीबी विद्या को पकड़ाया और अलोप हो गए।

इस से कुछ समय बाद ही बीबी विद्या के घर दूसरे पुत्र ने जन्म लिया। थोड़े ही दिनों के बाद बच्चे के जन्म की खुशी में लड्डू ले कर महाराज जी के

दर्शनों को घर से चल पड़े। इधर से यह चले और डेरे में महाराज जी को पता लग गया कि बीबी विद्या जी बच्चे के जन्म की खुशी में लड्डू ले कर आ रहे हैं। उसी दिन कई और सेवक इसी खुशी में लड्डू ले कर आए हुए थे और उस दिन डेरे में लड्डू ही बांटे जा रहे थे। महाराज जी संगत को कहने लगे,'' भाई अभी टांडे वालों के भी लड्डू आ रहे हैं वह भी खा कर जाना।''

साखी नंबर: 249

YOU ARE INTIRE IN THE U.K.

श्री राम चंद विरदी वासी गाँव राएपुर ज़िला जालन्धर सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के सेवक हैं। आज कल वह परिवार के साथ काफी समय से इंग्लैंड में रह रहे हैं और अब भी समय मिलने पर डेरे में आते रहते हैं। श्री राम चंद विरदी जी बताते हैं कि आज से 30-35 वर्ष पहले वह अक्सर ही महाराज जी पास कुटिया में आया करते थे और सत्संग किया करते थे। एक दिन श्री राम चंद विरदी जी को सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने पूछा,'' भाई तुम रोज़ यहां आते हो, बताओ तुम्हारी क्या इच्छा है?'' तो राम चंद जी ने कहा कि,'' महाराज जी, मैं इंग्लैंड जाना चाहता हूँ। महाराज जी कुछ समय चुप रहे और फिर उन्होंने वचन किया,'' आप इंग्लैंड चले जाओगे।''

इससे कुछ समय बाद श्री राम चंद जी ने इंग्लैंड जाने के लिए फार्म भर दिए और फिर समय अनुसार उन को इंग्लैंड की ऐम्बेसी से चिट्ठी आ गई तथा उसके साथ ही इमीग्रेशन के पेपर भी आ गए। राम चंद जी वह पेपर ले कर महाराज जी पा आए और महाराज जी को वह पेपर दिखाए तो महाराज जी ने उन पेपरों में से पाँचवां पेपर निकाला एवं राम चंद को पढ़ने के लिए कहा कि,'' पढ़ो, इस पर क्या लिखा है ?'' जब श्री राम चंद जी ने वह पेपर पढ़ा तो उस पर लिखा था **YOU ARE INTIRE IN THE U.K.**

जब महाराज जी ने यह सुना तो महाराज जी कहने लगे,'' ठीक है, आप अब इंग्लैंड चले जाओगे।'' सो इस तरह सत्गुरू जी की कृपा से श्री राम चंद विरदी जी का इंग्लैंड का काम बन गया और वह इंग्लैंड चले गए।

साखी नंबर: 250

ज़मीन बख्शिश करनी

श्री जागर राम पुत्र श्री मईया राम मोहल्ला रमदासपुर फिल्लौर ज़िला जालन्धर के रहने वाले हैं। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के अधिक

श्रद्धालु हैं। श्री जागर राम जी बताते हैं कि वह चमड़े का काम करते थे। कुटिया में महाराज जी के दर्शनों को समय-समय पर आते रहते थे।

एक बार स्वामी सरवण दास महाराज जी फिल्लौर में संत सम्मेलन पर गए हुए थे। संत सम्मेलन की समाप्ति के बाद महाराज जी श्री जागर राम जी के घर में गए। महाराज जी ने खड़े-खड़े ही श्री जागर राम जी के घर में अरदास की। श्री जागर राम जी के घर में चरण डालने के बाद जब महाराज जी वापिस आने लगे तो जागर राम के घर के साथ लगती खाली जगह देख कर महाराज जी ने उस को पूछा कि,''यह भी अपनी जगह है।'' तो जागर राम ने उत्तर दिया कि,''महाराज जी, यह जगह मेरी नहीं है।'' महाराज जी ने कहा,''आप यहां चमड़ा सूखने नहीं डालते?'' तो जागर राम ने कहा,''हां जी, महाराज जी डालते हैं।'' महाराज जी ने वचन किया कि,''फिर जगह भी तुम्हारी है।'' तो श्री जागर राम जी बताते हैं कि,''महाराज जी की अपार कृपा से वह घर के साथ लगती जगह थोड़े समय में ही उनके नाम हो गई।

इसी तरह श्री जागर राम जी बताते हैं कि एक बार उन्होंने ज़मीन खरीदनी थी। उन्होंने ज़मीन का ब्याज किसी से उधार ले कर दिया। फिर महाराज जी के पास आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमने ज़मीन लेनी है।'' तो महाराज जी ने वचन किया कि,''खरीद लो।''श्री जागर राम जी ने महाराज जी को बताया कि,''हम तो आपके सहारे ही ब्याना दिया है पर हमारे पास ज़मीन खरीदने के लिए पैसे नहीं है।'' तो महाराज जी ने वचन किया,''हौंसला नहीं छोड़ना आपने ज़मीन ज़रूर खरीदनी है, पैसों की तो बारिश होगी उस दिन को।''

श्री जागर राम जी के बताने के अनुसार उन का थोड़े समय में ही बहुत कारोबार चलने लग पड़ा और उन के पास काफी धन इक्ट्ठा हो गया। दो महीने के बीच में ही उन्होंने ज़मीन की रजिस्ट्री भी करवा ली। आज श्री जागर राम जी का परिवार सत्गुरू जी की कृपा से बहुत खुशहाल और सुख से भरा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

(स्वयं श्री जागर राम जी)

साखी नंबर: 251

उन्होंने तुम्हें मार देना था

श्री शरन चंद पुत्र श्री बेली राम गाँव अईआपुर(टांडा) ज़िला

होशियारपुर महाराज सरवण दास महाराज जी के सेवक हैं। श्री शरन चंद जी का जब भी मन महाराज जी के दर्शन करने को करता था तो वह अपने गाँव से साइकिल पर अकेले ही कुटिया को आ जाया करते थे।

इसी तरह वह बताते हैं कि एक बार उन्होंने शाम को महाराज जी के लिए फूलों का हार बना कर रख लिया। उन का विचार था कि मैं प्रात:काल ही महाराज जी के दर्शनों को चला जाऊँगा। महाराज जी को मिलने की उन को इतना उत्साह था जब वह रात को सो गए तो उन की 10 बजे ही नींद खुल गई तो वह अपने साइकिल पर महाराज जी की कुटिया की तरफको चल पड़े।

जब वह चलांग गाँव के नज़दीक पहुँचे तो उन को रेलगाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। यह गाड़ी रात को 11 बजे आती होती है, जब उन को पता लगा कि अभी तो 11 ही बजे हैं वह बहुत हैरान हुए कि मैं प्रात:काल समझ कर घर से चल पड़ा हूँ। पर फिर भी वह वापिस नहीं जाना चाहते थे। वह महाराज जी को याद करते हुए आगे चल पड़े। जब और थोड़ा आगे आए तो उन के साइकिल का टायर जाम हो गया। उस जगह पर काफी घास-फूस, झाड़ियां थी और वहां कोई भी न था। शरन चंद के पास सारा ही समान था। उन्होंने साइकिल का टायर खोला और उस को ठीक किया। जब वह फिर साइकिल पर चढ़ा तो टायर फिर जाम हो गया।

इसी तरह उन्होंने दूसरी बार टायर खोला और बनाया तथा वह फिर जाम हो गया। वह बताते हैं कि उन्होंने पता नहीं कितनी बार साइकिल ठीक किया पर हर बार साइकिल का टायर जाम हो जाता था। यह काम करते उन को प्रात:काल हो गई। वह थक-हार कर सुबह की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब सुबह हो और मैं किसी दुकान से साइकिल ठीक करवा लूँ। इस समय दौरान उन्होंने देखा कि उन से कुछ ही दूरी पर झाड़ियों में से तीन व्यक्ति तलवारें ले कर निकले और एक तरफ चले गए। वह कोई लुटेरे थे।

शरन चंद जी उठे और अपना साइकिल ले कर चलने लगे तो उन्होंने देखा कि उन का साइकिल अब पूरी तरह ठीक है कोई टायर जाम नहीं है। साइकिल सही चल रहा है और वह कुटिया की तरफ चल पड़े एवं साथ ही वह बहुत हैरान हुए कि मैं सारी रात साइकिल ठीक कर रहा था अब यह पता नहीं अपने आप कैसे ठीक हो गया और यह ही सोचते हुए वह कुटिया में पहुँच गए। जब उन्होंने आ कर महाराज जी की नमस्कार की तो महाराज जी ने

अपना खूंडा उठाया और शरन चंद को कहने लगे,''ओए, तुमने सारी रात हम से चौकीदारी करवाई है, वह जो व्यक्ति तुम्हारे पास से निकल कर गए वह डाकू थे उन्होंने आप को मार देना था।'' यह सुन कर शरन चंद जी बहुत हैरान हुए और महाराज जी के चरणों में गिर पड़े। इस तरह जानी-जान सत्गुरू जी ने अपने सेवक की रक्षा की।

साखी नंबर: 252

महाराज जी ने गंगा के दर्शन करवाने

यह साखी भी हमें सोमनाथ रमदासपुर वाले ने ही बताई थी। एक बार गाँव फरीदपुर से महाराज सरवण दास जी के सेवक एक बुजुर्ग डेरे में आए। महाराज जी को नमस्कार की और कहने लगे,''महाराज जी मेरी पत्नी चल बसी है, मैंने उसकी अस्थियां ले कर गंगा जाना है और मैंने कभी गंगा देखी भी नहीं। इसी लिए गंगा के दर्शन कर आऊँगा।'' तो महाराज जी कहने लगे,''ओए, तुमने गंगा देखनी है, यहां ही गंगा दिखा देते हैं। तो वह बुजुर्ग कहने लगा,''महाराज जी, यहां कहां गंगा है? वह तो हरिद्वार है।'' तो महाराज जी कहने लगे,''गंगा तो यहां ही रहती है, तुम आज यही रात रहो तुम्हें गंगा के दर्शन करवा देंगे।''

फिर दूसरे दिन महाराज जी ने उस बुजुर्ग को कहा,''यह छन्ना(बर्तन) लो इस को पानी से भर कर लाओ।'' वह बुजुर्ग पानी ले कर आया तो महाराज जी कहने लगे कि,''इस को उस वह कमरे में रख दो और साथ ही सोमनाथ को भेज दिया। जब वह अंदर गए तो अंदर गंगा आई हुई थी। उस की रोशनी उस तरह थी जैसे 12 सूर्य एक बार में इक्ट्ठे उदय हो गये हों। वह बुजुर्ग तो यह सब देख कर बेहोश हो गया। साथ ही सोमनाथ ने भी गंगा के दर्शन कर लिये। फिर उस बुजुर्ग को होश में लाया तो महाराज सरवण दास जी उस को कहने लगे,''क्यों भाई, गंगा के दर्शन हो गए, क्या अभी भी हरिद्वार जाना है?'' तो बुजुर्ग कहने लगा,''महाराज जी, सब कुछ आपके पास ही है, अब मैंने कहीं भी नहीं जाना।'' इस तरह सोमनाथ और उस बुजुर्ग को डेरे में ही गंगा के दर्शन करवा दिए।

साखी नंबर: 253

चाय पी कर घर को जाओ

श्री पाखर राम गाँव मन्नणां जो कि आज कल जालन्धर में रह रहे हैं

महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। श्री पाखर राम जी के बताने के अनुसार वह महाराज जी की कुटिया में, मिस्त्री के काम की सेवा किया करते थे। उन्होंने बताया कि उनकी पत्नी के बच्चा होने वाला था और वह अचानक ही बीमार हो गई।

उनके ही शब्दों के अनुसार,''मुझे किसी गाँव के ही आदमी ने सलाह दी कि मैं अपनी पत्नी को किसी बाबा के पास दिखाऊँ और मैं लाईलाग (किसी की भी बात मानने वाला)उस के पीछे लग कर जहां उसने मुझे जाने के लिए कहा। मैं वहां जाने के लिए अपने घर से चल पड़ा। मैं जिस रास्ते घर से गया उसी रास्ते में महाराज जी की कुटिया भी आती थी। जब मैं कुटिया के आगे से निकलने लगा तो महाराज सरवण दास जी थड़े पर विराजमान थे। मैं उन को नमस्कार करने के लिए रूका तो उन्होंने मुझे आवाज़ लगाई और कहने लगे,''ओए कहां चला, इधर आ।''

मैंने उत्तर दिया,'' महाराज जी मेरी पत्नी बीमार है। मुझे किसी ने बाबा के पास जाने के लिए कहा था और मैं वहां चला था तथा महाराज जी ने कहा,''जा ओए, पहले चाय पी कर आओ।'' मैं महाराज जी का हुक्म मान कर चाय पीने चला गया। जब मैं चाय पी कर वापिस आया तो महाराज जी ने कहा,''जाओ सीधे घर चले जाओ।'' मैं वापिस गाँव को पत्नी के बारे में सोचता-सोचता घर पहुँचा तो मेरी पत्नी घर के आंगन में झाड़ू लगा रही थी और मैं देख कर हैरान रह गया कि वह सत्गुरू जी की कृपा से ठीक हो गई थी और घर का काम कर रही थी।

फिर समय अनुसार हमारे घर में एक लड़की ने जन्म लिया। जो कि समय से पहले पैदा हो गई। जिस दिन उस बच्ची ने जन्म लिया उस दिन महाराज जी हमारे घर पहुँच गए। हमने महाराज जी को आदर सहित बिठाया और बताया कि,''महाराज जी, सातमांही (सात महीने की)बच्ची पैदा हुई है।'' तो महाराज जी ने वचन किए कि,''चिंता नहीं करनी। यह बच्ची लक्ष्मी का रूप है। इसने बहुत पढ़ना-लिखना है काफी तरक्की करनी है और आप की सेवा करेगी।''

महाराज जी की कृपा से यह बच्ची काफी समय से इंग्लैंड में रह रही है और महाराज जी की कृपा से उस के पास सब कुछ है। हम भी खुश हैं। यह सब महाराज सरवण दास जी का आर्शीवाद है।

साखी नंबरः 254

सत्गुरू जी की हवा में समाधि

बीबी नसीब कौर पत्नी स.दर्शन सिंह बल्लां वासी जो कि आज कल सिरसा (हरियाणा)में अपने पुत्रों के साथ रह रहे हैं। नसीब कौर जी बताते हैं कि उसके माता–पिता बाबा पीपल दास महाराज जी के सेवक थे। इन के बताने के अनुसार कि जब महाराज सरवण दास जी छोटी अवस्था में थे तो इन की माता महाराज जी को स्वयं भोजन खिलाया करते थे। इस तरह इनके परिवार का गुरू जी के साथ और गुरू घर साथ बहुत प्रेम था और आज भी है।

बीबी नसीब कौर जी बताते हैं कि,''महाराज सरवण दास जी हमारे खेतों में एक फलाह के पेड़ के नीचे समाधि लगाया करते थे। फलाह का पेड़ जो कि कांटों से भरपूर होता है। महाराज जी के उस पेड़ के नीचे समाधि लगाने से उसके कांटें झड़ गए थे और जितने समय वह पेड़ रहा उस को कांटें नहीं लगे।''

फिर एक बार जब बीबी नसीब कौर जी छोटी अवस्था में थी तो एक दिन वह दोपहर के समय उस जगह की तरफ चले गए जहां महाराज जी समाधि लगाया करते थे तो उन्होंने देखा कि महाराज सरवण दास जी की समाधि ज़मीन से 2–3 फीट ऊपर हवा में लगी हुई थी। वह यह सब देख कर हैरान हुए और घर वापिस आ गए। अब भी जब वह उस समय को याद करते हैं तो वही अद्‌भुत दृश्य आँखों के सामने आ जाता है।

इसी तरह बीबी नसीब कौर जी बताते हैं कि उनकी माता जी ने बताया था कि,''हमारे खानदान में 7 पुश्तों से सिर्फ एक ही पुत्र पैदा होता था। जब नसीब कौर के माता जी एक पुत्री और पुत्र की माता बन गई तो उनके मन की इच्छा थी हमारे एक और पुत्र होना चाहिए। जब उनके तीसरा बच्चा होने वाला था तो सत्गुरू सरवण दास महाराज जी जिस रास्ते सुबह के समय सैर को जाया करते थे उस रास्ते में उनके आगे जा कर खड़े हो गए। महाराज जी तो उनके मन की इच्छा पहले ही जानते थे और उन्होंनें बीबी नसीब कौर के माता जी को आर्शीवाद दिया कि,''इस बार पुत्र पैदा होगा।'' महाराज जी की कृपा से उनके घर पुत्र पैदा हुआ और उस समय के बाद जो उनके खानदान में 7 पुश्तों से एक ही पुत्र पैदा होता आया था महाराज सरवण दास जी की कृपा के साथ उनके खानदान की पीढ़ी और आगे बढ़नी शुरू हो गई और आगे से उन

को एक पुत्र से अधिक पुत्रों की प्राप्ति हुई।

(स्वयं बीबी नसीब कौर)

साखी नंबर: 255

सूली से सूल बनाना

श्री भाग राम जी जो कि डेरा सचखंड बल्लां में लंगर की सेवा किया करते थे। आप भी महाराज सरवण दास जी के समय से ही डेरे में रह रहे थे। श्री भाग राम जी बताते थे कि जब वह काम पर जाया करते थे। एक बार घर से चले और मन में यह विचार आया कि महाराज जी आज आप ही डेरे से बाहर आ कर मुझे दर्शन दें, जब मैं कुटिया के नज़दीक आया तो मैंने देखा महाराज जी बाहर ही खड़े थे। फिर अचानक ही अलोप हो गए। महाराज जी ने मेरे मन की बात जान ली और जिस तरह मैंने सोचा था मुझे उसी तरह ही महाराज जी ने दर्शन दे दिए।

इसी तरह एक बार मैं अपने किसी काम पर जा रहा था और मेरे पाँव में बहुत तीखी सूल (कांटा)लग गई और सूल इतनी गहराई पाँव में लगी मेरे पास से अपने आप निकाल न हुई। मैं सीधा डेरे में महाराज सरवण दास जी पास आ गया।म ैंनेअ ाक रम हाराजज ीक ोन मस्कारक ीत ोम हाराजज ीक हने लगे,"हमें पता है तुम्हारे पाँव में सूल लगी है, यह तुम्हारे पिछले कर्मों का बुरा फल था यह सिर्फ सूल नहीं, बल्कि सूली बन गई हैं।" सो इस तरह महाराज जी ने मेरे कर्म काट कर 'सूली से सूल' बना दी।

साखी नंबर: 256

श्री चन्नण सिंह को बचाना

डेरे के प्रमुख सेवादार श्री भाग राम जी बताते थे कि एक बार चन्नण सिंह जी गाँव खडियाला वाले जो कि सेवक थे। उन्होंने अपने घर में महाराज जी की आज्ञा ले कर सत्संग करवाए। सत्संग वाले दिन महाराज जी को आने का निवेदन किया। जो कि महाराज जी ने स्वीकार कर ली थी। फिर जिस दिन सत्संग होना था उस दिन महाराज जी काफी व्यस्त थे। महाराज जी ने पता नहीं आना कि नहीं। चन्नण सिंह जी सेवकों से यह बात सुन कर उदास हो गए और कहने लगे कि," अगर महाराज जी ने नहीं आना तो मैं मर जाऊँगा।" तो महाराज जी को लेने के लिए आप घर से चल पड़े। उस समय उनके नज़दीक नहर में बहुत पानी आया हुआ था।

इधर कुटिया से महाराज जी भी उनकी तरफ चल पड़े थे तो महाराज जी ने ड्राइवर को कहा,''जल्दी-जल्दी चलो नहर में पानी बहुत आया हुआ है, चन्नण सिंह ने उस में डूब जाना है और हमने उसके नहर के पास पहुँचने से पहले उसके पास पहुँच जाना है।'' सो इस तरह महाराज जी चन्नण सिंह के नहर के पास पहुँचने से पहले ही उसके पास पहुँच गए और उस को साथ ले कर उसके घर की और चल पड़े। सो इस तरह महाराज जी ने अपने सेवक की जान बचाई और उसके मन की बात पूरी की।

साखी नंबर: 257

लगा लो, भाई जो बांध हमसे लगवाना है

श्री बेली राम गाँव ढेपुर(जालन्धर)वासी हर वर्ष अपने घर में सत्संग करवाया करते थे और संत सरवण दास महाराज जी एंव अन्य संत-महापुरूष ब्रह्म दास जी चहेड़ू वाले, संत हरिदास जी बजावड़े वाले, संत प्रेम दास जी बोहन वाले, संत भूत दास जी बाहड़ियां वाले, संत मेला राम जी माहीपुर वाले, संत वरखा दास जी आया करते थे। एक बार श्री बेली राम जी ने संत सरवण दास महाराज जी को अपने गाँव ढेपुर में बुलाया। उस समय नसराले वाली नहर का पानी बरसात के कारण बाढ़ के रूप में उनके गाँव की तरफआ जाता था। जिस दिन महाराज सरवण दास जी ढेपुर श्री बेली राम जी के घर में जाना था तो उस दिन भी बाढ़ का पानी आया हुआ था और सड़क से गाँव की तरफ को जाने के लिए भी जगह नहीं थी। श्री बेली राम और राजमल्ल महाराज जी को छाते रख कर ले कर गए। महाराज जी पानी की तरफ देख कर कहने लगे,''आज हमसे जो बांध लगवाना है लगवा लो''और यह ही वचन कहने के साथ वहां की सरकार ने कुछ समय बाद बांध लगवा दिया और फिर कभी भी उस गाँव में बाढ़ का पानी नहीं आया उस पानी का बहाव और तरफहो गया।

साखी नंबर: 258

अब तुम पास कर गई

कैप्टन प्रकाश सिंह एक बार डेरे में आए हुए थे। उनके बताने के अनुसार जालन्धर के कोई सेठ महाराज जी के सेवक थे जो डेरे में आए हुए थे। उनके साथ उनकी 6वर्ष की एक प्यारी-सी बच्ची भी थी। जब वह महाराज जी पास बैठे थे तो महाराज जी ने बच्ची को अपने पास बुलाया और

कहा,''तुम बेटा कौन सी कक्षा में पढ़ती हो?'' बच्ची ने कहा कि,''पहली कक्षा में।'' महाराज जी ने बच्ची को फिर कहा,''अगर हम तुम्हारी पीठ पर कुछ लिखे तो तुम जान जाओगी?'' बच्ची ने कहा,''हां जी।'' तो महाराज जी ने बच्ची की पीठ पर एक अक्षर लिखा और कहने लगे,''बताओ हमने क्या लिखा?'' तो बच्ची बोली,''जी क।'' महाराज जी ने दूसरी बार फिर अक्षर लिखा और कहने लगे,''बताओ हमने क्या लिखा ?'' ''जी कन्ना(आ की मात्रा)।'' तीसरी बार महाराज जी ने फिर एक अक्षर लिखा,''अब बताओ क्या लिखा?'' '' जी, फिर क।'' चौथी बार महाराज जी ने फिर एक अक्षर लिखा,''अब बताओ क्या लिखा?'' ''जी फिर कन्ना।'' '' लो जी यह बन गया काका।'' उस बच्ची के माता-पिता के दिल की इच्छा भी थी कि उनके घर अब पुत्र का जन्म हो पर वह महाराज जी को कह नहीं पा रहे थे। इस तरह महाराज जी ने उनके मन की बात जान ली और इस तरह संकेतों से और हंसी मज़ाक में ही उन को पुत्र की दात बख्शिश की।

साखी नंबर: 259

बेटी वह ठीक है

कैप्टन प्रकाश सिंह बाघा गाँव धुग्गा कलां ज़िला होशियारपुर महाराज जी के सेवक थे और फौज में नौकरी करते थे। वह समय-समय पर महाराज जी के दर्शन-दीदार को आया करते थे। बात 1971 ई.की लड़ाई की है प्रकाश सिंह की ड्यूटी नैणा कोट बार्डर पर लगी हुई थी। लड़ाई बहुत ज़ोरों पर चल रही थी। लड़ाई दौरान कैम्प में से असला खत्म हो गया प्रकाश सिंह की ड्यूटी पठानकोट से असला लाने की लगाई गई। वह एक आप उनका कैप्टन और दो जवानों के साथ पठानकोट से असला लेने के लिए चल पड़े। जब वह असला ले कर वापिस आ रहे थे रात का समय था लड़ाई कारण गाड़ियों की लाईट जगाने का आर्डर नहीं था। क्योंकि एयर अटैक होने का खतरा होता था। अंधेरे के कारण ही उनकी गाड़ी के सामने से आ रही आड़ी से एक्सीडैन्ट हो गया जिस से उनके कैप्टन को काफी गम्भीर चोटें लगी और प्रकाश सिंह एवं जवान को हल्की सी चोट लगी।

इधर उनकी पत्नी को बहुत डर लगा और दूसरे ही दिन डेरे महाराज जी पास आ गए। महाराज जी को नमस्कार की और कहने लगे,''महाराज जी मेरे पति लड़ाई में गए हैं। मुझे रात को बहुत डर लगा।'' तो महाराज जी कहने

लगे,''बेटी चिंता मत करो वह ठीक है उस को कुछ नहीं हुआ, हमने देख लिया है।'' उस रात ही प्रकाश सिंह एक्सीडैन्ट होने के बावजूद बार्डर पर असला पहुँचाने में कामयाब हो गए और कथनों के अनुसार उन को उस रात महाराज जी ने ही बचाया था और उनकी कृपा से ही जंग में जीत हासिल की तथा उन की जंग में रक्षा भी हुई। जंग जीतने के बाद महाराज जी बार्डर पर फौजी जवानों को मिठाई भी बांटने गए थे।

(स्वयं कैप्टन प्रकाश सिंह जी)

साखी नंबरः 260

सेवकों की विदेश में रक्षा करनी

श्री बख्शी राम पाल गाँव दोलीके जो कि पिछले 56 वर्ष से इंग्लैंड में रहते हैं। उनके बताने के अनुसार वह पहले सिंगापुर में रहते थे और फिर इंग्लैंड चले गए एवं उधर रहते ही उनकी पत्नी ने ख़त द्वारा संत सरवण दास महाराज जी के बारे में सूचित किया। बख्शी राम बताते हैं कि,''जब 12-13 वर्ष बीतने के बाद मैं अपनी पत्नी और बच्चों को अपने पास इंग्लैंड में बुलाया। जिस दिन उन्होंने एयरपोर्ट पर आना था मैं वहां गाड़ी ले कर कुछ समय पहले पहुँच गया और मैंने उनके लिए एक संतरे के जूस की बोतल खरीद ली और उन की प्रतीक्षा करने लगे।

थोड़ी देर बाद मेरी पत्नी और बच्चे एयरपोर्ट से बाहर मेरे पास पहुँचे तो मैंने उनको हाल-चाल पूछा और अपनी पत्नी को जूस का गिलास पीने के लिए पकड़ाया तो वह उस की महक ले कर देखने लगीं। उसके मन में विचार आया कि ये शायद मीठी शराब है तो मैंने कहा,''पी ले ये शराब नहीं है।'' तो मेरी पत्नी ने जवाब दिया,''हां संत सरवण दास महाराज जी कहते थे कि इंग्लैंड जा कर अपने पति को कहना कि शराब नहीं पीनी।'' तो बख्शी राम ने जवाब दिया,''छोड़ ऐसे ही संतों-साधुओं के पीछे लगी है।''

फिर हम अपनी गाड़ी में बैठ कर घर की तरफ चल पड़े। थोड़ी दूर पहुँचे कि अचानक ही हमारी गाड़ी पलट गई। मेरे बहुत चोट लगी और गाड़ी का भी काफी नुकसान हुआ। कुछ समय बाद जब मुझे होश आई तो मैंने अपनी पत्नी और बच्चों को देखा तो वह एक तरफ बिल्कुल ठीक खड़े थे। उन को एक खरोंच भी नहीं आई। मैंने अपनी पत्नी को पूछा,''आपको चोट तो नहीं लगी।'' तो पत्नी ने कहा कि,''हमें तो गाड़ी पलटते ही महाराज

सरवण दास जी ने आप बाहर निकाल लिया था और हमें तो कुछ पता भी नहीं चला।'' इस घटना के बाद मेरे दिल को बहुत पछतावा हुआ कि,'' मैंने संतों के बारे में गलत शब्द बोले और मुझे नसीहत मिली है। फिर मैंने महाराज जी को एक चिट्ठी लिखी कि महाराज जी मेरे पास से गलती हो गई है। मुझे क्षमा कर दो जी। फिर महाराज जी ने मुझे जवाब दिया और मेरी भूल माफ कर दी।''

साखी नंबर: 261

सूखी फसलें

यह चमत्कार श्री बख्शी राम जी ने अपने सामने ही देखा। श्री बख्शी राम के शब्दों के अनुसार कि गर्मियों के दिन थे और गर्मी बहुत ज़्यादा पड़ रही थी। बारिश होने की भी कोई सम्भावना न थी बिल्कुल ओड़ ही लगी हुई थी। गाँव बल्लां के ही कुछ ज़मीदार महाराज जी पास आए और महाराज जी उस समय डेरे के बाहर ही खड़े थे। उन लोगों ने महाराज जी को नमस्कार की और महाराज जी ने पूछा,'' क्या हाल-चाल है?'' तो वह कहने लगे,'' महाराज जी, हाल-चाल तो ठीक है पर गर्मी बहुत पड़ रही है और फसलें भी सूखी जा रही हैं, बारिश भी नहीं हो रही। महाराज जी आप कृपा करो कि बारिश हो जाए, नहीं तो फसलें तो मर ही जायेंगी।'' उनके फरियाद सुन कर महाराज जी ने अपना खूंडा आसमान की तरफ लहराया तो उन ज़मीदारों ने देखा कि चमकती दोपहर में जैसे-जैसे महाराज जी खूंडा लहराते हैं, बादल आते जा रहे पलों में ही छोटे-से बादल ने धरती पर पानी-पानी कर दिया। वह लोग महाराज जी का कौतुक देख कर हैरान रह गए और जो फरियाद ले कर आए थे वह पूरी हो गई और वह खुशी-खुशी घरों को आ गए।

(स्वयं श्री बख्शी राम जी)

साखी नंबर: 262

ओए तुम डोले क्यों थे

इसी तरह श्री शरन चंद जी बताते हैं कि एक बार वह टांडे से महाराज जी के लिए चीनी लेने गए। उनके साथ थे संत गरीब दास महाराज जी, राज मल्लऔर भाग मल्ल जी। वह सभी साइकिलों पर टांडे को गए थे। जब वह टांडे से चीनी ले कर वापिस आ रहे थे तो काला बकरा गाँव के पास आ कर शरन चंद का साइकिल पंक्चर हो गया। काला बकरा गाँव के बस स्टैंड पर साइकिल की एक दुकान थी। शरन चंद ने अपना साइकिल उस दुकानदार को

पंक्चर लगाने के लिए दिया। पर उसके पास कोई पैसा नहीं था। शरन चंद जी ने न तो संत गरीब दास महाराज जी से पैसे मांगे और न ही राज मल्ल, भाग मल्ल पास से। वह यह ही सोचता रहा कि यह क्या सोचेगें कि इस के पास पंक्चर के लिए भी पैसे नहीं है। इसी सोच में वह चुप-चाप ही खड़ा और सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को याद ही किया तो उसके आगे 35 पैसे गिर पड़े। उस ने हैरानी से वह पैसे उठा लिये और उस दुकानदार को दे दिये एवं वापिस डेरे की तरफ चल पड़े। उसने यह बात न ही संत गरीब दास महाराज जी को बताई और न ही राज मल्ल तथा भाग मल्ल को बताई।

जब वह कुटिया में महाराज जी पास पहुँचे तो महाराज जी ने शरन चंद कहा,'' ओए तुम वहां डोले क्यों थे? तुम्हारे साथ संत गरीब दास जी और राज मल्ल थे तुमने उनको क्यों नहीं बताया कि मेरे पास पैसे नहीं है।'' महाराज जी के पास से यह वचन सुन कर शरन चंद भी हैरान हुआ और संत गरीब, राज मल्ल एवं भाग मल्ल भी बहुत हैरान हुए।

सो इस तरह जानी-जान सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को जब कोई उन का सेवक याद करता था या किसी मुसीबत में होता था तो पलों में ही अपने सेवकों की मुसीबतें दूर कर देते थे।

साखी नंबर: 263

संत हरी दास महाराज जी

श्री सवरन दास पुत्र श्री माड़ा राम गाँव कबूलपुर वाले हर कार्य महाराज जी की आज्ञा अनुसार करते थे। गाँव कबूलपुर में श्री सवरन दास और उनके भाई धन्ना राम दोनों की संयुक्त ज़मीन थी। 1975 ई. की बात है जब उन दोनों ने ज़मीन पर ट्यूबवैल लगवाना था तो श्री सवरन दास संत हरी दास महाराज जी को गाँव कबूलपुर में ट्यूबवैल का निशान लगवाने के लिए ले कर गए। महाराज हरी दास जी ने निशान लगा कर अरदास की। पर श्री सवरन दास जी के भाई ने कहा कि,'' मैंने ट्यूबवैल दूसरी जगह लगवाना है।'' धन्ना राम जी न माने उन्होंने दूसरी जगह पर बोर करवाया, पर वहां पानी न निकला। आखिर उस को उसी जगह ट्यूबवैल लगवाना पड़ा, जिस स्थान पर महाराज हरी दास जी ने निशान लगाया था। उस ट्यूबवैल द्वारा आज भी पानी आ रहा है।

(श्री निरंजन दास पुत्र सवरन दास जी,कबूलपुर, जालन्धर, 6जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 264

संत हरी दास महाराज जी की और बीबी परमजीत की शंका दूर करनी

स.तुलसी सिंह और उनकी पत्नी बीबी महां कौर गाँव बूरा महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। उनकी लड़की परमजीत गाँव माणकडेरी फौजी गुरनाम सिंह के साथ शादी हुई थी। उस समय बीबी परमजीत के घर बहुत गरीबी थी।

एक बार संत हरी दास महाराज जी गाँव खडियाला नज़दीक बुलोवाल में गए थे। वहां श्री तुलसी सिंह और बीबी महां कौर गए हुए थे। श्री तुलसी सिंह ने महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,"महाराज जी, जाते हुए हमारी लड़की परमजीत गाँव माणकडेरी के घर में चरण डालना।" महाराज जी जीप द्वारा श्री तुलसी सिंह, बीबी महां कौर और कुछ और सेवादारों के साथ गाँव माणकडेरी पहुँचे। बीबी परमजीत ने महाराज जी को नमस्कार करते हुए विचारा कि घर में बहुत गरीबी है। मैं महाराज जी के साथ आई हुई संगत को चाय कैसे पिलाऊँगी।

अंतर्यामी महाराज हरी दास जी ने कहा कि,"बेटी हमने चाय नहीं पीनी, कच्ची लस्सी पीनी है।" इस तरह महाराज जी ने मेरे मन की बात जान ली। बीबी जी ने महाराज जी के साथ गई हुई संगत को कच्ची लस्सी बना कर पिलाई।

(स्वयं बीबी परमजीत पत्नी फौजी गुरनाम सिंह, माणकडेरी, 6 जुलाई, 2003)

साखी नंबर: 265

इन को पुत्र भी देने पड़ने हैं

श्री ओम प्रकाश पुत्र श्री काबुल सिंह गाँव जैतेवाली ज़िला जालन्धर के रहने वाले हैं जो कि आज कल रामेश्वर कलोनी जालन्धर में रहते हैं और भारत संचार निगम जालन्धर में ही एस.सी.ओ. सेवा निभा रहे हैं।

श्री ओम प्रकाश जी बताते हैं कि उनके पिता श्री काबुल सिंह जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। श्री काबुल सिंह जी को महाराज जी के दर्शन श्री इन्द्र दास जी सरमस्तपुर वालों ने करवाए थे। श्री काबुल सिंह और श्री इन्द्र दास जी इक्ट्ठे काम करते थे। एक बार श्री इन्द्र दास जी श्री काबुल सिंह जी को कुटिया में ले कर आए। कुटिया में पहुँच कर

उन्होंने महाराज जी को नमस्कार की और श्री इन्द्र दास जी ने महाराज जी को बताया कि,''मैं और काबुल सिंह जी इक्ट्ठे काम करते हैं। आप कृपा करो इन को भी अपने चरणों से लगाओ। सो इसी तरह बातचीत के दौरान महाराज जी ने काबुल सिंह को पूछा,''आपके कितने बच्चे हैं?'' तो काबुल सिंह जी ने उत्तर दिया कि,''मेरे दो लड़कियां ही हैं। उनके यह कहने पर महाराज जी ने इन्द्र दास को कहा,''अब इन्होंने हमसे पुत्र मांगने हैं। अगर न भी मांगे तो भी हमें इन को पुत्र देने पड़ने हैं क्योंकि इन को आप साथ ले कर आए हो।'' साथ ही महाराज जी ने यह भी वचन कर दिया,''आपके पुत्र पढ़ेंगे भी बहुत पढ़-लिख कर अफ्सर भी बनेंगे।''श्री काबुल सिंह जी महाराज जी के वचन सुन कर बहुत खुश हुए और फिर समय अनुसार महाराज जी के वचन पूर्ण हुए और काबुल सिंह जी के घर तीन पुत्रों ने जन्म लिया। महाराज जी के आर्शीवाद से उनके तीनों पुत्रों ने बहुत पढ़ाई की और जो कि आज कल श्री ओम प्रकाश जिनके बारे में साखी के आरम्भ में बताया ही है और उनके दूसरे भाई श्री जोगिन्दर सिंह डिप्टी जी.एम.(फाईनैंस डिपार्टमैंट होशियारपुर)और तीसरा भाई श्री उत्तम चंद जो कि चंडीगढ़ सैक्ट्रीऐट में ज्वांइट सैक्टरी है। सो इस तरह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के आर्शीवाद से तीनों भाई ही उच्च पद पर है।

साखी नंबर: 266

बताओ तुम्हें कहां से भूलता है

बीबी जीतो पत्नी श्री जीतराम गाँव बुलंदपुर ज़िला जालन्धर के रहने वाले हैं और सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु हैं। बीबी जीतो जी बताते हैं कि उनके पति श्री जीत राम ने स्वामी सरवण दास महाराज जी से नाम की दात प्राप्त की थी पर बीबी जीतो को अभी नाम की दात नहीं मिली थी। बीबी जीतो के पति श्री जीत राम जी शराब पीते थे। एक दिन बीबी जीतो के मन में विचार आया कि यह नाम भजन ले कर भी शराब पीते रहते हैं, सो मुझे सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में अरदास करनी चाहिए और वह उस रात बैठ कर महाराज जी को याद करने लगे तथा इसी तरह ही वह सारी रात बैठे रहे और महाराज जी याद करते रहे। इधर जानी-जान महाराज जी को पता चल गया कि कोई उन को याद कर रहा है और सुबह के समय बीबी जीतो के घर संदेश पहुँच गया कि उनके घर में जीत राम को स्वामी

सरवण दास महाराज जी ने कुटिया में बुलाया है पर जीत राम महाराज जी के पास आने को तैयार नहीं था। तो बीबी जीतो ने कहा कि,''आपको महाराज जी ने स्वयं बुलाया है। इसी लिए आपको महाराज जी पास जाना चाहिए। इस तरह बीबी जीतो के कहने पर वह कुटिया में आने को तैयार हुए साथ ही बीबी जीतो भी कुटिया को आ गए। उन दोनों ने आ कर महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी जीत राम को कहने लगे,''ओए, तुम सुधरते क्यों नहीं। लड़की बेचारी बैठी हमें याद करती रही है।'' इस तरह महाराज जी ने जीत राम को काफी समझाया।

फिर बीबी जीतो ने भी नाम-भजन ले लिया। उस ने सिमरन करना शुरू कर दिया तो उन को याद न रहा और उसने अपने पति को पूछा कि,''मुझे आप नाम-भजन याद करवा दो।'' इस पर जीत राम ने कहा कि,''तुमने कौन-सा मेरे साथ नाम-भजन लिया था। मैंने तुम्हें नहीं बताना।'' यह सुन कर बीबी जीतो जी बहुत उदास हुए। वह रात को बैठ कर महाराज जी को याद करते रहे। फिर प्रातःकाल को स्वामी सरवण दास महाराज जी उनके सामने प्रकट हो गए और कहने लगे कि,''बताओ, तुम्हें नाम-भजन कहा से भूलता है?'' तो बीबी जीतो ने महाराज जी को बताया तो महाराज जी ने उसके सिर पर हाथ रख दिया। महाराज जी ने बीबी जीतो के सिर पर हाथ रखने के साथ ही उन को सब कुछ याद हो गया। उन्होंने कहा कि,''महाराज जी, मुझे अब कहीं से भी नहीं भूलता।''

साखी नंबरः 267
आप फैक्टरी बंद न करो

श्री प्यारा राम बधण पुत्र श्री रख्खा राम गाँव आंदे काली नज़दीक नूरमहिल के रहने वाले हैं। जो कि आज कल परिवार के साथ इंग्लैंड में रहते हैं। डेरा सचखंड बल्लां के प्रति उनकी अपार श्रद्धा है। श्रीमान् बधण जी इंग्लैंड में संत सरवण दास चैरीटेबल ट्रस्ट के प्रधान है। संत सरवण दास चैरीटेबल अस्पताल कठार और काशी में बने श्री गुरू रविदास गेट को बनाने में संत सरवण दास चैरीटेबल ट्रस्ट यू.के. का बहुत बड़ा योगदान है और डेरे की तरफसे चलते और भी समाज सेवा के कार्यों में इस ट्रस्ट की ओर से काफी योगदान डाला जा रहा है।

श्रीमान् बधण जी बताते हैं कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के दर्शन

उन्होंने1957 ई. को अपनी शादी के दौरान ही किए थे। उसके बाद उन को महाराज जी से मिलने का कभी भी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। डेरा सचखंड बल्लां के प्रति उनकी श्रद्धा उस समय ज़्यादा जागृत हुई जब ब्रह्मलीन श्री 108संत गरीब दास महाराज जी इंग्लैंड में गए थे। वहां ही वह महाराज गरीब दास जी को मिले थे।

श्री प्यारा राम बधण जी की इंग्लैंड में अपनी फैक्टरी है। वह बताते हैं कि एक बार उन को अपने काम में बहुत घाटा पड़ गया और उन्होंने फैक्टरी बंद करने का मन बना लिया था तथा उस समय ब्रह्मलीन सत्गुरू गरीब दास महाराज जी इंग्लैंड गए हुए थे। श्री प्यारा राम जी महाराज गरीब दास जी के दर्शन करने को गए तो महाराज जी ने उनको उनके के काम के बारे पूछा तो श्री बधण जी ने बताया कि,''महाराज जी मेरी अपनी फैक्टरी है और आज कल वह बहुत कम चलता है। सो मेरा विचार है कि मैं उस फैक्टरी को बंद कर दूँ।'' उनके यह कहने पर महाराज गरीब दास जी ने वचन किया कि,''आप फैक्टरी बंद न करो, अभी उस को और चलाओ। आप का काम ठीक हो जाएगा।''श्री बधण जी बताते हैं कि,''मेरी महाराज जी से ऐसी वार्तालाप हुई और कुछ देर बाद हम अपने घर को चल पड़े। हम अपनी गाड़ी के द्वारा घर की ओर जा रहे थे तो मैंने देखा कि एक गाड़ी लगातार हमारे पीछे आ रही है, पर मुझे नहीं था पता कि उसमें कौन हो सकता है तथा उसी तरह जब हम घर पहुँचे ही थे और वह गाड़ी भी हमारे पीछे ही हमारे घर आ गई और जब मैंने देखा तो उस गाड़ी में से मेरी फैक्टरी का मैनेजर उतरा और वह मेरे पास आ कर मुझे बधाई देने लगा।'' मैंने उससे पूछा कि,''क्या हुआ है?'' तो उसने उत्तर दिया कि,''आप जी को करोड़ों रूपये का काम मिल गया है।'' यह सुन कर मैं बहुत हैरान हो गया और मुझे बहुत खुशी हुई यह सब कौतुक ब्रह्मलीन संत सरवण दास महाराज जी का ही था कि उनकी कृपा से मेरी बंद होने वाली फैक्टरी को काम की नई दिशा मिल गई और मेरा सारा घाटा पूरा हो गया। सो अब मैं डेरा सचखंड बल्लां के प्रति पूरी तरह समर्पित हूँ।

साखी नंबर: 268

जब समाधि लगा कर याद करोगे,तभी दर्शन देंगे

एक बार स.काबुल सिंह जी हज़ूर स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन को आए। महाराज जी को श्रद्धा सहित नमस्कार करने के बाद स.काबुल सिंह जी को निवेदन करके कहने लगे,''स्वामी जी, मैं आप का

असल रूप देखना चाहता हूँ।'' सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी कहने लगे,''मैं आपके सामने खड़ा हूँ, तुम देख लो।'' परन्तु स.काबुल सिंह अपनी ज़िद्द पर ही रहे कहने लगे,''महाराज जी नहीं, मैंने तो आप का असल स्वरूप देखना है।'' इससे सम्बन्धित आधा घण्टा चर्चा होती रही।

सत्गुरू जी वजद में आ कर कहने लगे,''काबुल सिंह जी, आप ज़मीन पर चौंकड़ी लगा कर बैठ जाओ और आँखें बंद कर लो।'' काबुल सिंह ने ऐसे ही किया। सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के शरीर में से इतनी किरणें निकली कि दिन की रौशनी भी उस के आगे बहुत कम नज़र आए। एक दम चमक-सी पड़ी। काबुल सिंह को महाराज जी कहने लगे,''जब समाधि लगा कर याद करोगे, तभी दर्शन देंगे।'' समय अपनी चाल में चलता गया। एक रात स.काबुल सिंह जी अपने कमरे की छत पर बैठे थे। रात के दो बज चुके थे। आपको नींद नहीं आ रही थी। इस लिए आप समाधि लगा कर हजूर स्वामी सरवण दास महाराज जी को याद करने लगे। आप ने आँखें बंद हुई थी। आप जी के आगे एक दम रौशनी का गोला आया। उस की रोशनी एक दम प्रकट हुई और आलोप हो गई। जिस वक्त स.काबुल सिंह ने आँखें खोली तो उन को इस रौशनी का पता चला कि आसमान में निकला चांद और तारों की रोशनी भी बहुत ही मध्यम थी। स.काबुल सिंह को हजूर स्वामी सरवण दास महाराज जी के वचन याद आए। जिस में उन्होंने कहा था,''जब भी समाधि लगा कर याद करोगे, उसी समय हम आप को दर्शन देंगे।'बोलना जी जय संता दी'।

साखी नंबर: 269

यह बच्चे धोखा नहीं देंगे

एक बार स.काबुल सिंह जी जो कि आज कल फगवाड़ा शहर में रह रहे हैं। ब्रह्मलीन सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने आए। आप ने सत्गुरू जी पास आ कर कहा कि,''महाराज जी, हमारे घर कोई औलाद नहीं है। कृपा करो जी।'' आगे से महाराज जी मुस्कुरा कर कहने लगे,''तुम इसी तरह ही अच्छे हो, फिर थोड़े समय चुप और शांत रहने के बाद बोले कि,'' तुम्हारे दो बच्चे होंगे। जो कभी भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे।''

स.काबुल सिंह जी महाराज जी आगे निवेदन करने लगे कि,''सत्गुरू जी मुझे आप की बातें समझ नहीं आती।'' महाराज जी कहने लगे,''तुम्हें आप

ही समझ आ जाएगी।'' स.काबुल सिंह जी ने 22 वर्ष फौज की नौकरी की और19 वर्ष बैंक में सिक्योरिटी पर रहे। उन ही दिनों में रिटायरमैंट के बाद शाम के समय आप अपने घर में अकेले ही बैठे थे।आप को सरकारी बैंक से पैंशन लगने संबंधी चिट्ठी आई और दूसरी चिट्ठी फौज में से रिटायरमैंट होने के बाद लगने वाली पैंशन से संबंधित थी। स.काबुल सिंह जी मन ही मन मुस्कुरा पड़े। उन को अपने दो कमाने वाले पुत्रों के बारे में पता चल गया था। यह कमाने वाले पुत्र आज भी स.काबुल सिंह को महीने बाद तनख्वाह दे जाते हैं(अर्थात् पेंशन) ।यह बच्चे उन को धोखा नहीं दे सकते।

साखी नंबर: 270

तुम्हारे पतासे भी खाऐंगे

एक बार स.काबुल सिंह जी किशनगढ़ बस स्टैंड से पतासों का प्रसाद ले कर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शनों को आए। आप जी नमस्कार करके महाराज जी की हजूरी में बैठ गए। इतने ही समय में एक और सेवादार प्रेमी आए। उस ने भी महाराज जी को नमस्कार कर बर्फी वाला डिब्बा सत्गुरू जी के पावन पवित्र कर कमलों में पकड़ा दिया। सत्गुरू जी ने थोड़ा-सा बर्फी का प्रसाद मुँह में डाला। स.काबुल सिंह जी जो कि पतासों का प्रसाद ले कर आया था सोचने लग पड़े कि महाराज जी ने मेरे प्रसाद को क्यों नहीं खाया।

थोड़ी ही देर बाद सत्गुरू जी ने कहा एक पतासा में मुँह में डाला और स.काबुल सिंह जी को वचन किए,''तुम ऐसे ही मत सोचते रहा करो, हम तुम्हारे पतासे सारे ही खाऐंगे।'' जानी-जान महाराज जी ने काबुल सिंह जी की सारी मन की बात जान ली थी।

साखी नंबर: 271

रिद्धी-सिद्धी नामे की दासी

एक बार स.काबुल सिंह जी और उनकी पत्नी स्व.बीबी प्यारो जी और उनका ससुर उत्तम चंद जी अपने गाँव से सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शनों को आ रहे थे। तीनों किशनगढ़ बस स्टैंड पर रूक गए। उन दिनों में किशनगढ़ बस स्टैंड से पैदल ही कुटिया को आना पड़ता था क्योंकि उन दिनों यातायात के साधन इतने नहीं थे। तीनों महाराज जी के बारे में बातें करते हुए कुटिया की ओर आ रहे थे। स.काबुल सिंह जी के ससुर कह रहे थे कि

महापुरूषों ने अन्नपूर्ण शब्द किया हुआ है तो ही कुटिया में से भी पदार्थ खत्म नहीं हो रहा। प्रत्येक दिन 36 प्रकार के पदार्थ कुटिया में आ रहे हैं। जहां कभी किसी भी वस्तु की कमी नहीं आई।

तीनों महाराज जी की ही बातें करते आ रहे थे। जब तीनों कुटिया में पहुँचे तो सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी कुटिया में थड़ा साहिब पर अपने ध्यान में विराजमान थे। स.काबुल सिंह उनकी पत्नी बीबी प्यारो और उन का ससुर उत्तमचंद नमस्कार कर महाराज जी की हजूरी में बैठ गए। सत्गुरू जी ने स.काबुल सिंह जी को पूछा,''यह आदमी कौन है?'' आगे से सरदार जी ने जवाब दिया कि,''मेरे ससुर जी हैं।'' तो आगे से स्वामी सरवण दास महाराज जी मुस्करा पड़े और उन्होंने वचन किया स.काबुल सिंह जी अपने ससुर को कहो कि -''रिंध-सिंध नामे की दासी''

संसार की सारी माया संतों-महापुरूषों के चरणों की धूल होती है। बर्जुर्ग उत्तम चंद महाराज जी के चरणों में गिर पड़े। सभी के मन की शंका दूर हो गई।

साखी नबंरः 272

लड़का तो हमने स्वयं पीटा है

स.काबुल सिंह जी फौज में नौकरी करते थे। आप जी का घर दसूहा के नज़दीक था पर आज कल आप फगवाड़ा में रह रहे हैं। एक बार आप जी की पत्नी बीबी राम प्यारो सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शनों को किशनगढ़ बस स्टैंड से पैदल ही कुटिया की ओर रहे थे तो रास्ते में एक लड़का साइकिल पर मिला। बीबी जी उन दिनों में जवान अवस्था में थे। लड़के ने बीबी जी को साइकिल पर बैठने के लिए कहा, बीबी जी ने इन्कार कर दिया। लड़का कभी पीछे हो जाए कभी आगे हो जाए। बीबी जी ने कहा,''भाई, तुम चले जाओ। मैंने स्वयं ही कुटिया को पैदल चली जाऊँगी।'' लड़के की नीयत साफ नहीं थी। बीबी जी ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी का ध्यान किया। दूसरे ही पल लड़का रास्ते के दूसरी तरफ हो कर हिचकिचाता हुआ घूमता-घूमता शोर मचाता गिर पड़े। इधर कुटिया में सारी संगत में से उठ स्वामी सरवण दास महाराज जी कुटिया के गेट के बाहर आ कर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद संत हरि दास महाराज जी स्वामी सरवण दास महाराज जी पास आ कर निवेदन करने लगे,'' भगवान जी संगत बहुत बैठी है, आ जाओ। हमारे पर कृपा करो उन को दर्शन दो।''आगे से स्वामी सरवण

दास महाराज जी कहने लगे,''एक मेहमान बहुत दूर से आ रही है। हम उसका इन्तज़ार कर रहे हैं। आप संगत की सेवा करो। हम भी आते हैं।'' थोड़े समय बाद बीबी राम प्यारो महाराज जी के चरणों में पहुँची तो महाराज जी ने उस को पूछा,''बेटी, तुम्हें उस लड़के ने कुछ कहा तो नहीं। तुम ठीक हो।'' आगे से राम प्यारी ने कहा,''सत्गुरू जी वह लड़का मुझे परेशान करता रहा। पर थोड़ी ही देर में बाद वह लड़का चक्कर खाता साइकिल के साथ रास्ते में ही गिर पड़ा।'' यह सुन कर महाराज जी मुस्करा पड़े और वचन किए,''बेटी, हमने उस लड़के की खूब पिटाई की है। आगे से उस को अक्ल आ जाएगी।'' यह वचन सुन कर बीबी राम प्यारो सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में गिर पड़ी और उस को एहसास हो गया कि सत्गुरू अपने प्रेमियों की किस तरह रक्षा करते हैं।

साखी नंबरः 273

आज चोरों ने आना है

एक दिन सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अपने ध्यान में थड़ा साहिब पर विराजमान थे। नज़दीक ही श्रीमान् शीतल वैद और कई संगतें महाराज जी की हज़ूरी में बैठी थी। महाराज जी ने शीतल वैद्य को कहा कि,''संत हरि दास महाराज जी को जा कर कहो सभी कमरों और रसोई के दरवाज़े अच्छी तरह से लगा कर रखना। आज चोरों ने आना हैं। वैद्य जी ने महाराज जी के हुक्म के बारे संत हरि दास महाराज जी को बता दिया। ठीक उसी रात गाँव बल्लां में सारी रात चोर आए चोर का शोर होता रहा। सारी रात लोगों नींद नहीं आई। लोग अपने-अपने घर की छत पर डंडे ले कर चढ़ गए। इस के बावजूद गाँव बल्लां के एक घर में से चोर बकरी चोरी करके ले ही गया तभी कहते हैं-

साधू बोले सह सुभाव, साध कर बोला बिरथा न जाए।।

श्रीमान् शीतल वैद्य जी संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में गिर पड़े। बोलना जी जय संतों की।

साखी नंबरः 274

आज मिस्त्री दलीप सिंह जी ने आना है

श्रीमान् दलीप सिंह मिस्त्री साहिब जी के परिवार की ज़मीन उत्तर प्रदेश में थी। जहां यह परिवार खेती करता था। जो आलीशान मन्दिर का निर्माण डेरा

सचखंड बल्लां में किया गया है। इस का नक्शा नवीसी और इमारतसाज़ी यह सब की सब मिस्त्री दलीप सिंह जी ने किया है। आप सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों के मुरीद थे।

एक बार बाबा दित्तू राम श्रीमान् शीतल वैद्य, स.सवरन सिंह बल्लां, स.फकीर सिंह और श्रीमान् मंहिगा राम बरनाला और कई संगतें महाराज जी के पावन पवित्र चरण-कमलों का आनन्द मान रही थी। सत्गुरू श्रीमान् शीतल वैद्य को कहने लगे,'' आज मिस्त्री साहिब श्री दलीप सिंह जी ने आना है। इसी लिए आप कुछ समय रूक कर जाना। उन को मिल कर जाना।'' पर शीतल वैद जी न माने और महाराज जी से आज्ञा ले कर घर जाने लगे जब नहर किनारे गए तो क्या देखते हैं कि मिस्त्री दलीप सिंह जी एक पेड़ के नीचे सोये पड़े थे। सफर से आए थे। इसी लिए नहर किनारे ही सो गए। श्रीमान् शीतल वैद्य के मन में था कि मिस्त्री दलीप सिंह जी इतनी जल्दी कैसे यू.पी. से आ सकते थे? इसी लिए उन्होंने महाराज जी की बात को ध्यान से न सुना। पर संत-महापुरूषों के वचन अटल होते हैं। इसी लिए महाराज जी ने शीतल वैद्य के मन की शंका एक बार फिर दूर की।

साखी नंबर: 275

अब आप को दूध मांगने की ज़रूरत नहीं है

एक बार सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी संगत को अपने पवित्र मुखारविंद से प्रवचन सुना रहे थे। इसके बाद महाराज जी ने श्रीमान् संत हरि दास महाराज जी को कहा,'' आप ने गाँव बल्लां के उस घर से दूध ले कर आना है।'' नज़दीक ही बैठे श्रीमान् शीतल वैद जी को कहा कि,'' आप ने बाबू जी गाँव राएपुर-रसूलपुर के उस घर से दूध लाना है।'' संत हरि दास महाराज जी ने कहा, ''प्रीतम जी सत्वचन।'' पर शीतल वैद्य के मन में विचार आया कि,'' महाराज जी, आज हमें सुबह-सुबह ही दूध मांगने भेज रहे हैं। अभी संत हरि दास महाराज जी और श्री शीतल वैद्य जी कुटिया के दरवाजे तक ही पहुँचे थे कि महाराज जी ने पीछे से आवाज़ लगाई,'' आ जाओ वापिस, अब आप को कही से भी दूध मांगने की ज़रूरत नहीं रहेगी। दो घरों से दूध हमारे ओर चल पड़ा है। और भी आएगा। आगे से भी हमें दूध मांगने की ज़रूरत नहीं रहेगी, अब दूध आप ही हमारे दरबार पर आया करेगा।'' आज आप देखते हैं कि महाराज जी के वचन सत्य हुए हैं।

साखी नंबरः 276
वो हमारी भूल थी

एक बार एक महात्मा जो कि हिन्दी बोलते थे और उच्च मानसिकतावाद के पक्ष में थे सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन को आए। वह कुटिया में सुबह-शाम घूमते टहलते हुए ओम ओम ही उच्चारते रहते और कभी भी महाराज जी को नमस्कार नहीं करते थे। जिस वक्त महाराज जी को उसने ओम कहना सत्गुरू जी ने उसके बोलने से पहले ही उस को ओम कह देते। महाराज जी सभी धर्मों के महापुरूषों का और सभी धर्मों की संगत का बेहद आदर किया करते थे। इसी लिए स्वामी सरवण दास महाराज जी भी उस महात्मा का जो ओम उच्चारण करते थे उन का भी बहुत आदर करते थे। पर महात्मा जी संतों की निंदा ही करते रहते।

उन दिनों में श्रीमान् शीतल वैद्य जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में रह कर सेवा किया करते थे। महाराज जी के कहने पर श्रीमान् शीतल वैद्य जी उस हिन्दी बोलने वाले महात्मा को चारपाई लगा देते। सत्गुरू जी आप थड़ा साहिब पर विराजमान होते थे। महाराज जी उन को कहते,"आप हमारा चाय पानी तो पियोगे नहीं, इसी लिए आप बादाम गिरी खा लो।" महाराज जी उनको स्वयं भोजन कराते वह भी अलग बिठा कर। महाराज जी आप संगत में ही लंगर खाते और चाय पानी पीते।

धीरे-धीरे थोड़े दिन ही बीते एक दिन वह हिन्दी बोलते महात्मा जी कहने लगे,"स्वामी जी, अगर आप चाय पानी और लंगर संगत में बैठ कर खा सकते हैं, तो हम भी संगत में बैठ कर ही खायेंगे।" सत्गुरू जी का प्रेम से भरा स्वभाव और व्यवहार का उस महात्मा पर बहुत ही प्रभाव पड़ा। फिर क्या था वह महात्मा पुरूष लंगर में से प्रशादा खाने लगे,चाय पानी पीने लगे। जो महात्मा संतों की निंदा करता नहीं थकता था वह संत सरवण दास महाराज जी के गुण गाने लगा। वह दिन भर स्वामी जी की प्रशंसा करते हुए न थकता। एक दिन श्रीमान् शीतल वैद्य और संगतें पूछने लगी,"महात्मा जी, पहले तो आप महाराज जी की निंदा करते थे, अब आप उनकी तारीफें कर रहे हो? क्या बात है?" वह महात्मा जी कहने लगे,"वो हमारी भूल थी।" संत सरवण दास महाराज जी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी हैं।

साखी नंबरः 277

आप अंर्तयामी संत हो..हम बाहरमुखी हैं

एक बार एक महापुरूष हरिद्वार से संत सरवण दास महाराज जी के दर्शनों को आए। उस के मन में संतों के प्रति संदेह था कि यह कोई बहुत बड़ा संत नहीं है। यह हिन्दी बोलते महापुरूष भी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के साथ ब्रह्म गोष्ठी करने लगे और उस की बातचीत में साफ झलकता था कि वह स्वामी सरवण दास महाराज जी को इन विचारों-गोष्ठी में छोटा दिखाना चाहता था। यह हिन्दी बोलते महापुरूष वेदांत-शास्त्र में बहुत ही ध्यान रखते थे।

बातचीत में महाराज जी ने उन को पूछा,''जब हम समाधि लगाते हैं तो उस में कौन-से चार तत्व विघ्न डालते हैं। पहला तत्व महाराज जी ने कहा कि,''लो है भाव नींद है। इसके अतिरिक्त तीन और तत्व समाधि में विघ्न डालते हैं। वह कौन-से हैं?'' यह हिन्दी बोलते श्रीमान् महात्मा जी हाथ जोड़ कर संत सरवण दास महाराज जी के आगे कहने लगे,''सत्गुरू जी, आप अंतर्यामी महापुरूष हो, हम बाहरमुखी हैं।'' इस प्रकार सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने उस हिन्दी बोलने वाले हरिद्वार महापुरूषों के मन की शंकायें को दूर किया था।

साखी नंबरः 278

श्री शीतल दास जी बूटा मण्डी वालों द्वारा आँखों देखा कौतुक

श्री शीतल दास जी बताते हैं कि एक बार एक छोटा-सा बच्चा बहुत बीमार था। कुछ लोग महाराज जी के चरणों में ले कर आए। संत सरवण दास महाराज जी थड़ा साहिब पर विराजमान थे। उन दिनों में 108संत गरीब दास महाराज जी दवाई की सेवा किया करते थे। बच्चे को महापुरूषों के चरणों में लेटा दिया गया। महाराज जी कहने लगे,''गरीब दास, बच्चे के पेट में दर्द है, इसके मूहँ में रूहकेड़ा डाल दो।'' बच्चा पाँच मिनट में उठ कर खेलने लग पड़ा। बच्चे की दादी रोती-रोती डेरे आ पहुँची। उसने बच्चे को अपने गले से लगाया और संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार की।

साखी नंबरः 279

महाराज जी का अचानक अलोप होना

श्री शीतल दास जी बताते हैं कि,''जब भी मैं डेरे आता था तो मैं डेरे में

10-15 दिन तक रहता था।'' एक बार संत सरवण दास महाराज जी मुझे कहने लगे,''शीतल दास, तुम रात को चारपाई मेरे पास लगा लेना, बाप-बेटे में क्या अंतर होता है।'' रात को महाराज जी समाधि में बैठ गए। मैंने चारपाई साथ ही लगा ली और मैं पंखा झलने लगा। उनको पंखे की हवा ठण्डी लगी, उस दिन बहुत ज़्यादा गर्मी थी। मेरे देखते-देखते ही महाराज जी ने कहा,''वाह भाई वाह'' और महाराज जी मेरी आँखों के सामने से गायब हो गए। मैं स्वयं सो गया। यह मेरी बहुत बड़ी भूल थी। मैं महाराज जी को चारपाई से गैर-हाज़िर समझा। मुझे पंखा झलते रहना चाहिए था। महाराज जी बहुत दूर चले गए थे। पर उनका असल वजूद मेरे पास ही था। कुछ समय बाद महाराज जी आसन पर फिर आ गए।

साखी नंबर: 280

आँख झपकते ही हाज़िर होना

शीतल दास जी बताते हैं कि एक बार मैं डेरे में था तो संत सरवण दास महाराज जी कहने लगे कि,''हमने साथ वाले गाँव में जाना है। जब हम वापिस डेरे आ जायेंगे तो फिर तुम चले जाना घर को। 15-20 मिनट हुए थे गए हुए को, आगे से बीबीयां भजन गाती हुई आ रही थी। मैंने सोचा कि महाराज जी डेरे में नहीं है इन को स्वागत कौन कहेगा?

मैंने अभी यह सोचा ही था कि मेरे पीठ के पीछे एकदम आवाज़ हुई जैसे आसमान से कोई चीज़ गिर पड़ी हो। मैंने पीछे देखा तो 108संत सरवण दास महाराज जी मेरे तरफ देख कर मुस्कुरा रहे थे। महाराज जी तो परमात्मा का स्वरूप थे।

महाराज जी बीबीयों को कहने लगे,''बेटी मुझे आपका याद ही नहीं था कि आपने भी आना है।'' महाराज जी ने बीबीयों को चाय-पानी पिलाया और फिर विदा किया। मैं महाराज जी का यह कौतुक देख कर हैरान रह गया। इस दिन मुझे विश्वास हो गया कि यह महापुरूष पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है। घट-घट की जानते हैं। परन्तु लोगों में भुलेखा बनाई रखने के लिए संसारी कार्यों में विचर रहे हैं।

साखी नंबर: 281

तलवार वाला व्यक्ति

एक बार महाराज जी के पास एक आदमी आया, जिस के पास तलवार

थी। वह बार–बार कह रहा था कि मेरे पर वार कर, अपनी तलवार निकालता था–वापिसम्‍ यानम ेंड ालल ेताथ । ।म हाराजज ीन ेक हा,‘‘भाई,त ुम्हारी तलवार बहुत सुंदर है।’’ महाराज जी ने तलवार को हाथ लगाया। वह आदमी पूरा ज़ोर लगाकर थक गया, वह तलवार म्यान में से बाहर ही नहीं निकली। महाराज जी ने वचन किये कि,‘‘तलवार के करम इस को म्यान में से नहीं निकलने देते।’’ भाई ज़ोर लगाकर थक गया। भाई महाराज जी को नमस्कार करके जाने लगा तो महाराज जी ने म्यान को फिर हाथ लगा दिया। यह सारा कौतुक मैं पास बैठा देखता रहा। जब वह डेरे में से बाहर निकल कर चला तो शीलत दास जी उनके पीछे चल पड़े और उन्होंने उस व्यक्ति को कहा कि,‘‘अब आप तलवार निकालो, यह निकल जाएगी।’’ वह व्यक्ति कहने लगा कि,‘‘यह दो व्यक्तियों के बिना नहीं निकल सकती।’’ मैंने कहा कि,‘‘तुम एक यत्न तो करके देखो।’’ उस ऐसे ही किया और वह तलवार म्यान में से निकल गई। यह महाराज जी के चमत्कार हैं।

साखी नंबरः 282

पागल का इलाज़

एक बार एक व्यक्ति डेरे में आया, वह बहुत ही सिर घुमा रहा था। उस के दिमाग में नुक्स था। महाराज जी ने कहा,‘‘भाई, तुम ऐसे मत करो।’’ आखिर जब वह न हटा। महाराज जी ने उसके दोनों आँखों के बीच खड़ाव(चरण पादुका) मारी। माथे के बीच में से काला खून निकलने लगा और माथा फट गया। संत हंस पड़े। जो व्यक्ति कुछ देर पहले सिर घुमा रहा था वह बिल्कुल ठीक हो गया। उस व्यक्ति के सारे वस्त्र खून से भीग गए। उस व्यक्ति को हमने पूछा कि,‘‘तुम सिर क्यों घुमा रहे थे?’’ तो वह कहने लगा,‘‘आप को कौन कहता है कि मैं सिर घुमा रहा था।?’’ इस तरह संत सरवण दास महाराज जी की कृपा से वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया।

साखी नंबरः 283

पागल औरत को ठीक करना

एक बार कुछ बीबीयां डेरे में आई। उनके साथ एक औरत थी, उसके गले में फूलों का हार डाला हुआ था। औरतें कहने लगी,‘‘महाराज जी, इस को ठीक करो।’’ एक औरत जो हंस रही थी महाराज जी उस को कहने लगे,‘‘बेटी, यह ठीक तो हो सकती है अगर इसके गले का हार उतार कर तुम

अपने गले में डाल लो।'' उस औरत ने ऐसे ही किया। जिस औरत को इलाज़ के लिए महाराज जी पास लाया गया था। वह तो ठीक हो गई पर जिस के गले में हार डाला गया, वह पागल हो गई यह महाराज जी का एक तरह की हंसी-मज़ाक भी था और महान् चमत्कार भी। बाद में दोनों औरतें बिल्कुल ठीक हो कर घर को वापिस आ गई और जय संतों की बुलाने लगी।

साखी नंबर: 284

मेरे मन की बात पूरी करनी

एक बार संत सरवण दास महाराज जी बूटा मण्डी संगतों को दर्शन देने के लिए आए। संगत बहुत अधिक थी, उनमें साधू-मण्डली भी थी। दास(शीतलदास)महाराज जी को घर चरण डालवा कर सेवा करनी चाहता था। मेरे पास पगड़ी, सोडा वाटर, कुछ बर्फी और पाँच रूपये ही थे। मेरे मन में इच्छा थी कि संत महाराज जी अकेले ही मेरे घर चरण डालें। महाराज जी ने सारी संगत को कहा कि,''आप सभी यहीं ही रूको। मैंने अकेले ही शीतल दास जी के घर जाना है।'' महाराज जी अकेले ही मेरे घर आए, उनके साथ बिशन राम बल्लां वाले थे। इस तरह संत सरवण दास महाराज जी मेरे मन की बात जान गए और मेरे दिल में संतों का परमात्मा से भी अधिक आदर-सम्मान हो गया।

साखी नंबर: 285

गर्म पानी और कीड़े

एक बार हम डेरे में देग तैयार कर रहे थे। बाद में जो गर्म पानी था, वह हमने एक तरफ फैंक दिया। संत सरवण दास महाराज जी एकदम थड़ा साहिब से उठे और हमें आ कर पूछने लगे कि,''आपने गर्म पानी कहां फैंका है? इस से हज़ारों कीड़े मर सकते हैं।'' महाराज जी जीव-जन्तु पर भी मेहर की दृष्टि रखते थे। उन्होंने जहां पानी फैंका था, वहां महाराज जी ने जाप किया। क्योंकि पानी में भी हज़ारों ही कीड़े होते हैं। सो महाराज जी को हर वस्तु में परमात्मा ही नज़र आता है। 108संत सरवण दास महाराज जी की महिमा अपार है।

साखी नंबर: 286

तन के ही कपड़े उतारने

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ऐसे महापुरूष थे, जिन के

हृदय में गरीब जनता के लिए दर्द कूट-कूट कर भरा हुआ था। एक बार फकीर महाराज जी के दरबार पर आया। तन पर फटे पुराने कपड़े, पांव से भी नंगा, पेट से भूखा। महाराज जी ने उस को भोजन करवाया, पांव को ढका और सत्गुरू जी ने अपने ही तन के कपड़े उस के डलवा दिए।

साखी नंबरः 287

मिलावट की कमाई

एक लाला जी जालन्धर शहर के रहने वाले थे। उन का श्रीमान् शीतल वैद्य जी से बहुत ही प्रेम था। यह लाला जी आप स्वयं बताते हैं कि आप दुकान पर मिर्ची में मिलावट, हल्दी में मिलावट किया करते थे। समय ने रंग दिखाया लाला जी के कोहड़ निकल आया।आप ने सारी दुनियाभर के डॉक्टरों से इलाज़ करवाया पर आप को आराम नहीं आया। वाह जान की लगा दी, पर उन को आराम नहीं आया। आखिर हार कर बैठ गए।

एक दिन आप ने श्रीमान् शीतल वैद्य जी से इस सम्बन्धित बातचीत किया। आप ने स्वामी सरवण दास महाराज जी पास जाने की सलाह दी और कहा,''आप को कोई ठीक नहीं कर सकता। केवल वह ही ठीक कर सकते हैं और साथ ही आप को शीतल वैद्य जी ने नसीयत की कि तुझे जितनी बार मर्ज़ी संत वापिस खाली भेजे तुम जाने से न रूकना।'' लाला जी निश्चित दिन पर स्वामी जी के चरणों में अरदास करने पहुँचे। पर महाराज जी ने तीन बार वापिस भेजा। आखिर लाला जी की हालत पर दया आई महाराज जी ने वचन किए,''तुम्हें किस डॉक्टर ने कहा है कि,''कोहड़ है। यह तो भाई नमक, तेल, घी और साबुन में की मिलावट है।'' लाला जी नीचे को मुँह करके रोने लगे। महाराज जी ने उसके कोहड़ पर पवित्र जल का छिड़काव किया और लाला जी ठीक हो गए।

साखी नंबरः 288

शादी में प्रकट होना

''ऍफ-261, सुदर्शन पार्क, पश्चिमी दिल्ली, फोन-5421231''

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की दिव्य दृष्टि इतनी थी कि वह एक ही समय दिल्ली, गुजरात, चीन, अमेरिका और संसार के कोने-कोने तक देख सकते थे। इस की एक उदाहरण सत्गुरू रविदास महाराज जी का सीर गोवर्धनपुर कांशी बनारस में जन्म स्थान की खोज करना।

एक बार भगत सिंह मल्ल के बड़े लड़के की शादी थी। आप स्वयं भगत सिंह दिल्ली से चलकर गाँव बल्लां में सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को शादी का संदेश पत्र देने आए। महाराज जी ने आप को कहा,''कोई बात नहीं, अगर समय मिला तो हम ज़रूर आयेंगे।'' भगत सिंह और परिवार यह संदेश पत्र दिल से नहीं दे रहे थे इसी लिए महाराज जी ने भी शिष्टाचार से ही यह कह दिया।

निश्चित शादी वाले दिन सत्‌गुरू जी अपनी दिव्य दृष्टि और शक्ति से दिल्ली में स.भगत सिंह मल्ल के घर में पहुँच गए। उनकी पत्नी ने महाराज जी के प्रत्यक्ष दर्शन किए।

सारे घर में खूब गहिमा गहिमी था। पत्नी ने स.भगत सिंह मल्ल को कहा कि,''महाराज जी शादी उपरान्त आए थे।'' यह बातें शादी खत्म होने के बाद की है। भगत सिंह जी ने कहा कि,''महाराज जी शादी उपरान्त नहीं आए। पर पत्नी ने कहा,''महाराज जी अभी अभी शादी में आए थे। आपने देखे ही नहीं?'' यह है सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी का दैवीय प्रताप। भगत सिंह मल्ल को महाराज जी की कही हुई बात याद आई कि संत अंग संग ही हैं, क्योंकि महाराज जी ने आप को कहा था कि वह शादी में आप के अंग संग ही रहेंगे। ऐसे महापुरूषों की महिमा सुन आप मुहारे गुरवाणी की तुक मुख से निकल पड़ती है-पूरे गुरू का सुन उपदेश, पार ब्रह्म निकट कर पेख।।

साखी नंबर: 289

एक और यात्री गाड़ी का आ जाना

(श्रीमान्‌ भगत सिंह मल्ल)

स.भगत सिंह मल्ल बताते हैं कि हम सभी दोस्त दिल्ली में नौकरी किया करते थे। हम काफी दिन आ कर कुटिया में संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में रहे। प्रति दिन कथा कीर्तन होता। संत मण्डलियां आती है और बहुत संगत होती। काफी दिनों के बाद हमने महाराज जी से जाने के लिए आज्ञा लेनी चाही। एक दिन झिझकते-झिझकते स.भगत सिंह मल्ल जी ने महाराज जी के आगे निवेदन किया,''स्वामी जी,अब हम वापिस दिल्ली जाना चाहते हैं।'' इस पर सत्‌गुरू जी कहने लगे, ''चले सभी ने जाना है।''आप हरिदास महाराज जी को कहने लगें ,''हम चले हैं सैर करने के लिए।'' आप बहुत ही गंभीर मुद्रा में थे।

महाराज जी ने अपने सॅकतर स.बंता सिंह, संत हरि दास महाराज जी, संत गरीब दास महाराज जी सभी को बुलाया। संत निरंजन दास महाराज जी उस समय बाल अवस्था में थे। महाराज जी ने इन सब को वचन किए,"आज हमने इन दिल्ली वाले अफ्सरों विदाई देनी है। इसी लिए इन सब का प्रबंध करो।" महाराज स्वामी सरवण दास जी ने इन दिल्ली के अफ्सरों को अपने हाथ से सम्मानित किया। स.भगत सिंह मल्ल और उनकी पत्नी को महाराज जी ने एक-एक कुरता दिया जो आज भी उनके पास मौजूद है। विदाई के समय महाराज जी ने वचन किए," आप सभी नहर वाले रास्ते से जाना, पक्की सड़क वाले रास्ते से न जाना।" यह वचन करके महाराज जी गहन गंभीर हो गए।

जिस वक्त हम स्टेशन पर पहुँचे, गाड़ी चलने का समय हो गया था। सभी अफ्सर बाबू आपस में एक दूसरे पर देर से पहुँचने के कारण दोष लगाने लगे। अभी 20 मिनट ही गुजरे होंगे कि एक यात्री गाड़ी स्टेशन पर आ पहुँची। जिस का कोई समय भी नहीं था। सभी अफ्सरों ने मन ही मन में सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के प्रति मन ही मन में श्रद्धा का प्रगटावा किया क्योंकि महाराज जी ने कहा था सड़क की ओर से न जाना, नहर वाले रास्ते से जाना। इन पावन पवित्र वचनों के अर्थ हम गाड़ी में सवार होने के बाद ही समझ पाए थे।

साखी नंबर: 290

चले सभी ने जाना है

स.भगत सिंह मल्ल बताते हैं कि जिस दिन कुटिया में से महाराज जी से विदाई ले कर गाड़ी के द्वारा दिल्ली को रवाना हुए थे, उस दिन अभी अपने-अपने कमरों में जा कर सामान रखा ही था कि श्रीमान् 108संत हरिदास महाराज जी का फोन आ गया कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सचखंड जा विराजे हैं। सभी सेवादार अफ्सर बाबुओं को स्वामी जी की कही वह बार-बार याद आने लगी। जिस में उन्होंने कहा था:-

"चले सभी ने जाना है"

सत्गुरू जी के सहज स्वभाव कहे वचन भी अटल होते थे। कौम के महान् सत्गुरू जी के वह वचन जो वह दिल्ली के इन अफ्सरों(बिशन राम विरदी, भगत सिंह मल्ल, फकी सिंह विरदी और सवरन सिंह बल्लां) को

बार-बार याद आने लगे जो अक्सर महाराज जी इन को कहा करते थे,''मैंने आप को पटवारी तो क्या वायसराय के दफ़्तर में नौकरी पर लगाना है।''यह वचन सत्गुरू जी ने पूरे किये। इन लोगों को केन्द्रीय सरकार में वह पद ले कर दिए जिन पर कोई ही पहुँचता है।

साखी नंबर: 291

महाराज जी द्वारा विराट रूप दिखाना

श्रीमान् भगत सिंह मल्ल जी बताते हैं कि एक बार आप अपनी पत्नी के साथ महाराज जी के दर्शनों को आए। अभी आप डेरे में नए-नए ही आने लगे थे। आप के मन में संतों-महापुरूषों के प्रति अनेक शंकाएँ थी। आप सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पावन पवित्र चरणों में बैठे थे। महाराज जी कहने लगे,'' भगत राम, आज हम तुम्हें दिखाते हैं, जो तुम देखना चाहते हो।'' आप बताते हैं कि,''कुछ ही पलों के बाद ही सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी हमारे आगे से अलोप हो गए। अभी कुछ ही समय हुआ था कि महाराज जी पूरे पहाड़ जितना रूप धारण कर मेरी आँखों के आगे आ गए। आप नज़र ऊपर करके देखते हैं कि पहाड़ का ऊपर का हिस्सा नीले आसमान से लगा हुआ है। आप ने,आपकी पत्नी ने और अन्य पास बैठी दिल्ली की संगत ने आँखें बंद कर ली। महाराज जी विराट रूप धारण करके आसमान और धरती के बीच खड़े थे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी तीन लोकों के ज्ञाता थे। यह कौतुक भगत सिंह मल्ल के लिए संतों, महापुरूषों तथा भक्तों प्रति की गई शंका को दूर करना था क्योंकि पढ़े-लिखे लोग इन चीज़ों को ज़्यादातर भ्रम ही समझते हैं।

साखी नंबर: 292

चोरी घी, शक्कर खाने का महाराज जी को पता होना

माघ (मकर)का महीना था, महाराज जी थड़ा साहिब पर अपने ध्यान में विराजमान थे। श्री भगत राम मल्ल, श्री फकीर सिंह विरदी, ज्ञानी बिशन राम विरदी, श्री सवरन सिंह बल्लां, श्री महिंगा राम बरनाला आदि महाराज जी के पावन पवित्र चरणों में नमस्कार करने आए। उन दिनों में संत निरंजन दास महाराज जी लंगर में सेवा किया करते थे। श्री फकीर सिंह विरदी, श्री भगत राम मल्ल आदि लंगर भण्डार में से देसी घी, शक्कर और मिस्से प्रसादे निकाल कर ले आए। इन सभी ने मिस्से प्रसादे के साथ देसी घी और शक्कर

खाई। आप सभी ही उस कमरे के आगे आ कर बैठ गए। जहां आजकल बावा जी देसी दवाईयों और यन्त्री की सेवा कर रहे हैं। उन दिनों में महाराज जी का सैक्रेटरी स.बन्ता सिंह हुआ करते थे। महाराज जी बन्ता सिंह को कहने लगे, दो किलो घी शक्कर और प्रसादे जल्दी ले कर आओ। इन दिल्ली वाले अफ्सरों को बहुत ज़्यादा भूख लगी हुई है, इस तरह किया गया। दो-दो प्रसादे शक्कर घी के साथ सब को दिए गए। कहते हैं-चोर की दाढ़ी में तिनका। आप सभी डर रहे थे। इन सभी सेवादार प्रेमियों ने हाथ ज़ोड़ कर निवेदन किया,''महाराज जी, आज क्षमा कर दो, दोबारा शक्कर, घी चोरी नहीं खाते।'' यह थी सत्‌गुरू जी की दिव्य दृष्टि। महाराज जी को पता था कि यह सभी चोरी ही खा रहे हैं। इसी लिए उन्होंने सब कुछ जानते हुए भी बन्ता सिंह को भेजा था।

साखी नंबरः 293

स.भगत सिंह मल्ल जी सत्‌गुरू जी की महिमा ऐसे ब्यान करते हैं

As I was gazzted officer in the Govt. of India. So I was sent to T.B. SANTARIO at KAUSALI-SHIMLA-HILLS. There I realized my mistakes of not reciting words of (PAAHELI POREE) as said by SWAMI SARWAN DASS JI. I hadwept bitterly and used to request Maharaj to pardon me for the mistake. Maharaj blessed me that I was fully cured of T.B. and resumed duty as Section Officer daily. After resuming the duty in May 1959, I and my wife resolved to visit Maharaj Ji's Cottage at BALLAN'S and seek their blessings. Now at the present moment time I am taking pension of Central Govt. I am very happy with my family. Due to the blessing of MAHARAJ JI my daughter is in the Indian Air Lines and other members are well-established in other depts.

S.Bhagat Singh Mal.

साखी नंबरः 294

सिर पर कटोरियों से भरी हुई बोरी रखनी

एक बार स.भगत सिंह मल्ल जी परिवार के साथ सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के मुबारक चरणों पर अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करने

आए। महाराज जी सभी सेवादार प्रेमियों को काम बता रहे थे, उनकी ड्यूटी लगा रहे थे। आप सत्गुरू जी के चरणों में बैठे थे।

आप जी के मन में आया कि महाराज जी मुझे किसी काम पर नहीं लगाते। बस फिर क्या था। गाँव वाले मन्दिर में से लगभग 200 कटोरियों की बोरी सत्गुरू जी ने मेरे सिर पर रखवा दी। मैं भारी बोरी उठाई चलता-चलता नहर के पुल तक पहुँच कर पसीने से भीग गया।मैं थक गया था।मैंने मुश्किल से कटोरियों वाली बोरी डेरे में आ कर उतारी और महाराज जी को प्रणाम किया। महाराज जी सभी के दिलों की जानने वाले थे-

घट-घट के अंतर की जानत। भले बूरे की पीर पछाण।।

(मुलाकात का समय 17अगस्त, 2002, शाम 7:30 बजे स.भगत सिंह जी के साथ)

साखी नंबर: 295

श्रीमान महिंगा राम वृतांत बरनाला (नवां शहर)

स.सवरन सिंह जी बल्लां, श्रीमान् महिंगा राम जी पर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की सम्बन्धित बताते हैं कि एक बार जब महिंगा राम जी बरनाला नौकरी पर थे तो सिंकदराबाद से डिफैंस अकाऊंट डिपार्टमैंट की अफ्सर मंडली की और सिविल सर्जन मेरठ रिपोर्ट भेजी जाए ताकि उन की नौकरी सम्बन्धित शर्तें पूरी की जा सके। महाराज जी ने महिंगा राम जी को कहा,''जब भी महिंगा राम जी तुम्हारा मैडीकल होगा, तुम हमें ज़रूर आ कर बताना।'' महिंगा राम महाराज जी के यह वचन भूल गया और मैडीकल करवाने के लिए मेरठ में सिविल सर्जन के पास चले गया। जब डॉक्टर साहिब ने महिंगा राम जी की आँखें चैक की तो आँखों की रोशनी कम होने के कारण, उस को नौकरी से अयोग्य करार दे दिया और वह मैडीकल में से फेल हो गया।

उसने अफ्सर के बहुत निवेदन किया कि,''साहिब जी, मैं गरीब आदमी हूँ,मुझे नौकरी से मत निकालो।'' आगे सिविल सर्जन कहने लगा, ''सरकार ने मुझे अन्धों को नौकरी पर लगाने के लिए नहीं कहा।'' स.सवरन सिंह बल्लां बताते हैं कि मैं महिंगा राम जी को हर रोज़ साइकिल पर ले कर निकल जाता, डॉक्टरों के पास उस की आँखें चैक करवाता ताकि उस की नौकरी बच जाए। आगे से आँखें डॉक्टर कह देते कि,'' अगर सिविल सर्जन ने

इसका मैडीकल टैस्ट फेल कर दिया है तो हम कैसे पास कर सकते हैं?'' मैडीकल अफ्सर ने हमारे डिफैंस दफ्तर को अनफिट फॉर सर्विस सर्टीफ्किेट भेज दिया। हैड ऑफिस सिकंदराबाद में। फिर हमने हताश निराश हो कर महाराज जी को पत्र लिखा कि महाराज जी हमारे साथ यह घटना घट चुकी है। महाराज जी ने कहा, ''आपने पहले यह बात क्यों नहीं बताई?'' साथ ही महाराज जी कहने लगे हमने अब यह देखना है कि हैड ऑफिस सिकंदराबाद का क्या जवाब आता है?'' महिंगा राम जी की डॉक्टरी रिपोर्ट सम्बन्धित।

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी का आलौकिक चमत्कार कि सिकंदराबाद के डिफैंस अकाऊंटस डिपार्टमैंट(हैड)ने ब्रांच ऑफिस अम्बाला कैंट को लिखा कि,''आप कृपा करके बताओ कि कितनी दृष्टि वाले व्यक्ति को आप भर्ती करने योग्य समझते हो और साथ ही श्रीमान् महिंगा राम जी की 6वर्ष की नौकरी दौरान जितनी आँखों में वीकनैस ऑफ आईस हो सकती है उस को कम कर बचती दृष्टि(रौशनी)देखो कि मैडीकल के लिए फिट आती है या नहीं।'' हम लोग दोबारा फिर सिविल सर्जन के मैडीकल चैक अप करवाने के लिए गए। दोपहर हो चुकी थी। सिविल सर्जन के दफ्तर के आगे लाईनें लगी हुई थी। मैडीकल होना ही बाकी रह गया था। सिविल सर्जन ने दोपहर का खाना खाना था। साहिब ने चपड़ासी से पूछा,'' और कोई रह तो नहीं गया।'' इस पर चपड़ासी ने कहा-

''साहिब जी वही मोटी-मोटी आँखें और चश्मे वाला आदमी है, जो पहले भी आया था।''

साहिब ने कहा,''उसको अंदर भेज दो। चपड़ासी के कहने पर महिंगा राम अंदर आया। उस की टांगें काँप रही थी और चिंता चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी। पर जिसके अंग संग सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अब उसके बिगड़े काम अपने आप ही बन जाते हैं। सिविल सर्जन का दिमाग पता नहीं क्या हुआ। उसने पुराना अनफिट वाला मैडीकल सर्टीफ्किेट फाड़ दिया और महिंगा राम जी को कहा,''हमने खाना खाना है, आप भी खाओ।'' इस तरह महिंगा राम जी को सिविल सर्जन ने अपने पास से खाना खिलाया और उस को मैडीकल फिटनैस का सर्टीफ्किेट फॉर सर्विस नया बना कर दिया। यह है संतों की संगत का प्रताप।

साखी नंबरः 296
फिर शराब नहीं पीनी

श्री करम चंद जी अलावलपुर वाले ठेके पर ज़मीन में काम करते होते थे। ज़मीदारों के लड़कों ने आप को एक बार धोखे से शराब पिला दी। आप कुँए के किनारे पर ही सो गए। आप को सुबह चार बजे तक जाग न आई। महाराज जी ने सपने में मेरे लिए खूंडा उठा लिया। मैं आधा सोया ही सतनाम सतनाम-सतनाम करने लग पड़ा। मेरे दोनों बच्चे सोये पड़े थे। वह भी जग पड़े। आस-पास के पड़ोसी भी जग पड़े क्योंकि मैं बहुत ही ज़ोर-ज़ोर शोर मचा रहा था। मुझे सभी ने ही इसके बारे में पूछा, पर आप ने उनको इस घटना के बारे में नहीं बताया। थोड़े दिनों के बाद आप कुटिया में माथा टेकने आए तो महाराज जी ने कहा कि,''ऐसी गलती दोबारा न करना। अगर तुम न उठते तो हमने तुम्हारी सेवा कर देनी थी।'' महाराज जी सभी सेवकों पर अपनी दया दृष्टि रखते थे। श्री करम चंद जी सत्गुरू जी के चरणों पर माथा टेकने लग पड़े, महाराज जी के चरण नहीं छोड़ रहे थे।

साखी नंबरः 297
बच्चा कहे साइकिल के डंडे पर बैठना है

श्री करम चंद जी, गाँव अलावलपुर के रहने वाले हैं। आप जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को अपने गुरू धारण किया। आप जी के घर में पहले बालक का जन्म हुआ। पर ढाई वर्ष का हुआ तो एक शाम यह बच्चा जो कि सेहतमंद और तंदरूस्त था। एकदम बीमार पड़ गया। बच्चे की गर्दन का मास बीच को हो गया, आँखें भी बीच को चली गई और गर्दन एकदम नीचे को लटक गई। सुबह के समय यह बच्चे की मृत्यु हो गई। जिस घर में खुशियां आई थी। उस घर में गमों की चादर बिछ गई। फिर श्री करम चंद जी के घर लड़के का जन्म हुआ, वह भी इसी हालत में गुज़र कर मर गया। बहुत डॉक्टरों को दिखाया पर इस बार भी होनी बलवान निकली। समय बीतता गया। श्री करम चंद जी के घर तीसरा लड़का पैदा हुआ। जिस का नाम मदन लाल रखा गया। जब यह ढाई वर्ष का हुआ तो इस बच्चे के साथ भी वही कुछ हुआ। जो कुछ पहले बच्चों के साथ हुआ था। आस-पास के पड़ोसी और रिश्तेदारों ने कहा,''इस को जल्दी-जल्दी जालन्धर के अस्पताल में ले जाओ।'' पर श्री करम चंद जी न माने। उन्होंने कहा,''अब मैं सभी डॉक्टर

देख चुका हूँ। अब मैं इस बच्चे को अपने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी पास बल्लां कुटिया में ले कर जाऊँगा।''

आप साइकिल पर सवार हो कर दोनों पति-पत्नी बच्चे को ले कर कुटिया बल्लां में आ गए। उन दिनों में डेरे में वैद्य प्रीतम दास जी दवाईयों का काम करते थे। जो कि करम चंद जी के मामा के लड़के थे। वैद्य जी ने बच्चे को एक गोली दूध में घोल कर पिला दी। बच्चे को लेटा दिया गया। बच्चे की गर्दन लटकी हुई थी। सारी संगत जिस में एक थानेदार भी थी। श्री करम चंद जी और उन की पत्नी को गुस्से से कह रहा था कि,''बच्चा मर रहा है इन को कोई चिंता नहीं है।'' श्री करम चंद जी ने उन सभी को कहा कि,''अगर मेरा बच्चे इस चार दिवारी में मर गया तो इस की आत्मा स्वर्ग को जाएगी।'' पोह मास के दिन थे। सर्दी भी बहुत थी। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी और संत हरिदास महाराज जी जीप में फगवाड़ा गए हुए थे। चार बजे के करीब भगवान् जी वापिस आए। महाराज जी ने आते ही संगत को कहा,''भाईयों, जिस-जिस ने भी दवाई लेनी है ले लो और घर को चले जाओ सर्दी बहुत ज़्यादा है।'' श्री करम चंद जी ने उठ कर बच्चे को सत्गुरू स्वामी सरवणद ासम हाराजज ीके च रणोंम ेंर खा दया।म हाराजज ीश ्रांतर हे पूछा,''क्या बात है?''श्री करम चंद जी कहने लगे,''महाराज जी या तो इस बच्चे को स्वर्ग में पहुँचा दो या फिर इस को तंदरूस्त(स्वस्थ)कर दो''।

महाराज जी ने प्रीतम दास वैद्य जी ने कहा,''वैद्य जी बीबी को तीन गोली कस्तूरी की ला दो। बीबी जी यह तीनों गोलियों पल्ले से बांध लो। सुबह प्रातःकाल आ कर हमें बताना कि बच्चे की क्या हालत है। एक गोली घर जाते ही दूध के साथ दे देना।'' श्री करम चंद जी के मन में शक हुआ कि जो महाराज जी ने मुझे प्रातःकाल कहा है कि आ कर बच्चे के बारे में बताना। इस बच्चे ने भी लगता है बचना नहीं है। आप दोनों पति-पत्नी बच्चे को कुटिया में से ले कर जब फूलों वाली क्यारियों के पास आए तो बच्चे ने चारों ओर देखा। बच्चा कहे,'' मुझे फूल तोड़ कर दो।''इशारा कर रहा था। पत्नी ने कहा,''फूल नहीं तोड़ना। महाराज जी गुस्से होंगे।'' श्री करम चंद जी ने कहा,''संत बच्चों को गुस्से नहीं होते इसी लिए आप ने एक फूल तोड़ दिया। जो बच्चे ने हाथ में पकड़ लिया। बच्चा एक और फूल मांगे लगा। श्री करम चंद जी ने एक और फूल तोड़ दिया। बच्चे ने दोनों फूल दोनों हाथों में पकड़ लिया और साइकिल का हैंडल भी दोनों हाथ में पकड़ लिया। बच्चे में अधिक

शक्ति प्रवेश कर गई। श्री करम चंद जी साइकिल पर सवार हो कर पीछे उन की पत्नी बैठी थी। बच्चा साइकिल के डंडे पर बैठने के लिए गाँव अलावलपुर तक जिद्द करता रहा और साइकिल पर पीछे बैठी अपनी मां के पास नहीं गया। दोनों पति-पत्नी हंसते खेलते घर पहुँचे आज यह बच्चा बच्चों का बाप है जिस का नाम मदन लाल है।

साखी नंबर: 298

समुन्द्र पी कर लवा खुशक रखते है

(श्री करम चंद जी गाँव अलावलपुर (जालन्धर) द्वारा सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की महिमा)

श्री करम चंद जी गाँव अलावलपुर ज़िला जालन्धर के रहने वाले हैं। आप जी का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। आप जी की बहन मण्डी सकेत(हिमाचल प्रदेश)में शादी हुई थी। आप एक बार सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को कुटिया बल्लां में नमस्कार करने आए। आप ने इच्छा ज़ाहिर किया कि,"सत्गुरू जी, मैंने अपनी बहन को मण्डी सकेत(हिमाचल)में मिलने जाना है पर जंगली पहाड़ी सुनसान रास्ता होने के कारण मुझे डर बहुत लगता है।" सत्गुरू जी ने कुछ समय शांत रहने के बाद अपने मुखारविंद से कहा,"करम चंद जी आप मंगलवार को अपनी बहन को मिलने चले जाना।"

आप ने जालन्धर बस स्टैंड से बस में बैठे, पहले कीरतपुर पहुँचे फिर पहाड़ी रास्ता शुरू हुआ। यहां से आप पैदल ही मण्डी सकेत के लिए चल पड़े। मन में सत्गुरू जी को याद कर रहे थे। अभी थोड़ा ही समय बीता था कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी जीप में सवार हो कर आप के आगे से चले गए। स्वामी जी के गले में फूलों का हार डाला हुआ था। करम चंद जी ने मन में सोचा महाराज जी शायद इधर आए होंगे। करम चंद जल्दी-जल्दी चलने लगा। स्वामी जी जीप में कुछ समय के बाद सवार हो कर फिर करम चंद जी के पास से चले गए। महाराज जी की जीप कभी आप जी के आगे हो जाए कभी पीछे हो जाए। करम चंद जी दूर से ही नमस्कार कर देते। आखिर शाम हो गई और अंधेरा होने लगा। सारे दिन का थका श्री करम चंद जी मण्डी सकेत की हद में जा पहुँचे, जहां चुंगी के पास म्यून्सीप्ल कमेटी की सड़क पर ट्यूब लाईटें लगी हुई थी। यहां एक बार फिर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की जीप आप जी को दिखाई दी और फिर अंधेरे में अलोप हो

गई, इसके साथ ही करम चंद जी अपनी बहन के घर जा पहुँचे। इधर 5-6दिन बाद श्री करम चंद जी गाँव बल्लां में सत्गुरू जी को नमस्कार करने आए। आते ही स्वामी सरवण दास महाराज जी ने श्री करम चंद जी को पूछा,''करम चंद, तुम्हें मण्डी सकेत(हिमाचल प्रदेश)जाते डर तो नहीं लगा?''आगे से श्री करम चंद जी बोले,''सत्गुरू जी आप मेरे साथ थे, डर मुझे किस बात का लगना था। आप जी तो जीप ले का मेरे आगे पीछे ही रहे।''आगे से सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी कहने लगे,''ओए करम चंदा, किसी के साथ इस तरह की बात मत करना, ओए समुन्द्र पी कर लवा खुशक रखते हैं।''श्री करम चंद ने सत्गुरू जी के चरणों पर अपना सिर टिका दिया।

(स्वयं श्री करम चंद जी,अलावलपुर, 20अक्तूबर, 2003)

साखी नंबर: 299

आज रूह (आत्मा) सचखंड जाएगी

एक बार श्री करम चंद जी और उनके ससुर पावन पवित्र दरबार बल्लां में आए और स्वामी सरवण दास महाराज जी को नमस्कार करने के बाद, उन की हज़ूरी में बीमार होने के बावजूद कथा कर रहे थे। महाराज जी प्रवचन कर रहे थे,'' आज जो भी प्राणी कुटिया की चार दिवारी अंदर आए है जिस किसी ने भी कथा सुनी है वह सभी प्राणी आज सचखंड जाऐंगे।'' यह बात मई 1972 ई.की है। हम श्री करम चंद जी और उनके ससुर कथा सुनने के बाद घर को आ गए। घर जाते ही आप जी के ससुर जो कि बुज़ुर्ग थे, बीमार हो गए। उन की आँख में से थोड़ा सा आँसू आया और वह प्राण त्याग गए। श्री करम चंद जी ने कुटिया आ कर महाराज जी को इस से सम्बन्धित जानकारी दी। महाराज जी ने कहा,''करम चंदा तुम्हारे ससुर सीधे सचखंड गए हैं।'' मैंने आपको आज सुबह ही कहा था जो भी रूह(आत्मा)आज कथा सुनेगी वह सीधी सचखंड जाएगी।

प्रभु जी बसहि साध की रसना।

श्री करम चंद जी ने अपना सिर सत्गुरू जी के चरणों पर रख दिया।

साखी नंबर: 300

मुकद्मा तुम्हारे हक में होगा

श्री करम चंद जी अलावलपुर वालों की ज़मीन सम्बन्धित मुकद्मा चल रहा था। हिन्दुस्तान का न्याय प्रणाली ऐसी है कि यहां बाप (पिता)

कचहरी में इन्साफ के लिए अर्ज़ी देते हैं पर इस अर्ज़ी का उत्तर उसके पौत्रों को तीसरी पीढ़ी में जा कर मिलता है। श्री करम चंद जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों के भवरें थे। मुकद्मे सम्बन्धित आप को जालन्धर कचहरियों में जाना पड़ता था। एक दिन आप कुटिया बल्लां में आए और महाराज जी को निवेदन किया कि,''आज मैंने कचहरी जाना है और मेरी ज़मीन सम्बन्धित मुकद्मे की तारीख़ है।''

संत सरवण दास महाराज जी मुस्कुराए उन्होंने कहा,''प्रभु की कृपा हो जाएगी।'' करम चंद जी ने ऐसा ही किया। आप जब पाँचवीं बार तारीख़ पर जाने लगे तो महाराज जी के दरबार की हाज़री भरने आए। आप को कचहरी पहुँचने में देर हो रही थी। पर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने कहा,''करम चंद जी, आज मुकद्मा तुम्हारे हक में जाएगा, वकील ने तारीख़ ले लेनी है और जज तुम्हारा आज छुट्टी पर है। फिर जल्दी किस बात की है?'' महाराज जी ने इतना कहते हुए अपने गले में से हार उतार कर श्री करम चंद जी के गले में डाल दिया। सच में अगले दिन करम चंद जी को पता चला कि आप जी मुकद्मा जीत गए थे।

(स्वयं करम चंद जी,अलावलपुर, 20 अक्तुबर, 2003)

साखी नंबर: 301

मेरे गुरू सरवण दास महाराज जी आ गए हैं

श्री करम चंद जी अलावलपुर वाले बताते हैं कि,''मेरा पड़ोसी लक्ष्मण सिंह मुरादपुर गाँव के रहने वाले ज़मीदार थे। दुनिया के सारे ऐब इस व्यक्ति ने किए। धीरे-धीरे भगवान् की कृपा से यह व्यक्ति कुटिया में महाराज जी के दर्शनों को आने लगा। श्री लक्ष्मण सिंह जी संगत के जोड़ों(जूते)की सेवा करने लगे।

वहां ही बैठ कर महाराज जी का ध्यान करते। एक दिन जोड़ों में बैठे थे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी उठ कर संगत में से आप के पास आए। महाराज जी ने आप जी को नाम की दात बख्शिश की। वचन किए आज से तुम हमारे दास हो। नाम का रंग श्री लक्ष्मण जी को चढ़ा। आप खेतों में बैलों के साथ हल चलाते पर ध्यान हर वक्त सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी का करते। जब बहुत ही प्यार में बावरे हो जाते तो बैल हल खेतों में ही छोड़ कर सत्गुरू जी की हजूरी में ही बैठ जाते। पत्नी खेतों में रोटी ले

कर आती तो उस को तभी पता चल जाता कि बल्लां कुटिया वाले संतों के दर्शनों को गए होंगे। वह बेचारी शाम तक खेतों में बैठी प्रतीक्षा करती रहती।

एक बार लक्ष्मण सिंह जी कुटिया से महाराज जी के दर्शन करके प्रसाद ले कर नहर वाले रास्ते से साइकिल पर सवार हो कर अपने गाँव मुरादपुर की ओर आ रहे थे। शाम का समय था। एक छोटा सा कुत्ता आप के पीछे पड़ गया। किशनगढ़ के पास लक्ष्मण सिंह जी कुत्ते को कहने लगे, महाराज जी का प्रसाद खा लिया। वापिस चले जा, ठण्ड में न मर। कुत्ते ने प्रसाद न खाया। पर वह कुत्ता लक्ष्मण सिंह के साइकिल के पीछे ही लगा रहा। साइकिल पर सवार लक्ष्मण सिंह ने गुस्से में कुत्ते के पाँव मारा। कुत्ते ने उसके पाँव पर काट दिया। परमात्मा की मौज ढाई महीने बाद श्री लक्ष्मण सिंह पागल हो गया क्योंकि वह कुत्ता पहले ही पागल हुआ था। शाम के समय अलावलपुर से श्री करम चंद जी घर का राशन लेने गए तो उन्होंने देखा कि लक्ष्मण सिंह को रस्से से बांध कर टैम्पू में डॉक्टर केवल चंद की दुकान पर लाए हुए थे। डॉक्टर ने कहा,'' इस को जालन्धर सिविल अस्पताल ले जाओ।'' सिविल अस्पताल के डॉक्टरों ने कहा,''अगर यह रस्से से खुल गया तो यह हमें मुसीबत में डाल देगा। कृपया करके इस को घर ले जाओ। इस ने बचना नहीं है।'' जब लक्ष्मण सिंह को रस्से से बंधे हुए को टैम्पू में वापिस लाया जा रहा था तो राएपुर छोटी नहर को पार करने के बाद लक्ष्मण सिंह को एकदम होश आ गई। उसने कहा कि,''मैंने अपने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने हैं।'' कुछ व्यक्तियों ने इस बात का विरोध किया, कहने लगे,''ऐसे महाराज जी को भी मुसीबत में डालेगा।'' पर एक बुज़ुर्ग व्यक्ति ने कहा,''जब किसी व्यक्ति को फांसी लगनी होती है तो उस की अंतिम इच्छा पूछ कर वह भी पूरी की जाती है। आप भी यही समझ कर इस की अंतिम इच्छा पूरी कर दो।'' लक्ष्मण सिंह को शाम के समय जहां आज कल आलीशान मन्दिर है वहां लाया गया। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी कुटिया के दरवाज़े में तीन पुड़ियां दवाई की ले कर खड़े हो गए। महाराज जी ने हुक्म किया,''इसके सारे रस्से खोल दो। महाराज जी सब कुछ जानते थे। साथ आए रिश्तेदार कहने लगे,'' महाराज जी आप को यह चोट आदि मार सकता है।'' महाराज जी कहने लगे,''यह चोट हमें मारेगा। इस को खोल दो।'' लक्ष्मण सिंह को रस्से की कैद से आज़ाद कर दिया गया। महाराज जी ने उस को आर्शीवाद दिया। पागल हुआ व्यक्ति एकदम ठीक हो गया। महाराज जी ने अपने कर कमलों के साथ

उस को दवाई खिलाई। सभी प्रेमजन लक्ष्मण सिंह के घर आ गए। पूरे गाँव में शोर मच गया कि,''बल्लां वाले संतों ने लक्ष्मण सिंह को ठीक कर दिया है।'' तीसरे दिन लक्ष्मण सिंह ने प्रात:काल के समय स्नान किया। महाराज स्वामी सरवण दास जी की तस्वीर अपनी छाती पर रख कर चारपाई पर लेट गया। नाम सिमरन किया। घर वालों को कहा कि,''मेरे सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी मुझे लेने आ गए हैं।'' तो प्रभु सिमरन करते प्राण त्याग दिए।

साखी नंबर: 302

सत्गुरू अपने सेवकों के कार्य स्वयं संवारते हैं

जो लोग अपने सत्गुरू पर भरोसा रखते है उनके कार्य सत्गुरू स्वयं संवारते हैं।

कहे रविदास भज हरि नाम।

प्रभु सो ध्यान सफल सब काम।।

के महावाक्य अनुसार श्री ऊधो राम सोहपाल गाँव ढडे का समूह परिवार बहुत भजनीक और संत सेवी परिवार है। यह परिवार संत सरवण दास महाराज जी के अनुयायी है और हर खुशी गमी का काम सत्गुरू जी से हुक्म ले कर ही करते थे। श्री ऊधो राम जी ने 1955 ई. में महाराज जी को निवेदन किया कि,''महाराज जी मैं विदेश जाना चाहता हूँ।'' तो महाराज जी ने तुरन्त हुक्म किया कि,''आप विलायत चले जाओ आप बहुत तरक्की करोगे। थोड़े दिनों में ही श्री ऊधो राम जी का इग्लैंड का काम बन गया और वहां के पक्के वसनीक भी बन गए। महाराज जी की अपार कृपा से उनकी धर्म पत्नी बीबी मीतो भी 1964 ई. में इंग्लैंड चले गए। महाराज जी के वचन अटल होते हैं, आज परिवार बुलन्दियों पर जा रहा है रविदासिया धर्म को समर्पित परिवार बरमिंघम में रह कर सुखी जीवन व्यतीत कर रहा है। इस प्रकार महाराज जी को जो सच्चे दिल से नाम जपते हैं, भजन बन्दगी करते हैं उनके कार्य सत्गुरू जी स्वयं पूर्ण करते हैं।

साखी नंबर: 303

तुम्हारे बैल वापिस आ जाने हैं

जितनी देर कोयल बाग में रहती है उतनी देर वह सारे बाग को ही बेतहाशा प्यार करती है। वह बाग के हर पेड़ पर बैठ कर खुशी भरे गीत गाती है। जब वह बाग से चली जाती है फिर उस बाग पर उल्लू और कौओं का

बोलबाला होता है। पर बावजूद इसके कोयल अपने बाग को नहीं भूलती जिस की हालत कौओं और उल्लू ने खराब कर दी होती है। इसी प्रकार संत-महापुरूष होते हैं जो मातलोक में आ कर सभी लोगों की भलाई करते हैं पर उनके चले जाने के बाद चाहे ज़ुल्मी लोग संसारी जीवों पर जितने भी ज़ुल्म करे पर संत-महापुरूष अपने प्रेमियों के हर दु:ख-सुख में अपने होते हैं। एक बार श्री भोला राज जी जो कि गाँव ऐमा काजी(जालन्धर)के रहने वाले हैं उन्होंने 100 रूपये खर्च करके एक बैल खरीदा। उन दिनों में 100 रूपये बहुत बड़ी रक्म हुआ करती थी। 21 दिनों के बाद वह बैल मर गया। श्री भोला राम जी ने एक और बैल ले लिया वह भी 21वें दिन ही मर गया। इसी तरह भोला राम जी ने तीसरा बैल ले लिया भगवान् की ऐसी मर्ज़ी वह भी इतने दिनों के बाद ही मर गया। श्री भोला राम जी बहुत उदास हुए पर उन्होंने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को कुछ न बताया। थोड़े दिन बीते श्री भोला राम जी की पत्नी महाराज जी के दर्शनों के लिए कुटिया में आए और उनके बैलों के मारे जाने सम्बन्धी महाराज जी को बताया। महाराज जी ने कहा कि,'' आप के बैल वापिस आ जाने हैं।'' थोड़े ही दिनों के बाद राजस्थान का कोई व्यापारी तीन बैल ले कर घूम रहा था। उस को मात्र 100 रूपये की ज़रूरत थी। सो वह बहुत ही थोड़ी कीमत पर श्री भोला राम जी को वह बैल दे गया।

'साधू बोले सहज सुभाव, साधू का बोला बिरथ न जाए।'

साखी नंबर: 304

पूरन संतों के बोल भी पूर्ण होते हैं

पूर्ण संत-महापुरूष कभी भी अपने आप को ज़ाहिर नहीं करते उनके द्वारा किए गए परोपकार, लोक भलाई के काम और उच्चारण हुए शब्दों की परक्ता उन को ज़ाहिर कर देती है। उनके द्वारा बोले हुए शब्द जब सत्य हो जाते हैं तो एक साखी का रूप धारण कर लेते हैं। ऐसी साखी ही मुहल्ला रामदासपुर जालन्धर के वसनीक गुरमीत राम की है। गुरमीत राम के पिता श्री करतार चंद और माता बीबी बन्ती देवी बहुत श्रद्धावान् परिवार था और अक्सर डेरा सच्चखंड बल्लां में श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के दर्शनों के लिए आया करते थे। एक बार मकर सक्रांति के दिन पर 14 जनवरी 1963 की बात है कि गुरमीत राम के चाचा जी, बड़ा भाई और गुरमीत राम जिस की उम्र करीब 6वर्ष की होगी डेरे मकर सक्रांति पर माथा टेकने गए। जब वापिस आए

तो रास्ते में एक कुत्ती के छोटे-छोटे बच्चे थे। गुरमीत राम के चाचा जी ने साइकिल एक तरफखड़ा किया। उसका बड़ा भाई भी साइकिल से नीचे उतर गया। गुरमीत राम आगे साइकिल पर उसी तरह बैठे थे। जब चाचा और बड़ा भाई कुत्ती का बच्चा उठाने गए अचानक साइकिल गिरने से गुरमीत चंद की बाजू टूट गई। सहमे(डरे)हुए घर आ गए। जब गुरमीत चंद के तकलीफ होने पर रोने की आवाज सुन कर माता-पिता को बाजू टूटने के बारे में पता चला तो वह तुरन्त महिमदपुर श्री नन्ता राम के पास चले गए। उसने बाजू टूटने का कारण पूछते हुए हंसते-हंसते कहा कि,''महापुरूषों के माथा भी टेका था कि लंगर खा कर वापिस आ गए?'' श्री नन्ता राम ने यह भी कहा कि,''चोट ज़्यादा है धीरे-धीरे ठीक हो जाएगी।'' उसने बाजू को बांध दिया। अगले दिन गुरमीत के माता-पिता इस को ले कर डेरे माथा टेकने आए तो महाराज जी थड़ा साहिब पर विराजमान थे। महाराज सरवण दास जी ने गुरमीत की बाजू बंधी देख कर चोट लगने का कारण पूछा और परिवार को सारी पट्टियां खोलने को कहा। महाराज जी ने पट्टियां खुलवा कर बाजु पर हाथ फेरा और कहा,'' लंगर पानी छको और जाओ कोई बात नहीं बाजू बिल्कुल ठीक है।'' साध संगत जी जब दो दिन गुरमीत बाजू ठीक होने के कारण नन्ता राम के पास न गया वह स्वयं ही उसकी बाजू देखने घर आ गया। वह हैरान हो गया कि जिस बाजू को उसने पट्टियां बांधी थी और एक महीना पट्टी बांधने के लिए कहा था गुरमीत चंद उस बाजू बैठा खाना खा रहा था। नन्ता राम ने इसका कारणप ूछात ोप रिवारिकस दस्योंन ेक हा,''यहब ाजूत ोद ूसरें दनह ी महाराज जी ने ठीक कर दी थी और पट्टियां खोल दी थी। संतों की बेअन्त लीला है पूर्ण संतों के काम भी पूर्ण होते हैं।

साखी नंबर: 305

तुम्हारा सदा के लिए उद्धार हो गया है

श्रीमान् चन्नण सिंह जी नौगज्जा वाले, मिस्त्री दलीप सिंह जी और उन का सुपुत्र स.करनैल सिंह मिस्त्री एक बार सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की पावन हज़ूरी का आनन्द मान रहे थे। कोई ठीक चार बजे शाम का समय था। इतनी देर में पाँच-छ: श्रद्धालु व्यक्ति सत्गुरू जी को नमस्कार करने के लिए आ पहुँचे। उन में से एक व्यक्ति ऐसा था जिस की पसली में बहुत ही तेज़ दर्द हो रहा था। वह दर्द की तकलीफ से बहुत ही देर से पीड़ित

था। बड़े-बड़े डॉक्टरों और वैद्यों से इलाज़ करवा चुके थे पर उस को कोई भी आराम नहीं आ रहा था। आखिर किसी गुरू प्रेमी ने सलाह दी कि,''बल्लां जा कर संतों को इस तकलीफ सम्बन्धित निवेदन कर।'' सो यह सज्जन दर्द से पीड़ित व्यक्ति को ले कर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दरबार में हाज़िर हो गए। महाराज जी ने कहा,''तुम्हें तो कहा था कि कल को आना है, तुम एक दिन पहले ही आ गए।'' इतना कहते ही महाराज जी ने अपने पाँव की जूता उतार कर उस व्यक्ति के सिर में मारा जिस को दर्द हो रहा था। वह सभी व्यक्ति कुटिया में से भाग निकले और अपने घरों को चले गए। मिस्त्री दलीप सिंह ने निवेदन किया,''महाराज जी, उस सज्जन पर आप कृपा करो तो वह ठीक हो सकता है।'' महाराज जी कहने लगे,''ठीक है, जाओ फिर उस को वापिस ले कर आओ।'' सेवादार प्रेमी नहर के पास उन व्यक्तियों को वापिस लेने जब गए तो वह व्यक्ति डर के कारण वापिस नहीं आया। उन को डर था कि महाराज जी फिर न उन को जूतों से पीट दें। आखिर वह महाराज जी के चरणों में हाज़िर हो गए। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने दर्द से पीड़ित उस आदमी को पूछा,''अब तुम्हारा क्या हाल है।'' वह व्यक्ति डरता हुआ कहने लगा कि,''सत्गुरू जी मैं बिल्कुल ठीक हूँ ,अब मेरे कोई दर्द नहीं होती। महाराज जी ने कहा कि,''तुम्हारे ऊपर बहुत भार था। ले अब तुम्हारा सदा के लिए उद्धार हो गया है और सचमुच उस व्यक्ति का सब दु:ख दर्द दूर हो गया था।

साखी नंबर: 306

प्रभु जी बसे साधू की रसना

श्रीमान् भगत राम जी, डेरा संत सरवण दास महाराज जी सचखंड बल्लां जालन्धर के जो मौजूद गद्दी नशीन सत्गुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी हैं, उनके ताया जी(पिता के बड़े भाई) हैं। एक बार वह कुटिया में संत सरवण दास महाराज जी के दर्शनों को आए उन को भूख भी बहुत लगी हुई थी। महाराज जी ने संत हरिदास महाराज जी को कहा कि,''भगत राम को प्रशादा छकाओ। आगे से भगत राम ने कहा,''महाराज जी, मैं खाना खा कर आया हूँ।'' सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने तीन बार भगत राम को प्रशादा छकने के लिए कहा पर भगवान् की मर्ज़ी उसने तीन ही बार इन्कार कर दिया। भगत राम जी मन में बहुत पछताए कि इतनी भूख लगी हुई है मैं फिर भी

इन्कार करता रहा। यह मेरी बहुत बड़ी गलती है। संत-महापुरूष अपने सेवकों की किसी भी प्रकार दु:ख तकलीफ़ नहीं देख सकते। महाराज जी ने ऐसी बख्शिश कर दी कि पंद्रह मिनट के बाद एक बीबी सेवियां डिब्बे में ले कर संतों को माथा टेकने कुटिया में आ पहुँचे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने उस बीबी को कहा,'' बीबा, मुन्ना अच्छा हुआ, हमारा भगत राम बहुत ही भूखा था, यह कितनी ही देर का भूखा है, भूखा ही कही जा रहा था।'' सत्गुरू जी ने छन्ना भर कर सेवियों का श्री भगत राम जी को खिलाया। महाराज जी ने कहा,'' भगत राम तुम्हें बहुत भूख लगी थी।''

साखी नंबर: 307

कृपा करनी

श्री मान चन्नण सिंह जी नौगज्जा वालों का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पवित्र चरण कमलों पर दृढ़ निश्चय और उनके साथ बहुत प्रेम था। अप्रैल 1972 ई.की बात है। बहुत गर्मी पड़ रही थी। स.चन्नण सिंह जी ने फसल के लिए अपने खेतों में बोर करवाया। दो तीन दिन कारीगर बोर करने लगे रहे जब बोर तैयार हुआ तो बोर से पानी न निकला। स.चन्नण सिंह जी का सारा परिवार बहुत ही परेशान हुआ। कोई हल न हुआ। आखिर में मिस्त्री दलीप सिंह जी उनके सुपुत्र मिस्त्री करनैल सिंह जी और स.चन्नण सिंह जी, सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में अपनी मुश्किल के सम्बन्धित निवेदन करने आए। सत्गुरू जी ने सारी बात बहुत ही ध्यान से सुनी और खेतों में बोर वाली जगह की ओर चल पड़े जा कर बोर के पास खड़े हो गए। श्री चन्नण सिंह जी ने कहा,'' आप ट्रैक्टर को जोड़ो पानी तो पाईप में झाँक रहा है।'' महाराज जी ने अरदास की थी पानी पाईप में से फव्वारे की तरह बाहर आया और देखते ही देखते पानी से गड्ढा और खेत भर गया। सभी परिवार ने गुरू चरणों में नमस्कार कर अपनी श्रद्धा प्रगट की।

साखी नंबर: 308

गर्दन की खिचांव की बीमारी को ठीक करना

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी युग पुरूष थे जिन की महिमा कमलों की स्याही और कागज़ों में नहीं लिखी जा सकती। जब कभी भी दलितों के इतिहास के उत्थान की बात चलेगी तो सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी का नाम आगे वाले पन्नों में आएगा जिन्होंने अपनी पूरी आयु प्रभु

का नाम जपते और कुल मनुष्यता का भला करने में गुज़ारी। श्री मथुरा दास जी(न्यू हरबंस नगर जालन्धर)एक बार बीमार हो गए और आप की गर्दन में बहुत ज़्यादा अकड़ होने लग पड़ी। बहुत डॉक्टरों से दवाई ली पर आराम कहीं से नहीं आया। हार थक कर निराश हो गए। एक दिन आप जी की सास जो कि गाँव बुलन्दपुर की रहने वाली थी। आप जी को साथ ले कर स्वामी सरवण दास महाराज जी की कुटिया में सत्गुरू जी के दरबार पर नमस्कार करने आई। उस ने निवेदन किया कि,''इस लड़के की गर्दन में बहुत सारा अकड़ेवां आ जाता है और बहुत दर्द होने लगता है। हमने बहुत से डॉक्टरों को दिखाया। पर आराम नहीं आया। आप जी मेहर करो यह लड़का ठीक हो जाए।'' स्वामी सरवण दास महाराज जी ने थोड़ा समय सोचने के बाद वचन किए,''हम आप को एक देसी दवाई लिख कर देते हैं। इस को खाना, यह लड़का ठीक हो जाएगा। श्री मथुरा दास जी जालन्धर पहुँचे और बाज़ार से दवाई ला कर महाराज जी के द्वारा बताई गई विधि के अनुसार सेवन किया। जिस दिन मथुरा दास जी ने पहली बार दवाई खाई उस दिन के बाद आज तक उन को गर्दन तो क्या पूरे शरीर में कोई तकलीफ नहीं आप जी पूरी तरह से ठीक हो गए। बोलना जी जय संतों की।

साखी नंबर: 309

रेलवे के सभी अवार्ड मिलने

सन् 1965 ई. में भारत और पाकिस्तान के बीच बहुत भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध में सबसे ज़्यादा नुकसान सरहदी क्षेत्र के लोगों का हुआ उनका सब कुछ तबाह हो गया। संत सरवण दास महाराज जी मनुष्यता के बहुत बड़े मुद्धई थे। वह समाज की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते थे। इस मनोरथ को मध्य नज़र रखते हुए महाराज जी राहत वस्तुएँ, कपड़े और खाने-पीने की वस्तुओं का ट्रक भर कर अटारी बार्डर पर पहुँचे। राहत का सारा समान सत्गुरू जी ने अपने मुबारक हाथों से ज़रूरतमंद लोगों को बाँटा और फिर सत्गुरू जी ने स्थानिक लोगों को मथुरा दास जी के बारे में पूछा जो कि उन दिनों में अटारी रेलवे स्टेशन पर नौकरी किया करते थे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी मथुरा दास जी के क्वाटर में पहुँचे। मथुरा दास जी महाराज जी को देख कर दर्शन करके बहुत खुश हुए। चाय पानी के पश्चात् सत्गुरू जी ने मथुरा दास जी को नसीयत दी,''तुम इस मुश्किल समय में लोगों की सेवा करते रहो। अपनी नौकरी इमानदारी से निभाना और अपनी बदली न करवाना

तुम्हें अधिक मान-सम्मान मिलेंगे।'' समय बीतते संतों-महापुरूषों के वचन अटल होते हैं। श्री मथुरा दास जी फिरोज़पुर, जालन्धर और अटारी आदि स्थानों पर ड्यूटी करते हुए ब्यास स्टेशन आए तो जहां से नौकरी दौरान आप जी को रेलवे डिपार्टमैंट का अवार्ड प्राप्त हुआ। स्वामी सरवण दास महाराज जी के वचन अटल पूरे हुए। बोलना जी जय संतों की।

साखी नंबरः 310

बच्चों की पढ़ाई पर उठे

श्री प्यारा लाल मडार पुत्र श्री भुल्ला राम मडार ब्यास गाँव जालन्धर के रहने वाले हैं, जो कि आजकल इंग्लैंड में रह रहे हैं। आप जी के सारे परिवार का सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी के चरणों से बहुत ज़्यादा प्रेम है। आप जी कुटिया में रह कर सत्गुरू जी के चरणों पर कई-कई दिन सेवा करते। श्री प्यारा लाल मडार जी के पिता श्री भुल्ला राम मडार जी अनपढ़ थे। सो उन दिनों में टेलीफोन आदि की सुविधा भी नहीं आई थी। सो रिश्तेदारों को तबीयत के बारे में पूछने के लिए चिट्ठी की मदद ही ली जाती थी। जब भी किसी रिश्तेदार को चिट्ठी लिखनी होती तो श्री प्यारा लाल जी के पिता को एक रूपया चिट्ठी पढ़ाने के लिए देना पड़ता और दो रूपये चिट्ठी लिखवाने के लिए देने पड़ते। एक दिन आप जी ने(श्री भुल्ला राम जी)सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में इस मुश्किल सम्बन्धी निवेदन किया। आगे से सत्गुरू जी ने मुस्कुरा का कहा कि,'' भुल्ला राम जी आप जी के तीन बेटे बहुत ऊँची तालीम हासिल करेंगे।'' समय बीतते इधर भुल्ला राम जी ने भी मन में पक्का धारण कर लिया कि वह अपने बच्चे को हर हालत में पढ़ाऐंगे। समय बीतते महाराज जी के वचन अटल हुए आप जी ने अपने बच्चों को सत्गुरू जी की कृपा से पढ़ाया और सारे बच्चे ऊँचे पद पर रह कर अब रिटायर हुए हैं और खुशहाल का जीवन बीता रहे हैं।

साखी नंबरः 311

आप नहर की ओर से मत जाना

एक बार श्री प्यारा लाल मडार जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने के लिए परिवार के साथ आए। शाम तक आप जी ने सत्गुरू जी के मुबारक चरणों में बैठ कर उनसे सत्संग श्रवण करवाए। शाम को जब श्री प्यारा लाल जी परिवार के साथ स्वामी सरवण दास महाराज जी से आज्ञा ले कर विदा होने लगे तो महाराज जी ने कहा,'' प्यारा लाल जी,

आप नहर की ओर मत जाना।'' कार में प्यारा लाल परिवार के साथ बैठ गए ड्राइवर को कहने के बावजूद भी नहर की ओर नहीं जाना उसने गाड़ी नहर की ओर से निकाल ली अभी कार थोड़ी दूर ही गई थी कि नहर वाला रास्ता चौड़ाई में कम था और रास्ता में एक बैलगाड़ी फंसी हुई थी। जिस पर बहुत सारी लकड़ियां रखी हुई थी। रास्ते में से अगर वह बैलगाड़ी एक तरफहटती तो फिर ही कार आगे जा सकती थी। एक घण्टे तक कार ड्राइवर और प्यारा लाल जी प्रतीक्षा करते रहे। आख़िर में ड्राइवर ने कार वापिस ले आए। उसने किसी और जगह से सवारी ले कर जाना था। इसी लिए वह बहुत परेशान हो रहा था। आख़िर में उसने श्री प्यारा लाल जी से किराया(पैसे)भी नहीं लिया। उन को मंज़िल तक पहुँचा कर वह तुरन्त कार ले कर चला गया और मुँह में ही कहने लगा,''महाराज जी ने ठीक ही कहा था कि आप नहर की ओर से मत जाना।''

साखी नंबर: 312

जहां जहां खूंडी घूमायेंगे वह ज़मीन आप की होगी

एक बार श्री प्यारा लाल जी अपने सभी भाईयों और पिता श्री भुल्ला राम मडार जी के साथ सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने आए। परिवार ने सत्गुरू जी के चरणों में निवेदन किया कि,''ज़मीन लेनी चाहते हैं, कृपा करके हमें बताओ हम कितनी ज़मीन लें।'' सत्गुरू जी ने कहा कि,''हम किसी दिन सुबह-सुबह आप जी के घर आऐंगे औरं फरब ताऐंगेंं कि कतनीज ़मीनल ेनीह ै?''ए कि दनस ुबह-सुबह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सैर करते-करते श्री प्यारा लाल जी के पिता श्री भुल्ला राम जी के घर में पहुँचे पूरे परिवार में खुशी छा गई। सत्गुरू जी के चरणों में भेंट रख कर सारे परिवार ने नमस्कार की। उसके पश्चात् सत्गुरू जी ने कहा,''अब आप बताओ कहां ज़मीन खरीदनी है?'' सारा परिवार महाराज जी की संगत मानते हुए उस स्थान पर चले गए जहां जमीन खरीदनी थी। सत्गुरू जी ने जहां जहां खूंडी घूमाई वहां वहां परिवार ने निशान लगा लिया। मुश्किल यह थी कि जितनी जगह खरीदने का इरादा परिवार का था उससे कहीं ज़्यादा निशान महाराज जी ने ज़मीन पर लगा था। पर परिवार के पास इतने पैसे नहीं थे। पर समय बीतते महाराज जी के वचन अटल हुए जहां भी सत्गुरू जी ने अपनी खूंडी से निशान लगाए थे आज वह सारी जगह श्रीमान् प्यारा लाल मडार पास है।

साखी नंबरः 313

राज कुमार ठीक हो जाएगा

एक बार की बात है कि श्री प्यारा लाल जी मडार जो कि ब्यास गाँव के रहने वाले है आजकल इंग्लैंड में रह रहे हैं। श्री प्यारा लाल जी का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। आज जो आप का सारा परिवार खुशहाल और नामी जीवन बीता रहा है। यह सब सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की अपार कृपा और बख्शिश से सम्भव हुआ है। आप जी के तीन बेटे और दो बेटियां है। बेटों के नाम इस तरह है श्री राज कुमार जी, श्री चमन लाल मडार जी और कृपाल चंद जी मडार आप जी के तीनों बेटे आजकल इंग्लैंड में रह रहे हैं। श्री राज कुमार जी जो कि बड़े बेटे हैं आप इंग्लैंड में बहुत बीमार हो गए। इंग्लैंड के डॉक्टरों ने बहुत इलाज़ किया। परिवार ने श्री राज कुमार जी का बहुत ज़्यादा इलाज़ करवाया पर वह ठीक न हुए आख़िर परिवार ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पावन-पवित्र चरणों का ध्यान करो। मनुष्य की फितरत है कि जब भी उस पर कोई दुःख पड़ता है तो फिर ही उस को भगवान् याद आता है। सत्गुरू जी मुस्करा कर कहने लगे,"हम भाई कौन-सा डॉक्टर हैं ?" परिवार ने चरण पकड़ लिये और कहा कि," आप से बड़ा वैद्य कौन हो सकता है?" संत महापुरूष दया के सागर होते हैं। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने मुख से उच्चारण किया,"जाओ चिंता मत करना। राज कुमार आज से ही ठीक हो जाएगा।" ठीक ऐसा ही हुआ जैसा कि सत्गुरू जी ने कहा था।

साखी नंबरः 314

दो नंबर की न खाना-मालिक बहुत देगा

श्री प्यारा लाल मडार जी ब्यास गाँव वाले बचपन से ही सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने आया करते थे। महाराज जी बच्चों को खीर-पूये खिलाते और फिर हुक्म करते कि," जाओ, अब दौड़ लगा कर आओ।" उन दिनों में कुटिया के अंदर ही सत्गुरू जी बच्चों को गुरमुखी और पाठ करना सिखाते थे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की अपार बख्शिश से श्री प्यारा लाल जी ने दोआबा कालेज से बी.ऐ. पास की। सत्गुरू जी के आर्शीवाद से श्री प्यारा लाल जी 1952 ई.में सिविल सप्लाई डिपार्टमैंट में आर.टी.ओ. की पोस्ट पर लग गए। एक दिन आप जी

कुटिया में महाराज जी को नमस्कार करने आए। महाराज जी ने वचन किये,''बेटा किसी से कोई रिश्वत का पैसा न खाना, पूरी ईमानदारी से नौकरी करना, मालिक बहुत देगा।'' समय बीतते श्री प्यारा लाल जी के घर तीन लड़के श्री राज कुमार, श्री चमन लाल, श्री कृपाल चंद मडार और दो लड़कियां श्रीमती सुनीता मडार, श्रीमती शकुंतला मडार का जन्म हुआ। श्री प्यारा लाल मडार जी के तीनों लड़के आजकल इंग्लैंड में खुशहाल का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।आप जी की लड़की सुनीता जालन्धर में रात को ड्रामा देखने चले गए। वहां उनके रिश्तेदार भी थे। सारी रात तीनों ड्रामा देखते रहे। यह बात शनिवार की थी। अगली सुबह रविवार को श्री प्यारा लाल ब्यास गाँव, श्री अमी चंद और श्री अरीब दास रायेपुर देर से कुटिया पहुँचे। सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी तीनों को देख कर सेवादारों को कहने लगे,''जाओ भाग जाओ।'' तीनों डरते हुए चले गए। फिर महाराज जी ने सेवादारो को कहा,''जाओ।''

साखी नंबर: 315

हम सारी रात सोये नहीं

श्री प्यारा लाल मडार जी और सारे परिवार का सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। सत्‌गुरू जी की कृपा से आप जी सन् 1952 ई. में सिविल सप्लाई डिर्पाटमैंट में लगे हुए थे। पश्चात् 1959 ई. में आप जी पहली बार इंग्लैंड चले गए। लगभग दो वर्ष बाद आप जी वापिस ब्रिटिश एयर लाईन के द्वारा भारत आ रहे थे। अभी जहाज़ ऊपर को उड़ान भरी ही थी कि हिचकोले खाने लगा, अभी भी गिरा, अभी भी गिरा। आखिर ईरान देश की एयर पोर्ट पर जहाज़ उतार दिया गया। एयर इंचार्ज कहने लगा,'' आप सभी बहुत भाग्यशाली हो। ऐसी हालत में जहाज अक्सर तबाह हो जाता हैं। जिस वक्त जहाज़ हिचकोले खा रहा था। उस समय श्री प्यारा लाल जी सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों का ध्यान कर रहा था। उनके आगे निवेदन कर रहे थे कि,''सत्‌गुरू जी हमारी रक्षा करो।'' आखिर इंडियन एयर लाईन के जहाज़ के साथ श्री प्यारा लाल जी सभी भारतीयों को वापिस दिल्ली एयर पोर्ट पर ले कर आया। श्री प्यारा लाल जी सीधे ही कुटिया संत सरवण दास महाराज जी के चरणों पर नमस्कार करने के लिए पहुँचे। इधर जब श्री प्यारा लाल जी सत्‌गुरू जी को नमस्कार करने लगे तो सत्‌गुरू

जी वचन करने लगे,"प्यारा लाल जी, हम भी सारी रात सोये नहीं सारी रात जहाज़ की रक्षा करते रहे।" यह सुन कर श्री प्यारा लाल जी सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के मुबारक चरण पकड़ कर ज़ोर-ज़ोर रोने लग पड़े।

साखी नंबर: 316

तुम्हारे तो सारे ग्रह काटे गए

श्री सवरन दास कबूलपुर वालों का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। आप जी अक्सर सत्गुरू जी के मुबारक चरणों पर माथा टेकने आया करते थे। एक बार सत्गुरू जी, आप के ज़मीन में निशान लगाने आए, क्योंकि ट्यूबवैल का बोर करना था। आप जी के भाई धन्ना राम जी लम्बड़दार के स्वामी सरवण दास महाराज जी ने तीन खूंडे बहुत ज़ोर से मारे। श्री धन्ना राम जी तीनों बार भागते-भागते गिर पड़े। उपरान्त सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने अपने मुबारक हाथों से प्रसाद बाँटा और संगत को चाय पानी पिलाया और आप भी पिया। फिर स्वामी जी ने श्री धन्ना राम जी को अपने साथ ही कुटिया में ले आए। सत्गुरू जी ने श्री धन्ना राम जी को लगभग 14 दिन अपने पास रखा। आखिर एक दिन महाराज जी ने धन्ना राम को विदा किया और कहा,"जा तुम्हारे सारे ग्रह और पाप हमने काट दिए हैं।" जिस वक्त श्री धन्ना राम जी को इस बारे में पता चला वह कृपाल दयालु सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बलि-बलि जाता हुआ कहने लगा। "धन्य हो आप स्वामी सरवण दास महाराज जी।"

साखी नंबर: 317

हमने तो सब के पार उतारे करने हैं

एक बार की बात है कि सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ऋषिकेश गए। आप जी वहां गीता भवन में अपने सेवक संत निरंजन दास महाराज जी(मौजूद गद्दी नशीन)डेरा संत सरवण दास महाराज जी, सच्चखंड बल्लां(जालन्धर),श्री फगण राम सरमस्तपुर, संत राम किशन, श्री पाखर राम मन्नण, संत पाखर राम, स.गुरदयाल सिंह और उनकी पत्नी मेहर आदि साथ ठहरे। इस समय दौरान सभी सेवादार प्रेमियों की ग्रुप फोटो महाराज जी के साथ खिंचवाई गई। एक दिन स.गुरदयाल सिंह जी उन फोटो को ले कर वापिस आए। उन्होंने वह सभी फोटो को चारपाई पर रख दिया और

सभी प्रेमियों को कहा कि,''जिन को फोटो चाहिए वह पाँच रूपये ले कर आए। मैं उस को ही यह फोटो दूंगा।'' जब इस बात के बारे में सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को पता चला तो उन्होंने तीन खूंडे सरदार गुरदयाल सिंह जी के मारे। मुँह से उच्चारण किया,''ले भाई गुरदयाल सिंह तुम्हारे सारे करम काटे गए हैं। बाकी के करम इनके स्नान करवा कर काटेंगे। मैंने तो इनके पार उतारे करने हैं।''

साखी नंबर: 318

बीबी सारे वचन पूरे न हुए तो कुटिया न आना

बीबी गुरदीप कौर जी पत्नी स.भजन सिंह जी रायेपुर वालों का सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। बीबी जी की शादी के एक वर्ष बाद की बात है कि बीबी जी के दर्द बहुत ज़्यादा रहता था। डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर दिया और कह दिया,''आप जी के घर कोई औलाद नहीं होगी। भाव आप संतान सुख प्राप्त नहीं कर सकोग।'' बीबी जी बहुत उदास हुई। ऊपर से घर और समाज की भी बातें सुननी पड़ती। एक दिन बीबी जी सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों पर नमस्कार करने आई। बीबी जी को किसी ने बताया कि,''बल्लां वाले महाराज जी के जा कर फरियाद कर।'' सो घर के कहने लगे,''तुझे कहीं से भी आराम नहीं आना।'' आख़िर बीबी जी ने सत्‌गुरू जी के चरणों पर फरियाद की और कहा कि,''महाराज जी, मुझे कोई उम्मीद नहीं कि मैं औलाद सुख प्राप्त कर सकूंगी।'' सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने वचन किये,''बेटी तुम्हारे घर तीन लड़कियां और बाद में एक लड़का जन्म लेगा, हमारी बात याद रखना। अगर ऐसा न हुआ तो फिर तुम हमारी कुटिया न आना।'' समय बीतते महाराज जी के वचन अटल हुए। बीबी जी के घर तीन लड़कियां और एक लड़के ने जन्म लिया।

साखी नंबर: 319

बीबी गुरदीप कौर को लड़के की दात बख़्शिश करना

बीबी गुरदीप कौर जी गाँव रायेपुर के रहने वाले हैं। आप जी का सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों से बहुत प्रेम था। घर से आप जी का विरोध होता पर आप जी कहते कि,''मैंने संतों के ज़रूर जाना है।'' आप जी की जब शादी हुई तो आप जी के घर तीन लड़कियों ने जन्म लिया। उदास रहना स्वाभाविक था। एक दिन बीबी गुरदीप कौर जी अपनी

सहेलियों के साथ डेरा संत सरवण दास जी सचखंड बल्लां में नमस्कार करने आई। गद्दी पर सत्गुरू गरीब दास महाराज जी विराजमान थे। बीबी जी ने सत्गुरू स्वामी गरीब दास जी को पुत्र से सम्बन्धित निवेदन किया। सत्गुरू गरीब दास महाराज जी अपने ध्यान में आए और वह स्वयं दवाईयों वाले कमरे में उठ कर गए। उन्होंने बीबी जी को दवाई दी और साथ ही दुआ भी और वचन किए, ''बेटी, जा एक वर्ष बाद तुम्हारे घर पुत्र का जन्म होगा, तुम उस का नाम 'र' अक्षर पर रखना।'' संतों-महापुरूषों की रसना पर परमात्मा स्वयं बसता है। बीबी गुरदीप कौर जी के घर लड़के ने जन्म लिया। नाम रखा गया रविन्दर सिंह जी।

साखी नंबर: 320

महाराज जी का जेब में से सेब प्रगट करना

श्री चन्नण सिंह जी नौगज्जे वाले सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के परम सेवक में से है। जब आपने बोर से सम्बन्धित रूकावट महाराज जी के आगे रखी, तो सत्गुरू जी श्री चन्नण सिंह, मिस्त्री दलीप सिंह और मिस्त्री करनैल सिंह जी को साथ ले कर खेतों में उस जगह की ओर चल पड़े, जिस तरफबोर किया जा रहा था। महाराज जी ने ट्यूबवैल तो अपनी कृपा से चला दिया। पर वहां ही चन्नण सिंह नौगज्जे वालों के घर एक बीबी आई हुई थी। स.चन्नण सिंह जी के रिश्तेदार और परिवार वालों ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के आगे निवेदन किया कि, ''महाराज जी इस बीबी की शादी हुई 6-7 वर्ष हो गए हैं, पर इस के अभी तक कोई बच्चा नहीं है।'' महाराज जी खेतों में ट्यूबवैल बोर वाली जगह पर खड़े थे। सत्गुरू जी ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक सेब निकाल कर बीबी जी की झोली में डालते हुए कहा,''बेटी तुम्हारे दो पुत्र पैदा होगें, तुम चिंता मत करना।'' कुछ समय पश्चात् बीबी जी के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया। स.चन्नण सिंह जी, मिस्त्री दलीप सिंह जी जिस समय स्वामी सरवण दास महाराज जी को कुटिया से ट्यूबवैल बोर वाली जगह पर ले कर गए थे तो महाराज जी के पास कोई भी खाने-पीने वाला पदार्थ नहीं था। जब महाराज जी ने जेब में से सेब निकाल कर बीबी जी की झोली में डाला तो सभी सेवादार प्रेमी और चन्नण सिंह के परिवार वाले हैरान रह गए सभी ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों पर श्रद्धा से नमस्कार की। बोलना जी जय संतों की।

(मिस्त्री करनैल सिंह जी पुत्र श्री दलीप सिंह जी)

साखी नंबरः 321

सुमन परिवार पर संतों की रहमत होनी

श्री गुरनाम चंद सुमन(जज साहिब)और बाबू मंगू राम सुमन को सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन की पहली झलक साध संगत जी गाँव सरहाली ज़िला जालन्धर में एक उच्च कोटि के विचार वाले श्री माली राम नाम का उत्तम पुरूष रहता था। जिस ने अपने पुत्र गुरनाम चंद सुमन को गरीबीक ीह ालतम ेंब हुतम ेहनतस ेप ढ़ायाअ ौरए म.ऐ.,ए ल.एल.बी., पी.सी.एस. का इम्तिहान पास करवाया। पी.सी.एस. पास करके श्री गुरनाम चंद सुमन ज़िला होशियारपुर में जज के पद पर लगे। जज साहिब का श्री बेली राम जी(गाँव बल्लां)से रिश्तेदारी का संबंध था। श्री बेली राम जी सरहाली आते जाते रहते थे और अपने रिश्तेदारों में श्री 108संत सरवण दास महाराज जी की उपमा किया करते थे। धीरे-धीरे सभी के दिलों में संतों की उपमा का गहरा प्रभाव पड़ा और सभी परिवार के दिल में संत सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने की शुभ इच्छा जगी। सबसे पहले श्री गुरनाम चंद सुमन का बड़ा भाई श्री मंगू राम सुमन सत्गुरू जी के दर्शन किए तो मन खुशी से भर गया। मन में खुशी का समुद्र उछलने लगा। क्या देखता है कि सत्गुरू जी संगत के बीच बैठे हैं। संगत भारी गिनती है। ज्ञानी जैमल सिंह गाँव राऊवाल एक तारा और खड़कालों के सुर से संगत को कीर्तन श्रवण करवा रहे थे। बाबू मंगू राम सुमन जी ने एक तरफ जूते खोले, हाथ पाँव धो कर, प्रसाद ले कर सत्गुरू जी को नमस्कार की और संगत में बैठ गए। कीर्तन उपरान्त सत्गुरू जी ने सभी संगत को चाय का लंगर छकने को कहा। जिन संगतों ने पहले लंगर छका हुआ था वह सत्गुरू जी के चरणों में बैठे रहे और बाकी संगत चाय पीने चली गई पास ही मास्टर जग्गू राम जी रायेपुर रसूलपुर वाले बैठे थे। महाराज जी ने हुक्म किया जग्गू राम आप बैठी संगत को शब्द सुनाओ जी। मास्टर जग्गू राम जी सत् वचन कह कर शब्द सुनाने लगे और सभी संगत को निवेदन किया वह शब्द उनके साथ उच्चारण करे वह शब्द थाः-

हमें मीरा वाली लगन लगा दो तुम्हारा कौन सा मूल्य लगता।
हमारे सोये हुए भाग्य जगा दो तुम्हारा कौन सा मूल्य लगता।

इस शब्द के बाद सत्गुरू जी ने हुकम किया कि एक शब्द और सुनाओ। मास्टर जग्गू राम जी ने दूसरा शब्द शुरू किया जो उन्होंने स्वयं लिखा हुआ थाः-

हमने कुटिया में रब्ब का ज़हूर(रूप) देखा,

सोमा प्रेम और प्यार का हजू़र देखा।

इस कविता में मास्टर जग्गू राम जी ने सारे बंद सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी की उपमा के अंकित किये हुए है। बाबू मंगू राम सुमन नूरानी फकीर के दर्शन करके और उन की उपमा मास्टर जग्गू राम से सुन कर निहाल हो गया। बाबू मंगू राम सुमन जी ने श्री बेली राम जी को कहा,''बेली राम जी, आप हमारे लिए संतों को निवेदन करो कि हमें भी अपने भण्डार में से नाम की दात बख्शिश करें।''श्री बेली राम जी ने सत्‌गुरू जी पास निवेदन किया जो मन्जूर हो गया। सत्‌गुरू जी ने मंगू राम सुमन की सभी इच्छायें जो मन में धारण कर सत्‌गुरू जी की संगत में आया था, सभी पूरी कर दी। नाम की दात ले कर जब बाबू मंगू राम सुमन महाराज जी से आज्ञा ले कर घर को जाने लगे तो महाराज जी ने कहा,''अच्छा जाओ, नेक कमाई करो और शुभ संगत और भजन सिमरन करते रहना।'' बाबू मंगू राम सुमन जी ने घर जा कर सत्‌गुरू जी की बहुत उपमा की। अब बाबू मंगू राम सुमन के भाई जज साहिब हुकम चंद सुमन जो कि होशियारपुर थे, ने अपना प्रोग्राम महाराज जी के दर्शन करने का बनाया। रविवार छुट्‌टी थी। श्री गुरनाम चंद बच्चों के साथ गाँव बल्लां में श्री बेली सत्‌गुरू जी ने देखा कि कुछ संगतें आई है तो आप थड़े पर जहां आसन बिछा हुआ था उस पर विराजमान हो गए। जज साहिब और उसके परिवार ने प्रसाद रख कर चरणों में नमस्कार की। सत्‌गुरू जी ने प्यार से सिर पर हाथ रखा और सेवादारों को हुक्म किया कि इनके बैठने के लिए नई दरी बिछाई। जिस पर जज साहिब और अन्य संगत बैठ गई। श्री बेली राम ने कहा,''महाराज जी, यह बाबू मंगूराम जी के छोटे भाई जज साहिब हैं।'' सत्‌गुरू जी जज का नाम सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और हाल-चाल के बारे पूछने लगे। फिर बेली राम को कहा,''पहले सभी को लंगर खिलाओ जी'' आज्ञा के अनुसार जज साहिब और उनके परिवार ने भोजन किया। उपरान्त सत्‌गुरू जी के पवित्र स्थान सचखंड बल्लां के सभी तरफ दर्शन किए फिर कुछ समय महाराज जी के पास बैठ कर महाराज जी के मुखारविंद से मनोहर वचन सुने। इतने समय में शाम हो गई, सूर्य छिपने लगा। सत्‌गुरू जी कुछ संगतों के साथ गाँव वाले डेरे पहुँच गए। रात को संत हरि दास महाराज जी सुंदर आसन पर विराजमान हो कर रोज़ाना की तरह कथा सुनाने लगे और सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी अपने मुख से व्याख्या करके समझाते थे।

कथा समाप्ति उपरान्त अरदास हुई और प्रसाद बांटा गया। अब नगर निवासी संगत अपने-अपने घर को चले गई। बाहर से आई संगत को आसन (बिस्तर) दिए गए और सत्गुरू जी ने हुक्म किया कि,"सभी संगत अपना ध्यान परमात्मा की ओर जोड़े और सिमरन करो।" यह सुनकर जज साहिब ने श्री बेली राम जी को कहा कि,"मुझे वहां आसन दे दो जहां मैं सारी रात सत्गुरू जी के दर्शन होते रहें।" सत्गुरू जी जज साहिब के मुख से यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे,"अच्छा, तुम हमारे पास ही आसन लगा लेना। फिर जज साहिब ने निवेदन किया,"महाराज जी, किसका सिमरन करूँ ?" तो दयालु सत्गुरू जी कहने लगे,"कल सुबह तुम्हें भी प्रभु के सिमरन की युक्ति बता देंगे, अब आप आराम करो और सो जाओ।" सभी श्रद्धालु अपने-अपने आसन पर बैठ कर सिमरन करते रहे और फिर नींद आने पर सो गए। सुबह सत्गुरू जी ने ढाई बजे उठ कर स्नान किया। जज साहिब को कहा कि,"आप भी स्नान कर लो।" स्नान करने के उपरान्त सत्गुरू जी अपने आसन पर बैठ गए। जज साहिब और उनकी पत्नी गुरबचन कौर को अपने पास बुला कर भजन सिमरन की युक्ति समझा दी। जज साहिब ने नम्रता पूर्वक महाराज जी के चरणों पर नमस्कार की और दिल से सत्गुरू जी का धन्यावाद किया। रविवार का दिन था, सारे परिवार ने सुबह से लेकर दोपहर तक कुटिया में कीर्तन का आंनद माना। उपरान्त लंगर खा कर और सत्गुरू जी के पास से खुशियां प्राप्त करके होशियारपुर चले गए। फिर सुमन साहिब के बड़े भाई अरजन दास सुमन ने भी सत्गुरू जी पास से नाम की दात प्राप्त करके अपना जन्म सफल किया। इस तरह जज साहिब का सारा परिवार ही महाराज जी का श्रद्धालु बन गया। थोड़े दिनों के बाद जज साहिब फिर महाराज जी के दर्शन करने आए तो महाराज जी को निवेदन किया कि,"महाराज जी मन बहुत उदास रहता है।" तो सत्गुरू जी कहने लगे,"कोई चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।" फिर अपने पास से जज साहिब को एक पुस्तक देकर कहा कि,"जब मन उदास हो इस पुस्तक को पढ़ लेना।" जज साहिब सत्गुरू जी से खुशियां प्राप्त करके घर को चले गए। यह थी संत सरवण दास महाराज जी के दीदार की पहली झलक जो जज साहिब को नसीब हुई। जो भी व्यक्ति संतों-महापुरूषों की संगत करता है उस को ही सत्संग की लज्जत प्राप्त होती है। यह समय संतों के बिना कहीं भी हाथ नहीं आती, नाम की दात भी संत-महाराज जी के पास ही है और उसकी जुगती भी संत ही बता सकते है जैसे:-

जुगती बाझ न मिलती मुक्ति, जुगती सत्गुरू के पास है।

श्री मंगू राम सुमन और उनके परिवार पर सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की बख्शिश ने उनका जीवन ही धार्मिक लाइन में बदल दिया है। उनका सारा परिवार ही कीर्तनीए बने हुए हैं। यह सब कृपा सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सचखंड बल्लां वालों की कृपा से है।

साखी नंबरः 322

तुम्हें सभी नमस्कार करेंगे

जज साहिब जी बताते हैं कि,''जब मैं पी.सी.एस में सिलैक्ट हो गया तो मेरा नौकरी पर मन नहीं लगता था। मैं पूरी तरह हताश और निराश हो गया था। मैंने मन ही मन विचार किया कि मैंने नौकरी छोड़ ही देनी है क्योंकि जाति विरोधी स्टाफ का व्यवहार भी मेरे प्रति कुछ ज़्यादा सार्थक नहीं था, वह भी मुझे अक्सर परेशान किया करते थे।'' मैंने छुट्टी ली और अपना सामान बांधा और बैग तैयार कर दसूहे से बस ली। बस में ही मुझे मेरे गाँव का लड़का मिल गया। हम आपस में बातें करने लग पड़े। उस लड़के ने कहा,''चल यार, हमने घर को तो जाना ही है। क्यों न हम बल्लां वाले संतों के दर्शन करने चल।'' मैंने भी सोचा यह ठीक ही कह रहा है। हम दोनों बल्लां गाँव को पैदल ही बस स्टैंड से चल पड़े। कुटिया पहुँच कर महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी ने हमें बहुत प्यार किया और हमें खाने के लिए आम दिये। महाराज जी ने स्वयं भी आम खाये और कुछ आम हमारी झोली में डाल दिये। कुछ समय बाद सत्गुरू जी ने वचन किये,''गुरनाम चंद तुम्हारे कोई दुश्मन हैं तो हमें बता, तुम्हारा नौकरी पर मन क्यों नहीं लगता। क्या तुमने किसी का कोई नुक्सान किया है?'' सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने जज साहिब को धार्मिक पुस्तक भेंट की। रोज़ाना सुबह-शाम पाठ करने के लिए हुक्म किया। महाराज जी ने आप को इतना मज़बूत कर दिया कि जज साहिब का हताश और निराश हुआ मन मज़बूत हो गया। आप कुटिया में महाराज जी की शरण में रहकर थोड़ी ही देर बाद दसूहा में वापिस आ गए और अपनी छुट्टी रद्द करवा दी। वह साथी जो आप के हमेशा ही विरोध में रहते थे, जो हमेशा ही आप को छुआ-छात का शिकार बनाते रहते थे, जिनके आगे कोई अखोती निम्न जाति का व्यक्ति गर्दन ऊँची कर बात नहीं कर सकता था, जिस कचहरी का अखोती ऊँची जाति का प्यादा भी अखोती निम्न जाति के जज के साथ जाति के पक्ष से नफरत करते थे। उन सभी ने श्री मान गुरनाम चंद जी के पास

से माफी मांगी। उनके साथ हर प्रकार का सहयोग किया, कचहरी का सारा ही स्टाफ,जज जी के सामने नत-मस्तक होने लगा। यह सब संत सरवण दास महाराज जी का ही आर्शीवाद था।

साखी नंबर: 323

यह लड़कियां ऊँची तालीम प्राप्त करेंगी

जज साहिब बताते हैं कि,''जिन दिनों में मेरे तीन लड़कियां थी मैं काफी उदास रहता था क्योंकि वह समय भी कुछ ज़्यादा अच्छे नहीं थे। मेरी लड़कियों ने जब महाराज जी के चरणों में नमस्कार करने आना तो सत्गुरू जी ने उनकी झोलियों में नोट बख्शिश करने और वचन करने कि,''इन लड़कियों ने तो बहुत ऊँची तालीम हासिल करनी है और बहुत ही बड़े-बड़े घरों में इन्होंने जाना है। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के कहे वचन अटल हुए। आज तीनों ही लड़कियां ऊँच-शिक्षा प्राप्त कर खुशहाली का जीवन व्यतीत कर रही हैं।

साखी नंबर: 324

श्री गुरनाम चंद सुमन को पुत्र की दात बख्शिश करना

कुटिया सचखण्ड बल्लां जिस के चारों तरफ अलग-अलग प्रकार के घने वृक्ष लगे हुए हैं। सुंदर वसंत ऋतु है, सभी वनस्पति प्रफुल्लित हैं। शीतल मंद-सुगंध युक्त वायु चल रही है। अलग-अलग पंछी वृक्षों पर बैठे अलग-अलग तरह की बोलियां बोल रहे हैं जो मन को काफी अच्छी लग रही है। भवरें मस्ती में भिनभिनाते हुए झूम रहे हैं। कोयल आम के पेड़ पर बैठी कू-कू की आवाज़ में मस्ती के संदेश भेज रही है। ऐसे सुंदर वातावरण में महान पवित्र स्थान कुटिया सचखण्ड बल्लां में घने वृक्षों की छाया नीचे सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का सुंदर दरबार सजा हुआ है। पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में संगतें बैठी हैं और उत्तर दिशा की ओर सत्गुरू जी का आसन लगा हुआ है। सत्गुरू जी एक सुंदर कुर्सी पर विराजमान हैं, सुबह से ही कीर्तन और सत्संग हो रहा है। दोपहर समय संगत को लंगर छकाया गया। बहुत संगतें जो दूर से आईं हुई थी, लंगर खाकर महाराज जी से आज्ञा लेकर अपने-अपने घरों को चली गई, कुछ संगतें अभी भी सत्गुरू जी के पास बैठी रहीं। अब शाम का समय हो गया पर अभी भी संगत की गिनती काफी थी। कुछ बाहर के देशों से संतों के सेवकों के पत्र आए हुए थे। सत्गुरू जी ने हुक्म किया,'' अब सारी

संगत शांति से बैठ जाओ, हम ने प्रदेशों में बैठे हुए श्रद्धालुओं के पत्र सुनने हैं।" सभी पत्र महाराज जी के पास रख दिये, महाराज जी एक-एक कर पत्र सुनने लगे। सत्गुरू जी अपनी मस्ती में बैठे सभी पत्रों को बहुत ध्यान से सुन रहे थे। सभी पत्रों में सत्गुरू जी को नमस्कार लिखी हुई थी और अपने सत्गुरू जी की उपमा लिखी हुई थी।

एक ओंकार सत्गुरू प्रसाद

फरवरी 1972

डेरा संत सरवण दास जी बल्लां

गुरू रविदास ते आदि जो बाल्मीकि गुरू जोय।

सो तुमरी रक्षा करे, बिघ्न न लागे कोय।

"समाचार लेखक संत सरवण दास महाराज जी आगे बरखुरदार गुरनाम चंद सुमन जी हमारी ओर से सभी परिवार को आर्शीवाद। आगे समाचार यह है कि आपका पत्र मिला पढ़कर मालूम हुआ। हमें बहुत खुश है कि आप जज की ड्यूटी निभा रहे हो। हम बहुत खुश हैं कि हमारी कौम में जज की पोस्टों पर बच्चे लगे हुए हैं। आपको कई प्रकार के फैसलें करने पड़ते हैं। आपनेअ पनीड ्यूटीम ेंल ापरवाहीन हींक रनी ाब ड़ा-हीस ोचस मझकर फैसला देना। फैसला करने समय अपने दोस्तों, मित्रों या रिश्तेदारों का कोई ध्यान नहीं करना। सत्य और सही फैसला जिस के हक में हो वही करना। सच्चाई को जीवन में आगे रखना। कोई रिश्वत आदि देकर आपके मन को लालच दे तो उसके पीछे नहीं लगना क्योंकि ऐसा करने से कई बार आदर जाता रहता है और निरादर का मुख देखना पड़ता है। आप स्वयं पढ़े-लिखे और समझदार हो, साधुओं के तो सीधे-साधे वचन होते हैं। अंत में हमारी तरफ से गुरनाम चंद सुमन, बीबी गुरबचन कौर, नीलम, धन्न एवं विकास बेटियों को प्यार और पुत्रों को भी प्यार। पत्र भेजते रहना भजन सिमरन में भी ध्यान रखना।

शुभ-चिंतक, संत सरवण दास"

जब सत्गुरू जी ने यह पत्र समाप्त किया तो पास बैठे श्री बेली राम कहने लगे, "महाराज जी, आप अपने वचनों में महाराज नामदेव जी जैसे आप जी बंधे गए हो।" सत्गुरू जी ने पूछा, "बेली राम किस तरह बंधे गए हैं, तो बेली राम ने कहा, "महाराज जी, जज साहिब के घर तो कोई पुत्र ही नहीं है, पर

आप जी ने पुत्रों को प्यार लिख दिया है।'' सत्गुरू जी हंस पड़े और कहने लगा,''अच्छा इस तरह लिखा गया है। महाराज जी कहने लगे,''कोई बात नहीं भगवान् की कृपा से उसके घर अब लड़का ही होगा। यह जज साहिब को महाराज जी की ओर से लिखा गया आखिरी पत्र था क्योंकि उससे कुछ समय पश्चात् दिनांक 11 जून 1972 को सत्गुरू जी सचखण्ड जा विराजे। ठीक उस समय से ग्यारह महीने बाद जनवरी 1973 को सत्गुरू जी के वचन पूर्ण हुए और जज साहिब के घर एक सुंदर स्वरूप लड़के ने जन्म लिया।

जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई सोई देवे।।

जज साहिब के जीवन में अब नई खुशियां आ गई। खुशियों से भरे हुए मन से जज साहिब सबसे पहले यह खुश-ख़बरी डेरे में बताने आए और संगत के लिए प्रसाद भी लेकर आए। उस समय संत गरीब दास महाराज जी डेरे में मौजूद थे। महाराज जी जज साहिब की ओर से यह खुशी की ख़बर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। संत हरि दास महाराज जी ने सचखण्ड वासी 108संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में अरदास की और सभी संगत को खुशियों से प्रसाद बांटा गया। यह थे सच्चे सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के मुख से निकले हुए साधारण वचन जो उनके चोला त्यागने के बाद पूर्ण हुए:-

साधू बोले सहज सभाये, साधू का बोला बिरथा न जाये।।

साखी नंबर: 325

मरे हुए बच्चे को जीवन दान बक्शना

साय संगत जी जिस तरह पीछे आप जी को बता चुके हैं 108संत सरवण दास महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् श्री सुमन जज साहिब के घर एक सुंदर लड़का पैदा हुआ जिस का नाम जज साहिब जी ने प्यार से बोबी रखा। बच्चे की खुशियां डेरे में सभी संगत ने मनाई। हंसता खेलता बच्चा चार वर्ष का हो गया एक बार की बात है कि गर्मी का मौसम था। बहुत तेज़ धूप और दिन भी बहुत ही गर्मी वाला था। जज साहिब अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लेकर श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के दरबार(डेरा सचखण्ड बल्लां)गद्दी नशीन 108संत हरि दास महाराज जी, श्री 108संत गरीब दास महाराज जी और संत मण्डली के दर्शन करने के लिए डेरे में आए। सबसे पहले सचखण्ड वासी सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की पवित्र मूर्ति जो कि मंदिर में विराजमान है, को नमस्कार की। फिर सारा परिवार श्री 108संत गरीब

दास महाराज जी के पास बैठ गया। सेवादारों ने यहीं पर बैठे हुए सभी को ठंडा पानी पिलाया। कुछ देर बाद श्री 108संत गरीब दास महाराज जी ने लंगर छकने के लिए आज्ञा दी। सारे परिवार ने लंगर खाया। इस के पश्चात् श्री सुमन जी और उनकी पत्नी श्री 108संत हरि दास महाराज जी के चरणों में नमस्कार करके बैठ गए और बच्चे दूसरे बच्चों के साथ मिलकर डेरे में इधर-उधर खेलने लगे। बच्चे खेलते-खेलते नहर के किनारे पर चले गए। रविवार का दिन था डेरे में संगत की काफी भीड़ था। दोपहर का लंगर खाकर बहुत सी संगत महाराज जी से आज्ञा लेकर वापिस अपने-अपने घर को जाने लगी। सत्गुरू हरि दास महाराज जी उस समय अपने ध्यान में बैठे प्रभु सिमरन में लीन थे। पास ही कुछ और संगत और सेवादार भी बैठे थे। इधर जज साहिब के बच्चे खेलते-खेलते नहर के किनारे की ओर गए हुए थे। क्या देखते हैं कि नहर में पानी बहुत ठंडा और तेज़ी से चल रहा था। त्रिवैणी में पानी झोलें पड़ रही थी और पानी की आवाज़ दूर तक सनाई दे रही थी। जज साहिब की बड़ी लड़कियों ने पानी में हाथ डालना शुरू किया एवं आपस में एक-दूसरे की तरफपानी फैंकने लगी और खेल में मस्त हो गई। जज साहिब का लड़का बोबी भी अपनी बहनों के साथ नहर के किनारे चला गया था। उसने भी नीचे को झुककर पानी में हाथ डालना चाहा। हाथ पानी में पहुँचते ही लड़का पानी की गहराई में गिर पड़ा और पानी के बहाव के साथ पता नहीं किस तरफचला गया। लड़कियां जो उस समय पानी के साथ खेल रही थी। अपने भाई बोबी को पानी में गिरा देखकर नहर पर खड़ी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी,''हाय! हाय! हमारा भाई डूब गया।'' लड़कियों की आवाज़ सुनकर एक नौजवान लड़का आया। उसने लड़के को पानी में से ढूँढने की पूरी कोशिश की, पर यह बालक(बोबी)कहीं भी नज़र नहीं आया। इधर सत्गुरू हरि दास महाराज जी की समाधि खुल गई। श्री 108संत हरि दास महाराज जी समाधि से उठे और संत रामा नंद जी को कहा कि,''बाहर से रोने की आवाज़ आ रही है। देखो तो कौन रो रहा है?'' संत रामा नंद जी ने सभी तरफ देखा कोई रोता नज़र नहीं आया। अंतर्यामी सत्गुरू संत हरि दास महाराज जी ने कहा,''दोबारा देखो।'' जज साहिब उनकी पत्नी और संत रामा नंद जी कुटिया से बाहर देखने चले गए कि कौन रो रहा है?'' सभी ही जज साहिब की कार के पास खड़े हो गए। जज साहिब उस समय वापिस जाने की तैयारी में थे और बच्चों की प्रतीक्षा

कर रहे थे कि बच्चे कहां गए। एक ही पल में जज साहिब जी क्या देखते है कि उनकी बच्चियां रोती हुई दौड़ी आ रही है उनके पास पहुँच गई और कह रही है कि,''डैडी जी, बोबी नहर में डूब गया। यह सुनकर डेरे में जो संगत और सेवादार थे, सभी ही एकदम नहर पर पहुँच गए और बच्चे की ढूँढना शुरू कर दिया पर बच्चा नज़र नहीं आया। कुछ लोग बड़ी नहर पर दूर तक देखने चले गए कुछ इधर-उधर के नालों में तलाश करने लगे।

दूर तक देखते हुए क्या देखते हैं कि गाँव मौखे वाली नहर में सूरज की चमक से कुछ बहता जा रहा दिखाई दिया। संत रामा नंद जी पहुँचे, क्या देखते हैं कि बच्चे की बाजु और टांगे पसरी हुई हैं और पानी से एक फीट नीचे बहता जा रहा है। नहर में छलांग लगाकर बालक को उठाया। देखा कि बालक को सांस बिल्कुल नहीं आ रही थी। इतने में श्री महिंगा राम बल्लां निवासी भी पहुँच गए। जज साहिब की पत्नी तो रास्ते में ही बेहोश होकर गिर गई। जो हालत जज साहिब और परिवार की उस समय थी, लिखा नहीं जा सकता। इस हालत में मरे हुए बालक को उठाकर गुरू साहिब के मंदिर में लाया गया और सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की पवित्र मूर्ति के सामने लेटा दिया गया। जज साहिब एवं उनके परिवार को दिलासा देने के लिए सभी यह कह रहे थे कि,''लड़का ज़िन्दा है। आप रोना बंद करो।'' सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे अरदास की गई। बालक का मुंह खोलकर अंदर से पानी निकालने के लिए कई तरह कोशिश की गई, पर पानी नहीं निकला। फिर बालक को सीधा लेटाकर पैरों की मालिश शुरू की तो क्या हुआ कि बालक को बहुत ज़ोर से एक उलटी आई जिससे पेट में से पानी निकल गया। अब बच्चे को कपड़े में लपेटकर मास्टर जीतपाल अपनी गोद में रखकर कार में बैठ गए ताकि बच्चे को किसी डॉक्टर के पास दिखाया जाए। बच्चे को कार में लेकर जब जालन्धर शहर में पहुँचे तो डॉक्टर के देखने से पहले ही अचानक बच्चे की नब्ज़ चल पड़ी और सांस आनी शुरू हो गई। सभी की सांस में सांस आई। सिविल अस्पताल जालन्धर पहुँचे। डॉ. शिंगारा सिंह ने बालक का निरीक्षण किया और कहा कि,''सुमन साहिब, इतनी छोटी आयु का बच्चा इतनी देर पानी में डूबा कभी भी ज़िन्दा नहीं रह सकता। आप बहुत भाग्यशाली हो, जिस महान् सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने पहले यह दात आपको बख़्शिश की थी, उन्होंने इस बालक को दोबारा(पुनः)ज़िन्दा करके आपकी झोली डाला है। आप कोई चिंता मत करो। बालक बिल्कुल ठीक है। इस को कोई दवाई

देने की ज़रूरत नहीं है।'' डॉक्टर से यह बात सुनकर सभी के चेहरे पर खुशहाली आ गई। सभी लोग हैरान थे कि सत्‌गुरू जी ने क्या खेल खेला है सभी लोग सचखंड वासी सत्‌गुरू जी की प्रशंसा करने लगे। डॉक्टर साहिब ने एक घंटा बालक को अपने पास रखा, वह इस कारण कि बुखार हो सकता है। परंतु बालक पूरी तरह ठीक था। शाम को जज साहिब खुशी-खुशी परिवार के साथ लुधियाना चले गए। इसी खुशी में कुछ माया और प्रसाद मास्टर जीत पाल पास डेरे की सेवा के लिए भेजा। डेरे पहुँचकर मास्टर जीत पाल ने सारा हाल सत्‌गुरू हरि दास महाराज जी के चरणों में बैठकर सुनाया और सभी को यह सुनकर बहुत खुशी हुई। सत्‌गुरू हरि दास महाराज जी ने फिर श्री 108संत सरवण दास महाराज जी की मूर्ति के आगे अरदास की और प्रसाद संगत में बांटा गया। सभी संगत यह कह रही थी:- करूँ मैं नमस्कार संत बल्लां वालों को, सारे जग से तेरे चोज है निराले।

साखी नंबर: 326

हमें भी भगवान् के दर्शन करवा दो

जज साहिब बताते हैं कि मेरे साथ एक जज कोर्ट में नौकरी करता था। इनका दावा था कि इनके गुरू भगवान् के झट से दर्शन करवा देते हैं। यह गुरू जी देहरादून में रहते थे। एक दिन यह कहने लगे,''गुरनाम चंद जी, आप हमारे साथ चलो। हमारे गुरू जी आपकी हर मनोकामना को पूरा कर देंगे।''

ैपज दकै मम जीम ळवकण

यह चर्चा कई महीने चलती रही। जहां साथी के गुरू का आश्रम था। श्री गुरनाम चंद, साथी जज और कई वकील दोस्त उनके आश्रम पहुँचे। शाम हो चुकी थी। रात के आठ-नौ बजे तक उनके साथ कोई भी बातचीत न हो सकी। हमें संदेश मिला कि,''सुबह भगवान् दिखाऐंगे।'' गुरनाम चंद जी बताते हैं कि हम दो ढाई बजे के करीब सो गए। आप को सपने में संत सरवण दास महाराज जी हाथ में खूंडा पकड़े दिखाई दिए। सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने वचन किए

''गुरनाम चंद जी,आप यहां क्या करने आए हो?'' आपकी एकदम आँखख ुलग ई।अ ापनेअ पनेस ाथीज जक ोक हा क,''भाई,म ैनेन हीं भगवान् देखना। तुम ही देख लो।''आप ने साढे तीन बजे प्रात:काल अपने प्यादे को भेजा और टैक्सी द्वारा सहारनपुर पहुँचे। सहारनपुर से गाड़ी पकड़ी

और सीधे ही दसूहा आ पहुँचे। दसूहा से आप सीधा डेरा सचखंड बल्लां आ पहुँचे।

कुटिया में महाराज जी थड़ा साहिब पर अपने ध्यान में विराजमान थे। सत्गुरू जी अंतर्यामी हैं। उन्होंने कहा,''जज साहिब आप तो भगवान् के दर्शन करके आए हो। हमें भी दर्शन करवा देते।'' गुरनाम चंद जज जी बताते हैं कि ,'' मुझे अपने किये पर बहुत शरम महसूस हुई। ''Sant Sarwan Dass Was a part of the Spiritual Power of the Globe. Superhand of the world, which was going to drive the whole atmosphere.'

साखी नंबरः 327

श्री गुरनाम चंद जी बताते हैं कि एक बार मेरे मन में बात आई कि महाराज जी के पास एक रात बिस्तर करके सोना है। आपने सेवादारों को इसके बारे में पूछा। जब महाराज जी को इस बात का पता चला तो महाराज जी मुस्कुरा पड़े। असल में गुरनाम चंद जी देखना चाहते थे कि महाराज जी रात को क्या करते होंगे। मेरा बिस्तर महाराज जी के पास कर दिया गया। महाराज जी सारी रात नहीं सोये, वह भजन सिमरन करते रहे। जिस समय रात के 11-12 बजे तो गुरनाम चंद जी को बहुत ही खुशबू, सुगंध आने लगी। थोड़ी ही देर बाद आपकी आँख लग गई। आप को महसूस होने लगा जैसे सचखंड में सो रहा हूँ, जैसे कभी भी कोई दुःख आपके नज़दीक आया ही न हो, आप को दुनिया की कोई सूझ-बूझ ही न रही। सभी गम भूल गए। ऐसी महक आई जो आपने आज तक भी नहीं महसूस की। लेखक को मुख्य तौर पर आपने यह सतरें लिखवाई कि दुनिया के बीच ऐसी खुशबू, ऐसा इत्र, ऐसा परफ्यूम उनको नहीं मिला। दुनिया भर के बाज़ार घूम लिये पर वह रात वाली खुशबू उनको आज तक याद है।

साखी नंबरः 328

सत्गुरू सरवण दास जी की सेठ लक्ष्मण दास पर कृपा

अगर हो सत्गुरू की बख्शिश, कख्ख से लख बना देते,
पास न हो कख्खों की कुली, सुंदर महल बना देते।।

सेठ लक्ष्मण दास(जिनके पिता का नाम स्वर्गीय श्री लभू राम जी था) गाँव सरमस्तपुर के रहने वाले थे। श्री लक्ष्मण दास जी के पिता जी गुज़र चुके थे। जिस कारण घर की सारी ज़िम्मेदारी लक्ष्मण दास के सिर पड़ गई। श्री

लक्ष्मण दास जी बहुत मेहनती थे। उन दिनों में मेहनत मज़दूरी का काम आम ही चलता था, पर वह भी बहुत अच्छा न था। लक्ष्मण दास प्रतिदिन घर से बाहर मज़दूरी पर काम करने जाते थे और जो मेहनत मज़दूरी मिलती उसके साथ अपना और परिवार का गुज़ारा चलाते थे। श्री लक्ष्मण दास कपड़े बुनने का काम भी जानते थे। जब बाहर का काम मिलता वह कर लेते नहीं तो अपना घर का काम कपड़ा बुनने का करते थे। घर में बहुत गरीबी थी। परिवार का गुज़ारा बहुत मुश्किल से चलता था। श्री लक्ष्मण दास और उनका परिवार श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे। वह घर में जो भी काम करते थे महाराज जी की आज्ञा से ही करते थे। कुछ समय पश्चात् लक्ष्मण दास की एक लड़की जवान हो हो गई और लक्ष्मण दास अब अपनी लड़की के लिए रिश्ते की चिंता करने लग पड़ा। घर की आर्थिक हालत पहले ही अच्छी नहीं थी पर लक्ष्मण दास ने अपनी दोस्तों की मदद से कुछ पैसा उधार लिया और लड़की की शादी की तैयारी शुरू कर दी। शादी के दिन पक्के कर दिये। बारात घर पहुँची, बारात की चाय पानी की सेवा की गई। अब दोपहर का भोजन शुरू होने लगा। दोपहर को भोजन समय लक्ष्मण दास ने बारात के लिए बकरे का मीट बनाया। बाराती सज्जनों ने और घर में आए बाकी रिश्तेदारों ने दोपहर का भोजन मीट से किया। मीट के साथ कुछ सज्जनों ने शराब का भी सेवन किया। शादी के सभी कार्य पूरे होनेपर बारात चली गई। इधर श्री 108संत सरवण दास महाराज जी को भी इस शादी का पता चला तो बहुत ही परेशान और क्रोधित हुए क्योंकि सत्गुरू जी तो जीवों पर दया करनी और जीवों की रक्षा करने की प्रेरणा देते थे। उनसे यह बात सही न गई कि एक जीव की हत्या करकेउ सकाम ांर्स रश्तेदारोंक ोि खलायाग या।स त्गुरूज ीक हनेल गे कि,''एक तो हमारी कौम पहले ही गरीब है और दूसरा शादियों पर खर्च करके और भी गरीब बनते जा रहे हैं। सत्गुरू जी से यह बात सही न गई कि लक्ष्मण दास सरमस्तपुर वालों ने बारातियों को मीट खिलाया है। सत्गुरू जी ने संदेश भेजकर श्री लक्ष्मण दास जी को अपने पास बुलाया और कहा कि,''लक्ष्मण दास, तुमने बड़ा पाप किया है। जो बकरा काटकर बारात को मीट खिलाया है। यह कर्म बहुत ही निंदनीय है। तुम्हें इसका लेखा-जोखा देना पड़ेगा।'' लक्ष्मण दास ने हाथ जोड़कर कहा,''महाराज जी यह काम मैंने नहीं किया। यह काम मेरे से लड़की के मामा अर्जुन दास कराड़ी गाँव वालों ने करवाया है जी। मैंने तो उसको बहुत मना किया था पर वह नहीं माना।''

सत्गुरू जी ने गाँव कराड़ी से श्री अर्जुन दास को भी अपने पास बुलाया और आते ही उसे बहुत डांटा और अगली बार से डेरे आने से मना कर दिया। सत्गुरू जी ने कहा कि,''आपने हमारा कहना नहीं माना। आप अब दु:ख पाओगे और नर्क के अधिकारी बनोगे। हमारी यह बात याद रखना।'' श्री लक्ष्मण दास और अर्जुन दास जी ने महाराज जी की रसना से यह वचन सुने तो किये हुए कार्यों की क्षमा मांगी। गुरू जी ने कहा,'' आज तुम अपने-अपने घर को चले जाओ। कुछ दिन पश्चात् संक्रांति का दिन था। सत्गुरू जी अपने ध्यान में बैठे थे कि अचानक मन में लक्ष्मण दास के किये पाप कर्म का विचार उठा। सत्गुरू जी ने फिर लक्ष्मण दास को घर से बुलवा लिया। लक्ष्मण दास ने सत्गुरू जी के चरणों में बहुत ही अधीनगी सहित डरते-डरते नमस्कार की और पूछा,'' महाराज जी, क्या हुक्म है?'' सत्गुरू जी निमानों के मान, नितानो के तान और भुले हुए को सीधे रास्ते डालने वाले दयालु हुए और लक्ष्मण दास के पाप निवारने लगे। सत्गुरू जी ने लक्ष्मण दास को हुक्म दिया कि,''सारी संगत के जोड़े (जूते) साफ करो और झाड़-झाड़ कर रखो। आज हमने तुम्हारे से यही सेवा करवानी है।'' सेठ लक्ष्मण दास सत्य वचन कहकर नमस्कार करके संगत के जोड़ों में बैठ गए। एक-एक जोड़े को उठाकर कपड़े से साफ करके पंक्ति में रख देता। जिस कपड़े से जोड़े साफ कर रहा था अपने मुंह पर और सिर पर उस कपड़े को फेर लेता था। इस तरह से बहुत ही प्रेम और श्रद्धा से जोड़े साफ करके रखता जा रहा था और मन में बहुत ही खुश हो रहा था। सभी संगत लक्ष्मण दास को यह सेवा करते देख रही थी और लक्ष्मण दास के आज्ञा पालन से बहुत खुश थी। अचानक सत्गुरू जी संगत में से उठकर लक्ष्मण दास के पास जाकर खड़े हो गये और आर्शीवाद दिया कि,'' आज ही तुम्हारी सेवा से बहुत खुश है जो कुछ मांगना है मांग लो।'''' सत्गुरू जी सब कुछ दे दो जी।'' लक्ष्मण दास ने जल्दी से उत्तर दिया। सत्गुरू जी ने कहा,'' अच्छा, लक्ष्मण दास तुझे सब कुछ दिया।'' यह वचन करके महाराज जी फिर संगत में जा विराजे और अपने मुखारविंद से चढ़ते महीने का नाम और महत्व सुनाया। प्रसाद बांटा गया और संगत को आज्ञा दी। थोड़े दिनों के बाद लक्ष्मण दास फिर सत्गुरू जी के पास आया और निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैंने कलकत्ता में काम करने जाना है, मुझे आज्ञा दे दीजिए।'' महाराज जी ने खुश होकर कहा,'' अच्छा चले जाओ।'' लक्ष्मण दास गुरू जी से आज्ञा लेकर कलकत्ता में चला गया। कलकत्ता में इनके और

भी रिश्तेदार गए हुए थे। उनके साथ मिलकर काम करना शुरू कर दिया। महाराज जी की कृपा से लक्ष्मण दास का काम कुछ समय पश्चात् उच्च कोटि पर हो गया। काम में इतनी तबदीली आई कि माया की बे-परवाही हो गई। कुछ समय पश्चात् वह घर आ गया। सभी लोग हैरान हो गए कि लक्ष्मण दास के दिन कितनी जल्दी सत्गुरू जी ने बदल दिये हैं। सत्गुरू जी ने लक्ष्मण दास की कमाई में इतनी तब्दीली की कि सब गरीबी दूर कर दी और माया में खेलने लगे। गाँव में ही 100 एकड़ ज़मीन खरीदी, ट्यूबवैल लगवाये, ट्रैक्टर और स्कूटर भी खरीदे। सुंदर मकान बनाये और सारा परिवार खुशी से जीवन व्यतीत करने लगे। सारा परिवार और रिश्तेदार महाराज जी के श्रद्धालु बने और संतों की महिमा के गुणगान करने लगे। यह थी सत्गुरू सरवण दास जी की कृपा जो आप जी ने दयालु होकर एक गरीब सेवक के पाप खंडन किये और गरीबी दूर करके एक सेठ का नाम दिया। आजकल लक्ष्मण दास को सभी लोग सेठ लक्ष्मण दास कहकर पुकारते हैं।

साखी नंबर: 329

सेठ लक्ष्मण दास को पौत्रों की दात बख्शिश करनी

सेठ लक्ष्मण दास जी और बीबी अमर कौर गाँव सरमस्तपुर वालों का संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। 1969 ई . में सेठ लक्ष्मण दास के छोटे सुपुत्र केवल की शादी बीबी सुरजीत कौर से हुई। सेठ जी परिवार सहित महाराज जी के दर्शन करने के लिए डेरे पहुँचे और महाराज जी को नमस्कार करते हुए निवेदन किया कि,''महाराज जी, बच्चों की शादी हुई है। आर्शीवाद दीजिए। महाराज जी ने बीबी सुरजीत कौर को 5 सेब दिये और कहा कि,''बेटी, यह पाँच सेब तुम खा लेना।'' बीबी सुरजीत कौर ने पाँच सेब खाये पर उनमें से एक सेब थोड़ा खराब था और बीबी जी ने वह सेब थोड़ा काटकर खाया और बाकी चार सेब पूरे खाये। जब इस बात का सेठ लक्ष्मण दास को पता चला तो संत सरवण दास महाराज जी को सारी बात बताई तो महाराज जी ने कहा,''ऐसा नहीं करना था चलो कोई बात नहीं। पाँच सेब खाये बेटी खराब सेब कब खाया था?'' तो बीबी सुरजीत कौर ने बताया कि,''दूसरे नंबर पर खराब सेब काटकर खाया था। संत सरवण दास महाराज जी ने वचन किया कि,''लड़के पाँच पैदा होंगे पर दूसरे नंबर वाला लड़का पैदा तो होगा पर बचेगा नहीं।'' ऐसे ही हुआ बीबी सुरजीत कौर के पाँच

लड़के क्रमवार (1) राज कुमार, (2) अमरीक चंद, (3) विजय कुमार, (4) राजेश कुमार, (5) सतविंदर कुमार हुए पर दूसरे नंबर के जन्म लेने वाले लड़के अमरीक चंद की मौत हो गई थी।

(स्वयं बीबी सुरजीत कौर, सरमस्तपुर, 13 जून, 2003)

साखी नंबर: 330

श्री साधु राम हीर पर कृपा करनी

श्री साधु राम हीर जी और उनकी पत्नी बीबी धर्म कौर जी का श्री 108संत गरीब दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। सन् 1988ई. की बात है कि श्री साधु राम हीर जी को दिल का दौरा पड़ा। उनको इलाज़ के लिए दिल्ली के अशोका अस्पताल में दाखिल करवाया गया जहां उनकी बाईपास सर्जरी हुई। जनवरी 1989 ई. को अस्पताल में से छुट्टी मिलने पर उनको श्री जवाहर लाल के घर ले गए। जहां श्री 108संत गरीब दास महाराज जी उनको मिलने गए। श्री 108संत गरीब दास महाराज जी ने उनको वचन किये कि,''तुम्हें कुछ नहीं हुआ है आपने तो डेरे की बहुत सेवायें करनी हैं।'' महाराज जी के वचन अटल हुए आज महाराज जी की कृपा से श्री साधु राम हीर जी जो कि दूरदर्शन के नॉर्थ जॉन नई दिल्ली, भारत के चीफ़ इंजीनियर रिटायर हुए हैं, डेरे में श्री गुरू रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, वाराणसी के जनरल सैक्रेटरी के तौर पर और डेरे में चल रहे सभी प्रोजैक्टों में अपनी मुख्य सेवायें निभा रहे हैं।

साखी नंबर: 331

बीबी रख्खी पर कृपा करनी

प्रिंसीपल जोगी राम जी के पिता जी मेहर दास जी ढेपुर वालों का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। श्री मेहर दास जी अपने गाँव में से सबसे पहले सेवक थे जिन्होंने महाराज जी के पास से नाम की दात प्राप्त की थी। मेहर दास जी की धर्म पत्नी का नाम श्रीमती पुन्नो था। आप जी के ससुर बजवाड़ा कलां में थे। बीबी पुन्ना जी का भाई ठाकुर था जिस की पत्नी का नाम बीबी रख्खी था जो कि घबीर की बीमारी साथ पीड़ित थे। बहुत इलाज़ करवाया पर आराम नहीं आया। आख़िर थक हार कर घर बैठ गए। घर में से पैसे पंख लगाकर उड़ गए। श्री ठाकुर दास और बीबी रख्खी के दो लड़कियां और दो लड़के थे। उन्होंने अपने दो बच्चे एक बहन के पास और दो

बच्चे दूसरी बहन के पास छोड़े हुए थे। एक दिन ठाकुर दास के बच्चे और मेहर दास के बच्चे इक्ट्ठे खाना खा रहे थे तो एक बच्चे(केवल कृष्ण)ने कहा,''हे भगवान्। कभी हम भी इक्ट्ठे होंगे। उस समय वह दूसरी और जोगी चौथी कक्षा में पढ़ते थे। बीबी रख्खी को घबीर के साथ टी.वी. की बीमारी भी हो गई। उनको इलाज़ के लिए गुलाब देवी अस्पताल जालंधर ले गए। डॉक्टर ने हैरान होकर कहा कि,''जिसके छाती के आर-पार छेद हो गया है वह ज़िन्दा कैसे है। एक दिन श्री ठाकुर दास जी बहुत रोये। बीबी गंगी देवी जो कि मेहर दास जी के दादी जी थे कहने लगे,''चुप कर जा, सभी चलती के यार हैं। इन्होंने नहीं मानना, तुझे संतों के पास लेकर जाने के लिए।'' यह बातें मेहर दास के मन को लग गई उन्होंने कहा,''मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, पर मैंने कोई बात नहीं करनी महाराज जी को तुमने ही सारी बात बतानी है। महाराज जी जो भी कहेंगे वह तुझे मानना पड़ेगा।'' श्री मेहर दास, ठाकुर दास, काका जोगी और बाकी सभी डेरे चले गए। उस समय लड़की की मंगनी भी नहीं हुई थी ठाकुर दास जी अभी बोलने ही लगे थे कि श्री मेहर दास जी ने कहा,''अच्छा जी, सत्य वचन।'' घर आकर ठाकुर दास जी फिर बहुत रोये कि घर पैसा नहीं, रिश्ता हुआ नहीं यह सब कैसे होगा। भगवान् की कृपा उसी समय एक रिश्तेदार रिश्ता लेकर आ गए। बिना लड़का देखे जी हां कर दी गई और शादी का दिन भी बता दिया गया कि,''हमने हर हालत में इसी दिन इसी समय ही शादी करनी है अगर हां हो तो हमें बता देना।'' जोगी राम की मामी जो कि चारपाई पर पड़ी दिखाई भी नहीं दे रही थी वह शादी से दो दिन पहले ज़ोर-ज़ोर से रोकर कहने लगी,''मैं कुछ कर नहीं सकती और न ही चारपाई से उठ सकती हूँ। मेरे से किसी दाल को ही हाथ लगवाकर दाने साफ करवा लीजिए।'' उस समय वह दृश्य देखने वाला ही था। सभी समझते थे कि यह अब आखिरी बातचीत ही कर रही है। जितनी देर ठाकुर दास जी ज़िन्दा रहे वह महाराज जी को लेट कर नमस्कार करते रहे और महाराज जी के लिए मीठे-मीठे आम लेकर आते रहे। यह अणहोई इलाके के सभी लोग जानते हैं।

साखी नंबर: 332

बीबी गुरमीत कौर की इच्छा पूरी करनी

श्री धनपत राये और बीबी गुरमीत कौर जी वासी दौलतपुर वालों का श्री 108संत हरि दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। वह अक्सर डेरे आते रहते थे। एक बार जब वह डेरे आए तो बीबी गुरमीत कौर ने मन में सोचा कि मुझे

महाराज जी के इस स्वरूप में दर्शन हो। जब वह डेरे आए तो उनको जो मन में सोचा था महाराज जी के उसी स्वरूप में दर्शन हुए। उसके बाद जितनी देर महाराज जी गद्दी पर विराजमान रहे। उतनी देर उनको महाराज जी के उसी स्वरूप में दर्शन होते रहे।

(बीबी गुरमीत कौर पत्नी श्री धनपत राये जी)

साखी नंबर: 333

श्री सतनाम सिंह जी पर कृपा करनी

श्री दौलत राम बीबी सुमित्र कौर जी वासी 862, अर्बन एस्टेट, जालंधर वालों का श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनके पुत्र सतनाम सिंह का भी महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। एक बार श्री सतनाम सिंह जी डेरे में आए तो महाराज सरवण दास जी ने वर दिया कि,''तुम बड़े अफ्सर बनोगे, तुम्हारे आगे-पीछे गाड़ियां घूमेंगी। महाराज जी की कृपा से श्री सतनाम सिंह जी ने पढ़ाई की और आज वह पावर फाइनैंस कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरैक्टर हैं। वह बताते हैं कि,'' आज मैं जो कुछ भी हूँ यह सब कृपा महाराज सरवण दास जी की है।''

(श्रीमती निर्मला पत्नी श्री सतनाम सिंह जी)

साखी नंबर: 334

श्री मंगू राम जी पर कृपा करनी

श्री मंगू राम जी सुपुत्र श्री माली राम जी वासी गाँव सरहाली वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। उनकी शादी बीबी प्रकाशवती से हुई थी। सन् 1956ई. की बात है कि श्री मंगू राम जी इरीगेशन डिपार्टमैंट में क्लर्क थे। जब मंगू राम जी डेरे में आए तो महाराज जी ने उनको वचन किये कि,''आपने बहुत बड़े अफ्सर बनना है और सत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन का प्रचार करना है।'' आज महाराज जी की कृपा के साथ वह सर्कल सुपरिटेंडैंट रिटायर हुए हैं और सत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन के प्रचार में लगे हुए हैं।

साखी नंबर: 335

लंगर का प्रबंध होना

बीबी प्रकाशवती पत्नी श्री मंगू राम जी वासी सरहाली वालों का महाराज संत सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। सन् 1963 ई. की बात है, कि

बीबी प्रकाशवती अपनी माता बीबी करमी अवादान और बीबी भागो वासी महेडू वालों के साथ डेरे आए। गर्मी के दिन थे। काफी अन्धेरा हो गया। वह रास्ता भूल गए और वह घबरा गए। अचानक उनको प्रकाश दिखाई दिया और वह उस प्रकाश के सहारे डेरे आ गए। आगे महाराज जी जो कि पहले ही उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, गेट में खड़े थे। महाराज जी ने उनको कहा,''आपने अन्धेरा कर दिया हमने डेरे जाना था। महाराज जी ने सेवादारों से कहा,''लंगर लेकर आओ।'' तो सेवादार कहने लगे,''लंगर बढ़ गया है।'' यह सुनकर महाराज जी एक तरफ गए और जब वह वापिस आए, तो उनके हाथ में प्रशादे थे। महाराज जी का यह कौतुक देखकर बीबी प्रकाशवती और बाकी बीबीयां धन्य-धन्य कर उठीं।

साखी नंबर: 336

महाराज जी के आलौकिक करिश्मे के दर्शन करना

स. हरभजन सिंह सूर उनकी माता चन्नण कौर वासी राएपुर-रसूलपुर वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। 1950 ई. की बात है कि वह डेरे आ रहे थे, कि उन्होंने देखा कि महाराज सरवण दास जी के सारे अंग अलग-अलग हुए पड़े हैं। यह सब देखकर वह घबरा गए और डेरे आ गए। जब वह डेरे पहुँचे तो क्या देखते हैं, कि महाराज सरवण दास जी आगे बैठे हैं और उन्हें कहने लगे,''यह बात किसी को बतानी नहीं है।''

साखी नंबर: 337

स. हरभजन सिंह पर कृपा करनी

स.हरभजन सिंह और उनकी पत्नी बीबी गुरदेव कौर जी वासी राएपुर-रसूलपुर वाले महाराज जी के श्रद्धालु थे। 1960 ई. की बात है, वह डेरे आए और उन्होंने महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारेक ोईस ंतानन हींहै ।''त ोम हाराजज ीने ु नकोअ ार्शीवार्द दया। महाराज जी की कृपा से घर 3(तीन)लड़कों ने जन्म लिया। इस तरह महाराज जी स. हरभजन सिंह पर कृपा की।

साखी नंबर: 338

दोबारा यह कार्य नहीं करना

श्री हंस राज और बीबी दीपो जी वासी राम नगर(साऊथहाल)वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। 1962 ई. की बात है, कि एक

बार उनसे कोई भूल हो गई थी। तो महाराज जी ने उनको पत्र लिखा। उस समय पत्र को पहुँचने के लिए एक सप्ताह लग जाता था पर महाराज जी का लिखा पत्र उन्हें दूसरे दिन ही पहुँच गया था। महाराज जी ने पत्र में उन्हें गलत काम करने से रोका था। महाराज जी का पत्र पढ़ कर उन्होंने अपनी गलती पर पछतावा किया और महाराज जी से क्षमा मांगी और ऐसा दोबारा न करने का प्रण लिया(कसम दी)।

साखी नंबरः 339

श्री चमन लाल चोपड़ा और परिवार की रक्षा करनी

श्री चमन लाल चोपड़ा बीबी सत्या जी उनके बच्चे परमिन्द्र चोपड़ा और वरिन्द्र चोपड़ा वासी रेरू वालों का महाराज हरिदास जी से बहुत प्रेम था। 1979 ई. की बात है, कि सारा परिवार इंग्लैंड जा रहा था। जब वह जहाज़ पर चढ़ने लगे तो महाराज हरिदास जी ने उनको कहा कि,‘‘आपने जहाज़ में नहीं चढ़ना।’’ इस तरह महाराज हरिदास जी ने उनको तीन बार जहाज़ से चढ़ने से रोका, जिस कारण वह जहाज़ में नहीं चढ़े। इधर श्री चमन लाल जी की माता बीबी विद्या जी डेरे में आए तो महाराज हरिदास जी ने उनको कहा कि,‘‘हमने उन्हें जहाज़ नहीं चढ़ने दिया ।’’बाद में पता चला कि वह जहाज़ जिसमें श्री चमन लाल चोपड़ा और उनके परिवार ने जाना था। वह जहाज़ पानी में डूब गया है। इस तरह महाराज जी ने श्री चमन लाल चोपड़ा और उनके परिवार की रक्षा की।

साखी नंबरः 340

श्री अमर दास भुट्टा पर कृपा करनी

श्री अमर दास भुट्टा वासी संतोखपुर जालन्धर वाले जो कि श्री 108सरवण दास महाराज जी के सेवक थे, जोकि अक्सर डेरे में आया करते थे और महाराज जी की महिमा का गायन करते थे। एक दिन जब वह डेरे आए, महाराज जी ने कहा,‘‘मांग लो, जो कुछ मांगना है।’’ तो अमर दास जी कहने लगे,‘‘जिस तरह हम आप जी की महिमा गाते हैं, हमारे बच्चे भी इसी तरह आपकी महिमा गायन करें। महाराज जी की कृपा से ही आज उनके बच्चे अनाड़ी संगीत पार्टी द्वारा(श्री राम लुभाया और गरीब दास सोढी)महाराज जी की महिमा का गायन करते हैं।’’

साखी नंबरः 341

फल अपने बच्चों को दे देना

श्री जीत राम बीबी बख्शो वासी यू.के. वालों का महाराज हरिदास जी से बहुत प्रेम था। सन् 1981 ई.की बात है, कि श्री जीत राम जी और बीबी बख्शो यू.के. से इंडिया आए हुए थे और वह तीन महीने डेरे में रहे। एक दिन वह बाज़ार गए तो उन्होंने कहा,''आज बच्चों के लिए फल खरीदने हैं और उन्होंने फल खरीद लिए। जब वह डेरे में आए तो आगे महाराज हरिदास जी बैठे थे तो उन्होंने फल महाराज जी को भेंट किए तो महाराज जी ने कहा,''आप तो यह फल अपने बच्चों के लिए लेकर आए हो। जब उन्होंने फल अपने बच्चों को दिए तो उन्होंने फल नहीं खाए और फल उठा कर मारे कि हमने फल नहीं खाने।''

साखी नंबर: 342

श्री स्वर्ण दास बंगड़ पर कृपा करनी

श्री देवी दिता बीबी संती जी वासी गांव बल्लां वालों का संत सरवण दास जी महाराज से बहुत प्रेम था। उनके सुपुत्र श्री स्वर्ण दास बंगड़, बीबी रेशम कौर महाराज जी के श्रद्धालु थे। सन् 1961 ई. की बात है कि स्वर्ण दास बंगड़ ने दसवीं पास करने के बाद महाराज जी के पास आकर निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैंने विलायत जाना है।'' तो महाराज जी ने कहा,''तुम तो बहुत कमज़ोर हो, वहां जाकर कौन सा काम करोगे?'' फिर महाराज जी ने थोड़ी देर बाद कहा,''ठीक है चले जाओ, परमात्मा खुद सारे काम ठीक करेंगे।''1965 ई. में उनके बच्चे सुरिन्दर और राजिन्दर भी विलायत चले गए। सन् 1970 ई. में श्री स्वर्ण दास बंगड़ जी ने 10 किल्ले ज़मीन महाराज जी को दान दी। 1972 ई. में स्वामी सरवण दास महाराज जी के ज्योति-ज्योत करने के पश्चात् श्री स्वर्ण दास जी महाराज जी की याद में डेरे में हर वर्ष आँखों का फ्री मैडीकल कैंप लगाते रहे। फिर सन् 2007 में जब डेरे में संत सरवण दास चैरीटेबल आई अस्पताल बना तो श्री स्वर्ण दास बंगड़ जी ने आई अस्पताल के लिए 1,11,1111,00 रूपये(एक करोड़ ग्यारह लाख एक हज़ार एक सौ ग्यारह रूपये)दान दिए। उनका महाराज जी से इतना प्रेम है कि वह समय-समय पर डेरे में अपना योगदान देते रहते हैं। वह बताते हैं कि,'' आज वह जो कुछ भी हैं, यह सब महाराज सरवण दास जी की ही अपार कृपा हैं।''

साखी नंबर: 343

श्री रौणकी राम जी के दिल की बात जाननी

श्री रौणकी राम बीबी जीतो जी गांव रायोवाली वाले महाराज स्वामी सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। एक बार आप डेरे आ रहे थे तो घर में विचार किया कि,''महाराज जी को कितने रूपये का नमस्कार करना है।'' बीबी जीतो जी ने कहा,''ग्यारह रूपए रखकर नमस्कार करना है।'' श्री रोणकी राम कहने लगे,''एक रूपये का नमस्कार करना है।'' इस तरह विचार करते-करते घर से चल पड़े। जब डेरे पहुँचे तो बीबी जीतो ने ग्यारह रूपये रखकर महाराज जी को नमस्कार किया तो महाराज जी ने एक रूपया रखकर दस रूपये वापिस कर दिए और कहने लगे आपने तो कहा था,''एक रूपये का नमस्कार करना है।'' यह वचन सुनकर श्री रौणकी राम जी महाराज जी के चरणों में गिर पड़े। इस तरह महाराज जी अपने सेवकों के मन की बात जान लेते थे।

साखी नंबर: 344

बीबी करतार कौर की उम्र बढ़ाना

स.चन्नर्णा संहब ीबीक रतारक ैरग ांवन ैगज्जाव ालोंक ास वामी सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। एक बार बीबी करतार कौर बहुत बीमार हो गई। उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। उन्होंने महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी, मेरे पर कृपा करो, मेरे बाद मेरा दरवाज़ा खोलने वाला तो कोई हो, मेरे पुत्र की शादी हो जाए।'' वह पोह का माह था, तो महाराज जी ने कहा कि, ''तुम्हारे पुत्र की शादी तो सावन महीने में होनी है, चलो ठीक है, आज से तुम्हारी आयु छ: महीने यह और छ: महीने और बढ़ा दी। तुम्हारी आयु एक वर्ष बढ़ा दी है।'' इस तरह जब सावन का महीना आया तो उसके पुत्र महिंगा सिंह की शादी हुई। शादी के बाद बीबी करतार कौर छ: महीने और जिन्दा रही। फिर पोह के महीने बीबी करतार कौर की मृत्यु हो गई। इस तरह महाराज जी ने बीबी करतार कौर की आयु एक वर्ष बढ़ा दी, जिस से वह अपने पुत्र की शादी देख सकी।

साखी नंबर: 345

जानी-जान सत्‌गुरू

श्री जीतू राम बीबी चरण कौर वासी बल्लां वाले महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। बीबी चरण कौर बताते हैं, कि एक बार वह डेरे आ रहे थे तो रास्ते में खड़े होकर किसी से बातें करने लगे। जब वह डेरे पहुँचे तो महाराज

जी ने कहा,''बेटी रास्ते में खड़े होकर किसी से बातें नहीं करनी सीधे डेरे आना है।'' इस तरह जानी-जान सत्गुरू जी अपने सेवकों के पल-पल की जानकारी रखते थे।

साखी नंबरः 346

आपकी गरीबी दूर हो जाएगी

श्री जीतू राम बीबी चरण कौर वासी बल्लां वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था।श्री जीतू राम के घर गरीबी बहुत थी। उन्होंने महाराज जी चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी हमारे घर गरीबी है, कृपा करो।'' तो महाराज जी ने वचन किए कि,''जब आपका पुत्र सेवा बड़ा होगा। तब आपकी गरीबी कट जाएगी।'' जब उनका पुत्र सेवा बड़ा हुआ तो कैनेडा चला गया। इस तरह महाराज जी के वचन पूरे हुए और उनकी गरीबी दूर हो गई।

साखी नंबरः 347

अटल वचन

श्री जीतू राम बीबी चरण कौर वासी गांव बल्लां वाले महाराज सरवण दास जी के सेवक हैं। वह बताते हैं कि एक बार उन्होंने एक गाय ली। जब वह गाय का दूध निकालने लगे तो गाय लेटने लग पड़े। इस तरह वह बहुत तंग आ गए, तो हार कर महाराज जी पास आए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, गाय लेकर आए हैं, वह दूध नहीं देती।'' तो महाराज जी ने कहा,''उस गाय को डेरे लेकर आओ।'' जब वह गाय को डेरे लेकर आए तो महाराज जी ने उस गाय से पूछा कि,''तुमने यहाँ दूध देना है।'' तो गाय ने न में सिर हिला दिया, फिर महाराज जी ने पूछा,''तुमने कहां दूध देना है?'' तो उस गाय ने कहा कि,''जहां पहले थी, वहां दूध देना है।'' महाराज जी ने श्री जीतू राम को कहा,''इस गाय ने आपके घर नहीं देना है, इस गाय को बेच दो।'' उन्होंने महाराज जी के वचन मानकर जहां से गाय लेकर आए थे। वहीं वापिस दे दी। जहां वह गाय बेची वहां उस गाय ने बहुत दूध दिया। इस तरह महाराज जी के वचन सत्य हुए।

साखी नंबरः 348

इस लड़की ने आपको तारना है

श्री कर्म चंद जी बीबी प्रीतम कौर जी वासी रमदासपुर वालों का सत्गुरू हरिदास जी महाराज से बहुत प्रेम था। उनके तीन लड़कियां थी। जब

उनके घर चौथी लड़की ने जन्म लिया। तो श्री कर्म चंद जी महाराज पास आए और कहने लगे कि,''महाराज जी, इस बार भी लड़की पैदा हुई है। हम पर कृपा करो।'' महाराज जी ने वचन किए कि,''इस लड़की ने ही आपको तारना है। आप भजन सिमरन करते रहना।'' उस लड़की का नाम सुनीता रखा गया। उस के बाद उनके घर दो लड़कों ने जन्म लिया। श्री कर्म चंद जी बताते हैं कि,''जब से इस लड़की का जन्म हुआ है उस समय से हमारे दिन बदल गए।'' समय पाकर महाराज जी के वचनों के अनुसार उनकी बड़ी लड़की कैनेडा चले गई और उस ने अपने माता-पिता अपने बहन भाईयों को कैनेडा बुला लिया। आज वह सारा परिवार महाराज जी की कृपा से कैनेडा रह रहा है, यह सब कृपा महाराज सरवण दास जी की है।

साखी नंबर: 349

अपने सेवकों के आप रखवाले

श्री रतन सिंह बीबी भागो जी वासी मन्नण वाले महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। उनके तीन पुत्र दिलावर सिंह, सुच्चा सिंह, गुरदीप सिंह थे। सुच्चा सिंह और गुरदीप सिंह बाहर खेत में सोया करते थे। एक रात वह सोए हुए थे कि रात को चोर आ गए। चोर उनकी ट्राली लेकर जा रहे थे। उधर सोए हुए सुच्चा सिंह और गुरदीप सिंह को महाराज जी ने सपना दिखाया, कि उनके ऊपर से गाड़ी जा रही है, जिस कारण वह डर कर नींद से जाग गए। उनके जागने के कारण चोर ट्राली छोड़कर भाग गए। सुबह उनकी माता बीबी भागो डेरे में आए और महाराज जी को कहने लगे,''महाराज जी, रात को हमारे चोरी होने से बच गई।''तो महाराज जी ने कहा कि,''कोई बात नहीं भला हो गया।'' इस तरह महाराज जी अपने सेवकों की हर तरह से रक्षा करते हैं।

साखी नंबर: 350

श्री गुरदास राम जी का अंतिम समय

श्री गुरदास राम जी का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। उन्होंने अपने घर में महाराज जी की याद में मंदिर बनवाया हुआ था। तिथि 7 दिसंबर 2011 को श्री गुरदास राम जी इस संसार को अलविदा कह गए पर अपने अंतिम समय से पहले उन्होंने बताया कि,''अब मेरी कोई इच्छा बाकी नहीं है। मेरे सत्गुरू महाराज सरवण दास जी आए थे, तो उन्होंने मेरे जाने का समय बता दिया है और वह स्थान दिखा दिया है। जहाँ मैंने जाना है। इस लिए

आप सारी रात भजन सिमरन करते रहना। तिथि 7 दिसंबर 2011 को उन्होंने बताया कि मेरे सतगुरू महाराज सरवण दास जी मुझे लेने आ गए हैं।'' इस तरह श्री गुरदास राम जी इस फानी संसार को अलविदा कहते हुए गुरू चरणों में विराजमान हुए।

सत्गुरू सरवण दास जी ने अपने सेवक पर कर्म कमाया,
सेवक गुरदास राम जी ने जीवन गुरू के चरणों में लगाया
संकल्प सत्गुरू रविदास के रूप,साधु को गुरू बनाना।
मन आनंद हो गया गुरू सरवण दास के रूप में आना।
गुरू प्राप्त करके सत्गुरू रविदास है पाया।
सत्गुरू सरवण दास जी ने अपने सेवक पर कर्म कमाया।
इच्छा हर समय रहबर की याद में घर बताऊँ।
भगवान रूप गुरू सरवण दास जी शोभा हर दम गाऊँ।
नेक कमाई करके तीन मंज़िलों अस्थान बनाया।
सत्गुरू सरवण दास जी ने अपने सेवक पर कर्म कमाया।
बीबी बचनी बीमार हो गई,डाक्टरों ने जवाब सुनाया।
सत्गुरू सरवण दास जी ने एक की बजाय दो पुत्रों का हुक्म सुनाया।
कहा हाथ जोड़ कर, बड़ा पुत्र आपके चरणों में लगाया।
सत्गुरू सरवण दास जी ने अपने सेवक पर कर्म कमाया।
भजन सिमरन कर लोक परलोक सुखी बनाया।
गुरू पूरे ने बेगमपुर में पहला स्थान दिखाया।
चिंता कोई नहीं है गुरू सरवण दास जी है मुझे लेने आए।
सत्गुरू सरवण दास जी ने अपने सेवक पर कर्म कमाया।
सेवक गुरदास राम जी ने जीवन गुरू के लेखे लगाया।

साखी नंबर: 351

स.पूरन सिंह के परिवार पर कृपा करनी

स.पूरन सिंह बीबी माहो जी वासी किशनगढ़ वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। सन् 1970-71 की बात है, कि स.पूरन सिंह पर कोई केस चल रहा था। उन्होंने अपने पुत्र महेन्द्र सिंह को महाराज जी के चरणों में निवेदन करने भेजा। महेन्द्र सिंह ने मन में सोचा कि,''मैंने सीधे

महाराज जी के ही दर्शन करने हैं।'' इस लिए वह रात को ही घर से चल पड़ा रात के एक बजे महाराज सरवण दास जी उस को नहर पर मिले और कहने लगे कि,''तुमने हमें सारी रात परेशान किया जाओ, तुम्हारे सारे काम हो जाएँगे।'' उन पर जो केस चल रहा था। वह केस से बरी हो गए। इस तरह महाराज सरवण दास जी ने पूरन सिंह के परिवार पर कृपा की।

साखी नंबर: 352

श्री पाल चंद जी के दु:खों को दूर करना

श्री पाल चंद जी सुपुत्र श्री हजारा राम जी वासी गांव बडाला वाले महाराज सरवण दास जी के सेवक थे। उन्होंने बताया कि वह जब भी रोटी खाते थे तो उनके सीने में बहुत दर्द होता था। उन्होंने इस तकलीफ का बहुत इलाज़ करवाया, बहुत दवाईयां खाई पर आराम नहीं आया। आखिर दवाईयां खा-खा कर वह निराश हो गए, तो एक दिन उन्होंने सोचा कि,''क्यों न मैं अपना हाल संत सरवण दास जी महाराज को बता दूं।'' एक दिन सुबह उठते ही उन्होंने सोचा कि चाहे कुछ भी हो जाए आज मैंने डेरे बल्लां में जाना ही है। जब वह डेरे पहुँचे तो सामने संत सरवण दास जी महाराज बैठे थे। वह अभी नमस्कार करने चले ही थे महाराज जी आप ही उसके पास आकर उसका तबीयत के बारे पूछने लगे और कहा,''तुमने तो सुबह का हमें दु:खी किया है, आज तुम्हारा दु:ख खत्म कर देना है।'' पाल चंद को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि महाराज जी क्या कर रहें है? महाराज जी ने गुस्से में आकर उसके मुँह पर चांटा मार दिया और कहा कि,''आज तुम्हारा सवाल हल कर देना है। फिर महाराज जी ने हवाईगर(संत निरंजन दास जी मौजूदा गद्दी नशीन)को हुक्म किया कि,''पानी लाओ।'' और उन्होंने पानी पाल चंद के मुँह पर मारा। महाराज जी ने सेवादारों को हुक्म किया कि,''इस को मीठे प्रशादे खिला कर निहाल करो।'' श्री पाल चंद जी बताते हैं कि,''मीठे प्रशादे खाने के बाद आज तक इतनी आयु होने तक मुझे कभी दर्द नहीं हुई।'' श्री पाल चंद जी कहते हैं, कि ,''धन्य है, संत सरवण दास जी महाराज जो स्वयं परमात्मा का रूप थे। उन जैसे गुरू ढूंढने बहुत मुश्किल है। इस तरह संत सरवण दास जी महाराज जी ने श्री पाल चंद के दु:खों को दूर किया। धन्य-धन्य हैं संत सरवण दास गुरू।

सेवक गाँव बडाला का रहने वाला,

बाबा हज़ारा का पुत्र है पाल कहते।
रोटी खाते सीने में दर्द होती,
डाला पीड़ ने अधिक था जाल कहते।
दवाई खा-खाकर बहुत परेशान हुआ,
आए आराम न हुआ बेहाल कहते।
एक दिन सोचा गुरू जी को चल बताऊँ
गुरू सरवण दास जी ताई हाल कहते।
सुबह उठे बल्लां जाने के लिए,
नहीं रूकना चाहे आए भूकम्प कहते।
जब कुटिया में जा पहुँचे थे।
आगे बैठे थे गुरू सरवण दास कमाल कहते।
अभी चला था नमस्कार करने,
आप ही आ गए गुरू पहचान हाल कहते।
गुरू जी ने कहा सुबह का है तुमने परेशान किया,
आज छोड़ना है निकाल तुझे।
समझ आए न पाल चंद ताई,
गुरू जी ने कहा रोहब के साथ कहा।
फिर मुँह पर चांटा मारा,
हल करना है तुम्हारा सवाल कहते।
हुक्म किया हवाईघर दो पानी,
फिर मुँह पर मारा पानी उछाल कहते।
मीठे प्रशादे छकाओ इसको सेवादारों,
हुक्म किया है करो निहाल कहते।
उस समय से कभी नहीं दर्द हुई,
रोटी खाई है आयु के वर्ष कहते।
धन्य-धन्य है संत सरवण दास गुरू,
आज तक कहता है देख लो पाल कहते।
संत सरवण दास जैसे गुरू मिलने नहीं,

'कैले' होते जो रूप अकाल कहते।

साखी नंबरः 353
सुखविंदर लाल के कार्य पूर्ण करने

श्री आत्मा राम बीबी धर्म कौर जी वासी गाँव दोलीके वालों का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत थे। सन् 1993 ई. की बात है कि आत्मा राम जी का लड़का सुखविंदर लाल जो कि दुबई गए हुए थे वह बहुत मुसीबत में फंस गया था उसका पासपोर्ट गुम गया था। इसी कारण सभी घर में बहुत परेशान थे। सुखविंदर लाल का भाई सुखदेव जो कि घर से महाराज जी के दर्शनों के लिए आया था पर रास्ते में वह और ही कहीं चला गया था और अपने भाई के बारे में बात की तो उस व्यक्ति ने कहा कि,"आपका काम ठीक नहीं होगा।" यह सुनकर सुखदेव लाल परेशान हो गया और डेरे आ गया आगे संत गरीब दास महाराज जी बैठे हुए थे तो उसको कहने लगे,"आ गया और कहीं घूमकर, जा महाराज सरवण दास जी की कृपा से आपका काम हो जाएगा।" उधर दुबई में सुखविंदर लाल ने दुबई सरकार से बातचीत की तो उसका पासपोर्ट भी मिल गया और सारा कार्य ठीक हो गया। इस तरह महाराज सरवण दास जी ने श्री सुखविंदर लाल जी पर कृपा की।

साखी नंबरः 354
मन की बात जानना

श्री कर्म चंद जी वासी अलीपुर महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। वह किंग अलगोज़े बजाते थे और कीर्तन करते थे। एक बार श्री कर्म चंद जी और उनके साथियों ने डेरे आने की सलाह बनाई। जब वह घर से डेरे को चले तो दूसरे व्यक्ति कहने लगे कि,"हम लेट हो गए हैं, अब हमने डेरे लंगर खाने के लिए जाना है।" तो श्री कर्म चंद जी कहने लगे कि,"हमने डेरे ज़रूर जाना है।" जब वह डेरे पहुँचे महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी कहने लगे,"आप कहते थे कि डेरे लंगर खाने जाना है।" महाराज जी के मुख से यह वचन सुनकर वह सभी हैरान हो गए। इस तरह अंतर्यामी सत्गुरू अपने सेवकों के मन की हर बात को जान लेते थे।

साखी नंबरः 355

स. सवरन सिंह को बचाना

स.सवरन सिंह बीबी गुरबचन कौर वासी गाँव बल्लां(आजकल यू.के.)महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। सन् 1963 ई. की बात है कि स.सवरन सिंह पीलीभीत(यू.पी.)में नौकरी करते थे। एक दिन वह कैलाश नदी पर गए तो वह नदी में गिर गए और वह डूबने लगे उन्होंने महाराज सरवण दास जी को याद किया। वह बताते हैं कि,''महाराज जी ने उनको सिर से पकड़ कर बाहर निकाल लिया।'' इस के बाद जब वह डेरे में आए तो महाराज जी ने उनको कहा कि,''आगे से गहरे पानी में नहीं जाना।'' इस प्रकार महाराज जी ने सवरन सिंह की रक्षा की।

साखी नंबर: 356

संत नहीं मरते

1972 ई. की बात है कि महाराज जी 11जून 1972 ई. को अपना शरीर त्याग गए। 12 जून 1972 को सवरन सिंह अपने खेतों में प्रात:काल हल चला रहा था तो महाराज जी ने उसको दर्शन दिये। जब वह हल चला कर घर वापिस आया तो किसी ने उसको बताया कि,''महाराज जी, कल सचखंड जा विराजे हैं।'' तो सवरन सिंह ने कहा कि,''महाराज जी, तो मुझे अभी ही खेतों में मिले है उनके पैरों के निशान अभी भी वहीं हैं।'' इस तरह महाराज जी इस संसार से जाने के बाद भी अपने सेवकों के अंग-संग रहते हैं।

साखी नंबर: 357

सेवक का विश्वास

श्री मुलख राज जी अबादपुर वाले बल्लां डेरे के उपासक हैं। आपका बचपन बल्लां में अपने ताया जी के घर बीता। इसी दौरान ही संत हरिदास महाराज जी की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संत हरिदास महाराज जी प्रेम से आपको 'नीला' कहकर बुलाते थे। कुछ समय के बाद मैं काम के लिए अरब देश में चला गया। कुछ वर्ष पश्चात् मैं भारत आ गया। मैं हरिदास महाराज जी की तस्वीर हमेशा अपने पास रखता था। जब मैं दिल्ली से जालंधर आने वाली बस में बैठा तो मैंने अपना सारा सामान बस के ऊपर रख दिया और वह बैग जिस में महाराज जी की पवित्र तस्वीर रखी हुई थी। वह अपनी गोद में रखकर ड्राइवर के सामने वाली सीट पर बैठ गया। जब बस राजपुर के पास पहुँची तो बस का ट्रक के साथ भयानक एक्सीडैंट हो गया।

बस और ट्रक की इतनी ज़ोर से टक्कर हुई कि बस के शीशे टूट गए। ड्राइवर वाला शीशा भी टूट गया। पर जिस तरफ मैं बैठा हुआ था वह शीशा न टूटा और मैंने वह बैग ज़ोर से पकड़कर अपने गले से लगा लिया। बस में बैठी सभी सवारियां और ड्राइवर गंभीर ज़ख्मी हो गए। पर महाराज जी की कृपा से मेरे शरीर पर एक भी खरोंच तक नहीं लगी बल्कि मैं ज़ख्मी सवारियों को बस में से बाहर निकालने में लोगों की मदद करने लगा। इस प्रकार महाराज जी हमेशा अपने सेवकों के साथ रहकर उनकी सहायता करते हैं।''

साखी नंबर: 358

संगतों का प्रेम संतों को खींच लेता है

श्री मुलख राज जी अबादपुर वाले बचपन से ही बल्लां डेरे के उपासक थे। वह बताते है कि एक बार अबादपुर में सत्गुरू रविदास मंदिर में सत्संग आयोजन किया गया जिसमें उस समय गद्दी नशीन 108संत हरिदास महाराज जी ने आना था। वह मंदिर जहां सत्संग करवाया जाना था। वह उनके घर के बहुत नज़दीक था। जब मुलख राज जी को इस बात का पता चला कि आज मेरे सत्गुरू ने आना है तो उन्होंने काम से छुट्टी ले ली। वह बताते हैं कि,''मेरी पत्नी ने कहा कि आज महाराज जी को घर लेकर ही आना है और मुझे कुछ काम होने के कारण मैं बाज़ार चला गया और पत्नी को महाराज जी के आने का ध्यान रखने के लिए कह गया। पर मुझे बाज़ार में बहुत समय लग गया और महाराज जी मंदिर आ कर चले गए। जब मैं घर पहुँचा तो मेरी पत्नी मेरे साथब हुतझ ागड़ी।''अ ौरक हा ि क,''हमारी ि कस्मतम ेंह ीन हींथ ा ि क महाराज जी हमारे घर में चरण डालें।'' मैंने कहा कि,''अपनी किस्मत ही खराब है कि भगवान् दर पर आ कर वापिस चले गए।'' इतनी देर में महाराज हरिदास जी की जीप का हॉर्न बजा और महाराज जी ने दरवाज़ा खटखटाया और कहा,''नीले, झगड़ो मत हम आ गए हैं, लो जो करवाना है करवा लो हमसे।'' इस पर हमारी हैरानी की कोई हद न रही और खुशी में हमारे पांव ज़मीन पर नहीं लग रहे थे। उस समय महाराज जी के साथ संत रामानंद जी महाराज और श्री बेली राम जी बल्लां वाले भी थे। श्री बेली राम जी ने बताया कि,''महाराज जी, बूटा मंडी में किसी के घर बैठे हुए थे, उन्होंने महाराज जी को दूध का गिलास पकड़ाया पर महाराज जी ने वह न पिया।'' और कहा,''हमें बहुत जल्दी है।'' और गाड़ी में बैठ कर फिर इधर ही आने को

कहा और आपके दरवाज़े के आगे आ कर गाड़ी रोकने के लिए कहा। इस प्रकार महाराज जी अपने प्रेमियों की बातें जान लेते थे।

साखी नंबर: 359

व्यर्थ न जाए जन की अरदास

श्री मुलख राज जी अबादपुर वाले बताते हैं कि एक बार मेरी टांगों और कमर में बहुत दर्द शुरू हो गई जिसका मैंने बहुत इलाज़ करवाया पर मुझे कोई फर्क न पड़ा। इसके दौरान वह रोज़ी-रोटी से भी मोहताज हो गए। फिर मकर सक्रांति के पवित्र दिन उन्होंने कहा कि,''आज मैंने डेरे जाना ही है।'' पर उनकी तबीयत इतनी खराब थी कि एक कदम भी चला नहीं जा रहा था। उन दिनों बस बल्लां गेट तक जाती थी आगे पैदल ही जाना पड़ता था।''मैं बल्लां गेट तक पहुँच गया पर आगे मेरे से चला नहीं जा रहा था। मैं रास्ते में बैठ-बैठकर डेरे तक पहुँचा और डेरे पहुँचकर संत हरिदास महाराज जी की समाधि पर नमस्कार करने लगा अचानक ही मेरा रोना निकल गया और मैं बहुत देर ही वहां बैठा रोता रहा और महाराज जी के आगे करता रहा। इस के उपरान्त जब मैं घर आ गया तो सुबह तक मेरी टांगें और कमर बिल्कुल ठीक हो चुके थे। मुझे महसूस ही नहीं हो रहा था कि मेरे कभी दर्द भी हुआ था।''

साखी नंबर: 360

लाल पांव में नहीं रोलते

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की बहुत सुंदर कथा कहानियां सुनने को मिलती हैं। उसी लड़ी की एक बहुत महत्वपूर्ण महिमा इस प्रकार है कि गाँव बड़ी लल्लियां ज़िला जालंधर में एक महाराज जी पर पूर्ण विश्वास रखने वाला श्रद्धालु श्रीमान् जरनैल राम और बीबी ज्ञान कौर जिनका बच्चा रवि किरन बीमारी के कारण बहुत रोने लग पड़ा था। बात की वह चुप न हुए पता नहीं कौन सी बीमारी काका रवि किरन को परेशान करती थी। बहुत लोग आए कोई कहे कि आप बच्चे को किसी जगह ले जाओ तो कोई कहीं कहे। पर श्रीमान् जरनैल राम और बीबी ज्ञान कौर बच्चे को साइकिल पर ही संत सरवण दास महाराज जी की कुटिया में सुबह के समय 9 जून 1972 को ले कर पहुँच गए। जब कुटिया में आए तो हज़ूर बहुत सख्त बीमार थे किसी को भी सेवादारों के इलावा हज़ूर को मिलने नहीं देते थे। बीबी ज्ञान कौर ने बच्चे के साथ महाराज सरवण दास जी के पास अंदर जाने के लिए

सेवादारों को निवेदन किया तो सेवादारों ने मना कर दिया। पर बीबी ज्ञान कौर ने निवेदन किया,"मैंने तो महाराज जी से ज़रूरी मिलना है। मेरा बच्चा तो बहुत परेशान है।" इस तरह बीबी बच्चे को उठा कर हजूर महाराज स्वामी सरवण दास महाराज जी जिस कमरे में बैठे थे अंदर चली गई। हज़ूर महाराज चारपाई पर बैठे थे और चरण धरती पर रखे हुए हैं तो बीबी ने हज़ूर के चरणों में काका रवि किरन को लेटा दिया तो हजूर ने कहा,"बेटी, लाल पांव में नहीं रोलते।" इस को उठा लो और बच्चे के सिर पर हाथ फेरते रहे और साथ ही उच्चारते रहे कि,"इस बच्चे ने देशों-विदेशों की यात्रा करनी है।" बच्चा उसी समय रोना बंद हो गया। आज भी काका रवि किरन, महाराज जी के वचनों से विदेशों की सैर करता है और उनकी की बख्शिश से सुखी जीवन व्यतीत कर रहा है।

साखी नंबर: 361

श्री कर्म चंद और बीबी निर्मल कौर को बच्चों की दात बख्शिश करनी

श्री कर्म चंद बीबी निर्मल कौर को तीन लड़के एक लड़की की दात बख्शिश करनी यह बात लगभग सन् 1973 की है कि श्री कर्म चंद जी बीबी निर्मल कौर वासी गाँव बडाला के नज़दीक बूटा मंडी जालंधर वालों के घर कोई औलाद नहीं थी हो रही शादी हुई को 4-5 वर्ष बीत चुके थे। फिर एक दिन इन्होंने श्री गुरबचन सिंह बी.डी.ओ. साहिब के पास से डेरा सचखंड बल्लां के महापुरूषों की महिमा श्रवण की। एक दिन बी.डी.ओ. साहिब जी श्री कर्म चंद और बीबी निर्मल कौर को आप डेरे लेकर गए। जहां इन्होंने पहली बार श्री 108संत हरिदास महाराज जी के दर्शन किये। इन्होंने महाराज जी के चरणों में औलाद के लिए फरियाद की। महाराज जी ने कहा, "किसी भी तरह की चिंता नहीं करनी सब ठीक हो जाएगा।" फिर आए कुछ वर्ष में ही श्री कर्म चंद और बीबी निर्मल कौर के घर तीन लड़कों ने जन्म लिया। फिर बीबी निर्मल कौर की इच्छा थी कि,"मेरे घर एक लड़की भी हो।" महाराज जी के चरणों में बीबी जी ने फिर लड़की के लिए निवेदन किया तो दया के सागर महाराज जी ने बीबी जी की फरियाद सुनी, इस बार महाराज जी की कृपा से बीबी निर्मल कौर के घर एक बच्ची ने जन्म लिया। आजकल महाराज जी की कृपा से यह परिवार कैनेडा में रह रहे हैं और डेरा सचखंड बल्लां का श्रद्धालु परिवार है।

(स्वयं श्री कुलदीप कैले सुपुत्र श्री कर्म चंद बीबी निर्मल कौर, कैनेडा)

साखी नंबर: 362

संसार चंद को अफ़सर बनाना

श्री लशकर सिंह बीबी प्यारो देवी जी वासी गाँव काले बाहिया वाले महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु हैं। वह 1967 में महाराज जी का सत्संग सुनने के लिए गए। उनका बेटा श्री संसार चंद जी 6–7 वर्ष का थी। महाराज जीन`उ सकोग ोदम`ंउ ठाकरक हाि क,''तुझेह मनेअ फ्सरब नानाह ै।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। आज श्री संसार चंद जी ब्नेजवउ बमदजतंस म्गबपेमे मतअपबम ज्ंग ब्वउउपेपवदमत में नौकरी कर रहे हैं।

साखी नंबर: 363

श्री लख्मी दास जी की रक्षा करनी

श्री लख्मी दास जी थानेदार मोहल्ला कोट रामदास जालंधर(पहले गाँव रायेपुर)के रहने वाले थे। उनको री की समस्या थी। उनको किसी वैद्य ने कम्बोज की सब्ज़ी खाने के लिए कहा, जिसके भूल से उन्होंने धतूरा खा लिया। जिससे सारा परिवार बेहोश हो गया। फिर उनके सारे परिवार को जालंधर के सिविल अस्पताल दाखिल करवाया गया। उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी और पागलपन की हालत में थे। जिनको तीसरे दिन संत सरवण दास महाराज जी ने दर्शन दिये और श्री लख्मी दास जी को होश आया। उन्होंने अपने परिवार को संतों के उपकार(महिमा)बारे में बताया। आज भी सारा परिवार डेरा बल्लां के श्रद्धालु परिवार है। जिनके बेटे श्री सतपाल जी आजकल संगरूर में सीनियर डिविज़नल मैनेज़र है।

साखी नंबर: 364

बीबी विद्या जी की मनोकामना पूर्ण करनी

श्री पाला राम जी और बीबी गाबी जी महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु थे। उनके लड़के का नाम अमर नाथ था जो कि 1959 में इंग्लैंड चले गए। उसकी शादी बीबी विद्या जी से सन् 1966में हुई। बीबी विद्या जी जानते थे कि श्री अमर नाथ जी का सारा परिवार महाराज सरवण दास जी के श्रद्धालु है। उनके मन की श्रद्धा थी कि महाराज सरवण दास जी उनको दर्शन दें। संत सरवण दास महाराज जी तो आप अंतर्यामी थे, इस लिए महाराज जी ने उनको शादी से एक दिन पहले इंग्लैंड में प्रत्यक्ष दर्शन दिये।

साखी नंबर: 365

संत हरि दास जी की ओर से दरवाज़ा खटखटाना

श्री अमर नाथ जी और बीबी विद्या जी का महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। 1975 की बात है कि श्री अमर नाथ जी और बीबी विद्या जी आपस में बातें कर रहे थे कि संत सरवण दास जी महाराज तो प्रात:काल 4बजे ही खूंडा मारकर दरवाज़ा खटखटाया करते थे और अपने श्रद्धालुओं को जगा देते थे और भजन करने के लिए प्रेरित करते थे। पर संत हरि दास महाराज जी तो उठते ही नहीं और न ही किसी का दरवाज़ा खटखटाते है। दूसरे दिन प्रात:काल 4बजे संत हरि दास महाराज जी ने श्री अमर नाथ जी का दरवाज़ा उसी तरह खटखटाया जिस तरह संत सरवण दास जी महाराज खटखटाया करते थे। संत हरि दास महाराज जी ने श्री अमर नाथ जी को कहा कि,'' आप तो कहते थे कि संत हरि दास महाराज जी तो किसी का दरवाज़ा खटखटाते ही नहीं।'' श्री अमर नाथ जी और बीबी विद्या जी यह बात सुनकर हैरान हो गए और उन्होंने संत हरि दास महाराज जी से माफी मांगी। इस प्रकार अंतर्यामी महाराज जी अपने प्रेमियों की बातें लेते है।

साखी नंबर: 366

व्रत नहीं रखने

श्री अमर नाथ जी बीबी विद्या जी बरमिंघम वालों का महाराज गरीब दास जी के साथ बहुत प्रेम था। एक बार की बात है कि बीबी विद्या जी ने व्रत रखने शुरू कर दिये। उन्होंने 12 व्रत रखे और यह प्रण लिया कि 12वें व्रत पर महाराज जी मुझे दर्शन देंगे। जब उनका 12वां व्रत था तो महाराज जी बरमिंघम यू.के. चले गए और बीबी विद्या जी को दर्शन दिये। महाराज जी ने कहा कि,'' दर्शन तो हमने आपको दे ही देने थे आपने व्रत क्यों रखे?'' संत गरीब दास महाराज जी ने कहा कि,'' आगे से व्रत नहीं रखने।''

साखी नंबर: 367

बाहर जाकर हमें पत्र लिखना

श्री सोहन लाल विरदी और बीबी लक्ष्मी जी उनके सुपुत्र श्री सतपाल विरदी वकील साहिब महाराज जी पास आए उन्होंने महाराज जी के चरणों में अरदास की कि,'' महाराज जी, हमारे घर गरीबी बहुत है और मेरी सात बहनें हैं ।'' महाराज जी ने कहा कि,'' तुम बाहर(विदेश)जाकर हमें पत्र लिखना।'' महाराज जी के वचन अटल हुए, कुछ दिनों के बाद श्री सतपाल विरदी जी

ईरान चले गए।

साखी नंबरः 368

श्री सतपाल जी की रक्षा करनी

श्री सतपाल जी ईरान चले गए। 1980 की बात है कि ईरान में बहुत भयानक भूकम्प आया। श्री सतपाल जी अपनी बेसमैंट में सोये हुए थे। महाराज हरि दास जी ने उनको उठाया और उनको बेसमैंट में से बाहर ले आए। कुछ देर बाद बेसमैंट तबाह हो गई। इस प्रकार संत हरि दास जी ने अपने सेवक की रक्षा की।

साखी नंबरः 369

यहां से ही सड़कें बनाते जाओ

धारीवाल कादियां निवासी श्री दाना राम जी संतों के सेवक थे। एक बार वह संत हरि दास महाराज जी के पास आए तो कहते कि,''सड़कों के टैंडर होने हैं।'' पर महाराज जी ने चाय पानी पी कर आने को कहा। जब दाना राम जी चाय पानी पी कर आए तो महाराज जी ने टैंडर से सम्बन्धित कोई बात नहीं की। दाना राम जी के साथ आया आदमी उनके साथ मज़ाक करने लगा कि,''आपका तो संतों पर बहुत विश्वास है, पर संतों ने तो आपके साथ टैंडर सम्बन्धी कोई बात नहीं की।'' श्री दाना राम जी दूसरी बार फिर महाराज जी के पास आए, दूसरी बार फिर इसी तरह ही हुआ, श्री दाना राम जी के साथ आया व्यक्ति फिर इसी तरह मज़ाक करने लगा पर दाना राम जी का संतों पर बहुत विश्वास था। दाना राम जी फिर तीसरी बार टैंडर सम्बन्धी मांग लेकर गए तो संतों ने वचन किये,''यहां से ही सड़कें बनाते जाओ।'' इस प्रकार संत हरि दास महाराज जी ने दाना राम जी पर कृपा की।

साखी नंबरः 370

आसान काम मिलेगा

श्रीमान् देवी दत्ता बीबी सवरन कौर जी का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनके सुपुत्र श्री सवरन दास बंगड़ जी भी डेरे आया करते थे। उन्होंने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के पास रह कर विद्या प्राप्त की। 1954 श्री सवरन दास बंगड़ जी ने दसवीं पास की। इससे पहले श्री फकीर सिंह, श्री सवरन सिंह और ज्ञानी बिशना राम ने भी महाराज जी से विद्या प्राप्त करके दसवीं पास की। 1956में श्री सवरन दास बंगड़ की

शादी बीबी रेशम कौर जी के साथ हुई। बीबी रेशम कौर जी भी डेरे आया करते थे। 1962 में महाराज स्वामी सरवण दास जी ने श्री सवरन दास बंगड़ को कहा कि,''तुझे इंग्लैंड भेजना है, पर तुम से भारी काम नहीं होगा वहां तो काम करते रटन पड़ जाते हैं।'' फिर कहा कि,''तुम्हें वहां आसान काम ही मिलेगा।'' श्री सवरन दास बंगड़ की राहदारी श्री बूटा राम जी ने भेजी। महाराज जी के वचन अटल हुए वहां जाकर उनको कारों की फैक्टरी में ऑपरेटर का काम मिला।

साखी नंबरः 371

अध्यात्मिक मार्ग

बीबी रेशम कौर जी प्रतिदिन सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के दर्शन करने के लिए आया करते थे। फसल की कटाई के दिन थे। एक दिन बीबी रेशम कौर जी बल्लां से डेरे को दूध लेकर आ रही थी। इधर महाराज जी ने हवाईगर को कहा कि,''बीबी रेशम कौर अकेली डेरे को आ रही है, तुम उसको लेकर आओ।'' हवाईगर जी बीबी रेशम कौर को डेरे ले आए। स्वामी सरवण दास महाराज जी ने उनको अपने पास बिठाकर भजन सिमरन करने का तरीका बताया और भजन की पाँच अवस्थाऐं-पाँच शब्द, अर्थ, मकाम, स्थितियां और आवाजें बताई।

साखी नंबरः 372

प्रत्यक्ष दर्शन

बीबी रेशम कौर जी इंग्लैंड चली गई। वहां जाकर उन्होंने महाराज जी के लिए सेवा रखी पर वह भेज न सकी। 11 जून 1972 को सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी अपना शरीर त्याग गए। फिर महाराज जी प्रगट हुए और उनको याद करवाया कि उन्होंने सेवा नहीं चढ़ाई। फिर उन्होंने वह सेवा चढ़ाई। यह परिवार हर वर्ष आँखों का मुफ़्त कैंप डेरे में लगाते है और अन्य सेवायें डेरे के लिए करते हैं। यह परिवार दानी परिवार है।

साखी नंबरः 373

दो हफ़्ते रूक जाओ

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की कृपा से श्री सवरन दास बंगड़ बीबी रेशम कौर इंग्लैंड चले गए। वह हर वर्ष डेरे आते। सन् 1994 ई. जब बीबी रेशम कौर डेरे आई और जब वापिस जाने लगी तो संत गरीब दास

महाराज जी कहने लगे कि,''दो हफ्ते रूक जाओ।'' पर बीबी रेशम कौर चली गई। दूसरे हफ्ते के आखिरी दिन संत गरीब दास जी महाराज 23 जुलाई 1994 को अपना शरीर त्याग गए।

साखी नंबर: 374

महाराज जी का अलोप होना

श्री मोहन सिंह बीबी गुरमीत कौर जी सरदार बंता सिंह की बहन जी थे। एक बार श्री मोहन सिंह जी बहुत बीमार हो गए उनको बुखार उतरता ही नहीं था। श्री बंता सिंह ने स्वामी सरवण दास महाराज जी को बताया कि,''मोहन सिंह को बुखार नहीं उतर रहा।'' तो महाराज जी कहने लगे कि,''उनको हमारे पास लेकर आओ।'' जब वह महाराज जी के पास आए तो महाराज जी ने उनको अपने पास बिठाया और उनको आर्शीवाद दिया तो उनका बुखार उतर गया। फिर एक दिन श्री मोहन सिंह जी जो कि कैप्टन थे उनको मिलने आया पर वह महाराज जी को मानता नहीं था। फिर श्री मोहन सिंह जी कैप्टन को साथ लेकर महाराज जी के पास आए। महाराज जी ने उनको कहा कि,''आप आज हमारे पास रात रहो।'' जब वह महाराज जी के पास रात रहे तो प्रात:काल उठकर उन्होंने देखा कि महाराज जी अलोप थे और 4 घंटे अलोप ही रहे। यह कौतुक देखकर वह महाराज जी के चरणों से लग गए।

साखी नंबर: 375

बालकों को प्यार

श्री मोहन सिंह बीबी गुरमीत कौर जी का स्वामी सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। महाराज जी की कृपा से वह इंग्लैंड चले गए। स्वामी सरवणद ासम हाराजज ीन े उ नकोप त्रि लखाअ ौरअ ाखि़रम ें ि लखाया 'बालकों बालिकों को प्यार।' पत्र लिखने वाले ने कहा कि,''महाराज जी, उनके तो लड़कियां ही हैं।'' तो महाराज जी ने कहा,'' अब यह लिखा हुआ मत काटना।'' बाद में महाराज जी की कृपा से उनके दो लड़के हुए।

साखी नंबर: 376

छेकड़ले (आखि़री) मेले

श्री मोहन सिंह और बीबी गुरमीत कौर जी का स्वामी सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। वह अक्सर डेरे आते थे। एक बार बीबी गुरमीत

कौर जी महाराज जी के दर्शन करने के लिए डेरे में आई तो महाराज जी ने उनको कहा कि ,''अब यह अपने छेकड़ले(आख़िरी)मेले हैं।'' बीबी गुरमीत कौर जी यह बात समझ न सके। फिर महाराज जी 11जून को अपना पाँच भौतिक शरीर त्याग कर ब्रह्मलीन हो गए तो बीबी गुरमीत कौर को एहसास हुआ कि,''महाराज जी ने मुझे तो पहले ही बता दिया था कि अब अपने आख़िरी मेले हैं पर मैं ही समझ नहीं सकी।''

साखी नंबरः 377

पैसे ख़त्म नहीं होंगे

श्री अमर सिंह बीबी छिन्नो जी रायेपुर रसूलपुर के रहने वाले थे। उनका स्वामी सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। महाराज जी की कृपा के साथ अमर सिंह जी इंग्लैंड चले गए। पर बीबी छिन्नो जी का काम नहीं बन रहा था। बीबी छिन्नो जी महाराज जी पास आए और महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''मेरा काम नहीं बन रहा।'' महाराज जी ने वचन किया कि ,''तुम जल्दी ही इंग्लैंड चली जाओगी और तुम्हारे पास पैसों की कभी कोई कमी नहीं होगी।'' महाराज जी की कृपा से वह इंग्लैंड चली गई और आज वह बताते हैं कि,'' महाराज जी की कृपा से हमारे पास कभी पैसे की कमी नहीं हुई। यह सब संत सरवण दास महाराज जी का आर्शीवाद है।''

साखी नंबरः 378

श्री धर्मपाल जी पर कृपा करनी

श्री धर्मपाल जी रामनगर वालों का सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। वह रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर की नौकरी करते थे। 1962 में महाराज जी की कृपा से वह इंग्लैंड चले गए। महाराज जी ने उनको वचन किये थे कि,''तुझे इंग्लैंड में भी इसी तरह का ही काम मिलेगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए वहां उनको रेलवे में ही नौकरी मिल गई और वह रेलवे में 34 वर्ष नौकरी करने के बाद सुपरवाईजर रिटायर हुए।

साखी नंबरः 379

श्री धर्मपाल की रक्षा करनी

सन् 1963 ई.की बात है श्री धर्मपाल जी मशीन पर काम करते थे। मशीन पर काम करते उनकी बाजू मशीन में आने लगी थी पर महाराज जी की

कृपा से उनका बचाव हो गया। इधर श्री प्यारा लाल मडार जी भी उस दिन डेरे पहुँचे थे और महाराज जी को कहने लगे कि,''धर्मपाल का बचाव हो गया है।'' जब श्री धर्मपाल जी घर पहुँचे तो घर में महाराज जी की और से भेजा गया पत्र पड़ा हुआ था,''मशीनों का काम ध्यान से करना चाहिए, तुझे बचा लिया।''

साखी नंबरः 380

ऊँचे ओहदे(पद)

सेठ भुल्ला राम जी बीबी किरपो जी महाराज स्वामी सरवण दास जी के सेवक थे। उनके बच्चे श्री श्रद्धा राम, श्री बोनी राम, श्री रतन चंद, श्री पूर्ण चंद और श्री प्यारे लाल थे। महाराज जी के आर्शीवाद के साथ श्री रतन चंद, श्री पूर्ण चंद और श्री प्यारे लाल मडार ने बी.ए. पास की। श्री रतन चंद पंजाब में से प्रथम स्थान पर आए। महाराज जी ने वचन किये कि,''आप बड़े सरकारी ओहदे पर लगोगे। महाराज जी के वचन अटल हुए उनको Intelligence Bureo of India में नौकरी मिल गई और वह उस में से Deputy Director रिटायर हुए।

साखी नंबरः 381

फ्लाइट हमारा इन्तज़ार कर रही है

सन् 1991 ई. की बात है संत गरीब दास महाराज जी और संत रामानंद जी महाराज इंग्लैंड गए। वहां उनके साथ श्री प्यारे लाल मडार, श्री हरबंस लाल शौंकी, श्री निर्मल चंदड़, श्री धर्म सिंह, श्री संता सिंह, श्री चरन दास रत्तू, श्री राम किशन महिमी, श्री सवरन दास बंगड़ और अन्य सेवादारों के साथ डॉ. बलदेव मडार के घर से सैकरामैंटो के लिए रवाना हुए। रास्ते में डॉ.बलदेव को खबर मिली कि सैवन ब्रिज पर हादसा हो गया आगे रास्ता बंद है,अपनी फ्लाइट मिस हो जानी है उन्होंने महाराज जी को बताया कि,''महाराज जी, रास्ता बंद है और फ्लाइट मिस हो जानी है तो संत गरीब दास जी महाराज कहने लगे कि,''फ्लाइट हमारा इन्तज़ार कर रही है।'' जब वह एयरपोर्ट पर पहुँचे तो फ्लाइट एक घंटा लेट थी तो एयरपोर्ट वालों ने कहा कि,''शायद हमारा जहाज़ चलना ही नहीं था आपके कारण चल पड़ा है।''

साखी नंबरः 382

औलाद की बख्शिश

श्री शंकर सिंह बीबी भागो जी वासी हरखोवाल वालों की शादी को 10 वर्ष हो चुके थे पर उनके कोई औलाद नहीं थी। उन्होंने सभी अस्पताल घूम लिये। बीबी भागो की बहन बीबी माहो नंगल बाधा रहती थी। श्री हजारा राम बधन और बीबी माहो बीबी भागो को साथ लेकर संत सरवण दास महाराज जी पास 10 जून को पहुँची। उन्होंने महाराज जी को सारी बात बताई महाराज जी ने कहा कि,''इधर-उधर नहीं घूमना, डेरे आना है।'' इस प्रकार वह डेरे आने लगे। महाराज जी की कृपा से अगले वर्ष उनके पहला बच्चा हुआ। इस प्रकार उनके तीन बच्चे हुए बलविंदर, नरेन्द्र और अवतार।

साखी नंबर: 383

औलाद की बख्शिश करनी

श्री गुरदयाल सिंह बीबी हर कौर जी अबादपुर के रहने वाले थे। उनका संत सरवण दास जी महाराज के साथ बहुत प्रेम था। उन्होंने कपूरथला में ज़मीन खरीदी और महाराज जी उनकी ज़मीन में चरण डालने गए। उन्होंने महाराज जी को निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारे कोई बच्चा नहीं है।'' महाराज जी ने उनको आर्शीवाद दिया। महाराज जी के आर्शीवाद से उनके दो बच्चे हुए श्री सोहन सिंह बावा और श्री हरबंस सिंह उन्होंने श्री मोहन सिंह बावा को महाराज जी के चरणों में भेंट कर दिया फिर महाराज जी ने ही उसकी शादी की।

साखी नंबर: 384

घर ले जाओ ठीक हो जाएगा

श्री प्यारे लाल जी ब्यास गांव के रहने वाले थे उनकी शादी बीबी प्रसन्न कौर जी से हुआ। इनका महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। 1952 में श्री प्यारे लाल जी इंग्लैंड चले गए। उनका सुपुत्र श्री राज कुमार 1956में बीमार हो गया उसका बहुत इलाज़ करवाया पर वह ठीक न हुआ, डॉक्टरों ने उस को जवाब दे दिया। उसको संत स्वामी सरवण दास महाराज जी पास लेकर आए महाराज जी कहने लगे,''इस को घर लेकर जाओ ठीक हो जाएगा।'' घर पहुँचकर वह ठीक हो गया। इस प्रकार महाराज जी के वचन अटल हुए।

साखी नंबर: 385

दिल्ली से ही इंग्लैंड चले जाओ

श्री प्यारे लाल मडार जी इंग्लैंड चले गए। उन्होंने अपने परिवार को इंग्लैंड बुलाने के अनेकों यत्न किये पर विदेश का काम न बना। एक दिन उनकी पत्नी बीबी प्रसन्न कौर, लड़का श्री चमन लाल मडार, श्री राज मडार, श्री किरपाल मडार, बेटी सुनीता, शकुंतला अपने पासपोर्ट लेकर सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि,''महाराज जी, हमारा विदेश का काम नहीं बन रहा कृपा करो।'' महाराज जी ने संत चेतन दास जी को कहा,''इनके गले में हार डाल दो।'' संत चेतन दास जी ने उनके गले में हार डाल दिये। महाराज जी ने कहा कि,''दिल्ली अम्बैसी में जाओ और दिल्ली से ही इंग्लैंड चले जाना।'' संत चेतन दास जी कहनेल गें िक,''अबत ोम हाराजज ीन ेह ारड ालि दयेअ बव ीज़ाल ग जाएगा।''

साखी नंबर: 386

गुरू रविदास जी का अस्थान यहां बनेगा

बीबी परसिन्नी गाँव ऐमा मांगट की रहने वाली थी। उनका महाराज स्वामी सरवण दास महाराज जी से बहुत प्रेम था। उनकी शादी के बाद पति की जल्दी ही मौत हो गई थी। बाद में भी वह डेरे आते रहे। सन् 1968में बीबी जी अपने भाई भजन राम और बीबी अमृत कौर पुत्र सुरिंदर पाल जो कि 4-5 वर्ष का था। महाराज जी के साथ बीबी अमर कौर के घर गए। महाराज जी ने सत्संग किया। उनके घर के साथ एक जगह थी। महाराज जी ने श्रवण किया इसअ स्थानप रग ुरूर विदासज ीक ाअ स्थानब नेगा ास न्2 008मेंउ स अस्थान श्री जगदीश मितल ने महाराज जी को दान कर दिया। अब उस अस्थान पर श्री गुरू रविदास धर्म अस्थान सुशोभित है।

साखी नंबर: 387

बच्चों की दात बख्शिश करना

श्री भगत राम बीबी धन्नी जी सरमस्तपुर के रहने वाले थे। उनका सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के साथ बहुत प्रेम था। उनके बच्चे जन्म लेते ही मर जाते थे। फिर उन्होंने महाराज जी से नाम दान प्राप्त किया। बाद में उनके श्री देव राज, श्री प्रीतम दास, श्री बारू राम, बीबी सुखता और बीबी रोडी जी बच्चे हुए। महाराज जी ने उनको चोला(वस्त्र)घर रखने को

दिये। इस प्रकार महाराज जी के आर्शीवाद से उनके बच्चे हुए।

साखी नंबर: 388

डेरा सचखंड बल्लां में दलित चेतना कान्फ्रैंस

"श्री गुरू रविदास जी की जय"

किसी समाज की उन्नति के लिए दो पक्ष होते हैं एक सियासत और दूसरा धार्मिक पंजाब आदि वासी। पिछड़ी जाति की सियासी उन्नति के लिए सन् 1925 में बाबू मंगू राम जी की अगवाई लेते हुए आदिधर्म के नाम में आंदोलनश ुरूह ुआ ा इ सक ौमिक ेप ंजाबअ ादि-धर्म(शैडयूल्डक ास्ट) फैडरेशन के नाम वाली संस्था के अधीन लगातार जारी रखा गया, जिसका हैड ऑफिस जालंधर शहर में खोला गया और जिसके प्रधान बाबू मंगू राम जी नियुक्त किये गए। इंडिया के स्तर पर इस काम को पूरा करने के लिए एम.सी.राजा मद्रास को भागदौड़ सम्भाली। लेकिन सन् 1928ई. में जब हिन्दुस्तान में साइमन कमिशन आया तो एम.सी.राजा जी योग्य ढंग से काम न करने के कारण उनको इस पद से मुक्त कर दिया गया और उनकी जगह बावा साहिब डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर इंडिया के स्तर पर आगू माने गए। आदि-धर्म (शैडयूल्ड कास्ट) फैडरेशन को सन् 1930 में सरकार की ओर पूरी मान्यता(Recognised)द ी ग ई ।स न्1 935त कत ीनब ारभ ारतम े कमिश्न आए। पहले सन् 1928ई. में रायल कमिशन(सर जॉन रायल कमिशन), सन् 1932 में फ्रैंचाईज़ कमेटी(लार ड लॅथीअन कमेटी) और सन् 1935 में डलिमीटेशन कमेटी(लार्ड लौरी हैमिड कमेटी)। आख़िर इंग्लैंड में तीनग ोलमेज़क ान्फ्रैंसह ुई ।ब ातक ीर ाजाम ुंजेप ैक्ट(एम.सी.राजाअ ौर डॉक्टर मुंजे)और माइनौर टी पैक्ट(डॉक्टर अम्बेडकर और उनके साथी)घोल घुलते रहे। डॉक्टर अम्बेडकर और उनके साथी पिछड़ी जातियों के राज्यकीय हक जुदागाना के तौर पर लेने के लिए कोशिश करते थे, लेकिन एम.सी.राजा इस मांग का विरोध करते थे। आख़िर 1935 में इंडिया एक्ट के अधीन पूना पैक्ट के अनुसार पिछड़ी जातियों को राज्यकीय हक प्राप्त हो गए। पूना पैक्ट बावा साहिब डॉक्टर अम्बेडकर की पार्टी और महात्मा गांधी की पार्टी के परस्पर समझौते को कहते हैं, पिछड़ी जातियों को जो राज्यकीय हक मिले हैं, वह बावा साहिब डॉक्टर अम्बेडकर और बाबू मंगू राम जी की अथक् मेहनत का नतीजा है, सत्य पूछो तो डॉक्टर साहिब भी आदि-धर्म(शैडयूल्ड

कास्ट)फैडरेशन के बल से इंग्लैंड में पिछड़ी जातियों के राज्यकीय हकों के बारे बब्बर शेर की तरह गरजते रहे और अपने काम में सफलता प्राप्त की, इससे स्पष्ट है कि आदि-धर्म मिशन की बुनियाद रखने वाले बाबू मंगू राम जी ही है।

सन् 1932 में लार्ड लॅथीअन कमेटी (फ्रैंचाईज़् कमेटी)के सामने यह बात स्पष्ट हो गई थी कि पंजाब की सभी पिछड़ी जातियां अपने आदि गुरू (सत्गुरू रविदास महाराज जी, महर्षि भगवान वाल्मीकि जी महाराज, सत्गुरू कबीर साहिब जी और सत्गुरू नाम देव जी)आदि के मतानुसार आदि-धर्म है और इनका धार्मिक ग्रंथ आदि-प्रकाश है जो कि सत्गुरू रविदास जी, महर्षि वाल्मीकि जी, सत्गुरू कबीर जी, सत्गुरू नाम देव जी की वाणी आदि। इस बात को मुख्य रखकर श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के आदेश अनुसार सन् 1934 में बाबू मंगू राम, श्री हज़ारा राम जनरल अध्यक्ष और मास्टर लाल चंद जी(वाल्मीकि)फिरोज़पुरी ने काशी में जाकर श्री गुरू रविदास जी के इतिहास और जन्म अस्थान आदि की खोज की, उन दिनों में चमार जाति की आबादी आम तौर पर गांवों और शहरों के पश्चिमी तरफ होती थी, उन आबादियों को चमार माजरा या चमारली कहा जाता था, खोज करने पर पता चला कि सत्गुरू रविदास जी महाराज काशी शहर के एक चमार माजरे में रहते थे, हो सकता है कि उस चमार माजरे का नाम बाद में सीर गोवर्धनपुर रखा गया हो क्योंकि अब वहां ग्वालों व ठाकरों की भी आबादी है, जिस तरह कालू घाट का नाम बदलकर हरि चंद घाट रखा गया और महर्षि वाल्मीकि जी के आश्रम का नाम बदलकर राम तीर्थ रखा गया। इसी तरह चमार माजरे का नाम बदलकर सीर गोवर्धनपुर रखा गया होगा। यहीं ही बस नहीं बल्कि महर्षि वाल्मीकि तीर्थ जिस का नाम आज राम तीर्थ नाम से प्रचलित है, की खोज के बारे में भी, बाबू मंगू राम, श्री हज़ारा राम जी जनरल अध्यक्ष और पंडित बख्शी राम(वाल्मीकि) बडाला कलां जालंधर वालों ने अथक काम किया और कष्ट सहन किये। श्री गुरू रविदास जी के इतिहास की खोज अनुसार इस महा अवतार का जन्म दिन माघ सुदी पूर्णमाशी को मनाया जाना आरम्भ हुआ। सन् 1938 में सत्गुरू रविदास जी के जन्म दिन पर जालंधर शहर में एक विशाल नगर कीर्तन निकाला गया। शोभा यात्रा में हाथी पर श्री रविदास दीप ग्रंथ की सवारी सजाई गई और जगह-जगह जलसे किये गए। इसको देखकर उस समय की पंजाब सरकार(सर सिकंदर हैयात खां की

वज़ारत)ने सत्गुरू रविदास जी के आगमन पूर्व की छुट्टी मनजूर कर दी, यहां ही बस नहीं बल्कि महर्षि वाल्मीकि जी के प्रकाश उत्सव की छुट्टी मनजूर करवाने का भी यत्न किया गया। उस के इलावा काशी शहर से लाई हुई श्री गुरू रविदास जी की मूर्ति को कैलेण्डर के रूप में प्रकाशित करने का अधिकार संत हरनाम दास जी जंडाली ज़िला जालंधर को दिया गया, उन्होंने श्री गुरू रविदास जी के कैलेण्डर बहुत मेहनत से प्रकाशित किये, इससे पहले सत्गुरू रविदास जी का कैलेण्डर और फोटो मिलनी मुश्किल थी। इससे साफ पता चलता है कि आदि गुरूओं के इतिहास की खोज का काम भी आदि-धर्म आंदोलन के समय काफी हुआ। इतना काम होने से उपरोक्त संस्था का सियासत पक्ष आरम्भ हो गया। इस देश में उस समय आदि-धर्म(शैडयूल्ड कास्टस)फैडरेशन की शाखायें, अकालियां वाला ज़िला फिरोजपुर, चूहड़पुर, देहरादून, पुल नंबर 4 कलकत्ता, दसूहा ज़िला होशियारपुर, चम्बा रियासत चम्बा, समुद्री डिचकोट ज़िला लायलपुर, माहिलपुर ज़िला होशियारपुर, मकलोडगंज रोड रियासत बहावलपुर मिंटगुमरी शहर ज़िला मिंटगुमरी, तप्पा खेड़ा ज़िला फ़िरोजपुर, रायेकोट, ज़िला लुधियाना, बनारस यू.पी. शहर और बाहर के देशों में सिंगापुर, न्यूजीलैंड और फिज़ी आदि में चल रही थी। इस सभाओं में से शायद अब भी कई सभायें काम कर रही है। पर धार्मिक पक्ष अधूरा ही पड़ा रहा, क्योंकि यह काम किसी पूर्ण संत के बिना होना मुश्किल था, इस कमी को पूरा करने के लिए पूर्ण संत सरवण दास महाराज जी ने सन् 1965 में पिछड़ी जातियों का इष्ट कायम करने के लिए श्री गुरू रविदास महाराज जी के जन्म अस्थान सीर गोवर्धनपुर(वाराणसी)काशी(यू.पी.)में एक बड़ा मंदिर बनवाने का यत्न किया, इसके इलावा आदि गुरवाणी ग्रंथ(आदि प्रकाश)भी अलग-अलग विद्वान और साधू महात्मा तैयार कर रहे हैं जो कि सम्पूर्ण होने पर प्रकाशित होना सम्भव था चाहे देश में काफी साधू महात्मा, संत और दानी पुरूष हैं, पर आज तक किसी ने भी उस महा अवतार सत्गुरू रविदास महाराज जी के नाम को रौशन करने के लिए उनके जन्म अस्थान पर मंदिर बनाने का कोई यत्न नहीं किया, इस नेक काम के लिए पहले पग संत सरवण दास महाराज जी बल्लां ज़िला जालंधर वालों ने ही उठाया,श्री गुरू रविदास मंदिर सीर गोवर्धनपुर(वाराणसी)काशी (यू.पी.)की नींव संत हरि दास महाराज जी के कर कमलों से रखी गई और आज तक इस के निर्माण पर डेढ़ लाख रूपये के करीब खर्च हो चुका है। इस मंदिर के

निर्माण का काम एक प्रबंधक कमेटी जो सरपरस्ती संत सरवण दास महाराज जी हो रहा है। जिसका हैड आफिस डेरा संत सरवण दास जी बल्लां डाकखाना खास तहसील और ज़िला जालंधर(पंजाब)में है इस की शाखा सीर गोवर्धनपुर डाकखाना हिंदू यूनिवर्सिटी वाराणसी(यू.पी.)में है। दिनांक 2-10-70 को एक मीटिंग हुई जिसमें मंदिर के काम को जल्दी निपटाने के लिए आदि गुरूओं(सत्गुरू रविदास महाराज जी, महर्षि वाल्मीकि जी, सत्गुरू कबीर जी और सत्गुरू नामदेव जी आदि)के नाम पर एक ट्रस्ट रजिस्टिर्ड करवाया जाए तो कि कोई मंदिर, गुरूद्वारा लाइब्रेरी और तालीमी संस्था बिना किसी रूकावट के निभा सके, श्री गुरू रविदास मंदिर सीर गोवर्धनपुर (वाराणसी)काशी(यू.पी.)को निपटाने के लिए अभी तक श्री गुरू रविदास ट्रस्ट जल्दी से जल्दी रजिस्टिर्ड करवाया जाए ताकि मंदिर के निर्माण का काम जल्दी पूरा हो सके। इस मंदिर के ट्रस्ट के प्रधान;बैंपतउंदद्ध परम संत सरवण दासम हाराजज ीब ल्लांा ज़लाज ालंधरह ीह ेंगे।इ सत जवीज़क ेए क पब्लिक कॉन्फ्रैंस बुलाकर बहुत भारी हाज़री में पास करवाया जाए। आख़िर 20-12-70 को दिन रविवार, डेरा संत सरवण दास जी महाराज गांव और डाकखाना बल्लां तहसील तथा ज़िला जालंधरमें एक बहुत भारी कॉन्फैंस बाबू मंगू राम जी प्रधान आदि-धर्म(शैडयूल्ड कास्ट)फैडरैशन की प्रधानगी अधीन हुई जिसमें दस हज़ार के करीब लोगों ने भाग लिया। कॉन्फ्रैंस में निम्न लिखित मते सर्व-समिति से पास हुए।

1. दुनिया के सभी देशों में चाहे सियासी पार्टियां अलग-अलग है पर एक देश में उनकी समाजी पार्टी एक ही है,जिस तरह कि अमेरिका में अमेरिकन, कैनेडियन और रशिया में रशियन आदि। पर इसके विपरीत हिंदुस्तान में सियासी पार्टियों के इलावा समाजी(मज़हबी)पार्टियां भी अलग-अलग हैं, जिस तरह हिंदू, सिख, ईसाई, मुस्लिम है, पर हर एक सियासी और किसी तरफकोई ध्यान न दिया। इस तरह की हालत मज़हबी पार्टियों में पिछड़ी जातियों के लोगों की हालत को ऊँचा करने को देखकर बाबू मंगूराम जी ने सन् 1925 में आदि-धर्म मिशन के नाम पर एक आंदोलन आरम्भ किया जिसका हैड आफिस जालंधर शहर में खोलकर उस संस्था का नाम, की पंजाब आदि-धर्म(शडियूलड कास्ट)फैडरेशन रखा गया। इंडिया स्तर से इसकी अगुवाई बाबा साहिब डॉक्टर बी.आर.अम्बेडर जी कर रहे थे। इस संस्था ने पिछड़ी जातियों की समाजी और सियासी हालत को ऊँचे स्तर

पर लाने का काम शुरू किया, यह संस्था उस समय की सरकार की ओर से सन् 1930 में पिछड़ी हुई जातियों की ज़िम्मेदार संस्था मनज़ूर (Recognised) हुई, इसी संस्था के आंदोलन का सन् 1935 में इंडिया एक्ट के अनुसार पूना पैक्ट के आधारपर गरीब पसमांदा जातियों को सियासी हक प्राप्त हुए, इससे साफपता चलता है कि आदि-धर्म मिशन के बानी बाबू मंगू राम जी हैं। इनके बिना कोई भी आदमी अपने आप को आदि-धर्म मिशन के बानी बताकर लोगों को अंधेरे में रखकर अपना स्वार्थ पूरा करना चाहे तो यह कौम से दिन दीपी धोखा है। इसी लिए ही कॉन्फ्रैंस लोगों के आगे पूरा ज़ोर अपील करती है कि बाबू मंगू राम जी के बिना किसी फर्ज़ी बानी और नकली लीडर की फरेबी हरकतों से बचना और अपना आर्थिक और समाजी नुकसान न करना। बाबू मंगू राम जी तब तक इस आंदोलन(मिशन)के प्रधान रहेंगे, जब तक यह अपनी मौजूदगी में अपना जान निशान चुन न ले। पिछड़ी जातियों का सामाजिक का और सियासी उन्नति का काम आगे को भी बाबू मंगू राम जी की अगवाई के अनुसार (शैडयूलड कास्ट)फैडरेशन जालंधर के द्वारा होता रहेगा। बाबू मंगू राम जी आज भी इस कॉन्फ्रैंस में बैठे हैं। आज इनको सर्व-समिति से प्रधान चुना जाता है और इनको अपने बाकी कार्यकर्ता चुनने का पूरा हक दिया जाता है। जल्दी से जल्दी अपना काम शुरू करने के लिए प्रेरणा की जाती है।

2. परम संत सरवण दास महाराज जी गांव बल्लां डाकखाना खास ज़िला जालंधर एक परोपकारी और उच्चकोटि के महात्मा हैं। इनको गरीब जनता की रक्षा की हर समय ध्यान रहता है। पिछड़ी हुई जातियां ही नहीं बल्कि ऊँची जातियों के लोग भी इनके श्रद्धालु हैं। इन्होंने अपनी नेक कमाई में से माया खर्च कर गुरू रविदास हाई स्कूल जालंधर के लिए एक कमरा तैयार करवा कर दिया है। हरिद्वार में भी दो कमरे बनवाये हैं। इसके इलावा और कई गांवों में जहां भी विवाह घर या स्कूल बनते रहे। वहां भी महात्मा जी काफी मदद करते रहे हैं परंतु फिर भी महात्मा जी की तसल्ली न हुई आख़िर पिछड़ी हुई जातियों का इष्ट कायम करने के लिए इस परोपकारी महात्मा ने उस महा अवतार सत्गुरू रविदास महाराज जी के जन्म स्थान सीर गोवर्धनपुर वाराणसी(काशी शहर)यू.पी. में एक बहुत बड़ा श्री गुरू रविदास मंदिर बनाने का प्रयत्न किया जिसकी नींव संत हरिदास महाराज जी से सन् 1965 में

रखवाई, पंजाब तथा हिंदूस्तान में से और भी साधू महात्मा एवं धनाड्य पुरूष हैं पर किसी भी साधु महात्मा या दानी पुरूष ने श्री गुरू रविदास जी का नाम ऊँचा करवाने के लिए कोई भी प्रयत्न न किया, संत सरवण दास महाराज जी ने इसमें पहले पग उठाया। इसके लिए यह कॉन्फ्रैंस सर्व-सम्मति से परम संत सरवण दास महाराज जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करती है और महात्मा जी की सेवा में निवेदन करती है कि वह अपने इस परोपकार को जारी रखते हुए अपनी कृपा से मंदिर के निर्माण का काम पूरा करवायें।

3. श्री गुरू रविदास मंदिर वाराणसी(सीर गोवर्धनपुर) काशी (यू. पी.) एक प्रबंधक कमेटी ज़ेर सरपरस्ती संत सरवण दास महाराज जी की मार्फत बन रहा है, जिसका हिसाब कमेटी के पास मौजूद है। जितना पैसा मंदिर के निर्माण के लिए एकत्रित होता है वह कमेटी के सुपुर्द किया जाता है, उसमें से ही मंदिर केनिर्माण का काम होता है बल्कि इस फंड के बिना परम संत सरवण दास महाराज जी अपनी निजी पूंजी में से ही माया और अनाज की शक्ल में मंदिर के निर्माण के लिए देते हैं, जनता को मंदिर के निर्माण के खर्च आमदन का हिसाब देखने का हर समय हक है और कमेटी को मंदिर के खर्च आमदन का हिसाब बताने में कोई एतराज़ नहीं है। अगर कोई शख्स संत सरवण दास महाराज जी के पास से दबाव से हिसाब मांगे, उनको बदनाम करें और सारा फंड अपने कब्जे में लेने की धमकी दे तो यह सब बेसमझी और मूर्खता है। इस के लिए यह कॉन्फ्रैंस सर्व-समिति से पास करती है कि ऐसे आदमी के खिलाफ़ कानूनी(इज्ज़त हतक) कारवाई की जाए।

4.श्र ीग ुरूर विदासम ंदिरव ाराणसी(सीरग ोवर्धनपुर)काशी(यू. पी.)के निर्माण परम संत सरवण दास महाराज जी और बाकी दानी पुरूषों की कृपा से प्रबंधक कमेटी की मार्फत मिस्त्री गुरदयाल सिंह के हाथों से ही पूरा होकर रहेगा, इसके लिए अगर कोई दानी पुरूष मंदिर के निर्माण के लिए कुछ माया या अनाज दान करना चाहता है तो वह या तो काशी में जाकर स्वयं खर्च करे या प्रबंधक कमेटी के पास जमा करवा कर रसीद प्राप्त करे, इसके लिए यह कॉन्फ्रैंस लोगों से अपील करती है कि किसी नकली बानी आदि धर्म मिशन या खुदगर्ज़ लीडर को पैसा देकर अपना नुकसान न करे क्योंकि प्रबंधक कमेटी के बिना किसी भी संस्था का कोई पैसा मंदिर के निर्माण पर आज तक खर्च नहीं हुआ, इस प्रबंधक कमेटी ने आज तक डेढ़ लाख रूपये

करीब मंदिर के निर्माण पर खर्च किया है।

5. श्री गुरू रविदास मंदिर वाराणसी(सीरगोवर्धनपुर काशी (यू. पी.) कीज ायदाद(ज़मीन)मंदिरक ीह ै ि जसकीव ारिसस ारी बरादरीह ै ाय ह जायदाद किसी एक आदमी साधू महात्मा, संत या संस्था की नहीं होगी, बल्कि सारी कौम की होगी, मंदिर के निर्माण का काम आगे को रजिस्टर्ड श्री गुरू रविदास ट्रस्ट की मार्फत जारी रहेगा और ट्रस्ट के आगू संत सरवण दास महाराज जी ही रहेंगे, इसी लिए यह कॉन्फ्रैंस सर्व-समिति से संत सरवण दास महाराज जी को ट्रस्ट के आगू(चेयरमैन)नियुक्त करती है और इनको ट्रस्ट के लिए कमेटी के कायकर्ता चुनने का पूरा हक देती है। मंदिर के निर्माण में कोई रूकावट डालने वाले आदमी के खिलाफकानूनी कारवाई करने का हक भी ट्रस्ट की कार्यकर्ता कमेटी को दिया जाता है।

6. परम संत सरवण दास महाराज जी गांव और डाकखाना बल्लां तहसील और ज़िला जालंधर के आश्रम पर हर एक जाति के आदमी, मोटर साइकिल, साइकिल, टैंपू और कार के द्वारा दर्शनों को आते हैं, वर्ष में दो मेले लगते हैं, हर सक्रांति, हर रविवार बल्कि हर रोज़ इस आश्रम में सत्संग होता है। आश्रम के साथ वाली नहर पर पुल न होने और टूटे हुए रास्ते के कारण यात्रियों को आने जाने बहुत मुश्किल होती है इसी लिए यह कॉन्फ्रैंस पंजाब सरकार से विनम्रतापूर्वक मांग करती है कि वह अपने लोग भलाई में से एक खास रकम ग्रांट मनजूर करके आश्रम के साथ वाली नहर पर पुल बनवा दे और टूटे हुए रास्ते को पुख्ता(स्पदा त्वंक)करवा कर यात्रियों की मुश्किल को दूर करने का प्रयत्न करे।

7. श्री गुरू रविदास मंदिर वाराणसी(सीर गोवर्धनपुर),काशी (यू. पी.) के निर्माण के लिए जिस रास्ते के द्वारा समान(मटीरियल)लाया जाता है उस रास्ते में कई बार हिंदू बनारस यूनिवर्सिटी का गंदा पानी भर जाता है, जिस कारण समान लेकर जाने में मुश्किल होती है और मंदिर के निर्माण में भारी रूकावट पड़ जाती है, बल्कि वह पानी मंदिर की इमारत (ठनपसकपदह)को भी नुकसान देता है इतना ही नहीं बल्कि सीर गोवर्धनपुर के कुछ स्वर्ण जाति अभिमानी पुरूष मंदिर के सेवादारों पर नाजायज़ दबाव डालते और हमले करते रहते हैं। ताकि मंदिर न बन सके। इसी लिए यह कॉन्फ्रैंस हिंद सरकार के आगे निवेदन करती है कि,''वह यू.पी.सरकार की मार्फत उसके लोक भलाई फंड में एक खास रकम ग्रांट मनजूर करवा कर या तो रास्ता(स्पदा त्वंक)

पक्का करवा दे और हिंदू बनारस यूनिवर्सिटी के पानी निकास को बदला दे या कोई और साथ वाली ज़मीन का टुकड़ा सरकारी तौर पर इकवायर(।बुनपतम)करवा कर पक्की सड़क बनवा दे ताकि मंदिर का निर्माण आसानी से हो सके और यात्रियों को आने जाने में कोई मुश्किल न हो, मंदिर के निर्माणकर्ता(निमार्ण करने वाली)कमेटी सरकार ज़ाबते के अनुसार अपना हिस्सा(च्इसपबं ींतम)सड़क के लिए देने को तैयार है। इसके बिना मंदिर्र नर्माणम ेंस ीरग ोवर्धनपुरक े स वर्णज ातिक े अ भिमानीय ाक ोई रूकावट वाले और आदमी को कानून के द्वारा मंदिर के निर्माण के काम में रूकावट डालने से रोका जाए।''

8. यह कॉन्फ्रैंस पंजाब, हिमाचल, हरियाणा और हिंद के बाकी सूबों के आदि-वासी भाइयों के आगे अपील करती है कि, ''वह अपने इष्ट को कायम करने के लिए श्री गुरू रविदास मंदिर वाराणसी(सीर गोवर्धनपुर) , काशी(यू.पी.)के निर्माण में पूरी मदद करने और सर्व समिति से पास किया जाता है कि इस कॉन्फ्रैंस की कारवाई एक पैम्फलैट के रूप में छपवाकर, उसकी एक-एक कॉपी पंजाब सरकार,हिंद सरकार और यू.पी. सरकार को भेजी जाए और बाकी कापियां दानी पुरूषों और जनता में बांटी जाए ताकि अनिवार्य कारवाई हो सके। दानी पुरूषों के नामों के स्तर जल्दी ही मंदिर के निर्माण पूरी होने पर लगाई जाए।

कॉन्फ्रैंस में आए हुए महान् प्रतिनिधियों के विचार

13 दिसम्बर 1970 ई. दिन रविवार को 12 बजे डेरा संत बाबा सरवण दास महाराज जी के पवित्र स्थान पर हुई। कॉन्फ्रैंस की कारवाई श्री गुरू रविदास जी के पवित्र शब्द''ऐसी लाल तुझ बिन कौन करे।'' ''इह जन्म तुम्हारे लेखे'' से आरम्भ की। कॉन्फ्रैंस में सबसे पहले श्री हजारा राम रिटायर्ड(बी.डी.ओ.)ने आई हुई संगत का धन्यवाद किया। इस समय श्री चरन दास ने कविता बोली। इस कॉन्फ्रैंस में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और यू.पी. के लीडरों ने हिस्सा लिया। श्री हजारा राम जी ने बताया कि,''सदियों से यह बहुत बड़ी कमी थी कि हमारा धार्मिक स्थान नहीं था। श्री गुरू रविदास मंदिर की याद में जो मंदिर सीरगोवर्धनपुर में बनाना आरम्भ किया गया है, उसके लिए सारा संघर्ष श्रीमान् संत सरवण दास जी महाराज बल्लां वालों की अथक् मेहनत और कोशिशों से ही हुआ है। जो लोग अपनी हुकूमत कायम करने के लिए बातें बनाते थे। उस समय उनका नाम

निशान भी नहीं था।'' आपने ऐलान किया कि,'' श्री गुरू रविदास जी के जन्म स्थान सीरगोवर्धनपुर(काशी यू.पी.)में जो धर्म स्थान बन रहा है उसका आरम्भ परम पूज्य महात्मा संत सरवण दास महाराज जी डेरा बल्लां वालों की मेहरबानी से 1965 से हो रहा है जहां उन्होंने आज तक लाखों रूपये संगतों की नेक कमाई में से इक्ट्ठे करके खर्च कर दिये हैं। आप जी ने शैडयूलड कास्ट भाईयों के देश के बंटवारे से पहले हालत पर भी ध्यान दिया और कहा कि हमें उस समय वोट देने का भी अधिकार नहीं था। अधिकारों की प्राप्ति के लिए 1925 ई. में डॉक्टर अम्बेडकर साहिब और बाबू मंगू राम की लीडरशिप अंर्तगत आदि धर्म(आदि वासी)शैडयूलड कास्ट फैडरेशन नाम की संस्था कायम की।'' श्री हजारा राम जी की बीमारी के कारण ज़्यादा बोल नहीं सके पर फिर भी उन्होंने कहा कि,''जब तक हम धार्मिक और सियासी पक्ष सूझ-बूझ से अभिन्न हैं तब तक कभी भी अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकते।'' श्री तोता राम, डॉ. राम लाल जस्सी और श्री अंनत राम बद्धन ने भी विचार प्रकट किये। प्रबंधक' रविदास पत्रिका'श्री भागू राम कैप्टन (रिटायर्ड) ने कहा कि,''मुझे तजुर्बा है कि जब तक हम अपनी मनुष्य होंद को अनुभव नहीं करते या जिस्म में और दिल में कौम के लिए दर्द नहीं रखते तब तक दूसरी कौमें हमें अपने ज़र खरीद गोले बनाई रखेंगी। इसी लिए हमें बड़े राजनीतिक संघर्ष की ज़रूरत है।'' आप ने कहा कि,''समय का हमारे सिर पर आया संकट हमारे लिए एक वंगार है। इसी लिए हमें एकजुट हो जाना चाहिए तभी ही हम गुलामी की ज़िदगी से छुटकारा(मुक्ति)प्राप्त सकेंगे।'' श्री माणक चंद अमृतसर ने कहा कि,''मैं प्रण करता हूँ कि जब तक कौम पर आई मुसीबतें हम दूर नहीं कर सकेंगे हम चैन की नींद नहीं सोयेंगे। अब हमारे सिर पर गुरूओं और संतों महन्तों का पूर्ण हाथ है। हमें यकीन है कि हमारी मुश्किल हल हो जाएगी।''

साधू राम लड़ोआ, रंगी राम धनी गांव,मलू राम ब्यास गांव,मेला राम मडास बूटा मंडी, मस्त राम चुखियारा गांव, खुशी राम गांव टॅडे, बीरू राम बूटा मंडी, धन्ना राम सरपंच गांव ताजपुर, जय राम सरपंच गांव खांबरा मैंबर सभा-श्री तेजू राम, आसा राम करतारपुर, दुर्गा दास, शाम जी दास, हंस राज बचनी बूटा मंडी, दीवान चंद सदाणा, गोनी राम, पाला राम ब्यास गांव, अर्जुन सिंह, मिलखी राम सदाणा, शीतल दास गांव बूटा, भोला राम ऐमा काज़ी, भगत राम, धर्म चंद सरपंच रामपुर, खुशी राम गांव लल्लियां कलां, दलीप सिंह बूटा

मंडी, बन्ना राम नंगल करार खां, दास राम एम.सी. करतारपुर, करम चंद बाठ, ईशर दास बंता राम नई आबादी मेहतपुर रोड़, खुशी राम बजाज लाधड़ा, करम चंद लल्लियां खुर्द, गुलजारी लाल ताजपुर, प्रीतम दास बसेसरपुर, दर्शन सिंह, गुरदीप सिंह, सोहन सिंह, मेहर चंद संघवाल। राजू राम, बेली राम, प्रकाश देव, त्रिलोक सिंह ढेपुर। पैहलो राम, करन चंद खांबरा, ज्वाला राम गांव राम नगर, नसीब चंद रंधावा, शंकर दास फगवाड़ा, रतन चंद रैहपा, वरियाम चंद, शामा राम बिधिपुर, नसीब चंद, धर्म चंद हनसपुर, साधू राम गांव राम नगर, जगीरी राम बाठ, बंत राम धन्नोवाल, करमा राम, रख्खा राम, बचना राम चकोवाल, दीवान सिंह गुरदास राम, हज़ारा राम पथियाल, साधू राम, शंकर राम, सोमी राम, बिशना राम, दौलत राम अलावलपुर, शिव राम, राजा राम प्यारा सिंह, भाग राम रायेपुर, निरंजन दास जोगिन्दर पाल संघवाल, महेन्द्र पाल, रख्खा राम ब्यास गांव, दौलत राम, राम जी, अमर चंद दौलतपुर, अमर चंद लड़ोई, साधू सिंह, खुशी राम नौगज्जा, बेली राम, सवरन सिंह,फकीर सिंह, देव राज बल्लां, पाखर राम, संत राम, गुरबचन राम, अमर चंद मन्नण, राम किशन, कृपा राम, खुशी राम रसूलपुर, बलवंत राय खांबरा, सरवण लाल बोलीना, संत राम मुनीम बूटा मंडी, दारी राम, करम चंद, प्रीतू राम, लक्ष्मण दास कलकत्ता, बिशन दास, पूरन चंद दिल्ली, गुरदास राम सुच्ची गांव, मुंशी राम चमन बस्ती शेख, देव राज भट्ठे।

(लेखक–श्री छज्जू राम जी जनरल सॅकतर)

साखी नंबरः 389

निरंजन पर कृपा करनी

श्री रख्खा सिंह बीबी अमर कौर वासी अरजनवाल वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। वह अक्सर डेरे आते जाते थे। सन् 1971 ई. की बात है कि उनके सुपुत्र निरंजन ने विदेश जाना था और वह महाराज जी के दर्शनों को आए तो महाराज जी ने पूछा कि,''कहां जा रहे हो?'' तो उन्होंने कहा कि,''महाराज जी मैं दुबई जा रहा हूँ।'' तो महाराज जी ने कहा कि, ''वहां तो रेत बहुत होती है पर तुमने चिंता नहीं करनी, तुमने वापिस नहीं आना तुम्हारा काम वहां ही सैट हो जाएगा है।'' इस प्रकार महाराज जी की कृपा से वह आज तक वहां ही है।

साखी नंबरः 390

श्री कृपा राम के मन की बात जाननी

श्री कृपा राम सुपुत्र श्री मिलखी राम गांव रमदासपुर के रहने वाले थे उनका महाराज सरवण दास जी के साथ बहुत प्रेम था। श्री कृपा राम जी रेलवे में विधीपुर नौकरी करते थे। उनके मन में यह बात थी कि महाराज जी मेरी बदली नज़दीक की करवा दें, तो मानूंगा। एक बार वह डेरे आए तो महाराज जी को नमस्कार करके बैठ गए तो महाराज जी ने पूछा कि,''कहां जाना है?'' तो उन्होंने कहा,''मैं ड्यूटी पर विधीपुर जा रहा हूँ।'' यह सुनकर महाराज जी कहने लगे कि,''सफ़र दूर है तुझे तुम्हारे गांव के नज़दीक ब्यास गांव ले आना है।'' इस तरह उनकी बदली ब्यास गांव की हो गई। इस तरह महाराज जी ने श्री कृपा राम जी के मन की शंका दूर की।

साखी नंबर: 391

महाराज जी कौम के बारे चिंतित थे

''हे अकाल पुरख। मेरी कौम पर कृपा करो कि मेरी कौम भी खुशहाल हो।'' श्री दर्शन लाल बीबी शीतल कौर जी वासी अबादपुर वालों का महाराज सरवण दास जी से बहुत प्रेम था। वह अक्सर डेरे आते जाते थे। एक बार वह डेरे में आए तो महाराज सरवण दास जी ने उनको अपने पास बुलाया और कहने लगे कि,''मेरी कौम की बेटियों-बहनों के सिर से घास की भरी कब उतरेंगी।'' महाराज जी इस बात के बारे में अक्सर चिंतित रहते थे और अकाल पुरख आगे अरदास करते रहते थे कि,''मेरी कौम की बेटियां भी पढ़े लिखे, आगे बढ़े और कुर्सियों पर बैठे ताकि उनका जीवन भी खुशहाल हो सके।'' इस तरह दया के सागर महाराज सरवण दास जी हमेशा अपनी कौम की तरक्की के बारे सोचते थे। आज महाराज जी की कृपा से ही हमारा समाज तरक्की की ओर बढ़ रहा है।

(स्वयं श्री दर्शन राम जी अबादपुर)

साखी नंबर: 392

अपने सेवकों की रक्षा करनी'

श्री दर्शन लाल जी बताते हैं कि सन् 1962 ई. थी बात है भारत और चीन की लड़ाई लगी हुई थी। श्री दर्शन लाल जी डेरे में आए तो उन्होंने देखा कि महाराज सरवण दास जी एक टांग पर खड़े थे तो उन्होंने महाराज जी से पूछा कि,''महाराज जी, आप इस तरह क्यों खड़े हो?''तो महाराज जी कहने

लगे कि, ''मैं अपने सेवकों की रक्षा करता हूँ, ताकि उनको कोई आँच न आए।'' लड़ाई के बाद उनके सेवकों ने आकर बताया कि,''महाराज जी, आप हमेशा हमारे अंग-संग रहकर हमारी रक्षा करते रहे। इस तरह महाराज जी हमेशा अपने सेवकों की रक्षा करते थे।''

(स्वयं श्री दर्शन लाल जी अबादपुर)

साखी नंबर: 393

बलदेव को जीवन दान बख्शिश

सन् 1967 ई. की बात है कि श्री दर्शन लाल जी और बीबी शीतल जी के घर बच्चे का जन्म हुआ जिसका नाम रखा गया। जन्म के बाद डॉक्टरों ने जवाब दिया कि,''यह बच्चा नहीं बचेगा। क्योंकि बच्चे का जन्म समय से पहले हो गया था।'' दर्शन लाल जी बच्चे को लेकर महाराज सरवण दास जी के पास आया तो महाराज जी ने बच्चे को देखकर कहा कि,''इसकी आयु लम्बी नहीं है।'' यह सुनकर महाराज हरि दास जी जो कि उस समय पास ही खड़े थे कहने लगे, ''महाराज जी आयु भी आप ने ही बढ़ानी है।'' तो महाराज सरवण दास जी कहने लगे कि,''ठीक है, हरि दासा आयु बढ़ गई।'' इस तरह महाराज सरवण दास जी ने बलदेव को जीवन दान बख्शिश किया।

(स्वयं दर्शन लाल जी अबादपुर)

साखी नंबर: 394

श्री दर्शन लाल को जलेबियां खिलानी

एक बार की बात है कि श्री दर्शन लाल डेरे में आए तो महाराज सरवण दास जी कहने लगे कि,''दर्शन लाल आप ने जलेबियां खानी हैं।'' तो दर्शन लाल जी सोचने लगे कि,''हम जलेबियां कैसे खायेंगे न तो यहां जलेबियां है न ही कोई हलवाई लगा हुआ है।'' उन्होंने महाराज जी को कहा कि,''महाराज जी, आप ने हलवाई लगाया हुआ है?'' तो महाराज जी हंस पड़े। अभी इस के बारे में बात कर ही रहे थे कि भोगपुर से एक आदमी गर्म-गर्म जलेबियां लेकर आ गया। यह सब देखकर दर्शन लाल जी हैरान हो गए कि महाराज जी किस तरह होने वाली बात को पहले ही बता देते हैं। महाराज जी ने दर्शन लाल जी को नाम की दात बख्शिश भी की।

(स्वयं श्री दर्शन लाल जी अबादपुर)

साखी नंबर: 395

संत हरविंदर दास जी की जान बचानी

संत हरविंदर दास जी जब छठी कक्षा में पढ़ते थे तब बहुत ज़्यादा बीमार हो गए थे और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। बाबू ओम प्रकाश और बीबी प्रीतम कौर उन्होंने इस बीमारी की हालत में आदमपुर से मुहल्ला राम नगर ले गए और जहां श्री 108संत हरिदास जी और उनके साथ संत रामा नंद जी आए। उनको बताया गया,''हरविंदर दास को डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है बीमार बहुत ज़्यादा है।'' यह सुनकर संत हरि दास जी और संत रामा नंद जी ने उनको दोनों बाजू से पकड़ कर खड़ा कर लिया और कहा कि,''आज के बाद तुम बिल्कुल ठीक रहोगे।'' और महाराज जी के वचन अटल हुए।

साखी नंबरः 396

तुम्हारा कोई काम नहीं रूकेगा

1967 में जब सत्गुरू सरवण दास जी श्री गुरदास राम जी के घर में गए। श्री गुरमेल राम जी, श्री राम सरूप, श्री किशन चंद को अमृत छकाया। श्री राम सरूप जी ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, गुरमेल के बारे में कुछ बताओ।'' तो महाराज जी ने कहा कि ''तुम्हारा कोई काम नहीं रूकेगा।'' श्री गुरमेल विरदी जी 30 वर्ष सऊदी अरब ड्राइवर रहे पर कभी भी कोई काम नहीं रूका। श्री गुरमेल जी आज कल रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान में निष्काम सेवा निभा रहे हैं।

साखी नंबरः 397

तुम्हारे पांच बच्चे होंगे

1967 में श्री गुरमेल विरदी जी की शादी बीबी विद्या गांव नौगज्जा के साथ हुई जब विवाह कर डेरे आए तो नमस्कार की और महाराज जी बहुत खुश हुए। हर रविवार, हर सक्रांति को डेरे आकर सेवा किया करते थे। जब दोनों ने महाराज जी के चरणों में औलाद की प्राप्ति के लिए निवेदन किया तो सत्गुरू जी ने वचन किये कि,''तुम्हारे पांच बच्चे होंगे।'' सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के वचन अटल हुए श्री गुरमेल विरदी जी के घर तीन लड़के और दो लड़कियों ने जन्म लिया।

–श्री गुरमेल विरदी

साखी नंबरः 398

औलाद की बख्शिश करनी

श्री आत्मा राम जी के सुपुत्र श्री हरबिलास बुलंदपुर की शादी बीबी रतनी से हुई। पहले एक लड़का था उसके बाद इनके बच्चे गर्भ में ही मर जाते थे। इन्होंने श्री जीत राम और बीबी जीतो से सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की महिमा सुनी और उनके साथ डेरे में आए। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के चरणों में औलाद प्राप्ति के लिए निवेदन किया तो सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने कहा कि,''भजन सिमरन किया करो। आपके घर में एक लड़का पैदा होगा।'' महाराज जी के वचन अटल हुए। उनके घर लड़के ने जन्म लिया।

साखी नंबर: 399

मारने आए-भूल बख्शा कर गए

इलाके के पांच-छः शरारती अनसर टांगे पर सवार हो गए। वह सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को जानी नुकसान पहुंचाने के लिए टांगे पर सवार हुए थे। अभी टांगा नहर के पुल पर ही आया था वह सज्जन आँखों से अंधे हो गए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। टांगे वाला कहने लगा,''पहले मेरे पैसे दो फिर भागना।'' पर वह सब कहते कि,''तुम पहले हमें अकेले-अकेले को बाजु पकड़कर स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों पर नमस्कार करवा दो फिर हम आपके पैसे दे देंगे।'' महाराज जी के चरणों में नमस्कार करके माफी मांगी, महाराज जी सिर्फ मुस्कुराये और कहा किसी को कुछ भी नहीं।

स्वयं श्री भोला राम जी गांव ऐमा काजी,17 अक्तूबर, 2003

साखी नंबर: 400

आज रात की तो सारी बात है

जून 1972 ई. की बात है। श्री भोला राम जी ऐमा काजी वाले हजूर स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में रहकर सेवा किया करते थे। एक दिन महाराज जी आप जी को कहने लगे,'' श्री भोला राम जी डेरे में आते जाते रहना।''आप को महाराज जी की बातों की कोई समझ न थी। एक दिन महाराज जी बीमार हो गए तो उनको जालंधर के डॉक्टरों के पास दिखाया गया। कुटिया में संत हरि दास महाराज जी, संत गरीब दास महाराज जी और

सेवादार प्रेमियों ने सलाह की कि महाराज जी को लुधियाना के सी.एम.सी. अस्पताल में ले जाया जाए। सत्गुरू जी को इस सलाह से अवगत करवाया जाए। महाराज जी कहने लगे,''आज की रात देख लेते हैं।'' आगे से श्री भोला राम जी ने निवेदन किया,''महाराज जी, आज रात की तो सारी बात है।'' इस पर संत हरिदास महाराज जी कहने लगे,''रब्ब जी(भगवान्)अगर आपका मन नहीं मानता तो न जाओ अस्पताल।'' स्वामी सरवण दास महाराज जी कहने लगे ''भोला राम ने हमें अब अस्पताल जाने के लिए कहा है। इसी लिए हमने अस्पताल अब ज़रूर जाना है।'' महाराज जी ने अपना कुर्ता डाला। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी को सी.एम.सी. अस्पताल लुधियाना में दाखिल करवा दिया गया। रात को डॉक्टर ने कहा कि महाराज जी को सीधा बैड पर लेटाना है। श्री भोला राम जी ऐमा काजी(जालंधर) वाले सत्गुरू जी के पास ही बैंच पर कमरे में बैठे थे। संतों ने डॉक्टरों की सारी बातें सुन ली थीं। श्री भोला राम के रोकने के बावजूद सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी और श्री भोला राम जी गांव ऐमा काजी निवासी जोकि आज कल 85 वर्ष के बुजुर्ग हैं।अमृतसर किसी ज़रूरी काम के लिए गए। वापसी पर भोला राम जी टांगे पर सवार हो कर गांव बल्लां के बस स्टैंड से कुटिया की तरफ आ रहे थे उन को खबर मिली कि सरवण दास महाराज जी रात को ज्योति ज्योत समा गए।

साखी नंबर: 401

सत्गुरू जी मन की जानने वाले थे

एक समय की बात है कि स.कुंदन सिंह जंडू सिंघा जोकि संत सेवी व्यक्ति थे और संत ईशर दास जी मेघोवाल वालों के श्रद्धालु थे। उनके सुपुत्र बहुत ही आदरणीय संत इंद्र दास जी और संत महेंद्र दास जी है स.कुंदन सिंह जी बताया करते थे कि वह किसी गांव में पैदल भैंसे छोड़कर वापिस कुटिया बल्लां के पास से जा रहे थे कि मन में इच्छा प्रगट हुई और थकावट दूर करने के लिए संत सरवण दास महाराज जी की कुटिया से तेज़ चाय पत्ती वाली चाय पीकर जाते हैं। जब कुटिया के अंदर गए संत सरवण दास महाराज जी थड़े पर बैठे थे। अंदर जाते ही महापुरूषों ने पूछा,''कहां से आए हो?'' उन्होंने बताया कि,''हम जंडू सिंघा से आए हैं।'' स्वामी सरवण दास जी मन की जानने वाले थे और सेवादारों को कहने लगे कि,''जंडू सिंघे वाले तेज़ चाय पत्ती वाली

चाय पीते हैं, इनको तेज़ चाय पत्ती वाली चाय पिलाओ।'' और हम यह सुनकर दंग रह गए कि महाराज जी तो मन की बातें जानने वाले हैं।

साखी नंबरः 402

तुम्हें मिलेगी

श्री चन्नू राम सुपुत्र श्री जस्सा राम बुलंदपुर उन्होंने कोई जगह खरीदनी थी। उसी जगह को दो और आदमी खरीदना चाहते थे। मन में सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे निवेदन करना धारण करके वह डेरे पहुँचे और महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी ने पूछा,'' कैसे आए हो?'' श्री चन्नू राम ने उत्तर दिया,''महाराज जी के दर्शन करने हैं और अंर्तयामी सत्‌गुरू जी ने वचन किये कि,''दर्शन करने नहीं जगह के बारे में बात करने आए हैं। जगह खरीदने के लिए दो व्यक्ति घूम रहे हैं पर जगह तुम्हें मिलेगी।'' महाराज जी के वचन अटल हुए।

साखी नंबरः 403

औलाद की बख्शिश करनी

श्री गेंदा राम जी बीबी जय कौर जी बुलंदपुर उनके घर में कोई औलाद नहीं थी। वह कुटिया में सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे आकर निवेदन किया और सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी ने संत हरि दास महाराज जी को बुलाया और मुस्कुराते हुए सेवादार के एक खूंडा मारा और कहा, ''और, कहते?'' यह देखकर सेवादार डर गए उठकर चल पड़े और सत्‌गुरू हरि दास जी ने सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''महाराज, एक ही उनके घर में एक लड़के ने जन्म लिया जिस का नाम सतनाम रखा गया।''

(श्री शादी राम जी)

साखी नंबरः 404

सत्‌गुरू अपने प्रेमियों की रक्षा स्वयं करते हैं

यह बात आम सत्संगी जन जानते हैं कि स्वामी सरवण दास महाराज जी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी महापुरूष थे। जिन लोगों ने सत्‌गुरू जी के दर्शन किये हैं उनमें से बहुत सारी संगत आज भी मौजूद है उन्होंने कौतुक चमत्कार देखे हैं। जिनका वर्णन वह संगतें आज भी अपनी मुख से बयान करती हैं। यह घटनाएं आज साखियों के रूप में पढ़ने और सुनने को मिलती हैं। ऐसी ही एक साखी

श्रीर ामप्रकाश(स्वर्गीय)सुपुत्रश्र ीर्ि बशनद ासज ेस ुच्चीग ांवव ालोंस े सम्बन्धित है। श्री राम प्रकाश जी और उनकी सुपत्नी बीबी प्रीतम कौर जी अपने परिवार के साथ अक्सर ही डेरा सचखंड बल्लां में आते रहते थे। उन्होंने नाम की दात भी सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के पास से प्राप्त की थी। यह घटना 1968की है कि श्री राम प्रकाश जी टहलते-टहलते फाटक के नज़दीक रेल गाड़ी से टकरा गए सत्गुरू जी की कृपा से उनका बचाव हो गया परंतु कुछ चोटें लगी। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी उस वक्त डेरे में थड़े पर बैठे थे और वहां बैठे ही महाराज जी को अपनी आध्यात्मिक शक्ति से पता गया कि राम प्रकाश जी से क्या घटना बीती है उन्होंने तुरंत डेरे से सेवादारों को भेजा कि,''आप उसकी खबर लेकर आओ।'' इस प्रकार सत्गुरू जी ने अपने सेवक की रक्षा की। इस तरह ही राम प्रकाश जी जिनकी मानसिक बुद्धि एक्सीडैंट से कमज़ोर होने के कारण नहर के किनारे सर्दी में बैठे थे। महाराज जी ने डेरे के अंदर बैठे ही सेवादारों को हुकम दिया कि,''आप, राम प्रकाश जो बाहर ठंड में घूमता है उस पर कम्बल देकर आओ।'' सेवादारों ने हुकम की पालना करते हुए राम प्रकाश को धुंध में ढूंढकर उस पर कम्बल दिया। सत्गुरू जी अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं। बीबी प्रीतम कौर जी जिन्होंने अनेक ही ऐसी साखियां सुनाई हैं जिसमें वह आपबीती घटनाएं और उनके उपकारों का वर्णन करते हैं। सारा ही परिवार संत सेवी और सत्गुरू जी के भाणे में रहने वाली वृति के मालिक हैं।

साखी नंबर: 405

स.जगीर सिंह लम्बड़दार सुच्ची गांव वालों की ओर से संतों के वचनों पर फूल चढ़ाने

सुच्ची गांव जालंधर की सभी संगत की यह शुरू से ही विशेषता रही है कि यहां के सभी वसनीक धार्मिक स्तर में बहुत आगे बढ़ने वाले हैं और सभी ही संतों महापुरूषों, पीरों-फकीरों और अपने बड़े-बूढ़ों के दिन मिल-जुल कर पूरी श्रद्धा से मनाते हैं। यहां की संगतों का डेरा सचखंड बल्लां के महापुरूषों से अथक् प्रेम रहा है। यह ही कारण है कि डेरे के समूह गद्दीनशीन महापुरूषों की चरणछोह इस नगर को प्राप्त है यहां ही बस नहीं नगर में स्वर्गीय श्री गुरदास राम जी के प्रयत्नों से बना हुआ सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का मंदिर भी सुशोभित है। यह बात 1984 की है कि उस समय के तत्कालीन

डेरा सचखंड बल्लां के गद्दीनशीन श्री 108संत गरीब दास महाराज जी गांव में पधारे तो लम्बड़दार जगीर सिंह बीबी अवतार कौर उनके बेटे सलविंदर सिंह और सुरजीत सिंह भी महापुरूषों के दर्शन करने के लिए आए। यह परिवार बहुत ही धार्मिक विचारों वाला दानी और संत सेवी परिवार है। परिवार ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, लम्बड़दार साहिब की शराब पीनी छुड़वा दो।'' परिवार के सदस्यों के कहने पर संत गरीब दास महाराज जी ने लम्बड़दार जगीर सिंह को प्रेम से समझाया और वचन दिया कि,''आप आज से शराब पीनी बंद कर दो।'' स.जगीर सिंह जी ने संतों के वचनों पर फूल चढ़ाते हुए उस दिन से शराब पीनी बंद कर दी और महापुरूषों के हुकमों की पालना की। आज यह परिवार बहुत ही सुखी आनंदमयी और भाणे अंदर रहते हुए तरक्की कर रहा है।

साखी नंबर: 406

सच्चे मन से की प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती

यह एक अटल सच्चाई है कि डेरा सचखंड बल्लां का हर एक पैरोकार कोई भी कारोबार संतों महापुरूषों की आज्ञा लिये बिना नहीं करते चाहे शादी हो, मकान निर्माण, व्यापार नौकरी या विदेश जाने का हो। संगतों की यह भावना पूर्व से ही रही है कि डेरे में हुकम लेकर ही शुरूआत की जाती है। मुहल्लार मदासपुर(अलावलपुर)सेइ ाानीश ंकरद ासज ीअ ौरब ीबीर ाम प्यारी जी डेरे के अधिक श्रद्धालु थे। उनकी शादी श्री 108संत सरवण दास महाराज जी ने ही करवाई थी। आप डेरे में रहते थे और अपनी बहुमुल्य सेवायें निभाते। गुरमीत राम का परिवार भी शंकर दास जी और बीबी राम प्यारी के साथ डेरे आया करते थे। 1978की बात है कि गुरमीत राम सुपुत्र श्री करतार चंद जी ने सत्गुरू हरि दास महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी, मैं विदेश जाना चाहता हूँ, मेरे पर कृपा करो, कोई कारोबार नहीं।'' संत हरि दास महाराज जी ने तुरंत हुकम किया कि,''आप आंठवें दिन बाहर विदेश चले जाओगे।'' संतों के वचन अटल होते हैं ठीक आठवें दिन गुरमीत राम सऊदी अरब चले गए। यह साखी गुरमीत राम जी ने अपने मुख से सुनाई थी।

साखी नंबर: 407

चिरंजी लाल का विदेशी ज़ेल से रिहा होना

श्रीमान् प्रकाश विरदी और उनकी पत्नी बीबी नसीब कौर वासी सुच्ची गांव कुटिया संत सरवण दास जी बल्लां के श्रद्धालु थे और अक्सर अपने बच्चों समेत रविवार को या सक्रांति के दिन डेरा सचखंड बल्लां में नतमस्तक होने के लिए आया करते थे। सारा परिवार हर खुशी-गमी का काम डेरे से आज्ञा लेकर करते थे। महाराज जी की ओर से हुए हर हुक्म को खुशी से प्रवाण करते थे। उनके सुपुत्र श्री चिरंजी लाल 1986में सिंगापुर गए, जहां ओवर-स्टे होने के कारण ज़ेल जाना पड़ा।

चिरंजी लाल ने1981 में संत हरि दास महाराज जी से नाम-दीक्षा की प्राप्ति की थी और हर वक्त उनका नाम जपते थे। ज़ेल में दूसरे कैदी जो कई वर्षों से ज़ेल में नज़रबंद थे, चिरंजी लाल को कहने लग पड़े कि,''तुम इतना सिमरन करते हो। तुम्हें गुरू बचाते क्यों नहीं?'' उनके यह बोल चिरंजी लाल को अंदर ही अंदर परेशान करने लग पड़े और उदास हो गया। अचानक एक रात तत्कालीन गद्दी नशीन 108संत गरीब दास महाराज जी प्रत्यक्ष दर्शन दिये और कहा,'' चिरंजी लाल तुम डोलते क्यों हो? तुम जल्दी रिहा हो जाओगे।''

दूसरे दिन ही एक व्यक्ति ने आकर मुझे बताया कि,''तुम्हारी पड़ताल हो गई है और तुम जल्दी घर जा रहे हो।'' कुछ ही दिनों में चिरंजी लाल बा-इज्जत घर वापिस आ गए सारा परिवार खुशी-खुशी डेरे में शुक्राने की अरदास करने पहुँचे। समर्थ गुरू अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं। यहां ही बस नहीं महाराज जी की अपार कृपा से रिहाई के दूसरे दिन ही घर पहुँचे उसको पुत्र की दात प्राप्त हुई।

साखी नंबर: 408

सत्गुरू की कृपा से ब्यास गांव में गुरू घर का निर्माण

ब्यास गांव के बुजुर्ग भले पुरूष श्री मल्लू राम, श्री अतरा राम, श्री भुल्ला राम और श्री पाला राम जी कच्चे चमड़े का काम करते थे। इन्होंने ब्यास गांव में ही चमड़ा रंगने का कारखाना लगा लिया, जिस को 'कुन्ना' कहा जाता है।

श्री मल्लू राम जी ने नाम की दात आदरणीय श्री 108संत प्रेम दास जी महाराज जी(तत्कालीन गद्दी नशीन)श्री 108संत शीतल दास जी, डेरा बोहण पट्टी से प्राप्त की। श्री अतरा राम, श्री भुल्ला राम, श्री पाला राम, श्री दास राम जी डेरा सचखंड बल्लां के उपासक थे। इन्होंने नाम की दात मानवता के

मसीहा 108सत्गुरू सरवण दास महाराज जी बल्लां पास से गांव के अंदर प्राचीन डेरे में से प्राप्त की। इन सभी बुजुर्गों ने गांव में सत्संग का आयोजन करना चाहा, श्री प्रेम दास जी को निवेदन किया और उनकी प्रेरणा पर श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के पास से आज्ञा लेकर दिन निश्चित किया गया और 25 हाड़ दिन बुधवार रखा गया। एक दिन पहले टैंट लगा दिया गया।

डेरा बल्लां से श्री 108संत हरि दास महाराज जी की देख-रेख में शाम के वक्त सत्संग के बाद प्रसाद बांटा गया। सत्संग वाले दिन महापुरूषों ने शिरकत की अपने अनमोल वचन संगतों को श्रवण किये और जगत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन पर चलने की प्रेरणा बख्शिश की और आए हुए महापुरूषों का सम्मान किया गया और अटूट लंगर बरताए गए।

गांव के सभी बुजुर्गों ने मिलकर महाराज जी के आगे निवेदन किया कि ,''हमारे गांव में श्री गुरू रविदास मंदिर नहीं हैं।'' महाराज जी ने कहा कि,''आप को जगह मिल जायेगी, मेहनत करनी पड़ेगी।'' दो महीने बाद पंचायती चुनाव आ गए। गांव के ज़मीदार इक्ट्ठे होकर सरपंची के लिए वोट मांगने आए। बुजुर्गों ने मांग की कि,''हमें मंदिर के लिए जगह दीजिए, हम वोट आप को देंगे।'' सभी ने मिलकर स.नसीब सिंह सरपंच को दोबारा सरपंच चुन लिया। सबसे पहले सलाह कर दलदल वाली जगह जगत्गुरू रविदास महाराज जी के मंदिर के लिए दी गई। इस दलदल में पत्ती उप्पल और पत्ती उदोपुर का पानी जाता था। सरपंच ने दलदल बंद करने और सहयोग देने का भरोसा दिया। सभी बुजुर्गों ने श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के चरणों में आरंभिकता की अरदास के लिए प्रार्थना की। श्री 108संत सरवण दास महाराज जी ने अपने कर कमलों से अरदास की और चार कीले लगा दिये। गुड़ बांटा गया।

श्री 108संत सरवण दास महाराज जी के वचन पूरे हुए। जगत्गुरू रविदास महाराज जी के मंदिर का निर्माण हुआ। श्री 108संत सरवण दास महाराज जी का यहां की संगतों के साथ बहुत प्रेम था। अमर शहीद संत रामानंद जी की शहादत के बाद डर के माहौल में संगतें अमृतवाणी का प्रकाश करने से डरती थी, कि कहीं कोई तनाव न पैदा हो जाए। ऐसे हालात में सेठ लक्ष्मण दास जी मडार ने अपने प्लाट में श्री गुरू रविदास अमृतवाणी भवन बनाकर उसमें पावन ग्रंथ अमृतवाणी सत्गुरू रविदास महाराज जी सुशोभित

करके इस दरबार के मुहूर्त श्री 108संत निरंजन दास जी, श्री 108संत सुरिंदर दास बावा जी पास से करवाकर अमृतवाणी दरबार के सेवादार प्रबंधकों के हवाले किया। यह सब सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा है जो अपने सेवकों पर दयाल होकर कृपा करके ऐसी पावन सेवाएं करवा लेते है। सेठ लक्ष्मण दास जी और सभी परिवार ने जीवन सफल कर लिया।

साखी नंबर: 409

सूबेदार ब्रह्म सिंह जी की सत्गुरू को श्रद्धांजली

सूबेदार ब्रह्म सिंह परिवार के साथ अबादपुर में रहते थे। उनकी फौज की पलटन बाघा सरहद पर लगी हुई थी। सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान जंग की तैयारी चल रही थी। सूबेदार ब्रह्म सिंह ने फौजी कैंप में बैठकर अरदास की,''हे सच्चे सत्गुरू सरवण दास महाराज जी दोनों राज्यों में जंग चल रही है, आप जी सहाई हो।''

उस वक्त ही सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने सेवादार राम मूर्ति को जीप बाहर निकालने को कहा। उसमें पगड़ियां, कम्बल, लड्डू के डिब्बे, फल लेकर बाघा सरहद को चल पड़े। सरहद पहुँचने पर ब्रह्म सिंह सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की जीप को अपने कैंप में ले गए। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने फौजियों को पगड़ियां और कम्बल बांटे तथा सभी को प्रसाद बांटा। आप जी ने अरदास की और कहा कि,''जंग खत्म हो जाएगी और जीत भी आपकी होगी। फौजियों ने कहा कि,''यह पहले गुरू हैं, जो अपने सेवक की अरदास पर सरहद पर पहुँचकर आर्शीवाद देते हैं।'' फौजियों के हौंसले बुलंद हो गए।

रूस के बीच आने से यह जंग खत्म हो गई। कुछ समय के पश्चात् 11 जून 1972 में सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ब्रह्मलीन हो गए। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के अंतिम दर्शनों के लिए देश-विदेश से संगतें आई यह साखी सूबेदार ब्रह्म सिंह ने अंतिम विदाई में कहे और बाद में ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।

साखी नंबर: 410

समर्थ गुरू थे स्वामी सरवण दास जी

श्री माना राम जी ब्यास गांव वाले स्वामी सरवण दास जी की आज्ञा लेकर अपने ससुराल गांव टांडा उड़मुड़ में कच्चा चमड़ा खरीदने बेचने का

व्यापार करने लग पड़े। आप बहुत सिमरन भजन करने वाले और संत सेवी थे। सत्गुरू जी ने श्री माना राम जी को तीन पुत्रों की दात बख्शिश की। बच्चे जवान हो गए। कच्चे चमड़े का काम शुरू कर दिया। बीबी किशन ने महाराज जी के आगे अरदास की कि मीट, शराब खाना शुरू कर दिया। महापुरूषों ने सख्त ताड़ना की।

एक दिन बीबी किशन कुटिया आई और नमस्कार करके संगत में बैठ गई। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने कहा,''किशन कौर, तुम्हारी सास के पौत्रा होना है। उस बच्चे ने एक घंटे बाद श्वास लेने हैं और एक घंटे के बाद रोयेगा। तुमने अपनी सास को नहीं बताना।'' रविवार की रात को प्रात:काल तीन बजे बच्चे ने जन्म लिया बच्चा न ही हिले और न ही रोये। किशन कौर सिमरन करती और सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को याद करती रही। ठीक एक घंटे बाद बच्चे ने रोना शुरू किया। महाराज जी के कहे वचन सत्य हुए। सभी बधाई देने लगे। दादा माना राम जी और दादी नन्दी अपनी बड़ी बहू किशन कौर को लेकर लड्डू की टोकरी प्रसाद के तौर पर लेकर बल्लां को चल पड़े सत्गुरू जी कुटिया में आराम कर रहे थे। दोपहर के बाद सेवादारों ने निवेदन किया,'' महाराज जी चाय तैयार है। आप जी का हुक्म हो तो चाय बरता दें।'' स्वामी जी ने कहा कि,''महंगा राम को बुलाओ लड्डूओं के साथ चाय पिलानी है।'' महंगा राम को साइकिल पर किशनगढ़ के बस स्टैंड पर भेजा उनके हाथ में टोकरी देखकर महंगा राम ने बीबी किशन को कहा कि,''बीबीस इकिलप रब ैठोम हाराजज ीन ेच ायर ोकर खीह ै।''ड ेरे पहुँचकर महाराज जी को नमस्कार की। चाय के साथ हर एक को दो लड्डू बांट दो। स्वामी सरवण दास महाराज जी ने हंसकर कहा,''लड़के का नाम सुरजीत रख दो।'' इस प्रकार संगतें सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को समर्थ गुरू मानते हैं।

साखी नंबर: 411

कृपा राम की बदली होना

कृपा राम विरदी रमदासपुर बल्लां के रहने वाले थे। कृपा राम को रेलवे में नौकरी मिल गई। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा से जितने जवान बल्लां से रमदासपुर आकर रहते थे। सभी अच्छी नौकरियों पर नियुक्त हुए। कृपा राम रविवार वाले दिन हर सप्ताह की तरह कुटिया नमस्कार करने आए। महाराज जी को नमस्कार की महाराज जी ने कहा,''भलवान, नौकरी

कहाँ है?'' कृपा राम ने कहा कि,'' महाराज जी फिरोज़पुर है।'' फिर महाराज जी ने कहा कि,'' भलवान नज़दीक ले आएं।'' कृपा राम ने कहा,'' आप जी की जो इच्छा है। दूसरे दिन कृपा राम ड्यूटी पर फिरोज़पुर रेलवे दफ्तर गया। जाते ही अफ्सर ने कहा,'' आपकी बदली जांलधर भोगपुर हो गई है।''

कृपा राम महाराज जी के दर्शनों को कुटिया आया महाराज जी थड़े पर आराम कर रहे थे। नमस्कार की महाराज जी ने कहा कृपा राम नज़दीक आ गए। कृपा राम ने कहा कि,''महाराज जी, मेरी लाईन की परख होनी है।'' महाराज जी ने कहा कि,''सत्गुरू रविदास महाराज जी की आरती पढ़ना। सच्चे मन से अरदास करना, सभी काम पूरे होंगे। कृपा राम जी ने ऐसे ही किया। दूसरे दिन रेल लाईन की परख हुई सारा काम पास हो गया।''

सत्गुरू जी की कृपा से कृपा राम विरदी की इनाम के तौर पर तनख्वाह भी बढ़ गई। सत्गुरू अपने सेवकों की स्वयं रक्षा करते हैं।

साखी नंबरः 412

जय चंद के हाथ से माया निकल जानी

ब्यास गांव से जय चंद सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के सेवक थे। हर रविवार को सत्गुरू के दर्शनों के लिए आते और साध संगत की सेवा करते। जब भी कुटिया में कोई सेवा का काम होना महाराज जी ने संदेश भेजना कि,''जय चंद सेवादारों को लेकर डेरे पहुँचना। महाराज जी ने ड्यूटी देनी मकर सक्रांति के लिए लकड़ियों का प्रबंध करना है या दाने पीसने के लिए चक्की पर लेकर जाने हैं। सेवा करने के बाद दोपहर का लंगर खाने के बाद महाराज जी के पास बैठ जाते। जय चंद महाराज जी की टांगे दबा रहे थे महाराज जी बोले,''जय चंद, माया बहुत आनी है, पर सम्भाली नहीं जायेगी। जय चंद ने हंसकर कहा,''महाराज जी, माया आने दो। हम माया को गले लगा लेंगे।''

लोहड़ी का महीना था जय चंद, उजागर एवं राम लाल तीनों काम की तलाश में माई हीरां गेट जालंधर पहुँचे। माई हीरां गेट मज़दूर इक्ट्ठे होते थे। जिस को मज़दूर की ज़रूरत होती थी वहां से ले जाते थे। एक व्यक्ति आया उसने मांग रखी कि,''मज़दूर चाहिए, नींव की खुदाई करनी है।''जय चंद ने कहा कि,''हम जायेंगे।'' मालिक रिकशा पर बैठ गया। जय चंद, उजागर राम और राम लाल आदर्श नगर प्लाट में पहुँचकर नींव की खुदाई शुरू कर दी।

मालिक चाय पिलाकर अपने घर चला गया।

जय चंद को नींव की खुदाई करते समय गागर मिली गागर से ढक्कन उठाकर देखा कि गागर चांदी के सिक्के से भरी पड़ी थी। जय चंद ने उजागर राम को कहा कि,''गागर को घास में ढक दो।'' चांदी के सिक्के सीमेंट वाले थैले में डालकर बांद लिया साइकिल पर रख लेना और माई हीरां गेट से आ गए। वहां राम लाल कहा कि,''तुम खाली आ गए चलो वापिस गागर भी ले आएं। लोहड़ी को गागर में खीर बनायेंगे।''

जय चंद के साइकिल पर थैला रखा था। इतने में मालिक ने पूछा कि,''थैले में क्या है?'' जय चंद ने कहा,''चांदी की गागर मिली है।'' मालिक ने थैला अपने रिकशे में रखवा लिया और पुलिस को बुलाने की धमकी दी कि,''पुलिस को बुलाता हूँ।'' जय चंद ने कहा कि,''पुलिस मत बुलाना।'' मालिक ने कहा,'' चले जाओ, नहीं तो पुलिस आ जायेगी। चोरी का केस बनेगा।'' जय चंद, उजागर राम और राम लाल चुपचाप घर आ गए। सुबह बातें होने लगी कि जय चंद कुछ समय में लाखों का और कुछ समय में कखों का हो गया बाद में सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी बोले कि,''जय चंद तुम तो कहते थे कि माया को गले लगा लेंगे।''बुजुर्गों ने कहा,''जय चंद लालच न करते आपने घर पहुँच जाना था।''

(राम मूर्ति, 24 जून, 2017)

साखी नंबर: 413

मरा हुआ कबूतर जीवित होना

गर्मियों के दिनों में रविवार को संगत कुटिया में आई। सभी स्कूलों के बच्चे इक्ट्‌ठे हुए। कीर्तन के बाद सत्संग हुआ। सभी संगत ने मिलकर सतनाम का उच्चारण किया और लंगर खाया। लंगर में जलेबियां खाई। लंगर खाकर संगत अपने गांव को चल पड़ी। कुछ संगतें, सेवादार पास ही बैठे थे। कोयले वाली भट्‌टी कोयले से भरी पड़ी थी और पास ही फलाह का पेड़ था। उसके ऊपर कबूतर बैठा था।

कबूतर अचानक भट्‌टी में गिर पड़ा। संगत कहने लगे,''यह कबूतर मर जायेगा और पूरी तरह भुर्ता बन जायेगा।'' महाराज जी ने कहा,''तुरंत कबूतर को भट्‌टी में से निकालकर इसको पानी पिला दो।'' देखते-देखते कबूतर कटोरी में से पानी पीकर उड़ गया। महाराज जी ज़ोर-ज़ोर से हंस पड़े

और उचारा वाणी सच कहती है,

''जिस को राखे साईयां उसको मार सके न कोये''

साखी नंबरः 414

मूल राज की साखी अपनी ज़ुबान से

मेरी मंगनी 1969 दिन रविवार को रिश्ता पक्का करने के लिए मेहमान आए हुए थे। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी जीप में बैठकर टांडे की तरफसे आ रहे थे। उनके साथ सवरन सिंह गांव बल्लां था जो ब्यास गांव। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी हंसकर बोले,''सवरन सिंह, आज तुम्हारे ससुराल गांव जाना है ब्यास गांव।'' सवरन सिंह बोला,''क्यों नहीं?'' सवरन सिंह ने कहा ,''महाराज जी, पहले भी जाते हो।'' जीप हमारे घर के पास खड़ी हो गई। बच्चों और बुजुर्गों ने नमस्कार की। महाराज जी सीधे घर आ गए। महाराज जी चारपाई पर बैठते ही बोले,''गरीब दास, यह रिश्तेदार कैसे इक्ट्ठे हुए।'' पिता जी हाथ जोड़कर निवेदन किया,''आज मूलराज की मंगनी होनी है।'' महाराज जी हंसकर बोले,''गरीब दास हमें पूछा?'' पिता जी ने कहा,''महाराज जी, भूल हो गई।'' महाराज जी ने कहा,''कोई बात नहीं गृहस्थी काम करने भी ज़रूरी हैं।'' महाराज जी ने मुझे बुलाकर दो केले और एक सेब मेरी झोली में डाल दिया। महाराज जी के लिए वस्त्र और सवरन सिंह को पगड़ी दी। संत सरवण दास महाराज जी बोले ,''जो हमें याद करता है हमें आना पड़ता है।''

मेरी शादी सोलह हाड़ दिन बुधवार 1971 को रखी गई उस समय में कार्ड नहीं होते थे। मेरे पिता जी महाराज जी के पास गए। महाराज जी मूलराज की शादी आ गई है। संत सरवण महाराज जी के पास छोटी डायरी होती थी। डायरी पर लिखा ब्यास गांव की ओर से बारात में शामिल होना। हमने भी करतारपुर वालों को कहा,''सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने आना है।'' करतारपुर वालों ने परमात्मा का धन्यवाद किया। शादी से दो दिन पहले महाराज जी ने संत निरंजन दास जी को कहा,''गरीब दास ब्यास गांव को कहकर आओ कि महाराज जी ने आँखों का ऑपरेशन करवाना है उनसे शादी पर नहीं आ होगा। वह आपके अंग संग हैं।'' पहली जुलाई 1971 को महाराज जी ने संत निरंजन दास जी को कहा कि,''ब्यास गांव जाओ और उनको कहो कि महाराज जी ने आपको कुटिया बुलाया है।'' संत निरंजन दास जी ने संदेश

दिया। दूसरे दिन हम पूरा परिवार कुटिया पहुँचकर महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी के वस्त्र और करतारपुर वालों की ओर से महाराज जी के वस्त्र भेंट किये। चाय पीकर महाराज जी के पास बैठ गए। मैं संत सरवण दास महाराज जी की टांगे दबा रहा था मेरे मन में विचार आया कि मैंने गरीब दास महाराज जी से नाम-दीक्षा लेनी है। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी सुन्न समाधि में पहुँचे हुए थे। मेरे पिता जी ने निवेदन किया कि,''बच्चों को चरणों से लगा लीजिए।'' महाराज जी ने कहा कि,''अभी बहुत समय है अभी इनको खाने-पीने दो।'' हमारे परिवार को हमारी पसंद का भोजन करवाया। सत्गुरू की गोद में बैठकर आनंद माना।

पहले मैं दुबई गया फिर बहरीन गया। 1984 में मैं बहरीन से छुट्टी लेकर आया उस समय गद्दी नशीन सत्गुरू गरीब दास महाराज जी थे। उनके साथ बहुत प्रेम था। मैंने सत्गुरू गरीब दास महाराज जी से निवेदन किया, ''महाराज जी, हमारा नंबर आया या नहीं?'' गुरू जी हंसकर बोले,''आपका नंबर बहुत पहले है बुधवार को आ जाना।'' मैंने और मेरी पत्नी ने बुधवार को पगड़ी और लड्डू का प्रसाद लेकर नमस्कार की। सत्गुरू गरीब दास महाराज जी ने गरीबों के मसीहा सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के आसन पर बैठकर नाम की दात बख्शिश की। सत्गुरू गरीब दास महाराज जी ने कहा,''मैं आपका गुरू नहीं हूँ आपके गुरू सत्गुरू सरवण दास महाराज जी हैं। जो मेरे गुरू ने नाम की दात बख्शिश की थी मैंने आपको दे दी। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने कहा था कि मैं आऊँगा ।''

साखी नंबर: 415

मूल राज की आपबीती

मैं बहरीनसे 1984 में छुट्टी लेकर आया। मैंने अपना पासपोर्ट और हवाई टिकट अपने भाई के घर पालम कॉलोनी में रख दिया। छट्टी के बाद दिल्ली से जहाज़ पकड़ना था। आतंकवाद का दौर था, कर्फ्यू लगा हुआ था। बुरे हालातों के कारण मन उदास था, दिल्ली कैसे पहुँचे? कागज़ पत्र दिल्ली में है। एक घंटे के लिए कर्फ्यू खुला। मन में विचार आया कि सत्गुरू से रास्ते मांगे। मैं और मेरी पत्नी साइकिल पर बैठकर कुटिया पहुँचे। कुटिया में सत्गुरू गरीब दास महाराज जी को नमस्कार की। महाराज जी ने कहा,''मूल राज, तुमने कब जाना है?''मैंने बताया कि,''मेरा पासपोर्ट और टिकट दिल्ली

है। कर्फ्यू कारण दिल्ली जाना मुश्किल है।'' मैंने सत्गुरू गरीब दास महाराज जी को निवेदन किया कि,''मुझे दिल्ली जाने के लिए रास्ता दे दीजिए ताकि जो मैं आपकी कृपा से बहरीन पहुँच जाँऊ।''

सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के दरबार में अरदास की।''खूंडे वालों मुझे रास्ता दे दो।'' फिर सत्गुरू गरीब दास महाराज जी के पास आ गए 100 रूपये रखकर नमस्कार की और 100 रूपये के छुट्टे भी लिये। महाराज जी ने कहा,''चिंता मत करना आप पर कृपा हो जाएगी।'' शाम को मैं घर बैठकर ख़बरें सुन रहा था। ख़बरों में आया कि,''जिन विद्यार्थियों ने ण्ण ाणै के पेपर देने दिल्ली जाना है। कागज़ पत्र लेकर पुलिस कमिश्नर को बस स्टैंड जालंधर में मिलो।'' मेरे मन में विचार आया जब विद्यार्थी दिल्ली जा सकते हैं तो तुम दिल्ली क्यों नहीं जा सकते। सुबह कर्फ्यू खुलते समय चाचा के बेटे को साथ लेकर बस स्टैंड जालंधर पहुँचकर अफ्सर के साथ बात की। अफ्सर ने कहा,''आज हमारी मीटिंग होनी है। मैं यह मुद्दा वहां उठाऊँगा।'' शाम को मीटिंग हुई मुद्दा पास हो गया। टेलीविज़न पर ख़बर आई कि,''जो व्यक्ति विदेश जाना चाहते हैं, पुरानी कचहरी के नज़दीक कम्पनी बाग सम्पर्क करें।'' मैं भी पुरानी कचहरी पहुँचा मेरे पास न पासपोर्ट और न ही हवाई टिकट। मेरे गुरू अंग संग थे। मैंने पुलिस कमिश्नर को पत्र दिया जिसमें सब कुछ वर्णन कर दिया। मुझे दिल्ली जाने की मंजूरी मिल गई। मिल्ट्री अफ्सरों ने कहा,''तुम्हारे साथ दो आदमी दिल्ली जायेंगे। अगर दस्तावेज़ न मिले तो तुझे सज़ा होगी।'' फौज की निगरानी में हमें अम्बाला छावनी भेजा गया। वहां से बस में दिल्ली भेजा गया। वहां से सत्गुरू जी की कृपा से बहरीन पहुँचा। वहां से 14 वर्षों के बाद मैं भारत आया। बिना वीज़ा के काम किया। गुरू जी ने अंग संगर हकरब नवासक ाटा ाए कब ारम ुझेप ुलिसप कड़करल ेग ई ाम ैंने महाराज जी को याद किया। जब अफ्सर के सामने पेश हुआ। अफ्सर ने कहा,'' भाई साहिब को इसके घर पुलिस वाली गाड़ी में छोड़ आओ। मुझे पुलिस प्रेम से घर छोड़कर गई।'' पाकिस्तानी सिपाही ने मुझे कहा,''भाई साहिब, पुलिस पकड़कर ले जाती है। हमारी नौकरी में तुम पहले व्यक्ति हो जिसको पुलिस घर भी छोड़कर गई।'' मैंने कहा,''यह सब खूंडे वाले सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा है।''

साखी नंबर: 416

सत्गुरू सेवकों को शिष्य से अधिक प्रेम देते थे

माघ का महीना था और मकर सक्रांति का दिन महाराज जी ने डेरे में मनाने की शुरूआत की वैसे बल्लां गांव की मकर सक्रांति विश्व प्रसिद्ध है। माघ के महीने में दान पुण्य करना चाहिए। साधुओं की संगत करनी चाहिए। मूल राज ने बताया कि,''हमारे बुजुर्ग मकर सक्रांति के दिन पर संतों को लंगर के लिए आटा दाल और माया भेंट करने जाते थे। एक बार इनसे पिता जी कच्चा चमड़ा खरीदकर पठानकोट से आए। जो बूटा मंडी बेचकर शाम को ब्यास गांव आए। दूसरे दिन लंगर के लिए राशन-वस्तुएँ खरीदकर कुटिया को चल पड़े। सारे परिवार ने नमस्कार की महाराज सरवण दास जी ने कहा कि,''आप बच्चों को इतनी ठंड में क्यों लेकर आए हो?'' महाराज जी ने हमें बरामदे में बिठा लिया। महाराज जी ने संत गरीब दास महाराज जी को कहा,''तुम बाहर जाओ।'' संत गरीब दास महाराज जी ने शॉल लेकर सिमरन करना शुरू कर दिया।

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सिमरन समाधि में लीन हो गए। बारिश शुरू हो गई। संत गरीब दास महाराज जी शॉल लेकर बारिश में बैठे रहे। महाराज जी की समाधि खुली संत गरीब दास महाराज जी को आवाज़ लगाई।'' तुम बाहर भीग रहे हो अंदर आ जाओ।'' संत गरीब दास महाराज जी ने कहा,'' आप जी ने हुकम देकर बाहर भेजा था आप जी की आज्ञा के बिना अंदर कैसे आता?'' इस प्रकार सत्गुरू जी ने अपनी संगत को सर्दी में अंदर रखा और शिष्य को रात बाहर कटवाई। संतों की संगत ही उनका परिवार होता है।

साखी नंबर: 417

सात जन्मों का फकीर

पुराने समय के पुरूष बहुत धार्मिक विचार के होते थे, उनके मन में धर्म प्रति विवाद घृणा नहीं होती थी। खास तौर पर गांव में बहुत इक्ट्ठ था। सभी दिन त्यौहार विवाह-शादी, खुशी-गमी में अपने होते थे। सभी धार्मिक महापुरूषों का आदर करते थे। एक बार ब्यास गांव से एक जट्ट ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को नमस्कार की महाराज जी ने कहा,''चाय पानी पिओ।'' चाय पानी पीकर महाराज जी के पास बैठ गया। दोपहर का लंगर के पश्चात् वापिस चला गया। मन में विचार आया कि घर से आए हैं। संत ओंकार नाथ काले बाहियां भी माथा टेक नमस्कार कर आते हैं। जब काले

बाहियां पहुँचा संत ओंकार नाथ जी बोहड़ के पेड़ के नीचे विराजमान थे। उनको नमस्कार की संत ओंकार नाथ जी ने कहा कि ,''मेरे पास क्या लेने आए हो। मैं एक जन्म का फकीर हूँ। सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सात जन्मों के फकीर हैं। जो मिलना है उनके दर से ही मिलना है।''

साखी नंबर: 418

दो किलोमीटर में तीन रेलवे स्टेशन

सत्गुरू सरवण दास महाराज जी डेरे के हर संत और सेवकों के अंग-संग रहते है। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ब्यास गांव आए संगतों ने निवेदन किया कि,''महाराज जी, बस वाले यहां बस नहीं रोकते। गांव की सवारी को बहुत समस्या आती है।'' महाराज जी ने कहा,''ब्यास गांव वालों आपको रेलवे स्टेशन बना देंगे।'' बुजुर्ग कहने लगे,''जो आपकी इच्छा है।''

बाबू जगजीवन राम रेलवे मंत्री बन गए। रेलवे विभाग से मंजूरी मिल गई। फर्ज़ी तौर पर मिट्टी डालकर एक कमरा टिकटें काटने के लिए बनाया गया। ब्यास गांव आए सत्गुरू सरवण दास महाराज जी टहलते हुए स्टेशन पर चले गए। काफी बुजुर्ग साथ थे। उन्होंने कहा,''महाराज जी, टिकट कहां से लेनी है?'' महाराज जी की कृपा से स्टेशन बन गया और चालू हो गया। ब्यास गांव से एक किलोमीटर काला बकरा और एक किलोमीटर अलावलपुर। इस प्रकार दो किलोमीटर में तीन रेलवे स्टेशन यह सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की कृपा का फल है।

साखी नंबर: 419

सत्गुरू अपने प्रेमियों की हर जगह रक्षा करते हैं

महेंद्र पाल सुपुत्र श्री करम चंद ब्यास गांव वाले कुटिया सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु हैं। सारा परिवार सत्गुरू जी की रहम से मेहनत मज़दूरी करके हक की कमाई से गुज़ारा करते थे। उनका छोटा भाई बचन दास भी डेरे का श्रद्धालु है।

1971 ई. में बचन दास की मंगनी के समय श्री 108संत सरवण दास जी आप जी के घर आए सत्संग किया। बचन दास ने महाराज जी से नाम की दात मांगी। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने हुकम किया कि,''समय आने पर कृपा हो जाएगी।'' इस प्रकार समय गुजरता गया। बचन दास भी घरेलू

कार्यों में व्यस्त हो गए। महाराज जी 11जून,1972 को सचखंड जा विराजे। आप जी को नाम की दात 108संत हरि दास महाराज जी से प्राप्त हुई। महाराज जी के हुक्म से बचन दास 1982 में कुवैत चला गया। 2अगस्त,1990 को ईराक ने हमला कर दिया। उस समय इराक में सुदाम हुसैन राज करता था। ईराक में रहते भारतीय वापिस देश आने लगे। अशांति का माहौल था। कुवैत से भारत आने के लिए पहले ईराक फिर वॉय जॉर्डन बॅम्बे आना पड़ता था।

बचन दास ने बताया कि,'' 14 सितम्बर,1990 जॉर्डन एयरपोर्ट से रात के ग्यारह बजे का समय था। हम कुछ खाये बिना एयरपोर्ट के अंदर जाने के लिए लाईन में खड़े थे। बहुत भीड़ थी। मैंने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को याद किया,'' महाराज जी, हम भूखों को अन्न भी नसीब नहीं हुआ। आप हमारे अन्न दाता हो कृपा करो।'' बचन दास के मामा का लड़का सुरेंद्र पाल मिठड़े गांव से था जिसने कहा,'' मैंने बाथरूम जाना है।'' मैंने उसको कहा,'' बाहर अंधेरे में जा आओ।'' जब सुरेंद्र पाल बाहर अंधेरे वाली जगह की ओर गया वहां एक बुजुर्ग जिसने सफेद कपड़े भगवी पगड़ी पहनी हुई थी और उनके हाथ में खूंडा था। गाड़ी लेकर खड़े थे। उसने सुरेंद्र पाल को बुलाया और कहा,'' आप कितने आदमी हो?'' सुरेंद्र पाल ने कहा कि,'' जी, हम दो आदमी हैं।'' उसने रोटियां दी और कहा कि,'' जितने आदमी हो एक-एक कर खाना ले जाओ।'' फिर मैं गया तो मेरे साथ भी ऐसे ही हुआ। बाकी आदमी पूछने लगे कि,'' आपने यह खाना कहां से लिया?'' हमने बताया,'' बाहर एक साधु यह खाना बांट रहा है।'' जब वह गए, तो वहां कोई भीन हींथ ।।स भीह ैरानह ेाग ए।ह मनेस त्गुरूक ।ध न्यवार्द कयार् क ,'' महाराज जी, आप धन्य हो, आपकी लीला का कोई अंत नहीं है।'' इस तरह सत्गुरू विदेशों में भी अपने सेवकों की रक्षा करते हैं। आवश्यकता केवल उन पर भरोसा रखने की है।

(स्वयं बचन दास,7 फरवरी, 2017)

साखी नंबर: 420

सत्गुरू अपने सेवकों से स्वयं नाम जपाते हैं

बीबी प्रीतम कौर पत्नी स्व.तुलसा सिंह मिस्त्री गांव रायेपुर रसूलपुर जालंधर वाले जिनके बड़े सुपुत्र की मृत्यु हो चुकी थी और वह उसके वियोग में अक्सर ही रोते रहते थे और उदास रहते थे। उन्होंने वृद्ध अवस्था में आकर

सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी से नाम की दात प्राप्त की थी और सिमरन भजन किया करते थे।

गर्मियों के दिन थे। बीबी प्रीतम कौर जी प्रात:काल 4 बजे का वक्त था अपने आंगन में सो रहे थे कि सपने में सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने सिर में खूंडा मारा और कहा कि,''आपको नामदान जपने के लिए दिया है। आप अपना जीवन सो कर खराब कर रहे हो।'' दो दिन के बाद सिर हलका हो गया और जो दर्द होता रहता था वह भी ठीक हो गया जो पिछले दस वर्ष से नहीं हटा था।1996में चलाना(मृत्यु होने तक)करने के दिन तक भी नहीं दर्द किया।

(किशन सिंह विरदी पुत्र तुलसा सिंह विरदी, 19फरवरी, 2017)

साखी नंबर: 421

धन्य है मेरे सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास जी

उत्तराखंड डिस्ट्रिकट चमोली, घड़वाल जो यू.पी. में ऋषिकेश से सड़क जोशीमठ, हेमकुंटस बदरीनाथ को जाती है। रूद्रप्रयाग और कर्णप्रयाग के बीच एक कस्बा गौचर है। जहां हर वर्ष पंचशील मेला होता है।

किशन सिंह विरदी वासी रायेपुर रसूलपुर सरकारी नौकरी करते थे। समय 1976का गर्मियों का था कि रात के समय इतनी तेज़ आंधी आई कि छत की चादरें उड़ने लगी। एक और व्यक्ति भी किशन सिंह विरदी के क्वार्टर में सोया हुआ था जिसको चौधरी साहिब कहकर बुलाते थे उन्होंने कहा कि,''विरदी साहिब,अब क्या करें?'' हम दोनों चारपाई के नीचे छुप गए। बिजली बंद थी और हम दोनों एक दूसरे को दिखाई नहीं दे रहे थे। थोड़ी देर बाद चौधरी साहिब ने चिल्लाना शुरू कर दिया कहने लगा,''विरदी साहिब जी, मैं दब गया। मुझे बचाओ- बचाओ।'' मैंने जिगरा कर उसको चारपाई के नीचे से निकालने लगा उसकी टांग मेरे हाथ आ गई मैंने खींचकर निकाला और बाहर मैदान की ओर भाग गए। बाहर बारिश आंधी बहुत तेज़ थी। पता नहीं वह कहां भाग गया और मैंने जो मुझे फैमिली क्वाटर मिला था। किसी और को दिया था वहां भागकर जान बचाई। जब मैं सुबह उठकर अपने कमरे को आ रहा था सारा स्टाफबातें कर रहा था। पुलिस को सूचित कर दो और मौका दिखा दो। मैंने अपनी लाल पगड़ी धोकर सूटकेस पर रखी हुई थी। जो चारपाई के नीचे थी वह पत्थरों की दीवार टूटकर गिरी हुई थी। सभी समझने

लगे कि विरदी नीचे आकर मर गया होगा। कुछ व्यक्तियों ने मुझे सामने आता देखकर भागकर मुझे गले लगा लिया और कहा कि,''विरदी साहिब, तो वह आ रहे हैं।'' सभी हैरान हुए मुझे गले लगाने लगे। मिनटो में माहौल खुशी में बदल गया। स्टाफके हर एक सदस्य के मुहँ पर खुशी आ गई थी। घटना इस तरह घटी कि मेरा रूममेट चौधरी मुझे कहता,''भाई, आपने मुझे टांग से पकड़कर खींचकर बाहर निकाला। मैंने जवाब दिया कि,''तुम स्वयं ही तो चिल्ला रहे थे कि मैं दब गया मुझे बचाओ-बचाओ, मरने लगा विरदी साहिब बाहर निकालो।'' वह कहने लगा,''मैं कब चिल्लाया और न ही आपको आवाज़ लगाई?'' मैं वहीं समझ गया कि जिनका नाम भजन करके मैं सोता हूँ उन्होंने ही यह कौतुक रचाया है और आवाज़ें भी उन्होंने ही लगाई हैं। मैं बाहर न आता तो मैंने दीवार के नीचे आकर मर जाना था। मरने से बचाने वाला धन्य है मेरे सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज।

(किशन राम विरदी विशेष वार्ता 19,फरवरी2017)

साखी नंबर: 422

श्री किशन सिंह विरदी की पत्नी को जीवित करना

अगस्त1 968मेंश्र ीि कशर्न संर्ह वरदीस ंथालप रगानार् बहारम ें नौकरी करते थी। उनकी धर्म पत्नी डिलीवरी का समय नज़दीक होने के कारण पुराने गांव रायेपुर रसूलपुर में बुजुर्गों के पास रहती थी। वहां से अपने मायके घर भेजी गई। डिलीवरी की हालत में होने के कारण उसकी सेहत ज़्यादा खराब हो गई। जब यह ख़बर गांव रायेपुर श्री तुलसा सिंह विरदी को पता चला उसने कुटिया जाकर महाराज सरवण दास जी के आगे अरदास की तो महाराज जी ने कहा,'' तुलसा सिंह तुझे दोनों में से क्या चाहिए बहु चाहिए या बच्चा? बताओ सोचकर जवाब दो।'' तुलसा सिंह विरदी ने कहा कि,''बहु ठीक होगी तो औलाद का मुख फिर देख लेंग।'' महाराज जी ने एक पेपर के ऊपर चक्रव्यूह बनाकर नक्शा दिया और कहा अंदर की तरफदेखना शुरू करना है जिस तरफ को लाईन जाती है उसको देखते देखते बाहर निकलना है।'' वहां से यह चीज़ लेकर जब तुलसा सिंह आ रहा था तो उसको कोई धक्का लगा साइकिल के साथ नहर में गिर पड़ा। परंतु वह पेपर हाथ में ही पकड़कर रखा। महाराज जी के बताए अनुसार इसी तरह ही देखा और डिलीवरी हो गई। घर में बालक पैदा हुआ जो 4 घंटे बाद ही बहुत कोशिश

करने के बावजूद भी श्वास छोड़ गया। उसके बाद किशन सिंह विरदी के बताए अनुसार उसकी पत्नी की हालत गंभीर खराब हो गई। सभी रिश्तेदार सम्बन्धी आबादपुर पहुँच गए। उसकी पत्नी भी श्वास छोड़ गई।

विरदी की पत्नी के मुताबिक जब वह एक दम होश में आ गई। सभी रिश्तेदार संस्कार की तैयारियां कर रहे थे। उसको अंधेरे में एक ज्योति दिखाई दी। ''जहां श्री 108संत सरवण दास महाराज जी खड़े थे। उन्होंने मुझे मेरे दाएं हाथ की उंगली पकड़कर एक घेरे में से बाहर फैंका। मेरे मुख से महाराज जी का नाम निकला।'' यह आवाज उस वक्त पास बैठे रिश्तेदारों के कानों में भी पड़ी। सारी गली में शोर होने लगा कि,''महाराज जी ने कहा कि तुमने नहीं जाना तुम्हारे नाम की सवरनजीत कौर और है? उसको जाना है।'' इस प्रकार सत्गुरू सरवण दास महाराज जी जो अपने प्रेमी सेवकों की रक्षा करते हैं और अंत समय भी सहाई होते हैं। जो सच्चे मन से अपने गुरू को समर्पित हो जाते हैं। सत्गुरू उनके स्वयं कार्य पूर्ण करते हैं।

(स्वयं किशन सिंह विरदी,19फरवरी, 2017)

साखी नंबर: 423

किशन सिंह विरदी को बचाना और बहादुरी का अवार्ड मिलना

किशन सिंह विरदी सुपुत्र श्री तुलसा सिंह विरदी कुटिया संत सरवण दास जी के श्रद्धालु थे और अक्सर यहां आकर सेवा करते। उनका पुराना गांव रायेपुर रसूलपुर था। किशन सिंह विरदी की शादी 8दिसम्बर, 1965 को बीबी सवरनजीत कौर सुपुत्री श्री साधू राम आबादपुर वालों के साथ हुई। 22 दिसम्बर, 1965 को श्री किशन सिंह और बीबी सवरनजीत कौर को संत सरवण दास जी से नाम की दात प्राप्त हुई। 11 जनवरी, 1966को किशन सिंह को संथाल परगाना बिहार में एक प्रोजैक्ट पर जूनियर इंजीनियर की नौकरी मिल गई और महाराज जी से आज्ञा लेकर ड्यूटी पर चले गए। महाराज जी ने विरदी को एक पगड़ी और प्रसाद देकर आर्शीवाद दिया कि अपनी ड्यूटी पूरी इमानदारी से निभाना तुम उन्नति पाओगे।

1जून, 1966में किशन सिंह विरदी अपने स्टाफके साथ बाज़ार में जा रहे थे। पहाड़ी इलाका था। मैं ट्रक में बैठा सिमरन कर रहा था। अचानक ब्रेक की खराबी के कारण उनका ट्रक पलटी खाकर खेत में उलट गया। बाहर जंगल था। वहां कोई भी नहीं था। पता नहीं किशन सिंह विरदी को बाजू से

खींचकर घास पर किसने फैंका और उपरान्त किशन सिंह विरदी ने बहुत हौसले से बाकी साथियों को खींचकर बाहर निकाला। उनके बहुत चोटें लगी हुई थी। विरदी का सत्‌गुरू की कृपा से बाल भी बांका न हुआ। ट्रक में पीछे करीब 40 औरतें और पुरूष थे जो काफी जख्मी हुए। किशन सिंह विरदी होशियारी से भागकर 7किलोमीटर का सफर तय कर पैदल ही कैप्टन एम.ई.एस को सारी कहानी बताई और उन्होंने मदद करके जख्मियों को ट्रक द्वारा अस्पताल पहुँचाया अगले दिन पड़ताल करने के लिए ड्यूटी कमिश्नर दुमका शहर से स्टाफ मैंबर आए और इन्क्वायरी उपरान्त श्री किशन सिंह विरदी को बहादुरी अवार्ड देकर अफ्सरों की ओर से सम्मानित किया गया। इस प्रकार सत्‌गुरू सरवण दास जी ने किशन सिंह विरदी की रक्षा ही नहीं की, बल्कि मान सम्मान भी प्रदान करवाया।

(श्री किशन सिंह विरदी विशेष वार्ता 19फरवरी, 2017)

साखी नंबर: 424

भगवान ही करवाए तो सलामें होती है

श्री चानण राम सुपुत्र श्री महिंगा राम वासी मकान नंबर 328मोहल्ला संतोखपुर जालंधर जो कि बचपन से ही धार्मिक विचारों के धारणी और संत सेवी विरती वाले व्यक्ति थे। उनका कुटिया स्वामी सरवण दास बल्लां वालों से बहुत लगन थी। सत्‌गुरू की अपार कृपा से उन्होंने पुलिस विभाग में कांस्टेबल की नौकरी मिल गई। उस समय रविदासिया कम्यूनिटी के बहुत कम मुलाज़म होते थे। आप जी की सख्त मेहनत, ईमानदारी आप जी को उच्च पद तक ले आई। चानण राम जी अनुसार जब वह जहान खेलां में बतौर इंस्पैक्टर प्रमोट हुए तो आप जी के साथ एस.सी. होने के कारण बहुत से मुलाज़म जाति भेदभाव करने लगे थे। आप जी का मन बहुत दु:खी और उदास रहने लगा फिर मैं सत्‌गुरू हरिदास महाराज जी तत्कालीन गद्‌दी नशीन महापुरूष डेरा सचखंड बल्लां के चरणों में गया। उनसे ही मैंने नाम दान की दात प्राप्त की थी।

मैंने महाराज जी को अपनी सारी समस्या बताई तो सत्‌गुरू हरिदास महाराज जी ने मुझे आर्शीवाद दिया और कहा,''तुम शेरों के पुत्र हो। शेर बनकर नौकरी कर हम तुम्हारे साथ हैं। तुमने उदास नहीं होना। अपनी ड्यूटी ईमानदारी और वफादारी से निभाना।'' मैंने हौंसला किया और अपनी ड्यूटी

पूरी ईमानदारी से की और बतौर डी.एस.पी रिटायर्ड हुआ। सभी तरफसलामें होने लगी। एक सिपाही के पद से डी.एस.पी. के पद तक पहुँचना मेरे सत्गुरू हरिदास महाराज जी की देन है। उनकी रहमतों को हम कभी भी नहीं भूल सकते।

(निजी वार्ता 8,मार्च 2017)

साखी नंबरः 425

श्री सीबू राम काहनपुर(गांव) के जख्म ठीक करना

स.हरजीत सिंह साबका सरपंच काहनपुर के बताए अनुसार संत सरवण दास महाराज जी अपने समय के महान् महापुरूष थे। जड़ी बूटियों के माहिर वैद्य थे। उन्होंने बताया कि काहनपुर के श्री सीबू राम पुत्र श्री अच्छरू राम के एक बहुत बड़ा जख्म था जो उसकी बैठक पर था। उस को बहुत परेशानी थी। कहीं से भी आराम नहीं आ रहा था। उसके रिश्तेदारों के कहने पर वह अपने गांव एक वैद्य के पास गया जो पठान था। उसने सीबूराम को कहा,''तुम्हारे पड़ोस बल्लां में संत सरवण दास महाराज जी हैं, उनके जैसा तुझे कहीं भी नहीं मिलेगा, तुम समुद्र छोड़कर दलदल के पीछे घूम रहे हो। उनके पास जाकर निवेदन कर तुम्हारा दुःख काटा जाएगा।'' सीबू राम गांव को आया तो अचानक ही उसको महाराज जी मिल गए। महाराज जी ने उसको कहा,''तुम कल डेरे आना।''

जब अगले दिन सुबह ही सीबू राम कुटिया पहुँचा तो संत सरवण दास महाराज जी ने संत गरीब दास महाराज जी को कहा,''18नंबर बोतल में से गोलियां लाकर इसको दे दो।'' संत गरीब दास महाराज जी ने उसको गोलियां दी और कहा,''इस दवाई से तुम्हें जुलाब लगने हैं और तुम्हारे पेट की सफाई हो जायेगी।'' ठीक इसी तरह दवाई खाने से सीबू राम को जुलाब लग गए और आपके पेट में से कीड़े निकले थोड़े दिन दवाई की प्रयोग करने से उसके जख्म ठीक हो गए और तंदुरुस्त हो गया फिर दोबारा कभी नहीं जख्म हुआ सुखी जीवन व्यतीत करने लगे सारे परिवार की चिंता खत्म हो गई।

(विशेष वार्ता हरजीत सिंह साबका सरपंच काहनपुर12 मार्च, 2017)

साखी नंबरः 426

राज मॅल को रिहा करवाना

1965 में हिंद-पाकिस्तान जंग लग गई। मूल राज का मामा राज मल मिलट्री ड्राइवर था। जंग के दौरान पाकिस्तान फौज उसको गिरफ्तार करके मिलट्री कस्टडी में ले गई। उसकी बहन प्रकाशो ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी आगे निवेदन किया कि,''महाराज जी, मेरा भाई राज मल सही सलामत घर आ जाए। उसका कोई पत्र भी घर नहीं आ रहा था।'' सारा परिवार चिंता में था। सत्गुरू जी ने कहा,''बेटा, चिंता मत कर राज मल सही सलामत घर आ जायेगा ।''लड़ाई बंद हो गई। फिर विदेश मंत्रालय से सम्पर्क करके भारत सरकार ने ऑल इंडिया रेडीयो द्वारा एक प्रोग्राम ''फौजी भाईयों'' के तहत जंगी कैदियों से मुलाकात करके अपना संदेश अपने घर वालों को देना शुरू किया। उधर यही प्रोग्राम पाकिस्तान ने भी शुरू कर दिया।

उन दिनों में रेडियो भी कम थे सभी ने घर के काम निपटा कर यह प्रोग्राम सुनना और बच्चों को भी बोलने की इजाज़त नहीं थी। प्रोग्राम शुरू हुआ,''यह आकाशवाणी का दिल्ली केंद्र है। अब आप जंगी कैदियों की मुलाकात प्रोग्राम सुनो। मैं राज मल पुत्र श्री अमर नाथ गांव खरल कलां का रहने वाला हूँ। मैं फौज में ट्रक ड्राइवर था। पाकिस्तान फौज़ ने हमें पकड़कर कैदियों के कैंप भेज दिया। अगर कोई जान-पहचान सुनता हो हमारे घर बता दें। मैं ठीक हूँ, मेरी कोई चिंता मत करना हमें फौजियों की अदला-बदली से भारत भेज दिया जायेगा।

बीबी प्रकाशो दूसरे दिन बल्लां कुटिया पहुँची और महाराज जी को सारी सूचना मिल गई। महाराज जी ने कहा कि,''प्रकाश कौर, तुम्हारा भाई ज़रूर सही सलामत वापिस घर आएगा तुम चिंता मत करो। दो महीने बाद राज मल खेमकरण बार्डर द्वारा शाम को ब्यास गांव आ गया। सारे परिवार ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का धन्यावाद किया। अगले दिन प्रकाशो परिवार के साथ राज मल को साथ लेकर कुटिया प्रसाद बांटने के बाद गांव खरलां पहुँची। सारे परिवार में खुशी की लहर फैल गई। सत्गुरू की महिमा गाने लगे। फिर राज मल ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी पास से नाम की दात प्राप्त किया।

(मूल राज ब्यास गांव से प्राप्त जानकारी 2 अप्रैल, 2017)

साखी नंबर: 427

सत्गुरू के हुक्म की पालना करना

मैं बहरीन से छुट्टी लेकर इंडिया आया था। मेरी माता करमी की दोनों आँखें खराब हो गई। माता का चलना फिरना बंद हो गया। मेरे बड़े भाई दिल्ली में नौकरी करते थे। वह माता को दिल्ली ले गए और आँखों के बड़े-बड़े स्पैशलिस्ट के पास चैकअप करवाया। डॉक्टरों ने यही कहा कि,'' ऑपरेशन नहीं हो सकता क्योंकि आँखों में पीछे से रोशनी नहीं है।'' मेरा भाई माता को ब्यास मेरे(मूल राज के)पास छोड़ गया। डेरा संत सरवण दास जी बल्लां में हर वर्ष सवरन बंगड जी की ओर से आँखों कर मुफ़्त कैंप लगता था। मेरी छोटी बहन हमें मिलने के लिए ब्यास गांव आई। मैंने उसको साथ लेकर आटो द्वारा माता जी लेकर डेरे आ गए। दरबार में नमस्कार की चाय पानी पीकर पर्ची कटवाने उपरान्त बैठ गए। थोड़े समय के बाद ही करम कौर ब्यास गांव के नाम से सेवादार ने आवाज़ दी तो मेरी बहन बाजु पकड़कर माता जी को डॉक्टर पास ले गई। डॉक्टर ने आँखों का चैकअप किया और कहा कि,'' माता जी की एक आँख का ऑपरेशन हो जायेगा।'' डॉक्टरों ने सारी संगत को बाहर भेजकर मरीज़ों के ऑपरेशन कर दिया। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने स्वप्न में आकर माता जी को कहा,'' करम कौर हमने एक आँख दे दी है।'' आँख ठीक हो गई दूसरे दिन भी आँखें चैक की गई। डॉक्टरों ने कहा,'' माता, तुम्हारी दूसरी आँख का भी ऑपरेशन हो जायेगा और ठीक हो जायेगी।'' माता जी को सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के वचन याद आ गए कि,'' सत्गुरू जी ने मुझे एक आँख दे दी है। मैं सत्गुरू जी का धन्यवाद करती हूँ। मैनें दूसरी आँख का ऑपरेशन नहीं करवाना।''

(स्वयं मूल राज, 2अप्रैल, 2017)

साखी नंबर: 428

साधुओं की अपनी मौज़ होती है

सत्गुरू सरवण दास महाराज जी कुटिया में बैठे थे। काफी संगत महाराज जी के पास बैठी थी।ज्येष्ठ रविवार का दिन था। एक साधू महापुरूष आए उनकी दांए वाली टांग कमज़ोर थी। इसी लिए वह डंडे के सहारे से चलता था। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी अपनी कुर्सी पर बैठे थे। साधू जाकर नमस्कार करके बैठ गए। महाराज जी हंसकर बोले,'' डांगीपीर आ गया।'' उनको चाय पानी लंगर खाने के लिए कहा वह लंगर छककर दोबारा फिर संगत में आकर बैठ गए महाराज जी ने डांगीपीर से पूछा,'' तुम्हारा क्या नाम है?'' साधू ने हंसकर कहा,'' आपने मुझे डांगीपीर कहकर बुलाया है।

मुझे बहुत अच्छा लगा।'' ''डांगीपीर तुम्हारा गांव कौन सा है?'' महाराज जी ने कहा डांगीपीर ने उत्तर दिया कि,'' साधूओं का कोई गांव नहीं होता।'' जहां रात हो गई वहीं रात गुजार ली सुबह उठकर फिर दूसरे गांव। डांगीपीर ने कहा,''महाराज जी, मैं आपकी महिमा सुनकर दर्शन दीदार को आया हूँ।'' सत्गुरू सरवण दास महाराज जी कहने लगे कि,'' तुम हमारे मेहमान हो।'' संत हरिदास महाराज जी को कहा,''हरिदास एक संत और आ गए।'' संत हरिदास महाराज जी ने कहा,''महाराज जी दो रोटी खा लेंगे।'' इस तरह झोपड़ी में रहने लगे। रात को सिमरन करना।

सुबह उठकर डंडे के सहारे आस-पास के गांव में सतनाम सतनाम करना और ऊँची आवाज़ में ज़ोर ज़ोर से गाते,''भगत प्यारे रब्ब को, जैसे मां को पुत्र प्यारे।'' उनके बोल में बहुत मिठास थी और तीखी आवाज़ थी। गज़ा(गांव-गांव में जाकर)करके सभी संतों और संगत से प्रेम से रहना। थोड़े ही समय में डांगीपीर का डेरे में सभी से प्रेम हो गया।

एक बार ब्यास गांव भुल्ला राम जी के घर में सत्संग था। महाराज सरवण दास जी ने सारी संगतों को वहां जाने के लिए कहा। डांगीपीर ने देखा कि ब्यास गांव वाले महाराज जी का बहुत आदर करते थे। एक दिन डांगीपीर ने महाराज जी को निवेदन किया कि,''मुझे ब्यास गांव के गुरू घर में भेज दो।'' ब्यास गांव वालों ने आपका हुक्म नहीं मना करना। महाराज जी हंसने लगे और शाम को डांगीपीर को ब्यास गांव भेज दिया। प्रबंधकों ने उनको एक कमरा खाली कर दिया। डांगीपीर दो महीने उस गांव में रोज़ाना भजन बंदगी करते। रात को भी ऊँची आवाज़ में गाते,''भगत प्यारे रब्ब को, जैसे मां बाप को पुत्र प्यारे।'' फिर एक दिन पता नहीं डांगीपीर ब्यास गांव छोड़कर कहां चले गए। कुटिया भी नहीं पहुँचे। लोगों को बहुत दु:ख हुआ। महाराज जी को निवेदन किया कि डांगीपीर पता नहीं कहां चल गए। महाराज जी ने कहा कि रमते साधुओं का कोई ठिकाना नहीं होता।

(मूल राज ब्यास गांव, 2अप्रैल, 2017)

साखी नंबर: 429

गरीब दास ब्यास गांव वाले को पुत्र की दात बख्शिश करनी

ब्यास गांव की बहुत सारी संगत डेरा सचखंड बल्लां की उपासक है। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के जीवन काल से ही आजतक डेरे में पीढ़ी दर पीढ़ी आते हैं। श्री गरीब दास और बीबी करम कौर भी कुटिया आया करते

थे। उनकी शादी हुई को कई वर्ष बीत चुके थे, पर घर में औलाद नहीं थी। गृहस्थी लोग बहुत जल्दी चिंता में पड़ जाते हैं।

परिवार की बुजुर्ग बीबीयों ने बीबी नामी और बीबी नंदी जी ने सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे निवेदन किया कि,''गरीब दास जी के घर बूटा लगा दो।'गुरू घर देर है अंधेर नहीं' के वाक्य अनुसार सत्‌गुरू जी ने परिवार पर अपार कृपा की और घर में 8-5-1949 को एक बालक पैदा हुआ। जिसका नाम भी सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी ने स्वयं ही मूल राज रखा। आज पूरा परिवार सत्‌गुरू जी की कृपा से आनंदमयी जीवन व्यतीत कर रहा है।

(स्वयं मूल राज, 2 अप्रैल, 2017)

साखी नंबर: 430
माता का दिल का ऑपरेशन ठीक होना

दो बहनें मुकेरियां से अपनी माता का दिल का ऑपरेशन करवाने के लिए जालंधर आ रही थी। जब कार समस्तपुर बल्लां बस स्टैंड पर पहुँचे तो मां की दो जवान बेटियां और उनके पिता ने सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे सड़क से ही अरदास की कि बल्लां वाले सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी का नाम बहुत सुना है। अगर माता जी का ऑपरेशन सही हो गया तो पहले संत महाराज जी को नमस्कार करने आयेंगे। टैगोर अस्पताल माता का ऑपरेशन सफल हो गया।

अस्पताल से छुट्टी मिलने के उपरान्त यह परिवार डेरे आ गया। हाथ में पाँच डिब्बे प्रसाद के थे। गेट के पास मूल राज ब्यास गांव वाले बैठे थे। उससे पूछा कि,''दरबार किस तरफहै?'' उसने इशारा करके समझाया कि,''सामने सत्‌गुरू सरवण दास महाराज जी का सचखंड दरबार है। और दाएं तरफउनकी ही ज्योति सत्गुरू जी बैठे हैं। उन्होंने सचखंड में नमस्कार करने के उपरान्त डेरे की परिक्रमा की। दर्शन दीदार करने के उपरान्त महाराज जी के हुक्म से लंगर पानी खाया-पीया। महाराज जी का धन्यावाद करके सारा परिवार खुशी-खुशी घर को चले गए। सत्‌गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी की महिमा बहुत अपार है। वह सभी जीवों का कल्याण करते हैं। ज़रूरत उनको सच्चे मन से याद करने की है।

(मूल राज, 2 अप्रैल, 2017)

साखी नंबरः 431

सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी सब कुछ जानते थे

गांव जंडू सिंघा के श्री कूड़ा राम, चूहड़ राम, बीरू राम और भगत राम कलेर बाकी साथियों के साथ बल्लां वाली नहर की खुदाई कर रहे थे। नहर के किनारे-किनारे टहलते हुए सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की दृष्टि इन व्यक्तियों पर पड़ी। महाराज जी अचानक उनके पास आकर रूके। सभी मज़दूर नहर पर आकर महाराज जी को नमस्कार करने लगे। महाराज जी ने कहा,‘‘आप जितने दिन कुटिया के आस पास काम करोगे। खाना घर से नहीं खाना। सारे आदमियों ने यहीं भोजन छकना है।'' करीब दो हफ्ते लेबर के सभी व्यक्ति ही डेरे में ही लंगर खाते और चाय पानी पीते। महाराज जी कह करते थे कि,‘‘यह हक की मेहनत करते हैं। इनको दूध और फल भी दो।'' एक दिन छुट्टी करने के समय सर्दियों की शाम को सभी व्यक्ति घर को जाने के लिए तैयार थे।'' महाराज जी अचानक लेबर के पास आकर खड़े हो गए और कहा,‘‘आप रात का खाना भी कुटिया से ही खाकर जाना पूरे दिन के थके हुए हो। घर जाकर पता नहीं खाना नसीब हो या न।'' सभी बुजुर्गों ने लंगर खाया पर यह बात मन में उबल रही थी कि महाराज जी ने आज रात के लंगर के लिए क्यों रोका और यह बात क्यों कही कि घर जाकर खाना नसीब हो या नहीं जब चारों भाई वापिस घर आए तो आते ही पड़ोस में किसी बुजुर्ग की मौत हो चुकी थी सभी भूखे बैठे थे। न किसी ने रोटी बनाई न खाई।

(परिवारिक वसीले कांशी राम जंडू सिंघा,13अप्रैल, 2017)

साखी नंबरः 432

नसीब चंद जंडू सिंघा वाले पर कृपा करनी

नसीब चंद जंडू सिंघा वाले कलकत्ता में कच्चे चमड़े का काम करते थे और सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के चरण सेवक थे। हर कार्य सत्गुरू सरवण दास महाराज जी से लेकर सत्गुरू गरीब दास महाराज जी के समय तक वक्त के गद्दी नशीन महापुरूषों से आज्ञा लेकर ही करते। हर वर्ष विशेष तौर पर कलकत्ता से आकर घर में सत्संग का आयोजन करना और संगतों के लिए लंगर तैयार करने महापुरूषों को घर में बुलाना। ताजपुर, करतारपुर, भानोकी, तल्हण से कच्चे चमड़े का कारोबार सभी कलकत्ता में करते थे।

उन दिनों में सेठ महताब राम(कांशी राम कलेर के नाना जी)खांबरा से भी चमड़े के मुख्य व्यापारी थे। उनका भी कलकत्ता में अच्छा कारोबार था। नसीब चंद ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को पैसे रखकर नमस्कार की। सत्गुरू जी कहने लगे,''नसीब चंद, जितने पैसे तुम्हारे पास हैं, तुमने माथा टेक दिया, किराया कहां से लगाओगे।'' महाराज जी ने पैसे वापिस कर दिये। नसीब चंद ने कहा,'' महाराज जी आप धन्य हो।'' नमस्कार की और कलकत्ता जाने की आज्ञा ली। महाराज जी ने कहा,''अगर कोई मुश्किल आए सत्गुरू रविदास महाराज जी को नाम लेना।'' नसीब चंद जालंधर रेलवे स्टेशन पर पहुँचा। थोड़े समय में ही करतारपुर, तल्हण और ताजपुर वाले भी जालंधर रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए। बनारसी दास करतारपुर वाले ने पाँच टिकट इक्ट्ठी ली। नसीब चंद बनारसी दास को पैसे देने लगा और सोचने लगाा क,''पैसेस त्गुरूस रवणद ासम हाराजज ीक ीक ृपाक ाफ लह ै। कलकत्ता में पहुँचकर सभी अपने अपने व्यापार में लग गए। नसीब चंद जब भी कारोबार करते सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का नाम लेकर करते। कारोबार में उन्नति होती गई। आज उनके बाद भी पूरा परिवार सत्गुरू सरवण दास महाराज जी का धन्यावाद करता है। उनके दोनों पुत्र श्री देव राज बंगड़ न्यूज़ीलैंड और हरबंस लाल बंगड़ यू.के. सत्गुरू जी की रहमत के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

(निजी जानकारी 15 अप्रैल, 2017)

साखी नंबर: 433

एक ही खूंडा बहुत है

सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के जीवन काल का एक-एक पल धन्य है क्योंकि उनके कौतुक का कोई अंत नहीं। उनकी संगतों को दी गई बख्शिश और संगतों पर किये परोपकार आज साखियां बन रही है। ऐसी ही गाथा गांव बल्लां के श्री जागर राम विरदी जी की है। जिनकी शादी बीबी करतारी रूड़का कलां से हुई।

परिवार में तीन पुत्रियों ने जन्म लिया। सबसे छोटी पुत्री की शादी श्री महेंद्र पाल सीमती गांव नंगलपुर के साथ हुई। इनकी शादी से 10 वर्ष बाद तक घर में कोई बच्चा न हुआ। आख़िर सारा परिवार कुटिया आकर संत सरवण दास महाराज जी के चरणी पड़े। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने एक खूंडा

महेंद्र पाल के मारा। जागर राम विरदी और बीबी करतारी जी महाराज जी के इस खूंडे की रहमत को समझते थे। उन्होंने कहा,''महाराज जी, एक और मार दो।'' महाराज जी हंसकर कहने लगे,''एक ही बहुत है। इस प्रकार उनके घर में 16-8-1972 को एक लड़के का जन्म हुआ जिसका नाम रूप लाल रखा गया। सारा परिवार सत्गुरू जी का श्रद्धालु परिवार है। श्री रूप लाल इटली में रविदासिया धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

(श्री रूप लाल,7,मई 2017)

साखी नंबर: 434

सच्चा सत्गुरू अपने सेवकों का यहां वहां सहाई होता है

डॉक्टर हरबिलास और बीबी विदवंत कौर जी 1967-68से कुटिया श्री 108संत सरवण दास जी पास आते हैं। सारा परिवार महाराज जी के अनन्य श्रद्धालु है। डॉक्टर साहिब और उनकी पत्नी ने श्री 108संत हरिदास महाराज जी से नाम की दात प्राप्त की। सारा परिवार सत्गुरू जी की कृपा से खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहा है। सत्गुरू का भाणा बरता कि उनका होनहार सुपुत्र अमरीक सिंह अचानक सेहत खराब होने के कारण इंडिया किडनी अस्पताल जालंधर में यहां इलाज था वहां दाखिल करवाया। उनकी पत्नी बीबी अमरजीत कौर और बड़े भाई डॉ.बलदेव सिंह उनके पास थे। अमरीक सिंह तबीयत ज़्यादा खराब होने के कारण सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के आगे अरदास निवेदन कर रहा था और सत्गुरू जी का श्वास-शवास नाम जप रहा था।

दिनांक 27-3-2017 को समय करीब 4 बजे सुबह का होगा कि अमरीक सिंह ने अपने बड़े भाई बलदेव सिंह को इशारा कर अपने पास बुलाया और पूछा कि,''प्रसाद है?'' डॉ.साहिब ने कहा,''प्रसाद बांट दिया गया है।'' अमरीक सिंह ने दोबारा फिर बलदेव राज से हाथ मिलाया और जय गुरूदेव कहकर,''अच्छा! महाराज सरवण दास जी आ गए हैं। मैं उनके साथ जा रहा हूँ।'' इतना कहकर उसी समय प्राण त्याग दिये।

(स्वयं बलदेव राज जगरावां,5 जून, 2017)

साखी नंबर: 435

श्रद्धा भावना में बरकत होता है

गांव दोलीके की एक श्रद्धावान् बीबी जिसकी कुटिया सत्गुरू सरवण दास जी प्रति श्रद्धा थी। बीबी घर से आर्थिक तौर से परेशान थी और पशु पालन आदि कर गुजारा करती थी। सत्गुरू हरिदास महाराज जी ने जब भी मोहल्ले के दूसरे घरों में खाना खाते, उसके मन में आता कि मैं भी संतों को खाना खिलाऊँ पर घर की गरीबी के कारण उसने महाराज जी को कभी निवेदन न करती।

एक दिन महाराज जी को कुछ संतों महापुरूषों ने मिलकर लंगर खाने के लिए कहा तो महाराज जी ने उस बीबी को लंगर तैयार करने के लिए कहा। बीबी संत सेवी थी। उसने अपनी गाय बेचनी चाही पर इतनी जल्दी उसका पूरा मूल्य भी नहीं लगा फिर उस माता ने कहीं से थोड़े उधार पैसे लेकर लंगर तैयार करवा लिया परंतु मन में यही डर कि साध संगत ज़्यादा है कही लंगर कम न पड़ जाए। महाराज हरिदास जी जब संतों के साथ लंगर खाने के लिए बीबी के घर आए उन्होंने बीबी को कहा कि,'' आप ऊपर एक कपड़ा डाल दो भजन और भोजन परदे में ही रहने चाहिए। बीबी ने लंगर पर कपड़ा डाल दिया और लंगर खिलाना शुरू कर दिया। संतों के इलावा और भी कई संगत लंगर खाकर गईं, पर लंगर में कमी न आई अटूट भंडारे चले। बीबी सत्गुरू जी का धन्यावाद करने लगी। बाद में गाय की भी बहुत कीमत मिली। घर में लहरे-बहरे हैं। कोई गरीबी नहीं।

(सुखविंदर विरदी द्वारा परिवारिक जानकारी,7 जून, 2017)

साखी नंबर: 436
संतों में और भगवान में कोई अन्तर नहीं होता

एक बार एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति जो विचारों से नास्तिक स्वभाव लगता था। उसका परमार्थी कार्यों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं था। डेरे के सूझवान सेवादारों की ओर से उसको संत मत के बारे में समझाने की कोशिश की। पर वह बदल न सका। वैसे वह डेरे के सामाजिक कार्यों की बहुत प्रशंसा कर रहा था। डेरे की ओर से चलाई जा रही सेहत सेवाओं और शिक्षा सेवाओं से बहुत प्रभावित था। सेवादारों ने उस व्यक्ति को महाराज गरीब दास जी से मिलाया उसने कहा,'' बाबा जी मैं दसवें द्वार में यकीन नहीं करता और न ही मैं संत मत में भरोसा करता हूँ, मुझे परमात्मा के दर्शन करवाओ?''

महाराज जी ने कहा,''तुम हमारी आँखों में आँखें डालकर देखो अभी दिखा देते हैं। जो कुछ तुम मांग रहे हो, जो तुम मिनटों में देखना चाहते हो इस करतूत के मालिक भी है? वह व्यक्ति महाराज जी की आँखों में आँखें डाल न सका। महाराज जी में सवेमान,परमात्मा में भरोसा देखकर वह सत्गुरू जी के चरणों में पड़ गया।

(रिपोर्टर:-राज कुमार, बैंक मैनेजर,लिदड़ां, 8जून, 2017)

साखी नंबर: 437

संतों के इम्तिहान नहीं लेने चाहिए

लम्बे समय की बात है कि रायेपुर का एक व्यक्ति जो दूध का काम करता था और पहलवान था। वह संत मत में यकीन नहीं रखता था। उसने इलाके में संत सरवण दास जी की परमार्थी चढ़ाई पर शंका करते मन के बस होकर महाराज जी का इम्तिहान लेना चाहा और प्रात:काल चाँद की चाँदनी में यह देखना चाहता था कि संत कब उठते हैं और उजाड़ जंगल में नहर के किनारे आकर अंधेरे में गांव से बाहर कैसे बंदगी करते हैं?

पहलवान जब नहर के किनारे के पास की पगडंडी से गुजरने लगा तो एक बहुत बड़ा साँप उस रास्ते पर फन फैलाकर बैठा था। पहलवान डरता ही वापिस आ गया और कांप गया। जब दूसरे दिन दूध लेकर वहां से दिन के वक्त गुजरा तो महाराज जी सैर कर रहे थे। पहलवान ने नमस्कार की तो महाराज जी हंसकर कहने लगे,''इस तरफदिन चढ़े पर आया करो।''

पहलवान को ज्ञान हो गया कि महाराज जी ने यह शब्द क्यों कहे है वह सत्गुरू जी के चरणों में पड़ गया।

(रिपोर्टर:-राज कुमार, बैंक मैनेजर, लिदड़ां, 8जून, 2017)

साखी नंबर: 438

राम मूर्ति को डेरे में सेवा करने का हुकम करना

समय करीब आधी सदी के पहले का होगा कि श्री राम मूर्ति जी जो कि युवा अवस्था में थे उनके अचानक गाड़ी में से गिरने से बाजू पर चोट लग गई और 22 टांके लगे। बाजू की हालत इतनी खराब हो गई कि उस में पीक पड़ गई बहुत तकलीफथी।

राम मूर्ति की छोटी भाभी जो हरबिलास मेहता की पत्नी थी बीबी रेशम कौर पुत्री श्री खुशी राम जी के मायके गांव मन्नणां में थे। उन्होंने राम मूर्ति को

कुटिया संत सरवण दास जी में महाराज सरवण दास जी पास लेकर आए। महाराज जी थड़े पर विराजमान थे। संत हरि दास महाराज जी और संत गरीब दास महाराज जी पास बैठे थे। महाराज जी ने दो बार बाजू पर हाथ फेरा यह टांके 5 दिनों में सूख गए। रात कुटिया में रहा। रात के वक्त श्री अमीं चंद जी के बड़े सुपुत्र प्रकाश जो गांव चक्कोवाल से थे। पाठ करते थे। रात के वक्त शब्द चौकी गा रहे थे और अगले कमरे में अभ्यास कर रहे थे। महाराज गरीब दासज ीढ ोलकब जार हेथ` ाए कस ुरग लतह ोताथ ।श्र ीर ामम ूर्तिज ी हरमोनियम जानते थे। उन्होंने यह शब्द सुर में सुनाया। सभी प्रभावित हो गए। सुबह के वक्त संत गरीब दास महाराज जी ने महाराज जी को बताया कि,''राम मूर्ति बहुत अच्छी आवाज़ में कीर्तन करता है।''

उस दिन मास्टर जग्गू राम जी ज़रूरी काम होने के कारण डेरे नहीं आ सके उनकी जगह महाराज जी ने राम मूर्ति को 'हमें मीरा वाली लगन लगा दे, तुम्हारा कौन सा मूल्य लगता' शब्द गाने के लिए कहा। राम मूर्ति ने यह शब्द बहुत मीठी और सुरीली आवाज़ में सुनाया। महाराज जी बहुत खुश हुए। धीरे धीरे बाजू ठीक हो गई महाराज जी ने उसको पक्के तौर पर डेरे में सेवा में लगा दिया और कभी कभी घर जाते और प्यार से कहते कि,''यह हमारा राम मूर्ति है।'' इस प्रकार आप जी ने डेरे में लम्बे समय ड्यूटी निभाई। आप जी जब मास्टर जीत राम जी, संत रामा नंद जी और ज्ञानी शंकर दास कथा कीर्तन करते संगतें आंनदित हो उठती।

(स्वयं राम मूर्ति, 24जून, 2017)

साखी नंबर: 439

सत्गुरू जी बेअन्त करनी के मालिक थे

बहुत पुरानी बात है कि उन दिनों में सत्गुरू सरवण दास महाराज जी अपने सेवकों प्रमियों के घर बस में ही जाया करते थे और टेलीफोन आदि भी कम ही थे। मास्टर जीत राम भी छुट्टी वाले दिन महाराज जी के साथ जाते थे। आम तौर पर राम मूर्ति और संत हरिदास महाराज जी या संत गरीब दास महाराज जी ही जाते थे। बाद में जीप ले ली और जीप में जाने लग पड़े।

एक बार महाराज जी किसी गांव से वापिस डेरे आ रहे थे एक गांव में से गुजरने लगे तो राम मूर्ति को कहा,''इस रास्ते नहीं जाना दूसरे रास्ते चलते हैं।'' थोड़ी देर बाद जब डेरे पहुँचे तो पता चला कि उस गांव में बहुत लड़ाई

हुई और काफी नुकसान हुआ। हमने भी वापसी पर उसी रास्ते से ही वापिस कुटिया आना था। जिस तरफयह घटना घटी थी। महाराज जी बहुत बेअन्त करनी के मालिक थे।

(स्वयं राम मूर्ति, 24 जून, 2017)

साखी नंबर: 440

सत्गुरू जी की कृपा से बिना तेल गाड़ी का चलना

एक बार सत्गुरू सरवण दास महाराज जी अपने सेवकों के घर जीप में सवार होकर जा रहे थे और राम मूर्ति जीप चला रहा था। उस दिन महाराज जी ने कई जगह जाकर समूलियत करनी थी और अपने चरण सेवकों के घर डालने थे।

जब गांव कोटला नज़दीक गांव शाम चोरासी जा रहे थे कि रास्ते में तेल खत्म हो गया और गाड़ी रूक गई और करीब 5-6किलो मीटर रास्ता बाकी था। महाराज जी ने राम मूर्ति को कहा,'' गाड़ी क्यों रूकी है?'' राम मूर्ति ने कहा,'' महाराज जी, इसमें तेल खत्म हो गया।'' महाराज जी ने फिर कहा,''तुम इसको स्टार्ट करो मैं धक्का लगाता हूँ।'' महाराज जी ने गाड़ी में बैठे ही खूंडे से गाड़ी को धक्का मारा गाड़ी चल पड़ी। राम मूर्ति और सेवादार हैरान रह गए कि गाड़ी में तेल है नहीं फिर कैसे चल पड़ी? गाड़ी गांव कोटला पहुँच ही गई। वहां जाकर तेल मंगवाकर जीप में डाला। यह सत्गुरू जी की भक्ति और शक्ति का ही प्रताप था कि बिना तेल गाड़ी इतना सफर कैसे तय कर गई।

(स्वयं राम मूर्ति, 24 जून, 2017)

साखी नंबर: 441

सात बेटियों से पुत्र की दात बख्शिश करना

एक बार स्वामी सरवण दास महाराज जी गांव खुड्डे गए वहां समागम की समाप्ति के पश्चात् जब जीप में बैठ गए तो राम मूर्ति को जीप चलाने के लिए कहा। एक बीबी गाड़ी के आगे आकर तरले(निवेदन)करने लगी,''महाराज जी, मेरे सात लड़कियां है, पुत्र की दात बख्शिश करो।

महाराज जी गुस्से में बोले कि,'' आप पिछले समय में लोगों को लुटते रहे हो डाके मारते थे। अब यह लड़कियां तुम से लेखा लेने आई है। इसी लिए आप इनका लेखा दो।'' बीबी को रोते देखकर महाराज जी को दया आई और

एक सेब प्रसाद के तौर पर दिया और कहा जाओ,"तुम्हारे घर पुत्र होगा और बहुत लायक और ज़िम्मेदार होगा।" ठीक कुछ समय बाद उनके घर एक लड़के का जन्म हुआ महाराज जी के वचन पूरे हुए और उस लड़के ने विदेश जाकर घर की सारी ज़िम्मेदारी उठाई और सारी बहनों की शादी भी अच्छे ढंग से की।

(स्वयं राम मूर्ति, 24जून, 2017)

साखी नंबर: 442

गिल पट्टी में बेरी का दोबारा हरी होना

महाराज गरीब दास जी के परलोक गमन के बाद संत निरंजन दास महाराज जी गद्दी पर विराजमान हुए उस समय की ही बात है कि सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के पुश्तैनी गांव गिल पट्टी ज़िला बठिंडा में उनकी निजी जायदाद में बेरी का पेड़ था जो सत्गुरू पिपल दास जी ने अपने कर कमलों से लगाया था। अचानक किसी कारण इसकी ख़बर डेरा सचखंड बल्लां में पहुँची। बेरी के जलने का स्वप्न श्री राम मूर्ति जी को भी आया। महाराज जी भतीजे की पत्नी भी रो रही थी।

अगले दिन राम मूर्ति डेरे में से आज्ञा लेकर गिल पट्टी कुछ सेवादारों के साथ गए। उन्होंने सात किलो लड्डुओं का प्रसाद लिया। गांव के सरपंच साहिब को साथ लेकर उस पावन अस्थान पर पहुँचे। मौका देखा अरदास के पश्चात् धूप करके प्रसाद बांटा गया। उस समय ज़मीन में नरमा बोया हुआ था और ज़्यादा बारिश होने के कारण पानी रूका हुआ था। राम मूर्ति ने सत्गुरू पिपल दास जी, सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की जय जयकार की। बेरी के आस पास सफाई की। आज वह बेरी महाराज जी की कृपा से पूरी तरह हरी भरी है। उस स्थान पर डेरा सचखंड बल्लां की ओर से सुंदर भवन उसारे गए हैं। अमृतवाणी सत्गुरू रविदास जी की रविदासिया धर्म का प्रचार हो रहा है।

(स्वयं राम मूर्ति, 24 जून, 2017)

साखी नंबर: 443

सत्गुरू जी बुरे कामों से रोकते थे

बीबी प्रकाश कौर जी और श्री प्रीतम वासी गांव रायेपुर रसूलपुर वाले डेरा सचखंड बल्लां के पक्के अनुयायी थे और हर वक्त सत्गुरू सरवण दास महाराज जी से प्राप्त नाम वाणी का अभ्यास करते।

एक बार की बात है कि बीबी प्रकाश कौर जी अपने मायके गांव पियालां ज़िला होशियारपुर में अपने भाई जीता राम जी जो कि बतौर लैफ्टीनेंट-2 पहुँचे। बीबी प्रकाश कौर के भाई लैफ्टीनेंट साहिब ने बीबी जी को मीट बरतनों में डालने के लिए कहा तो बीबी जी ने कहा कि,"मैं मांस को हाथ नहीं लगाती।" भाई ने कहा कि,"कोई बात नहीं तुमने कौन सा खाना है? बरतनों में दूसरों को बांटने से कुछ नहीं होता।" बीबी प्रकाश कौर उसके द्वारा कहने पर बरतनों में डालकर देने लगी पर मन दुःखी था। रात को नींद नहीं आई। परेशानी हो गई। अगले रविवार जब बीबी जी कुटिया आए तो बीबी जी ने महाराज जी को नमस्कार की तो महाराज जी बहुत गुस्से में हुए और कहा कि,"हमें सारी रात दुर्गंध आती रही। आप जी कभी भी मांस को हाथ नहीं लगाते।" बीबी प्रकाश कौर ने भूल की माफी मांगी और आगे से कभी भी मांस को हाथ न लगाने का प्रण किया। उस पर खरे उतरे। उनके भाई जीता राम की महाराज जी में बहुत श्रद्धा था। उनकी कृपा से ही लैफ्टीनेंट-2 बने थे। बाद में रिटायर्ड हुए।

(2,जुलाई 2017)

साखी नंबरः 444

महाराज जी के वाक्य सत्य हुए

श्री प्यारे लाल जी और बीबी करम जीत कौर वासी गांव सरमस्तपुर सत गुरू सरवण दास महाराज जी के चरण सेवक थे। श्री प्यारे लाल जी ज्यूडीशियल अदालत में बतौर अहलमद सेवा करते थे और किराये के सरकारी क्वाटरों में रहते थे। घर की आर्थिक हालत इतनी अच्छी नहीं थी। परमार्थी अवस्था इतनी परपक्व थी कि जब भी सत्गुरू जी को याद करते हर इच्छा पूर्ण होती थी।

एक दिन बीबी करम जीत कौर ने सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के चरणों में निवेदन किया कि,"महाराज जी, कितने समय सरकारी क्वाटरों में रहेंगे? कहीं हमारे भी दो खाने बन जाएं। महाराज जी हंसने लगे और कहने लगे," चिंता मत करो दो खाने नहीं बहुत बड़े बड़े घर बनेगें और आप सफाई करते ही थक जाओगे।" सत्य ही आज सारे परिवार पर सत्गुरू जी की कृपा है। सत्गुरू जी के वाक्य सत्य हुए हैं।

मोहल्ला संतोखगढ़ नकोदर में इनके अच्छे मकान बने हुए हैं। इनके दोनों सुपुत्र श्री तीर्थ राम और सुरिंदर कुमार के भी आलीशान मकान है। घरों में सुख शांति से जीवन व्यतीत करते हैं और सत्गुरू का नाम जपते हैं। इनकी लड़की नरेश बाला भी घर में सुखमयी है। सारे परिवार के बच्चों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और लायक है।

(करमजीत कौर, 2 जुलाई, 2017)

साखी नंबर: 445

पूर्ण महापुरूष स्वामी सरवण दास जी महाराज

श्री प्यारे लाल जी और बीबी करमजीत कौर सरमस्तपुर वाले डेरा सचखंड बल्लां के अनन्य सेवक थे और सारा परिवार आज भी जो काम करता है पहले इस की आज्ञा महापुरूषों से लेकर ही करते हैं। घर में गरीबी थी, बच्चे अभी बहुत छोटे छोटे थे।

एक दिन श्री प्यारे लाल जी और बीबी करमजीत कौर के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ कि कुटिया जाकर महाराज जी के दर्शन करके आते हैं। दोनों पति पत्नी चल पड़े उनके पास सिर्फ दो रूपये थे। पर गुरू जी के दर्शनों की इच्छा थी। दोनों ने विचार किया कि श्री प्यारे लाल जी दो रूपये रखकर नमस्कार कर देंगे और बीबी जी बिना पैसे के नमस्कार कर देंगी। जब पति-पत्नी कुटिया पहुँचे महाराज जी थड़े के ऊपर आराम कुर्सी पर विराजमान थे।

संत हरि दास महाराज जी और संत गरीब दास महाराज जी भी चरणों में बैठे थे। दोनों ने नमस्कार की तो सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने कहा,''प्यारे लाल पास सिर्फदो रूपये थे तुमने हमें दे दिये, तुम्हारे पास कोई पैसा नहीं तुम यह पैसे अपनी जेब में डाल लो।'' दोनों पति पत्नी सत्गुरू जी के चरणी पड़ गए कि महाराज जी सब जानते हैं। यही पूर्ण महापुरूषों की निशानी होती है।

(करमजीत कौर, 2 जुलाई, 2017)

साखी नंबर: 446

लिदड़ां गांव में गुरू घर की नींव रखना

श्री किशन चंद महे जी 1972 से 1977 गांव लिदड़ां के सरपंच थे। श्री किशन चंद उनकी पत्नी बीबी सवरन कौर सत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन से जुड़े हुए श्रद्धावान परिवार है। उनके चार लड़के और तीन लड़कियां

विदेश में हैं। परिवार अमेरिका में चढ़ती कला में है और सत्गुरू जी की रहमत से अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

रविदासिया धर्म के महान् प्रचारक श्री 108संत सरिंदर दास बावा जी दिनांक 4-9-2017 को परिवार के अमेरिका स्थित गृह में अपने मुबारक चरण डाले परिवार में बहुत खुशी की लहर थी। उन्होंने बताया कि सरपंची दौरान गांव के गुरू घर की नींव महाराज जी के हुक्म पर श्री 108संत गरीब दास महाराज जी रखने गए। महाराज जी ने अरदास करने के बाद गुरू घर की नींव रखी और इसको जल्दी ही मुकम्मल करने का हुक्म किया। जो सरपंच साहिब जी ने संगत के सहयोग से जल्दी मुकम्मल कर दिया। संत गरीब दास महाराज जी ने श्री किशन चंद जी को आर्शीवाद दिया कि यह काम तो किशन चंद अकेला भी कर सकता है। संतों के बोल में छुपी रम्ज़ थी जो हर व्यक्ति नहीं समझ सकता।

(स्वयं श्री किशन चंद महे,4 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 447

सत्गुरू श्रद्धा भावना वालों के होते है

श्री किशन चंद महे और उनकी पत्नी बीबी सवरन कौर निवासी गांव लिदड़ां बहुत ही गुरूमुख स्वभाव और संत सेवी हैं। जो कि सत्गुरू रविदास महाराज जी के मिशन को समर्पित भावना वाले हैं। श्री 108संत ब्रह्म दास जी के चरण सेवक हैं। उनकी सुपुत्री बीबी मिंदो की ब्यास गांव में शादी हुई है।

एक बार दोनों पति-पत्नी किसी काम आए थे कि रास्ते में कुटिया संत सरवण दास जी बल्लां आती थी। रात का अंधेरा काफी हो चुका था। दोनों पति पत्नी साइकिल पर थे और जल्दी घर पहुँचने की इच्छा में थे। उनके मन की श्रद्धा भावना थी कि कुटिया में पाँच रूपये रखकर सेवा डालकर जायें पर अंधेरा होने के कारण रूकना भी नहीं चाहते थे। अचानक जब वह कुटिया के गेट के आगे से गुजरने लगे तो श्री 108संत हरि दास महाराज जी गेट के आगे आ गए। वह जल्दी से एक तरफसाइकिल लगाकर रूके और पति पत्नी ने महाराज जी को नमस्कार की और पाँच रूपये सेवा में डाले। महाराज जी के दर्शन करके दोनों की इच्छा पूरी हुई और मन खुशी से भर गया। इस तरह संत महापुरूष श्रद्धावान सेवकों की मनोकामना पूर्ण करते है।

(स्वयं श्री किशन चंद महे, 4 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 448

तीन खूंडों की देन

दिनांक2 -9-2017क ोस .दलीपर् संहग्रेवालज ंडूि संघाके घ ार स.हरदेव सिंह ग्रेवाल और उनका भतीजा मेरे किसी काम के संबंध में मिलने आए। मैं उस वक्त 'धरती पर रब्ब' साखियों की पुस्तक पढ़ रहा था। ग्रेवाल परिवार बहुत ही संत सेवी और गुरमुख परिवार है। जो जोहला वाले महापुरूषों के श्रद्धालु परिवार है। स.हरदेव सिंह पुस्तक को इधर-उधर देखकर बहुत भावुक हो गया। वह समझ गया था कि यह सत्गुरू सरवण दास महाराज जी की साखियों की पुस्तक है। मुझे सुनाने लगा कि,''हमारे पिता स.दलीप सिंह गरेवाल जी बूटा मंडी के बुजुर्ग शीतल दास से मिलकर कभी-कभी कुटिया बल्लां में आया करते थे। एक पति पत्नी महापुरूषों के जहां आए निवेदन करने लगे,''महाराज जी, हमारे औलाद नहीं है।''

महाराज जी स्वभाव अनुसार कहने लगे,''भाग जाओ, ओए हम कोई भगवान हैं, आप स्वयं सत्गुरू रविदास महाराज जी के आगे निवेदन करो।''अगले हफ्ते स.ग्रेवाल फिर शीतल दास के साथ डेरे मौजूद थे। वह पति पत्नी फिर निवेदन करने लगे उस समय संगत इतनी ज़्यादा नहीं होती थी। लोग आते जाते रहते थे। जब उन दोनों पति पत्नी ने फिर निवेदन किया तो शीतल दास जी ने कहा कि,'' महाराज जी आप कृपा करो, दयालु कृपा करने वाले हो, इन को आप पर भरोसा है।''

महाराज जी, दलीप सिंह जी की ओर देखने लगे। उन्होंने भी उसी समय निवेदन किया,''महाराज जी, आप इन पर कृपा करो।'' महाराज जी हंसने लगे और कहने लगे,''दलीप सिंह भी सिफारिश करने लग पड़ा है।'' महाराज जी एकदम खड़े हो गए और गुस्से से बोलने लगे,''भागो, यहां से हम पुत्र बांटते हैं?'' महाराज जी ने पति के खूंडे मारने शुरू किये, वह आगे भागने लगे जब तीसरा खूंडा पड़ा, निवेदन करने लगा,''महाराज जी, बस हमारे से गलती हो गई।'' महाराज जी हंसने लगे और कहने लगे,''बस, तीन ही चाहिए थे।''

उनके घर तीन पुत्र पैदा हुए। दोनों बुजुर्ग ज़्यादा उम्र होने के कारण परिवार का गांव नहीं पूछ सके पर साखी पूरी तरह से याद थी।

(निजी मुलाकात हरदेव सिंह गरेवाल, 2 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 449

महाराज जी ऊपर से ऊपर तरक्की देते रहे

श्रीमती राज कुमारी जी का जन्म' पिता श्री कृपा राम जी के घर में माता करमी जी की कोख से 10 जनवरी 1955 को गांव रसूलपुर में हुआ। माता-पिता जी शुरू से ही डेरा बल्लां के उपासक थे। लड़की राज कुमारी का नाम सुहागवती रखा गया। जब लड़की थोड़े दिनों की हुई तो डेरे पहुँचने पर महाराज जी ने नाम राज कुमारी रखा दिया पर महाराज जी की ओर से नाम बदलने का राज कोई भी नहीं समझ सका।

आज के समय में जीवन स्तर देखा जाए तो नाम बदलने का बहुत बड़ा मतलब था। राज कुमारी छोटी अवस्था से ही माता पिता के साथ कुटिया आया करती थी और अपनी माता को कहा करती थी,"मैंने रब्ब(भगवान)देखना है।" एक दिन माता जी ने यह बात महाराज सरवण दास जी के साथ की कि,"यह लड़की कहती है कि मैंने रब्ब देखना है।" महाराज जी ज़ोर से हंसने लगे और राज कुमारी को लाड़ (प्रेम) से उठाकर कहा,"ऊपर देख कैसे आँखें खोलकर रब्ब बैठा है।" ऊपर एक जानवर बैठा था। राज कुमारी को बड़ी हुई को ज्ञान हो गया कि रब्ब कण कण में है और महाराज जी का उसको ऊपर उठाने का मकसद ज़िंदगी में तरक्की बख्शिश कर ऊपर से ऊपर लेकर जाना था। जिस कारण वह विद्यक क्षेत्र में कलास-2 के बाद कलास-1 अफ़सर बनी, शिक्षा अधिकारी बनने के उपरान्त बतौर प्रिंसीपल रिटायर हुई। संतों के वचनों में राज होता है।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 450

मुन्ना कुटिया अकेली आ गई

राज कुमारी लगभग सात-आठ वर्षों की आयु में थी। उसके माता पिता रविवार के दिन कुटिया बल्लां संतों के चले गए और बच्चों को घर ही छोड़ गए। राज कुमारी छोटी आयु में ही बिना किसी डर-भय के कच्चे रास्ते खेतों में से बल्लां आ गई। वहां कुटिया में से पता चला कि सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ब्यास गांव गए हैं। यह सुनकर राज कुमारी ब्यास गांव की तरफ चल पड़ी। बल्लां के मोड़ पर जहां आजकल दुकानें बनी हुई हैं। वहां खेत ही होते थे तो राज कुमारी खरबूजे तोड़ने लगी स्वामी सरवण दास महाराज जी ने

वहां पहुँचकर राज कुमारी को उठा लिया और कहा,"खेत वाले तुम्हें पिटाई करेंगे, तुम खेतों में क्या कर रही हो?" और अपने साथ कुटिया ले गए। मेरे माता जी ने बताया कि स्वामी जी ब्यास गांव से यह कहकर जल्दी आ गए कि करमो मुन्ना(लड़की)कुटिया अकेली आ गई।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 451

महाराज जी बच्चों में आत्म-विश्वास पैदा करते थे

स्वामी सरवण दास महाराज जी बच्चों की बुद्धि का परीक्षण के लिए उनकी पीठ पर अक्षर लिखते थे,"बताओ, मैंने क्या लिखा?" इस तरह राज कुमारी के भी बहुत बार लिखा था बच्चों में उत्साह, निडरता, आत्म-विश्वास का जज़्बा पैदा करने के लिए उनसे कविताएँ सुनते थे। महाराज जी की प्रशंसा में बुजुर्ग रचनायें लिखते थे और बच्चे पढ़कर सुनाया करते थे। महाराज जी उनकी आवाज़ में सुनकर बहुत खुश होते थे। राज कुमारी जी के बताए अनुसार वह भी महाराज जी की कुर्सी के पास खड़े होकर कविता पढ़ती थी। यहां वर्णन योग है कि उन दिनों में हमारे समाज में बहुत कम लड़कियां पढ़ती थीं। शब्द के बोल होते थे:-

ढूँढा मैंने जग सारा, कही से भी न मिला प्यारा,
डिट्ठा एक चमकारा, बिजली समान जी।।
बल्लां है ग्राम जहां, गुरू जी विराजते हैं,
नगर सौभाग्य, जिसकी इतनी ऊँची शान जी।।
नगर के पश्चिम तरफकुटिया नज़र आए,
सचखंड से भी है सुंदर स्थान जी ।।
सचखंड में जैसे देवते विराजते है,
गोष्ठी करते साधु सत्य के ज्ञान जी।।
और अन्य शब्द जैसे:-
सोया जागता क्यों नहीं, तू जागता क्यों नहीं मन अढ़िया।
तुझे ऐसा अमल किसका चढ़ा
और
तुम्हारी शक्ति से जाऊँ बलिहारी जी

नहर किनारे रहने वालिया

यह रचनायें पढ़कर बच्चों में आत्म-विश्वास और निडरता जैसे गुण पैदा होते थे जो उनके सारी उम्र काम आते थे।

(निजी वार्ता राज कुमारी प्रिं.रिटा,13सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 452

महाराज जी कौम में विद्या का प्रचार चाहते थे

राज कुमारी ने पांचवी कक्षा पास कर ली। माता पिता महाराज जी के पास आए और बता गए कि लड़की ने पांचवी कक्षा पास कर ली। महाराज जी बहुत खुश हुए क्योंकि उस समय एक लड़की का पांच कक्षायें पढ़ जाना मान-सम्मान समझते थे। महाराज जी ने कहा कि,''इसको बड़े स्कूल में पढ़ने के लिए लगा दो।'' माता जी ने कहा,''महाराज जी, स्कूल दूर है ब्यास गांव जाना पड़ता है। रक्षा आप ने ही करनी है।''

इस प्रकार राज कुमारी ने दसवीं भी अच्छे नंबर लेकर पास की। माता-पिता प्रसाद लेकर बच्ची को साथ लेकर दरबार में पहुँचे जब यह बताया कि लड़की ने दसवीं पास कर ली है।'' तो कुटिया में संत चेतन दास जी, संत गरीब दास जी और महाराज जी बहुत खुश हुए। महाराज जी ने बहुत खुशी से सारी संगत को बताया कि,''मुन्ना ने दसवीं पास कर ली है।'' उस समय बहुत कम बच्चे आठवीं पास करते थे। महाराज जी ने माता पिता को कहा,''मुन्ना ने और पढ़ना है।''''पर घर में गरीबी है।'' माता जी ने कहा कि,''महाराज जी, शहर में पढ़ने लगा देते हैं। पर आप ने ही रक्षा करनी है।''

महाराज जी के हुक्म अनुसार राज कुमारी को के.एम.वी. कॉलेज पढ़ने लगाया गया। महाराज जी कई बार कृपा राम और बीबी करमी को लेकर के.एम.वी. कॉलेज गए और फल व माल पूये लेकर गए। कारण यह था कि इस दलित समाज की बच्चियां ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें, उच्च विद्या ग्रहण कर मान सम्मान वाला जीवन व्यतीत करें। महाराज जी समाज में सभी माता पिता को अपने बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ाने पर ज़ोर देते थे। महाराज जी की ऊँची सोच से हर व्यक्ति प्रभावित होता था क्योंकि स्वयं बच्चों से सवाल पूछा करते थे और उनका बुद्धि परीक्षण करते थे।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 453

सत्य में 11 जून हमारे लिए आज भी अंधेरा है

यह बात हम जानते और सुनते रहे हैं कि महाराज जी रविदासिया समाज में विद्या की कमी को बहुत महसूस करते हैं और डेरे की संगतों को बच्चों की पढ़ाई की ओर ध्यान देने के लिए बहुत प्रेरित करते थे। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी यह भी चाहते थे कि हमारे समाज के बच्चे भी ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े। पढ़ने वाले बच्चों को महाराज जी अधिक प्रेम करते थे। उनको फल, मिठाई, दूध आदि देते कि यह शारीरिक तौर पर भी सेहतमंद रहे। बच्चे भी महाराज जी को बहुत प्यार और आदर देते थे। छुट्टी का दिन डेरे में ही व्यतीत करते थे। 8जून, 1972 का दिन था। राज कुमारी होस्टल में छुट्टियां होने के कारण माता पिता जी के साथ कुटिया आ गई। शाम के वक्त जब घर वापिस जाने के लिए आज्ञा मांगी महाराज जी ने दो बार जाने से मना किया और कहा,''कृपा रामा अंधेरा हो गया।'' कृपा राम ने बाहर देखा कि अभी अंधेरा नहीं हुआ था और कहा,''महाराज जी, अभी रोशनी है तो महाराज जी ने छुट्टी दे दी। उसी हफ्ते थोड़े दिनों के बाद 11 जून को सत्य में ही अंधेरा हो गया। महाराज जी शारीरिक चोला त्याग कर सचखंड जा विराजे। परिवार विछोड़े में विलाप कर रहा था और सदैव ही उनको याद रखता है। सत्गुरू जी की याद में हर दिन 11 जून ही मालूम होता है। क्योंकि उनके चरणों में व्यतीत पल, उनकी यादें हर वक्त परिवार की यादों में बसी रहती है और बसती रहेगीं। गुरू का विछोड़ा असहनीय और अनकहा था।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 454

मालिक चाहे तो थोड़े में ही बरकत हो जाती है

1967-68 की बात है कि श्री कृपा राम जी वासी रसूलपुर वाले सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के श्रद्धालु थे और कृषि करते थे। थोड़ी ज़मीन अपनी थी। बाकी ठेके पर लेते थे। कभी भी 15-20 बोरी से अधिक गेहूँ नहीं होती थी एक बार 21 बोरी हुई थी।

महाराज जी ने कहा,''कृपा राम, तुम भोऊली वाली ज़मीन छोड़ दो।'' कृपा राम ने अगले वर्ष महाराज जी के हुक्म अनुसार ज़मीन छोड़ दी और अपनी ज़मीन में ही गेहूँ बोई। उनका लड़का प्यारे लाल खेतीबाड़ी यूनिवर्सिटी

लुधियाना में नौकरी करता था और वहां से बीज लाया था। इस वर्ष थोड़ी ज़मीन में से ही 100 बोरी गेहूँ हुई। श्री कृपा राम जी और बीबी करमी 20 बोरी गेहूँ लेकर लंगर में पहुँचे। महाराज जी मुस्कुराने लगे वह स्वयं अंर्तयामी थे।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 455

इसके मनी आर्डर आने हैं

प्यारा लाल सुपुत्र श्री कृपा राम जी वासी रसूलपुर मैट्रिक में पढ़ता था। महाराज स्वामी सरवण दास जी पढ़ते बच्चों को देखकर खुश होते थे।

एक बार प्यारे लाल बहुत बीमार हो गया। उसके माता निकल आई हालत देखकर माता पिता बहुत परेशान हुए। इम्तिहान के दिन थे। महाराज जी के पास आए महाराज जी ने कहा,''इसके इम्तिहान ज़रूर करवाओ, इसको साइकिल पर बिठाकर ले जाना।'' परिवार ने उम्मीद छोड़ी हुई थी। महाराज जी ने कहा,'' इसकी पढ़ाई करवाओ, पेपर ज़रूर करवाओ। क्योंकि इसके मनी आर्डर आया करने हैं।''

सत्गुरू जी के हुक्म पर इम्तिहान दिये गए और प्यारे लाल फर्स्ट डिवीज़न से पास हो गया। उपरान्त खेतीबाड़ी(कृषि)यूनिवर्सिटी लुधियाना से तीन वर्ष का कोर्स करने पर वहां ही सिलैक्शन हो गई।

सत्य में ही तीन वर्ष के बाद प्यारे लाल के मनी आर्डर द्वारा तनख्वाह के पैसे घर आने लगे। संतों के बोल सत्य होते हैं। स.प्यारा लाल जी प्लांटेशन विभाग से डायरैक्टर रिटायर हुए।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 456

डरना नहीं! जाओ

समय करीब छः दहाके पहले का होगा कि कृपा राम जी और उनकी पत्नी बीबी करमी जी सत्गुरू सरवण दास जी के चरण सेवक थे और हर रविवार अपने गांव रसूलपुर से पैदल कुटिया नमस्कार करने आते थे। एक बार की बात है कि शाम के वक्त जब महाराज जी से वापिस जाने की आज्ञा मांगी तो महाराज जी ने उनको कुछ समय और रूकने के लिए कहा। दोनों पति-पत्नी हुक्म मानकर बैठ गए। रास्ता कच्चा था। बड़ी-बड़ी झाड़ियां थी और रात भी अंधेरी थी। कुछ समय बाद महाराज जी ने जाने की आज्ञा दी और

कहा,''डरना नहीं! जाओ।'' दोनों चल पड़े।'' जब नौगज्जा पुल के पास आए तो क्या देखते हैं कि बहुत बड़ा साँप जिसके सिर पर दीया है। पहले वह घबरा गए। पर तुरन्त उनको महाराज जी के बोल याद आ गए,''डरना नहीं! जाओ।'' वह नाम जपते सीधे घर आ गए।

(निजी वार्ता प्रिं.राज कुमारी,13 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 457

इसको एक कम्बल और दे दो

स.दरबारा सिंह जी संघा मिलट्री में से रिटायर थे और साबका मैंबर पंचायत थे। उनकी सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के प्रति श्रद्धा भावना थी और अक्सर डेरे आया करते थे। जब कभी गांव में संत सम्मेलन होता था तो वह डेरे के संतों के दर्शन करने के लिए ज़रूर आते और सेवा भी डालते। शायद उन्होंने नाम की दात भी सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के पास से प्राप्त की हो क्योंकि उनके अपने घर में महापुरूषों के सुंदर स्वरूप लगे हुए हैं। दरबारा सिंह के साथ कांशी राम कलेर की काफी सांझ थी और अक्सर एक दूसरे के घर परिवारिक मैंबरों की तरह ही आते जाते थे।

उन्होंने बताया कि एक बार मैं डेरे में मौजूद था। एक साधु जाते-जाते वह कम्बल भी साथ ले गया जो उसको सेवादारों की ओर से ऊपर लेने के लिए दिया था। कुछ सेवादारों उसके पीछे भी गए और गांव में जाकर उस साधु को पकड़कर कुटिया ले आए। कुछ बुरा भला भी बोले जब साधू को संतों के पास लेकर आए महाराज जी ने साधु को फतेह बुलाई और कहा,''इसको क्यों लेकर आए हो?'' सेवादारों ने कहा,''जी, यह डेरे का कम्बल ले गया था।'' महाराज जी ने कहा,'' इसको एक कम्बल और दे दो ठंड है, नीचे भी बिस्तर कर लेगा।'' इस प्रकार साधु एक और कम्बल लेकर विदा हुआ और महाराज जी का धन्यावाद करने लगा। सेवादार हैरान हो गए और कुछ भी न बोल सके।

(बीते की बात स्वयं दरबारा सिंह जी)

साखी नंबर: 458

संतों के बोल सत्य होते हैं

श्री गुरमेल विरदी और बीबी विद्या बचपन से ही सत्गुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी के अनुयायी थे और नाम की दात भी उनके पास से

ही प्राप्त की थी। श्री गुरमेल विरदी जी हर हफ्ते एक या दो बार डेरे ज़रूर आया करते थे और सेवा भी किया करते थे।

इनकी शादी के समय शादी की रस्में भी संत हरिदास महाराज जी ने गांव नौगज्जा में करवाई थी। महाराज जी ने पहले ही आर्शीवाद दिया था कि,''आप जी के घर पांच बच्चे पैदा होंगे।'' गुरमेल विरदी जी के घर तीन लड़कों ने जन्म लिया। एक दिन गुरमेल विरदी और बीबी विद्या ने महाराज हरिदास जी के चरणों में निवेदन किया कि,''महाराज जी, आप आर्शीवाद बख्शिश करो। हमारे घर लड़की ही आए, ताकि तीन भाईयों को एक बहन मिल जाए।'' महाराज हरिदास जी हंसने लगे और कहा,''एक नहीं, दो बहनें होगीं।'' महाराज जी के आर्शीवाद से उनके घर दो लड़कियों ने जन्म लिया। सत्गुरू जी के वाक्य सत्य होते हैं।

(निजी वार्ता श्री गुरमेल विरदी जी,15 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 459

महाराज जी की कृपा से थोड़े में ही बरकत होती है

श्री संता राम और बीबी नन्ती गांव मोखे वाले 1960 के करीब गांव बडाला में आ बसे। उन्होंने 1970-71 में अपने घर सत्संग करवाया और पहले भी हर वर्ष सत्संग करवाते थे।

इस वर्ष सारे गांव में से ही संगत आई। परिवार चिंता में पड़ गया कि लंगर में कमी न आ जाए। महाराज जी ने हुक्म किया कि,''आप लंगर पर कपड़ा डाल दो और दाल के पतीले पर भी कपड़े का परदा डाल दो।'' महाराज जी ने यह भी हुक्म किया कि,''ऊपर से कपड़े का परदा नहीं हटाना। इसमें लंगर लेकर बांटते जाना।'' सारी संगत ही लंगर खा गई। उपरांत्त लंगर फिर बचा रहा। यह सत्गुरू की कृपा है कि उन्होंने लगंर में बरकत डाल दी। यह साखी उनकी बहू बीबी महेंद्र कौर पत्नी गंगा राम ने अमेरिका से सुनाई।

(दिनांक 14 सितम्बर, 2017)

साखी नंबरः 460

पूर्ण गुरू अपने सेवकों को भी साथ लेकर जाते हैं

मास्टर जग्गू राम जी रायेपुर रसूलपुर वालों की पत्नी बीबी हरभजन कौर का नित्नेम था कि वह प्रातःकाल स्नान करने के उपरांत कुटिया स्वामी सरवण दास जी में अपने सत्गुरू के दर्शन दीदार करने के लिए आती थी। वह

रोज़ाना ही महाराज जी के लिये दही लेकर आती थी। जो महाराज जी बहुत खुशी से खाते थे। उसके बाद ही बीबी जी दरबार में हाज़री लगाकर कोई चीज़ मुंह लगाते थे। महाराज जी ने हुक्म करना कि,''अंदर से किताब लाओ और कोई साखी सुनाओ।'' इस तरह महाराज जी रोज़ाना ही गुरूओं, पीरों, संतों, महापुरूषों की परमार्थी साखियां सुनते। महाराज जी संगत को सत्संग सुनाते और सत्गुरू रविदास महाराज जी की पावन अमृतवाणी की व्याख्या भी सुनाते थे। महाराज जी का खाने-पीने का आहार बहुत सादा होता था। सारा दिन में एक बार ही हल्का सा भोजन लेते थे। एक बार दूध या फल लेते थे। उनकी आठ पहर की खुराक इतनी ही थी। उन दिनों में बीबी हरभजन कौर, बीबी भानी या बीबी करमी लंगर तैयार करती थी। माता हरभजन कौर की सेहत खराब हो गई।

संत रामानंद जी 11 फरवरी, 2002 को माता जी को देखने आए और अपने कर कमलों से पांच अमरूद बीज निकाल कर सेवन कराये। उपरांत बीबी जी को कोई तकलीफ नहीं हुई। संत रामा नंद जी कह गए,''बीबी, तुम्हें काशी लेकर जाना है।'' रात के वक्त सारा परिवार, छोटा लड़का कुलदीप भी पास ही था। महाराज जी ने माता को दर्शन दिये माता जी एकदम उठे और कहा,''महाराज जी, आ गए हैं।'' रजिंदर बंगड़ जी को भी महाराज जी के खूंडे की आवाज़ सुनी वह उठकर बैठ गया और बीबी जी की ओर देखने लगा,बीबी जी ने देखते आख़िरी श्वास लिया। पूर्ण सत्गुरू अपने सेवकों को भी अपने साथ ले जाते हैं।

(निजी वार्ता रजिंदर बंगड़,15 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 461

इतनी करनी के मालिक थे मेरे सत्गुरू

गांव रायेपुर में श्री गुरू रविदास मंदिर में सत्गुरू रविदास जी का प्रकाश पूर्व गांव रायेपुर रसूलपुर बड़े मोहल्ला की संगतों की ओर हर वर्ष की तरह मनाया जा रहा था। मास्टर जग्गू राम जी ने शिव राम को भेजा कि,''समागम की तैयारी है तुम जाकर सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को लेकर आओ।'' शिव राम ने महाराज जी को निवेदन किया कि,''मुझे मास्टर जग्गू राम ने भेजा है कि आप महाराज जी को लेकर आओ।'' महाराज जी ने कहा,''तुम जाओ, हम आते हैं।'' जब शिव राम साइकिल पर कुटिया से गांव

गुरू घर पहुँचा तो देखकर हैरान रह गया कि महाराज जी पैदल ही उससे पहले समागम में विराजमान थे। जब संगतों को शिव राम ने यह सारी हकीकत सुनाई तो सारी संगत हैरान हो गई और कहने लगी कि,''धन्य सत्गुरू सरवण दास महाराज जी आप जी महान् हो, हम आपके बलिहारी जाते हैं। इतनी करनी के मालिक थे। स्वामी सत्गुरू सरवण दास महाराज जी।''

(निजी वार्ता रजिंदर बंगड़,15 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 462

खूंडे वाले की मेहर सदका

रजिंदर बंगड़ रायेपुर के पिता जी मास्टर जग्गू राम जी के देहांत के उपरांत वह अपनी माता जी को साथ लेकर महाराज सरवण दास जी पास कुटिया गए। माता ती ने निवेदन किया कि,''सत्गुरू जी, कृपा करो कि इस बेटे को कही नौकरी मिल जाए।''

महाराज जी कुछ समय के लिए अंर्तध्यान होने उपरांत कहा,''बेटा, इसको नौकरी अभी देर से ही मिलनी है, चिंता नहीं करनी मृतक मुलाज़्मों के बच्चों को नौकरी देने के लिए सरकार कई कागज़् मांगती है। जिस तरह मौत का सर्टीफिकेट आदि।'' 14 वर्ष बाद जालंधर ज़िला शिक्षा अधिकारी ने जब नियुक्ति करनी थी तो रजिंदर बंगड़ से मौत का सर्टीफिकेट ही मांगा। उसके पिता की मौत का सर्टीफिकेट देखने के उपरांत ही नियुक्ति हो गई। एक बार महाराज जी ने माता हरभजन कौर कहा था कि,''रजिंदर बंगड़ ने लेखक बनना है। इसका मस्तक हमने देख लिया है।'' सत्गुरू जी के बोल सत्य निकले। रजिंदर बंगड़ एक मिशनरी गीतकार और लेखक बनकर समाज में उभरे। महाराज जी बचपन में उसको रायपुरिया कहकर पुकारते थे।

आज उनका नाम बंगड़ रायेपुरी से जाना जाता हैं। बंगड़ ब्रदर्ज़ मिशनरी कलाकार उनके बच्चे हैं, जो सत्गुरू रविदास महाराज जी, सत्गुरूस रवणद ासम हाराजज ीअ ैरड ॉ.अम्बेडकरज ीक ीम शनरी रचनायें गाते हैं। इस क्षेत्र में उन्होंने कदम बढ़ाये हैं और एक अच्छे जत्थे की तरह स्थापित हुए हैं। यह सब खूंडे वाले सत्गुरू की देन है।

(निजी वार्ता रजिंदर बंगड़,15 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 463

पूरा गुरू सेवकों को डोलने नहीं देता

श्री गुरू रविदास जन्म स्थान सीर गोवर्धनपुर के फाऊंडर ट्रस्टी मास्टर जग्गू राम जी 28मई,1971 को संसार से कूच कर गए थे। सात महीने बाद परिवार को कुछ आर्थिक मुश्किल आ गई। माघ के मेले से 3-4 दिन पहले उनका लड़का रजिंदर बंगड़ माता जी के कहने पर डेरे आ गया और सत्गुरू सरवण दास महाराज जी को घर की हालत के बारे में निवेदन किया कि,''महाराज जी, हम खर्च से बहुत तंग हैं।'' महाराज जी ने कहा,''माघी से एक दिन पहले आना, तुम्हें खर्च दे देंगे।'' माघी मेले से एक दिन पहले महाराज जी ने संदेश भेजा कि,''आप आकर हमारी बात सुन जाओ।

जब रजिंदर बंगड़ अपने माता जी के साथ डेरे गया। महाराज जी कुटिया में थड़े पर विराजमान थे और उनके पास बाबू मेहर चंद मोहल्ला माई खाई जालंधर से बैठा था। उनको कोई जानकारी नहीं थी। महाराज जी ने बीबी हरभजन कौर को कहा,''बेटी, मेहर चंद ने हमें बताया कि मैं मास्टर जी से एक हज़ार रूपये उधार लिये थे। एक सौ रूपये वापिस दे दिये, बाकी नौ सौ रूपये लेकर आया है। यह नौ सौ रूपये ले लो मास्टर जी के घर वालों को देने है।'' महाराज जी ने पैसे बीबी जी को पकड़ाते हुए कहा,''बेटी,आप इन पैसों से गुजारा कर लो। जब भी तुमको ज़रूरत पड़े तो हमें बता देना। हम हर समय आपके अंग संग हैं। आपने चिंता नहीं करनी।'' वह महाराज जी को जय गुरूदेव कहकर वापिस आ गए। ऐसे कामिल मुर्शिद दुनिया में बहुत कम मिलते हैं तो अपने सेवकों को डोलने नहीं देते।

(निजी वार्ता रजिंदर बंगड़,15 सितम्बर, 2017)

साखी नंबर: 464

बंगड़ रायेपुरी को पुत्र की दात

रजिंदर बंगड़ के घर उनकी पत्नी बीबी सुरिंदर कौर की कोख से बच्चे की उम्मीद बंधी। उनकी माता बीबी चन्नो जी सामाजिक रीति रिवाज़ 'विदा कराने' की रस्म दिसंबर1975 में बीबी सुरिंदर कौर को लेने आए। परिवार का यह नियम था कि जो आज तक बरकरार है कि हर काम डेरा सरवण दास जी में नत्मस्तक होने के उपरांत ही किया जाता है।

वह श्री 108 संत हरिदास महाराज जी तत्कालीन गद्दी नशीन

महापुरूषों को नमस्कार करने गए। महाराज जी का स्वभाव बहुत हंसमुख और दयालु था। उन्होंने वचन दिया,''खुशी-खुशी घर जाओ आप जी के घर पुत्र ने जन्म लेना है।'' सारा परिवार आर्शीवाद लेकर वापिस आ गए। दिनांक 26 जनवरी, 1976 को उनके घर पुत्र ने जन्म लिया। जिसका नाम सत्गुरू जी के हुक्म पर सुशील बंगड़ रखा गया। सुशील बंगड़ आज सत्गुरू जी के मिशन पूरे विश्व में फैला रहा जिनका मिश्नरी जत्था बंगड़ ब्रदर्ज़ के नाम से जाना जाता है।

(निजी वार्ता रजिंदर बंगड़,15 सितम्बर, 2017)

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी की तरफ से लिखित और अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग धार्मिक संस्थाओं की तरफ से प्रकाशित पुस्तकें :

हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* जगतगुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक तथा संक्षिप्त जीवन हिन्दी और मराठी)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षिप्त जीवन
* जगतगुरू रविदास महाराज जी की कथाएं (हिन्दी और मराठी में)
* अमृतबाणी जगतगुरू रविदास महाराज जी (स्टीक)
* पावन जीवन कथाएँ श्री गुरू रविदास जी महाराज (हिन्दी और पंजाबी)

Books Published in English

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)
* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji 40 Pade (Steek)
* Sacred Life of Jagatguru Ravidass Ji

Books Published in Dutch

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)

* * *

पंजाबी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (40 शब्द स्टीक) भाग-1
* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (सम्पूर्ण स्टीक) भाग-2
* श्री गुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक और संक्षेप जीवन)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* सुखसागर स्टीक
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षेप जीवन
* धरती उत्ते रब सतिगुरू सरवण दास जी (जीवन साखी)
* गुरू रविदास मिले मोहि पूरे (संत मीरां बाई जी)
* जगतगुरू रविदास महाराज जी की पावन जीवन कथाएँ

अर्न्तराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.) की ओर से प्रकाशित पुस्तक

* चमार जाति इतिहास धर्म पर सभ्याचार : राजेश कैंथ भबियाणवी

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर की ओर से प्रकाशित पुस्त्कें

* रविदासीया धर्म का अनमोल हीरा श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी : कांशी राम कलेर
* रविदासीया कौम के अमर शहीद संत रामानंद जी : कांशी राम कलेर जंडूसिंघा

* * *

Email: ravidassiadharam@gmail.com

Website: www.ravidassiadharam.org

---

facebook : ravidassiadharamparcharasthan

Youtube : Ravidassia Dharam Parchar Asthan, Kahanpur Jalandhar

जगतगुरू रविदास महाराज जी

सतिगुरू सरवण दास महाराज जी

30 जनवरी 2010 को श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर वारानसी में जगतगुरू रविदास महाराज जी, सतिगुरू सरवण दास जी और संत समाज की कृपा से 'रविदासीया धर्म' का ऐलान करते हुऐ श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी

Ravidassia Dharam Parchar Asthan

Vill. Kahanpur, P.O. Raipur Rasulpur
Distt. Jalandhar-144 012
e-mail : ravidassiadharam@gmail.com
Website : www.ravidassiadharam.org
Facebook : ravidassiadharamparcharasthan

Sant Surinder Dass Bawa Ji